साहित्य • आलोचना • लोकजीवन

नित नवल योगानन्द झा

तेरह ग्रन्थक समीक्षात्मक विवेचन

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · २०२६

साहित्य • आलोचना • लोकजीवन

नित नवल

योगानन्द झा

तेरह ग्रन्थक समीक्षात्मक विवेचन

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

प्रकाशन-विवरण

नित नवल योगानन्द झा

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च

पुस्तकक क्रम

अनुक्रमणिका

01	लोकजीवन ओ लोकसाहित्य	5
02	संकल्प : विद्यापति-स्मृति-पर्व स्मारिका	27
03	आलेख सञ्चयन	54
04	मैथिली शाक्त साहित्य	90
05	मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष	108
06	गहबर गीत	131
07	लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा	146
08	मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली	172
09	कथा–लोककथा	201
10	सीतावतरण	226
11	मंगल-प्रभात	246
12	भोरे-भोर	266
13	चतुर्दश सूत्र	284
	ग्रन्थसूची	323

अध्याय 01 / १९८६ • द्वितीय संस्करण २०१८

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

१. केन्द्रीय प्रतिपाद्य: लोकजीवन आ लोकसाहित्यक अभिन्नता

पोथीक आरम्भमे लेखक लोकसाहित्यकेँ केवल पद्य, कथा अथवा मनोरञ्जनक भण्डार नहि मानि लोकजीवनक जीवन्त अभिव्यक्ति रूपेँ रखैत छथि। ‘लेखकीय’ (पृ. ११–३२) मे लोकक अर्थ, जनसामान्यक अनुभव, लोकसाहित्यक विभिन्न रूप तथा मिथिलाक मौखिक धरोहरक समृद्धिपर चर्चा अछि। लेखकक चिन्ता ई अछि जे लिखित साहित्यक इतिहासमे गामक बोली, व्यवसाय, आस्था, कथा-वाचन आ गीतक जतेक स्थान चाही से नहि भेटैत अछि। एहि दृष्टिसँ ग्रन्थ केवल साहित्यिक स्वादक सामग्री नहि, सामाजिक दस्तावेज तैयार करबाक प्रयत्न सेहो अछि।

मूल ‘लेखकीय’क पृ. १२–१३ पर विभिन्न वर्गीकरणक तुलनात्मक उल्लेख अछि। लोकशब्दावली, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकगाथा, गाथागीत, लोकगीत, लोककथा, लोकोक्ति-मोहावरा, लोकश्रुति, फकड़ा, लोकमंत्र आ बुझौअलि जकाँ श्रेणीसभ एकरा व्यापक परिधि दैत अछि। आरम्भिक पृष्ठसभमे संस्कृत-प्राचीन साहित्य आ आधुनिक विद्वत्परम्पराक सन्दर्भ देल गेल अछि। मुदा वर्गीकरण स्वयं अन्तिम सत्य नहि: एक्कहि गहबर-गीत एक समयमे लोकगीत, अनुष्ठान, जातीय इतिहासक स्मृति आ सार्वजनिक प्रदर्शन भऽ सकैत अछि। ग्रन्थक बादक उदाहरणसभ ई बहुस्तरीयता सिद्ध करैत छथि।

आवश्यक भेद ‘लोक’ बनाम ‘शिष्ट’ साहित्यक अछि। लेखक मौखिक संचरण, सामूहिक रचना, परिवर्तित पाठ, समयक संग गढ़ाइत अर्थ आ लोकपरम्पराक स्वाभाविक जीवनशक्तिक चर्चा करैत छथि। समीक्षकीय दृष्टिसँ एहि भेदमे उपयोगिता अछि, मुदा ‘लोक’क भीतर शिक्षित-अशिक्षित, शहर-गाम, गायन-पाठन, जातीय व्यवहार आ लिखित-पुस्तकीय सम्पर्कक परस्पर

आवाजाहीक सेहो स्थान बनब आवश्यक अछि। उदाहरणार्थ, गहबर-गीतमधेँ कालीक धार्मिक प्रसंग, गाथाक चरित्रनाम आ स्थानीय गायन—तीनू एक्कहि प्रसंगमे मिलैत छथि।

लेखक पहिल संस्करणक भूमिकाक सन्दर्भमे मैथिली लोकसाहित्यक व्यवस्थित अध्ययनक अभाव अनुभव करैत छथि; पुनः २०१८क द्वितीय संस्करणक भूमिका/उपोद्घातमे उपलब्ध पूर्ववर्ती अनुसन्धान आ संग्रहकार्यक अधिक विस्तृत परिदृश्य रेखांकित करैत छथि (पृ. ४–१०, २८–३२)। पहिल प्रकाशन १९८६ आ पुनर्मुद्रित/द्वितीय संस्करण २०१८ होयबाक तथ्य महत्त्वपूर्ण अछि: ई एक्कहि समयक क्षेत्र-रिपोर्ट नहि, विभिन्न कालखण्डक बौद्धिक सन्दर्भसँ संवाद करैत पुस्तक अछि।

लोकसाहित्यक पाठसँ लोकजीवनक साक्ष्य धरि

पुस्तकक रचना-पद्धतिमे दू स्पष्ट चरण अछि। पहिल चरणमे समुदाय, जातीय-उपजातीय नाम, पेशा, शब्दकोशीय रूप, पूजा-देवता आ सामाजिक व्यवहारक परिचय देल जाइत अछि। दोसर चरणमे कथा, गाथा आ गीतक माध्यमसँ ओहि समाजक मूल्य, संघर्ष आ आकांक्षाक चित्रण होइत अछि। एहि क्रमसँ काजक संसार आ कल्पनाक संसारकेँ अलग-अलग नहि, एक-दोसरासँ जुड़ल रूपमे पढ़बाक अवसर भेटैत अछि।

मुदा केवल सामुदायिक नामक आधारपर पुरनका पेशा, वर्तमान जीविका, धार्मिक उपासना आ सामाजिक प्रतिष्ठाकेँ एक्कहि रैखिक परिचयमे समेटि देबामे खतरा अछि। पोथी अपन मूल कालखण्डक जातीय शब्द आ व्युत्पत्ति-सम्बन्धी मत देइत अछि; ताहि लेल वर्तमान अनुसन्धानमे जाति-समुदायक स्वनाम, जीवन-स्थितिक परिवर्तन आ एक्कहि नामक भीतर विद्यमान विविधताक अध्ययन अलग आवश्यक होयत। ई टिप्पणी लेखकक पाठक ऐतिहासिक-सामाजिक सन्दर्भसँ उठैत अछि; कोनो समुदायपर सार्वकालिक आरोप नहि।

२. जातीय समुदायक सामाजिक स्वरूप: छह प्रकरणक क्रमवार समीक्षा

२.१ डोम जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ३५–४२

एहि प्रकरणक आरम्भ मिथिलाक सामाजिक व्यवस्थामे डोम समुदायक स्थान आ बाँसक कारीगरीसँ होइत अछि। लेखक डोमक पेशागत परिचयमे बाँससँ निर्मित विविध घरेलू उपयोगक सामानक उल्लेख करैत छथि आ एही काजसँ विकसित जातीय शब्दावलीपर बल दैत छथि। ई पुस्तकक प्रमुख एहन प्रसंग अछि जतए शब्द-संपदा आ श्रम-इतिहास एक-दोसराक पूरक बनैत अछि। विशेष अर्थ ई जे लोकसंस्कृति केवल धार्मिक कथा नहि, दैनिक उपभोगक वस्तु, निर्माणक तकनीक आ उत्पादक श्रममे सेहो बसैत अछि।

लेखक पुराकथात्मक उत्पत्ति-वृत्तान्तक संग डोमक सामाजिक व्यवहार आ गीत-संस्कृतिको स्थान दैत छथि (पृ. ३५–४१)। उत्पत्ति-कथामे वर्ण-व्यवस्थाक वैधता-सृष्टि करबाक प्रवृत्ति देखि पड़ैत अछि; मुदा ओ कथाक समाजशास्त्रीय अर्थ आ ऐतिहासिक सत्यता पृथक् बात अछि। एहि कथा कैं ‘समुदाय केर बारेमे चलैत लोकविश्वास’क रूपेँ पढ़ब उचित अछि। बाँस-कर्मक विस्तृत शब्दसंग्रह एहि प्रकरणक अधिक ठोस, प्रत्यक्ष उपयोगी पक्ष अछि।

पुस्तकमे डोमसम्बन्धी लोकोक्ति, कार्यसँ जुड़ल गीत आ सामुदायिक आचरणक उल्लेखसँ पेशाक प्रति सामाजिक दृष्टि सेहो उद्घाटित होइत अछि। एहि सामग्रीकैं केवल विनोद अथवा पुरान कथाक कुतूहल मानब अनुचित होयत; ई एकर साक्ष्य अछि जे सामाजिक श्रेणीकरणसँ भाषा आ लोकगीत प्रभावित होइत अछि। समीक्षाक आलोचनात्मक आग्रह अछि जे एहन लोकप्रयोगक पुनर्पाठमे जातिवाचक अवमाननाक सम्भावित स्वर चिन्हित कएल जाय आ जकर बारेमे वर्णन अछि, हुनकर अपन अनुभवक आवाज सेहो जोडल जाय।

२.२ चमार जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ४३–४४

चमार समुदायपर प्रकरण संक्षिप्त अछि, मुदा पुस्तकक योजनामे एकर स्थान महत्त्वपूर्ण अछि। लेखक चमड़ा, जूता-सामग्री, मरल पशुसँ सम्बन्धित पुरान श्रम-विभाजन तथा जातीय उपनाम-परम्पराक सन्दर्भ दैत छथि। कथात्मक उत्पत्ति-विवेचनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे लोकधारणामे

पेशा आ जाति एक-दोसरासँ गुँथल रहल अछि। कथाक मूल आधारपर पूरे समुदायकेँ एक पेशामे सीमित करब आजुक आलोचनात्मक अध्ययनमे उचित नहि मानल जा सकैत अछि।

विशेष ध्यान देबाक बात अछि जे एहि प्रकरणमे श्रमक उपयोगिता आ श्रमिकक सामाजिक स्थितिक बीच अन्तर छुपल अछि। वस्तु-निर्माण सामूहिक जीवनक अनिवार्य अङ्ग होइतहुँ, ओकरा करनिहारक सम्मान बराबर नहि होइत। लेखकक संकलित शब्द आ लोकप्रयोग एहि विडम्बनाक अध्ययन लेल मार्ग खोलैत अछि। पृ. ४३–४४क तुलना पृ. ३५–४२सँ करब पर एकटा प्रश्न उभरैत अछि: लोकसाहित्यक संग्रहमे ‘लोक’क अनेक समुदायसभक प्रतिनिधित्व कोन प्रकारेँ तय होय? संक्षिप्त प्रकरण एहि प्रश्नक पूर्ण समाधान नहि करैत अछि, मुदा ओकर आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि।

२.३ धोबी जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ४५–४९

धोबी प्रकरणमे वस्त्रधोअन, रँगाइ, शोधन आ कपड़ासँ सम्बन्धित सेवाक चर्चा अछि। लेखक प्रचलित लोकोक्ति, पेशागत विशेष शब्द, लोकगीत तथा सामाजिक व्यवहारक उदाहरण दैत छथि। धोबीक कामक उल्लेख एकटा महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रश्न उठा दैत अछि: समाजक ‘पवित्रता’ सम्बन्धी धारणा आ तकर व्यवहारिक व्यवस्था कैँ सम्भव बनौनिहार श्रम स्वयं कोन सामाजिक सम्मान पबैत रहल? एहि विरोधाभासक आलोचनात्मक पाठ एहि अध्यायक केंद्रीय सम्भावना अछि।

गीतक प्रस्तुति श्रमक सामाजिक-संगीतात्मक परिवेशकेँ चिन्हित करैत अछि। ध्यान देबाक बात अछि जे कपड़ा धोअन एतेक सामान्य काज अछि जे ओकर साहित्यिक-महत्त्व अनदेखा भऽ सकैत छल; मुदा लेखक एहि पेशाक लोकप्रयोगक संकलनक माध्यमसँ दैनिक व्यवहारकेँ सांस्कृतिक अध्ययनक विषय बनबैत छथि। लोकगीतमे भेटैत लय, सम्बोधन आ दुहरावक विश्लेषण एतए केने-जाने सम्भव अछि; मुदा गायनक वास्तविक स्वर, गायकक परिचय, तिथि आ स्थान उपलब्ध नहि होयबाक स्थितिमे निश्चित प्रदर्शन-परम्पराक दावा नहि कएल जा सकैत अछि।

मिथिलाक लोकजीवनक एकटा अन्य अर्थ—सेवा, निर्भरता आ परस्पर सामाजिक आदान-प्रदान—एहि प्रकरणसँ सोझाँ अबैत अछि। एहि पाठकेँ केवल जातीय उत्पत्तिक आख्यान नहि मानि श्रम-विनिमयक इतिहासक दिशामे बढ़ाओल जा सकैत अछि; तथापि समसामयिक आर्थिक आँकड़ा अथवा वर्तमान पेशागत अनुपात एहि पुस्तकमे उपलब्ध नहि अछि।

२.४ हलुआइ जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ५०–५२

हलुआइ प्रकरणमे लेखक नामक व्युत्पत्तिसम्बन्धी मत, कृषि वा व्यावसायिक परम्पराक संकेत, उपजातीय विभाजन तथा गणिनाथ-गोविन्द-जकाँ देवतापूजनक वर्णन प्रस्तुत करैत छथि। एहि प्रसंगमे लेखक व्यवसायकेँ जातीय सांस्कृतिक पहिचानक एक प्रमुख आधार मानैत छथि, मुदा संगहि लोकविश्वास, देवता आ आपसी श्रेणीकरणकेँ जोडैत छथि। मूल पृ. ५०–५२मे उपजाति आ कुलपूजाक विवरणक साथेँ इहो देखाइत अछि जे ‘एक जाति, एक पेशा’क समीकरण पर्याप्त नहि।

ग्रन्थक आन्तरिक संरचनामे एकर महत्त्व आरो बढ़ि जाइत अछि, कारण लोकगाथा-अंशमे गणिनाथ-गोविन्द, फेकूराम आ अन्य पात्रक चर्चा एही लोकविश्वासक निकट अबैत अछि। पहिने सामाजिक परिचय, बादमे कथा—एहि विधिक उपयोगिता उदाहरणसँ स्पष्ट अछि। कथाक भक्ति-आधारित प्रतिष्ठा आ जातीय इतिहासक बीच सीमा रखब आवश्यक अछि; लेखकक मतक परिचय करब एक बात अछि, वैज्ञानिक ऐतिहासिक पुष्टि दोसर।

२.५ मलाह जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ५३–५९

मलाह प्रकरण ग्रन्थक सामाजिक वर्णनमे अपेक्षाकृत विस्तृत अछि। नदी, जल, नौका, माछ, मखान, जलसम्बद्ध जीविका आ नदीघाटक लोकसंसार एहि अंशक प्रमुख परिधि अछि। लेखक पेशागत नामकरणक चर्चा करैत छथि, समुदायसँ जुड़ल उपसमूह आ लोकगीत देखबैत छथि तथा जलसंसाधनक उपयोगकेँ सामाजिक जीवनसँ जोड़ैत छथि। एतए मिथिला भूगोलक एक विशेष सांस्कृतिक रूप उभरैत अछि: जल मात्र प्राकृतिक परिवेश नहि, गीतक प्रसंग, श्रमक साधन आ लोकवृत्तान्तक स्थल अछि।

पृ. ५४–५८ पर जीवनक संकट, माछ पकड़बाक व्यवहार, परिवार आ जीविकोपार्जनसँ सम्बद्ध लोककथात्मक प्रसंग पाबि सकैत छी। एहन पाठमे हास्य, दैनन्दिन संवाद आ काजक अनुभवक मेल अछि। पृ. ५९ पर लेखक बदलैत पेशागत स्थितिक चिन्ताक सेहो संकेत करैत छथि। एहि आधारपर लोकसाहित्यक संरक्षणक प्रश्न प्रकृतिक संसाधन, उत्पादन-पद्धति आ पारिवारिक श्रमक परिवर्तनसँ जुड़ि जाइत अछि।

मलाह लोकपरम्पराक संग ‘दुलरा दयाल’ आ ‘गाड़ो देवी’क सम्बन्ध देखबाक लेल ग्रन्थक बादक प्रकरण अत्यन्त आवश्यक अछि। सामाजिक परिचयमे वर्णित नदी-आश्रित श्रम गाथा-प्रसंगमे लोकवीर, रक्षक देवता आ सामूहिक श्रद्धाक रूप लैत अछि। एहि अन्तर्सम्बन्धक कारण पुस्तकक पहिल आ दोसर भाग एक-दोसराक अर्थ खोलैत अछि।

२.६ कुरेड़ी जातिक सामाजिक स्वरूप | पृ. ६०–६३

कुरेड़ी प्रकरणमे एकटा विशेष प्रकारक जीविका—मधु छोड़ेबाक काज—पर लेखकक विशेष ध्यान अछि। वनस्पति, मधुमक्खी, उँच स्थान आ ऋतु-सम्बद्ध जोखिमक विवरणसँ प्रकृति-आश्रित ज्ञानक संसार बनैत अछि। लेखक ‘कुरेड़ी’ शब्द, निकटवर्ती पेशागत समुदाय आ उपजाति-नामक चर्चाकरैत छथि। एहि सामग्रीक महत्त्व ई अछि जे लोकसंस्कृतिक मौखिक इतिहासमे हुनर, जीविकाक साहस आ शरीरगत कौशल सेहो सुरक्षित रहैत अछि।

समाज-शास्त्रीय तुलना करब पर मलाहक जल-ज्ञान आ कुरेड़ीक मधु-संग्रह एक्कहि व्यापक श्रेणी—स्थानीय पर्यावरणसँ विकसित व्यवहारिक ज्ञान—मे अबैत अछि। एतए आलोचनात्मक अनुसन्धान आगाँ बढ़ि कऽ शब्दावली, औजार, काजक मौसम, गाछ-गाछक नाम आ समुदाय द्वारा जनाओल जोखिमक विश्लेषण कऽ सकैत अछि। मुदा एहि सम्भावित शोध-प्रश्नकेँ ग्रन्थमे कएल गेल प्रत्यक्ष सर्वेक्षण मानब गलत होयत।

बेनीराम गाथामे नाउ आ कुरेड़ीक जातीय देवताक पूजासँ जुड़ल परम्पराक उल्लेख एही सामाजिक परिचयसँ बादमे जुड़ैत अछि (पृ. १२१)। एहि लेल जीवनोपार्जन, सामूहिक वंशस्मृति आ देवताक कल्पना परस्पर सम्बन्धित भऽ जाइत अछि।

३. लोकगाथा: चौदह पाठक पृथक् विवेचन

मूल ग्रन्थक लोकगाथा-खण्डक आरम्भ पृ. ६४ सँ होइत अछि। प्रकरणसभक प्रस्तुति सर्वत्र समान लम्बाइक नहि अछि: किछु कथाक संक्षिप्त कथासार, किछुक विस्तृत आख्यान आ गीतांश देल गेल अछि। ताहि लेल समीक्षा प्रत्येक गाथाक उपलब्ध आकार आ प्रमाण-अवस्थाकेँ ध्यानमे रखैत अछि। ‘नायक’ अथवा ‘देवता’ शब्द एतए लोकपरम्पराक दृष्टिसँ प्रयुक्त अछि; ओहिसँ ऐतिहासिक रूपसँ सिद्ध व्यक्तित्वक दावा नहि निकलैत अछि।

३.१ श्यामसिंह | पृ. ६४–६६

श्यामसिंहक कथा डोम समुदायक निकटसँ जुड़ैत अछि। कथा-रचनामे श्यामसिंह, वंशीधर आ बलाजी जकाँ पात्रक माध्यमसँ सम्बन्ध, संघर्ष आ पराक्रमक दृश्य गढ़ल गेल अछि। लेखक कथाक आरम्भमे लोकनायकक परिचय दैत छथि आ अन्तमे श्यामसिंहक स्मृतिक डोम सामुदायिक परम्परामे स्थानक उल्लेख करैत छथि।

एहि गाथामे प्रेम/सम्बन्ध आ प्रभुत्वक प्रश्नकेँ शौर्यक भाषा भेटैत अछि। कथा-विकासमे अपमानक प्रत्युत्तर, पारिवारिक सम्बन्ध आ हिंसात्मक प्रतिरोधक आवेग स्पष्ट अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई सामूहिक सम्मानक कल्पना आ सामाजिक पदानुक्रमसँ टकरावक रूपक बनैत अछि। कथा एहि रूपमे पढ़ल जाय जे लोकसमुदाय अपन मर्यादा आ रक्षकक स्मृतिसँ केहन पहिचान गढ़ैत अछि; एकरा प्रमाणित राजनीतिक घटनाक कालक्रम रूपेँ नहि प्रस्तुत कएल जाय।

३.२ लालवन बाबा | पृ. ६७–६८

लालवन बाबा खण्ड चमार समुदायसँ जुड़ल लोकदेवताक एकटा मार्मिक आख्यान अछि। लालाजी/लालवन आ मनसरामक सम्बन्ध, एक महिलाक संकट, बचाव आ हिंसक परिणामक उल्लेख कथा-केंद्रमे अछि। पृ. ६८ पर जातीय लोकगीतक स्वरूपमे लालवनक स्मरण सेहो भेटैत अछि।

गाथाक रोचक परिवर्तन ई अछि जे कथामे जे पात्र मानवीय असुरक्षा आ सामाजिक अत्याचारक सामना करैत अछि, ओ अन्ततः उपासना आ लोकस्मृतिक केन्द्र बनि जाइत अछि। लोकदेवता-सृष्टिक ई प्रक्रिया बहुधा इतिहास, शोक, प्रतिरोध आ सामूहिक न्यायबोधक मिश्रित कल्पना होइत अछि। लेखकक प्रस्तुत पाठ एहि प्रक्रियाक आलोचनात्मक अध्ययन लेल उपयोगी सामग्री दैत अछि।

३.३ गरीबन भुजड़ा | पृ. ६९–७३

गरीबन भुजड़ाक गाथामे श्रम, दरिद्रता, उपेक्षा आ जीविकाक पीड़ा प्रमुख अछि। मूल पृ. ६९ पर धोबी-भट्ठीक ओसार-देवता जकाँ लोकविश्वासक सन्दर्भ भेटैत अछि; कथा-गीतमे गरीबनक स्थिति आ ओकर प्रति सम्बोधन अनेकपटक पुनरावृत्त होइत अछि। ‘गरीबन’ नाम स्वयं आर्थिक वञ्चनाक अर्थ-क्षेत्र खोलि दैत अछि, मुदा एकरा केवल प्रतीक कहि मूल मानवीय पात्रक पीड़ा विस्मृत करब ठीक नहि।

कथामे उपेक्षित व्यक्तिक सामूहिक स्मृतिमे प्रतिष्ठा—एहि सम्भावनाक कारण गाथा एकटा सामाजिक अभिलेख बनैत अछि। मुदा शाब्दिक रूपेँ समस्त कथा कैँ वास्तविक घटनाक इतिहास नहि कहि सकैत छी। गाथाक पुनरावृत्तिमूलक गायन, बिम्ब आ करुण प्रसंगक अध्ययनसँ लोकसमाज अपन श्रमजीवी सदस्यक दुखकेँ कोन आवाज दैत अछि, से बुझबा मे सहायता भेटैत अछि।

३.४ मोतीदाइ | पृ. ७४–७५

‘मोतीदाइ’क केन्द्र एकटा स्त्री पात्रक नैतिक साहस आ अपमानक प्रतिरोध अछि। कथा आरम्भमे मोतीदाइकेँ गृहस्थ तथा नित्य पूजा-पाठ करनिहार रूपेँ देखबैत अछि; अनिष्टकारी दृष्टि आ दबावक बीच ओ अपन निर्णयपर अडिग रहैत छथि। कथा-क्रममे मृत्यु आ अद्भुत परिणामक प्रसंग उपस्थित अछि।

एहि गाथाकेँ मात्र स्त्रीक शील-संरक्षणक रूढ़ि रूपेँ पढ़ब संकुचित होयत। एतए स्त्रीक अपन देह आ निर्णयपर अधिकारक लोककल्पना सेहो देखल जा सकैत अछि, यद्यपि ई आधुनिक

अधिकारवादी शब्दावली लेखकक मूल कथन नहि अछि। पृ. ७४–७५क संक्षिप्त आख्यानक भीतर स्त्री-संघर्षक जे संकेत अछि, से पुस्तकक अपेक्षाकृत पुरुष-प्रधान वीरगाथा-प्रवाहक महत्त्वपूर्ण प्रतिपक्ष अछि।

३.५ गणिनाथ–गोविन्द | पृ. ७६–८६

ई ग्रन्थक विस्तृत आख्यानसभमे सँ एक अछि। लेखक गणिनाथ–गोविन्दक पूजा हलुआइ सहित किछु अन्य समुदायसँ जोड़ैत छथि आ वैशाली क्षेत्रक राजपलवैया-जकाँ स्थानीय स्थानपर लोकविश्वासक चर्चा करैत छथि (पृ. ७६)। कथामे गणिनाथक जन्म, देवतासभक प्रसंग, गोविन्दक भूमिका, मनुष्यक सामूहिक संकट आ धार्मिक प्रतिष्ठाक विविध घटना जोड़ल गेल अछि।

लोकगाथाक प्रमुख विशेषता एतए दिव्य आ मानवीय समयक मिश्रण अछि। गणिनाथक व्यक्तित्व पितृत्व, रक्षण आ समुदाय-हितक कल्पनाकेँ एक ठाम आनैत अछि। देवताक कथा स्थानीय भूगोल आ सामाजिक समारोहक संग चलैत अछि; फलतः ई आस्था-साहित्य सामाजिक पहिचानक साधन बनैत अछि। पृ. ८५–८६ पर गाथा आ परम्परागत प्रतिष्ठाक मेल पढ़बा योग्य अछि।

आलोचनात्मक प्रश्न अछि जे गणिनाथ–गोविन्दक कथा कतए कथा-परम्पराक आन्तरिक सत्य व्यक्त करैत अछि आ कतए लेखक ओकरा ऐतिहासिक अनुश्रुति रूपेँ राखैत छथि। किछु स्थानीय स्थाननाम आ पूजा-प्रथाक प्रमाण ग्रन्थमे स्वतः उपलब्ध अछि, मुदा ताहिसँ कथाक प्रत्येक अद्भुत घटना तथ्यतः सिद्ध नहि होइत अछि। एहि भेदक रक्षा करब वैज्ञानिक समीक्षा लेल अनिवार्य अछि।

३.६ फेकूराम | पृ. ८७–८८

फेकूरामक आख्यान कानू–हलुआइ समुदायसँ सम्बद्ध अछि। कथामे फेकूराम, हुनकर पत्नी सोनमती आ गहिर पारिवारिक संकटक वृत्तान्त अछि। मानवीय इच्छा, असहायता आ निष्ठाक बीच कथा आगाँ बढ़ैत अछि; अन्तमे लोकस्मृतिमे फेकूरामक प्रतिष्ठाक संकेत भेटैत अछि।

एहि प्रकरणक विशेषता ओकर संक्षिप्तता अछि। जीवनक विपत्ति आ दाम्पत्य सम्बन्ध आस्थाक सामुदायिक कथामे रूपान्तरित होइत अछि। फेकूरामक जकाँ पात्रकेँ विस्तृत ऐतिहासिक संदर्भविना केवल ‘कुलदेवता’ नाम देब पाठककेँ पर्याप्त जानकारी नहि देत; पुस्तक ई कथा-सूत्र उपलब्ध करबैत अछि, जकर भिन्न-भिन्न मौखिक पाठक पुनः अनुसंधान सम्भव अछि।

३.७ कारिख | पृ. ८९–९३

‘कारिख’ प्रकरणमे लोकनायकक उत्पत्ति, पारिवारिक सम्बन्ध, दीना-नाथसँ सम्बन्धित आख्यानक सन्दर्भ, विपत्ति आ देवतासँ टकराव/समझौतेक कथा-प्रवाह भेटैत अछि। गाथामे गायनयोग्य पंक्तिक संग कथात्मक गद्य चलैत अछि। कारिखक चरित्र लोकसमाजक असुरक्षित जीवनसँ उठि सामूहिक रक्षक रूप धारण करैत अछि।

एहि गाथाक पाठसँ एक बात महत्त्वपूर्ण रूपेँ उभरैत अछि: लोकनायकक वैधता प्रायः राजकीय अभिलेखसँ नहि, बल्कि सामुदायिक गायन आ अनुष्ठानिक पुनर्स्मरणसँ स्थापित होइत अछि। मूल पृ. ८९–९३ एहि रूपान्तरणक स्रोत अछि। गीतक लय, आवृत्ति आ सम्बोधनकेँ गौण बुझि मात्र कथासार पढ़ला पर लोकगाथाक विशेष गुण छूटि जाइत अछि।

३.८ दुलरा दयाल | पृ. ९४–९६

‘दुलरा दयाल’मे मलाहक जातीय जीवन आ व्यवसायसँ जुड़ल रक्षक-नायकक स्मृति अछि। प्रकरणक आरम्भमे आम, पान, माछ, मखान आदिसँ सम्बद्ध उत्पादन आ मिथिलाक मलाह जीवनक उल्लेख कएल गेल अछि। तकर बाद दुलरा–दयालक कथा गोत्र, परिवार, प्रतिद्वन्द्विता आ स्मृतिक विस्तार करैत अछि।

मिथिलाक खाद्य-संस्कृति आ नदी-आश्रित जीवन जे सामाजिक खण्डमे वर्णित छल, एतए वीर-स्मृतिक माध्यम बनैत अछि। दुलरा–दयालक कथा वर्गीय-अधिकार, श्रम आ रक्षणक लोकमूल्यक अध्ययनक लेल उपयुक्त अछि। पृ. ९६ पर लेखक एहि गाथाक प्रति समुदायकेँ

जुड़ल श्रद्धा प्रदर्शित करैत छथि; ताहिसँ एकर सांस्कृतिक प्रभावक जानकारी भेटैत अछि, सर्वव्यापी ऐतिहासिक स्वीकृतिक प्रमाण नहि।

३.९ गाड़ो देवी | पृ. ९७–१००

गाड़ो देवीक कथा मलाहक लोकदेवीक उपासना आ परिवारक स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। पृ. ९७ पर लेखक गाड़ो देवीक स्मरण कएल जाएब, सरोवर/जलसँ सम्बन्धित लोकमान्यता तथा जन्मोत्सव-प्रसंगक गीत दैत छथि। गाथा मे पिता, सन्तान आ पारिवारिक वियोग-सङ्कटक स्वर प्रवाहित अछि।

एहि गाथामे स्त्री देवताक रूपमे सामुदायिक प्रतिष्ठाक अर्थ मोतीदाइक कथासँ अलग अछि। मोतीदाइमे नैतिक प्रतिरोधक प्रश्न केन्द्रस्थ अछि, जखन कि गाड़ो देवीक अंशमे समुदाय, वंश, जल-परिवेश आ जन्मक शुभकामनाक मेल भेटैत अछि। पृ. ९७–१००मे आवर्तित गायन-रूप किछु अंशमे प्रार्थनाक काम करैत अछि। ई रचना लोकगीत आ लोकगाथाक पारम्परिक वर्गसीमा कैं सहज रूपेँ पार करैत अछि।

३.१० जयसिंह | पृ. १०१–१०४

जयसिंहक गाथा कीर्तिपुरुषक वीरता आ अपन कुल-समाजक प्रतिष्ठाक कथा अछि। आरम्भमे लेखक जयसिंहक पूजन-सम्बन्धी परम्पराक उल्लेख करैत छथि। कथामे जसुमतिक सन्तान, पारिवारिक संकट, कमलाक पूजा-सम्बद्ध स्थान आ आराधनाक प्रसंग अबैत अछि। ई आख्यान राजकीय इतिहासक अपेक्षा लोकसमाजक प्रतिमानक रूपमे अधिक स्पष्ट अछि।

गाथाक गीतात्मक रचना स्मरणीय व्यक्तित्वकेँ लययुक्त सार्वजनिक शब्द देइत अछि। चूँकि मिथिलाक अनेक समुदायमे वीर-पूजाक परम्परा लोकप्रचलित अछि, जयसिंहक पाठ एकटा दृष्टान्त अछि जे देवत्व-सृष्टि केवल अतीत नहि, सामूहिक धार्मिक-सामाजिक व्यवहारक निरन्तर प्रक्रिया अछि।

३.११ अमरसिंह | पृ. १०५–१०७

अमरसिंहक कथा आरम्भमे ऐतिहासिक वीरताक स्वर लेइत अछि; बदलाक संघर्ष, प्रतिशोध, सामाजिक रक्षण आ स्थानीय पूजाक रूपमे कथा विकसित होइत अछि। पृ. १०६–१०७ पर बालकक रक्षण, युद्ध आ बलिदानक प्रसंग विशेष रूपसँ उभरैत अछि। तकर संग सम्बन्धित गीतांश वीरक स्मृतिक जनभाषिक अभिव्यक्ति बनैत अछि।

एहि गाथाक सम्यक् समीक्षामे वीरक महिमा आ कथाक हिंसात्मक घटनाक बीच दूरी राखब आवश्यक अछि। लोकगाथा सामुदायिक मानबोधक स्रोत अछि, कोनो सामाजिक समूहक विरुद्ध वैमनस्यक निर्देश नहि। पुस्तक द्वारा उपलब्ध प्रसंगकेँ कथा-इतिहासक स्रोत मानि शोध कएल जा सकैत अछि; मुदा घटना, तिथि आ पात्रक बाह्य अभिलेखीय सत्यापन अलग काम होयत।

३.१२ केवल महाराज | पृ. १०८–११०

केवल महाराजक गाथा मलाह जातिक सामूहिक स्मृतिसँ सम्बद्ध अछि। सात समुद्र-पार विस्तार, संघर्ष आ अपनेँ समाजक लोकदेवताक रूपमे केवल महाराजक प्रतिष्ठा प्रमुख रूपक छथि। मूल कथाक आरम्भमे ‘सात समुद्र’ आ शासनक मिथकीय विस्तारक उल्लेख अछि; ई काव्यात्मक अतिशयोक्ति बुझबाक चाही, राजकीय भूगोलक प्रमाण नहि।

गाथाक मूल नाटकीय शक्ति दृढ़ता, विपत्तिमे अडिग रहब आ आत्मीय समुदाय लेल संघर्षमे अछि। पृ. १०८–११०क संक्षिप्त कथा बुझबैत अछि जे देवी-देवता वा लोकरक्षकक उन्नति कथाक भीतर मानवीय साहससँ जुड़ि सकैत अछि। लोकगाथाक व्याख्यामे अतिशयोक्तिक उपयोग भावात्मक सत्य रचैत अछि, बाह्य ऐतिहासिक सत्य नहि।

३.१३ दीना–भद्री | पृ. १११–१२०

दीना–भद्री ग्रन्थक सर्वाधिक सामाजिक अर्थवाला दीर्घ प्रकरणसभमे अछि। लेखक कृषक-मजदूर, विशेषतः मुसहर समुदाय आ कृषि-जीवनक असमानताक चर्चा करैत गाथामे प्रवेश करैत छथि। सन्तान, श्रम, खेत, उत्पीड़न, बन्धन, प्रतिरोध आ लोकनायकक प्रतिष्ठा एक्कहि

आख्यानमे परस्पर गुंथल छथि। एतए जातीय रक्षकक कथा जीविकाक संघर्षसँ अलग नहि भऽ सकैत अछि।

पृ. १११–११८ पर आर्थिक अभाव आ कृषिकठिनाइकेँ वर्णित करनिहार अंशसभ गाथाक सामाजिक पृष्ठभूमि निर्मित करैत अछि। पृ. ११९–१२० पर लेखक दीना–भद्रीक जातीय स्मृतिमे स्थान आ संघर्षशील प्रतिमा स्पष्ट करैत छथि। ई पाठ सामन्ती अथवा प्रभुत्ववादी सम्बन्धपर लोक-स्मृतिक प्रतिक्रिया रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। एहि व्याख्यामे ‘वर्ग-प्रतिरोध’ एकटा आलोचनात्मक दृष्टि अछि, लेखक द्वारा सर्वत्र अपनाओल स्थिर शब्द नहि।

गाथाक महत्त्वक कारण ई जे मजूरक जीवन-यथार्थ केन्द्रीय साहित्यिक वस्तु बनि जाइत अछि। ताहि संग अति-नायकत्व, लोकआस्था आ सामूहिक अभिलाषाक मेल सेहो अछि। पाठ समीक्षककेँ सतर्क करैत अछि जे गरीब समुदायकेँ केवल पीड़ित छवि मे कैद नहि कएल जाय; हुनकर संगठन, स्वाभिमान आ प्रतिरोधक कल्पनाकेँ सेहो महत्व देल जाय।

३.१४ बेनीराम | पृ. १२१–१३३

बेनीराम प्रकरणमे नाउ आ कुरेड़ीक जातीय देवताक रूपमे बेनीरामक पूजाक उल्लेख अछि (पृ. १२१)। लेखक लोकविश्वासक गहराइ, जन्म-सम्बन्धी गीत, पारिवारिक सम्बन्ध आ कठिन परिस्थिति मे पात्रक साहसक विस्तृत कथा प्रस्तुत करैत छथि। एहि खण्डमे गाथात्मक गायनक पंक्ति पर्याप्त मात्रामे उपलब्ध अछि; ताहि लेल ई केवल एक कहानीक सार नहि, मौखिक स्मृतिक लयात्मक दस्तावेज सेहो अछि।

पृ. १२२–१२८ पर कथानकक घटनाक संग विश्वास, संकट, टकराव आ पूजा-प्रतिष्ठाक दृश्य चलैत अछि; पृ. १२९–१३३ मे कथाक विकास अधिक व्यापक सामाजिक संवादक रूप लैत अछि। ई गाथा देखबैत अछि जे सामाजिक समूह अपन आदर्श-पुरुषकेँ परिवार, पूजा, संघर्ष आ जीविका-परम्पराक मिलनस्थलमे प्रतिष्ठित करैत अछि।

अनुसन्धानक दृष्टिसँ बेनीराम प्रकरण विशेष उपयोगी अछि: जातीय देवताक सामुदायिक प्रसार, विभिन्न गायन-पाठक रूपान्तर आ स्थानीय स्मारक/पूजा-स्थलक स्वतंत्र क्षेत्र-

सत्यापनक प्रश्न एतए उठैत अछि। मुदा पुस्तकमे एहन समस्त वैकल्पिक पाठक वैज्ञानिक तुलना नहि देल गेल अछि; अतः ग्रन्थक उपलब्ध पाठकेँ एक विशिष्ट संकलित रूप मानल जाय।

४. गहबर गीत: अनुष्ठान, देवी-स्मृति आ लोकभाषाक बहुवचन | पृ. १३४–१४९

‘गहबर गीत’ पुस्तकक अन्तिम आ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंश अछि। आरम्भमे लेखक मिथिलाक लोकगीतक विस्तृत संसारक चर्चा करैत छथि—विवाह, संस्कार, उत्सव, जन्म, ऋतु, विभिन्न देवता आ स्थानीय आस्था सँ सम्बन्धित गायनरूपसभ। गहबर-गीतक विशेष सम्बन्ध देव-आवाहन, देवी-देवता, पूर्वज-स्मृति आ सामूहिक धार्मिक अनुष्ठानसँ स्थापित होइत अछि (पृ. १३४–१३६)। एहि लेल गहबर-गीत केवळ स्वायत्त कविताक ‘पाठ’ नहि, विशेष अवसरपर कएल जाएवाला ‘कार्य’ सेहो अछि।

पृ. १३६–१३७मे लेखक आह्वानक परम्परा आ लोकभाषामे संस्कृत धार्मिक ध्वनिक स्थानीय रूपान्तरक सन्दर्भ दैत छथि। कालीक उपस्थिति, ‘गहबर’क धार्मिक स्थल-कल्पना आ आवर्तित सम्बोधनसँ ई रचना सामूहिक आग्रहक रूप लैत अछि। पृ. १३८–१४९क अनेक गीतांशमे बारम्बार नाम, देवीक सम्बोधन, कथा-नायकक स्मरण, नदी-वन-धाम, व्रत-जकाँ अनुष्ठान-भाव आ विशिष्ट लोकलयक संकेत भेटैत अछि।

विशेष ध्यान देबाक बात अछि जे गहबर-गीतक भीतर कालीसँ सम्बन्धित सामग्रीक संग कारिख, दुलरा आदि लोकदेवताक स्मरण सेहो अबैत अछि। एहि सँ शास्त्रीय देवी-उपासना आ जातीय लोकदेवताक परम्परा पूर्णतः परस्पर-विरुद्ध नहि बुझाइत अछि। मिथिलाक अनेक धार्मिक व्यवहारकेँ ‘लोक’ आ ‘शास्त्र’मे कठोर खण्डमे बाँटब कठिन; ग्रन्थक अन्तिम खण्ड एहि कठिनाइकेँ प्रत्यक्ष देखबैत अछि।

समीक्षकीय दृष्टिसँ एहि खण्डक एकटा प्रमुख सीमा ई अछि जे गेय पाठक छन्द-ताल, धुन, अवसर, गायिका/गायकक सामाजिक परिचय, स्थान आ प्रदर्शनक कालक्रमक व्यवस्थित अभिलेखन एतए उपलब्ध नहि अछि। मौखिक परम्पराक अध्ययन लेल लिखित शब्द जरूरी

अछि, मुदा स्वर आ सामूहिक सहभागिता सेहो मूल सामग्रीक अङ्ग छथि। यूनिस्कोक मौखिक धरोहरसम्बन्धी दस्तावेज सेहो गायनक भिन्नता, प्रदर्शनक प्रसंग आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरणकेँ मुख्य मानैत अछि; ई कसौटी ग्रन्थक भविष्यक पुनःअध्ययन लेल उपयुक्त अछि।

पृ. १४८–१४९ पर अन्तिम गेय अंशमे कारिखक सम्बोधन, वन-परिवेश, सेवक आ धार्मिक स्मृतिक सूत्रक आवृत्ति भेटैत अछि। पुस्तकक अन्त एहि प्रकारें लोकजीवनक विविध शाखाकेँ पुनः लोकगीतमे एकत्र करैत अछि। एहि रचनात्मक समापनक कारण ग्रन्थक शीर्षक —‘लोकजीवन ओ लोकसाहित्य’—केँ सार्थक व्याख्या भेटैत अछि।

५. समेकित आलोचनात्मक विवेचन

५.१ जातीय पहिचान आ देवता-निर्माण

ग्रन्थमे जातीय समाजक परिचय आ जातीय लोकदेवताक गाथा एक-दोसराक पूरक अछि। डोम–श्यामसिंह, चमार–लालवन, हलुआइ–गणिनाथ/फेकूराम, मलाह–दुलरा दयाल/गाड़ो देवी/केवल महाराज, मुसहर–दीना-भद्री आ नाउ/कुरेड़ी–बेनीराम जकाँ सम्बन्ध पुस्तकक अन्तःसंरचनामे स्पष्ट रूपेँ उपस्थित छथि। ई सम्बन्ध केवल देवता-नामक सूची नहि; सामूहिक स्मृतिमे सुरक्षा, उत्पत्ति, आघात, गौरव आ नैतिक अधिकारक निर्माणक प्रक्रिया अछि।

कथामे कोनो पात्रक मृत्यु अथवा संकट बाद ओकरा लोकदेवताक प्रतिष्ठा भेटब विशेष अध्ययनयोग्य अछि। समुदाय अपना पीड़क, रक्षक, वंश आ माटिसँ सम्बन्धित अनुभवकेँ उपासना-परम्परामे स्थायित्व देबाक प्रयत्न करैत अछि। मुदा जातीय देवताक ऐतिहासिक अस्तित्व, तकर पूजा-प्रसारक तिथि आ कथा-घटनाक सचाई एक्कहि प्रश्न नहि। जातीय लोकविश्वासक सांस्कृतिक शक्ति स्वीकार करैतहुँ प्रमाण-पद्धतिक ई तीन स्तर पृथक् राखब आवश्यक अछि।

५.२ श्रम, पेशागत शब्दावली आ स्थानीय पारिस्थितिकी

बाँसक कारीगरी, चमड़ासँ सामग्री, कपड़ा धोअन, जल-आधारित आजीविका, मधु-संग्रह तथा कृषि-मजूरीक उल्लेख समूचा ग्रन्थमे लोकजीवनक आर्थिक आधार स्थापित करैत अछि। एतए लोकसाहित्यक अध्ययन ‘के गाबैत अछि?’ सँ आगाँ ‘कोन काम करैत अछि, कोन सामग्री उपयोग करैत अछि, केकर संग व्यवहार करैत अछि?’ धरि जाइत अछि। ई दृष्टि पुस्तकक बड़ी उपलब्धि अछि।

लोकगीतक शब्दावली स्थानीय पर्यावरणक अनौपचारिक कोश बनि सकैत अछि। नाव, नदी, माछ, गाछ, मधु, वन, बाँस आ घरेलू उपयोगक वस्तु पाठकेँ भौगोलिक आधार दैत छथि। मुदा लोकप्रयोगसँ वैज्ञानिक वनस्पति-प्रजाति, पर्यावरणीय परिवर्तन अथवा श्रम-आर्थिक आँकड़ा सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि। अधिक अध्ययन लेल समुदायसँ पुनः संवाद, वस्तु-प्रदर्शनक दृश्य-अभिलेख आ क्षेत्रीय शब्दरूपक तुलनात्मक कोश तैयार कएल जाएब आवश्यक होयत।

५.३ करुणा, वीरता, स्त्री-पात्र आ सामाजिक प्रतिरोध

गरीबन भुजड़ा आ दीना–भद्रीक गाथामे दरिद्रता आ श्रम-शोषणक स्वर; श्यामसिंह, जयसिंह, अमरसिंह, केवल महाराज आदिमे वीरता आ रक्षणक स्वर; मोतीदाइ आ गाड़ो देवीमे स्त्रीक प्रतिष्ठा, पारिवारिक आस्था आ संकट—ई सभ ग्रन्थक अलग-अलग भावलोक छथि। एहि भिन्नताकेँ एकटा मात्र ‘लोकवीर’ अथवा ‘भक्तिकथा’क साँचा मे ठेलब पुस्तकक वैविध्यक हानि होयत।

स्त्री पात्रक प्रसंग विशेष विवेचन माँगैत अछि। मोतीदाइकेँ नैतिक निर्णयक शक्ति सहित पढ़ल जा सकैत अछि; गाड़ो देवीक कथा सामुदायिक मातृत्व/देवीत्वक स्मृतिक सांस्कृतिक भूमिका खोलैत अछि। मुदा एहि दू कथासँ सम्पूर्ण मिथिला-स्त्रीक जीवनपर सामाजिक निष्कर्ष निकालब अनुचित अछि। एकल गाथा व्यक्तिगत अथवा सामुदायिक कल्पनाक साक्ष्य अछि; व्यापक सामाजिक दावा लेल बहुविध प्रमाण अपेक्षित अछि।

५.४ कथात्मक संरचना आ गेय भाषा

पुस्तकक गाथासभमे आरम्भक परिचय, संकट, प्रतिद्वन्द्विता, असाधारण कर्म, परिणाम आ अन्ततः स्मृति/पूजाक क्रम बारम्बार उपस्थित अछि। मुदा सभ गाथा एक्कहि संरचनामे नहि बँधैत। कतहु जन्मोत्सव वा कामना गीत महत्त्वपूर्ण अछि, कतहु वीरताक प्रसंग, कतहु स्त्रीक अस्वीकार, कतहु नदी-वनक काज आ कतहु लोकदेवताक आह्वान। गद्यकथन आ गीतपंक्ति बारी-बारी अबैत छथि, जाहिसँ कथा सुनयब आ गायब—दूनू क्रिया भिन्न बुझाइत अछि।

लोकगीतक भाषामे सम्बोधन, पुनरावृत्ति, ध्वन्यात्मक प्रभाव, व्यवसायसँ सम्बन्धित विशिष्ट शब्द आ स्थानीय उच्चारण-रूप रचना के विशिष्ट बनबैत अछि। एहि भाषाकेँ मानक लिखित गद्यक वर्तनीक आधारपर ‘अशुद्ध’ बतायब लोकसाहित्यक मूल स्वभावक विरुद्ध होयत। सम्पादन करबाक समय मूल गायनरूप, अर्थ-टिप्पणी आ सम्भावित मानक रूप अलग-अलग स्तरपर सुरक्षित राखबाक चाही। एहन बहुस्तरीय प्रस्तुति आगामी वैज्ञानिक संस्करणक लेल अधिक उपयोगी होयत।

५.५ पाठ-संग्रह आ क्षेत्रकार्यक प्रमाण-सङ्कट

मूल ग्रन्थक विशेष उपलब्धि कथासभकेँ पुस्तकाकार सुरक्षित करब अछि। लेखक १९८६क भूमिका आ २०१८क परिचयमे लोकसाहित्य-अनुसन्धानक विभिन्न पूर्ववर्ती प्रयत्नक नाम उल्लेख करैत छथि (पृ. ४–१०, २८–३२)। मुदा प्रत्येक गीत वा कथा लेल एक्कहि ढाँचा मे गायक/सूत्रधारक नाम, उमेर, गाम, संग्रह-दिनांक, प्रदर्शन-अवसर, वाद्य, धुन, विविध पाठ तथा सम्पादनक नीति नहि भेटैत अछि। ई सीमाक अर्थ संग्रह निष्फल नहि; अर्थ ई जे ओकरा आधुनिक अभिलेखीकरणक कसौटीपर पुनः व्यवस्थित करबाक कार्य बाकी अछि।

अमेरिकन फोकलोर सोसाइटीक क्षेत्रकार्य-सम्बन्धी वक्तव्य अनुसन्धानकेँ सहभागी, सम्बन्ध-आधारित आ समुदायसँ सीखबाक प्रक्रिया मानैत अछि। एहि दृष्टिसँ एकटा नव पाठ-संस्करणमे केवल संकलकक टिप्पणी नहि, गायक, गायिका, श्रोता आ सम्बन्धित समुदायक

मूल्याङ्कन सेहो अभिलेखित होयब चाही। मौखिक परम्परा परम्परानुसार बदलैत अछि; एकमात्र मुद्रित पाठकेँ अपरिवर्तनीय ‘मूल’ मानि लेब वैज्ञानिक रूपसँ कठिन अछि।

५.६ ग्रन्थक काल-सन्दर्भ, जातीय भाषा आ आलोचनाक मर्यादा

ग्रन्थक पहिल संस्करण १९८६क अछि। ताहि कारणेँ जातीय शब्द, सामाजिक अनुक्रम, उत्पत्ति-सम्बन्धी मान्यता आ पारम्परिक पेशाक वर्णनमे मूल कालखण्डक सामान्यीकरण भेटब स्वाभाविक अछि। एहि रूपसभकेँ मौन रूपसँ बदलि देब मूल पाठसँ छेड़छाड़ होयत; मुदा बिना आलोचनाक नव पीढ़ीक सोझाँ रखबो उचित नहि। सर्वश्रेष्ठ उपाय अछि—मूल शब्द उद्धृत/सन्दर्भित करू, ओकर ऐतिहासिक प्रयुक्ति बताउ, वर्तमान समुदायसँ स्वीकृत नाम अलग संग्रह करू।

किछु उत्पत्ति-विवरण पुराकथा पर आधारित छथि, किछु व्युत्पत्तिक व्याख्या लेखकक मतपर। ओहि मतसभकेँ भाषाविज्ञान अथवा इतिहासक निर्विवाद सिद्धान्त घोषित नहि कएल जा सकैत अछि। एहि समीक्षामे जे विचार ‘लेखक उल्लेख करैत छथि’क रूपेँ प्रस्तुत अछि, से मूल ग्रन्थक अन्त:साक्ष्य अछि; जे विचार ‘आलोचनात्मक दृष्टिसँ’क रूपेँ अछि से एहि अध्ययनक व्याख्या अछि। ई भेद प्रमाणिकताक शर्त अछि।

६. बाह्य अनुसन्धानक आलोकमे ग्रन्थक मूल्याङ्कन

यूनेस्कोक २००३क अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरसम्बन्धी अभिसमय मौखिक परम्परा, प्रदर्शनकला, सामाजिक व्यवहार/अनुष्ठान, प्रकृति-सम्बन्धी ज्ञान आ पारम्परिक शिल्पकेँ परस्पर सम्बन्धित क्षेत्र मानैत अछि। ‘लोकजीवन ओ लोकसाहित्य’क आन्तरिक विषय-विन्यास एहि पाँचमे सँ अनेक क्षेत्र एक्कहि पुस्तकमे समाहित करैत अछि। डोमक बाँस-कर्म आ कुरेड़ीक मधु-संग्रह पारम्परिक कौशल/प्रकृति-ज्ञानक दृष्टान्त बनैत अछि; गहबर-गीत सामाजिक अनुष्ठानक, आ गाथासभ मौखिक अभिव्यक्तिक दृष्टान्त बनैत छथि। ई आधुनिक कसौटीक तुलना अछि; १९८६क लेखकपर २००३क सिद्धान्तकेँ पूर्वप्रभावक रूपमे आरोपित नहि करब चाही।

यूनेस्को मौखिक परम्पराकेँ बदलैत प्रस्तुति, परिवर्तित कथन आ पीढ़ी-सञ्चरणक जीवित प्रक्रिया मानैत अछि। एहि कसौटीसँ ग्रन्थक संरक्षणात्मक उपलब्धि महत्त्वपूर्ण होइतहुँ एतए छपल कथा ककर आवाजमे, कोन प्रसंगमे आ कोन परिवर्तित रूपमे प्रस्तुत भेल—एहि प्रश्नसभक नवीकृत क्षेत्र-अनुसन्धान आवश्यक अछि। जीवित परम्पराकेँ केवल संग्रहालयक स्थिर वस्तु नहि मानि समुदाय द्वारा वर्तमान समयमे पुनःरचना करबाक अवसरक रूपमे पढ़ब चाही।

अमेरिकन फोकलोर सोसाइटीक अनुसन्धान-सम्बन्धी वक्तव्यक अनुसार लोक-समाजक सदस्य मात्र ‘जानकारी देनिहार’ नहि, परम्पराक सक्रिय कलाकार, ज्ञाता आ सह-अर्थनिर्माता छथि। एहि आधारपर ग्रन्थक पाठक यदि डोम, मलाह, मुसहर अथवा अन्य समुदायपर नव लेखन करैत छथि, ताहि लेल हुनकर प्रत्यक्ष परामर्श, सहमति, शब्द-प्रयोगपर सहभागिता आ पाठक पुनःसत्यापन उपयोगी होयत। ई ग्रन्थक आलोचनात्मक विस्तार अछि, मूल लेखक द्वारा पूर्ण कएल कार्यक दावा नहि।

७. उपलब्धि, सीमा आ समग्र निष्कर्ष

ग्रन्थक प्रमुख उपलब्धि

पहिल उपलब्धि—लेखक लोकसाहित्यकेँ समाजक परिधिक मनोरञ्जन नहि, सामाजिक अध्ययनक केन्द्र बनबैत छथि। दोसर—समुदाय-विशेषक व्यवसाय, शब्द, उत्पत्ति-सम्बन्धी परम्परा आ देवताक उपासना एक्कहि संकलनमे दैत छथि। तेसर—चौदह लोकगाथाक क्रमवार चर्चा समृद्ध मौखिक कथाभण्डारक परिचय करबैत अछि। चारिम—गहबर-गीत द्वारा शास्त्रीय धार्मिक प्रतीक आ लोकदेवताक संमिश्र सांस्कृतिक स्थल देखबैत छथि। पाँचम—पुस्तकक १९८६ सँ २०१८ धरि प्रकाशन-यात्रा मैथिली लोकसाहित्य अध्ययनक कालगत सन्दर्भ स्वयं उपलब्ध करैत अछि।

मौलिक योगदानक स्तरपर विशेष बात अछि जे पहिल भागक जातीय सामाजिक वर्णन आ दोसर भागक लोकगाथा एक-दोसराक अर्थ पोसैत अछि। उदाहरणार्थ, ‘मलाह’ पढ़बाक बाद

‘दुलरा दयाल’ आ ‘गाड़ो देवी’ अधिक सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि; ‘हलुआइ’ पढ़बाक बाद ‘गणिनाथ–गोविन्द’क धार्मिक प्रतिष्ठा अधिक स्पष्ट होइत अछि; ‘कुरेड़ी’ पढ़बाक बाद ‘बेनीराम’क सामाजिक सम्बन्धकेँ समझब सहज भऽ जाइत अछि। ई आन्तरिक वास्तु-रचना ग्रन्थक वास्तविक शक्ति अछि।

आलोचनात्मक सीमा

ग्रन्थमे प्रत्येक संकलित गीतक प्रदर्शन-परिस्थिति, मूल सूत्रधार, तिथि आ विकल्प-पाठक व्यवस्थित, एकरूप सूची उपलब्ध नहि अछि। जातीय विवरणमे कतहु उत्पत्ति-कथाक सन्दर्भ आ पेशागत स्थिति एकहि प्रवाहमे चलैत अछि; ताहि कारणेँ ऐतिहासिक प्रमाण आ सामाजिक मिथकक बीच सीमानिर्धारण पाठकक जिम्मेदारी बनि जाइत अछि। कतिपय प्रकरणक आकार अत्यन्त असमान अछि—चमारक दू पृष्ठक संक्षिप्त परिचयक तुलना मलाहक सात पृष्ठक विवेचन आ बेनीरामक दीर्घ कथा सँ कएल जा सकैत अछि। ई असमानता विषयक ऐतिहासिक महत्त्वक निश्चित माप नहि, उपलब्ध सामग्री वा लेखकीय चयनक परिणाम सेहो भऽ सकैत अछि।

कोनो लोकगाथाक मुद्रित रूप समाजक समस्त संस्करणक प्रतिनिधित्व नहि करैत अछि। महिला कलाकारक स्वर, संगीतात्मक प्रस्तुति आ सम्बन्धित समुदायक आजुक अनुभवकेँ एकत्र करब पुस्तकक आधारपर अगिला अनुसन्धानक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र अछि। मुदा ई अपेक्षा राखैत ग्रन्थक समय, उद्देश्य आ उपलब्ध साधनक सापेक्ष तौलन जरूरी अछि।

निष्कर्ष

‘लोकजीवन ओ लोकसाहित्य’ मैथिली लोकवार्ताक एहन ग्रन्थ अछि जकरा केवल ‘गाथा-संग्रह’ कहब कम पड़त। ई पुस्तक सामाजिक व्यवसाय, लोकविश्वास, नामकरण, लोकदेवता आ गेय आख्यानक अन्तर्सम्बन्धक एकटा उल्लेखनीय दस्तावेज अछि। एकर सर्वोत्तम पाठ ओहि समय सम्भव अछि जखन लोककथा केँ लोककथा, पुराकथात्मक दावा केँ लोकविश्वास,

समाजक विवरण कैं काल-विशेषक अवलोकन, आ आलोचनात्मक अनुमान कैं अनुमानक रूपेँ अलग-अलग पहचानल जाय।

पोथी पाठककेँ ई बुझबैत अछि जे मैथिलीक लोकसाहित्य केवल ‘कहानी’ नहि; ओ श्रमक स्मृति, अन्यायक विरुद्ध सामूहिक कल्पना, सन्तानक कामना, नदी आ वनक व्यवहारिक ज्ञान, स्त्रीक दृढ़ता, जातीय आत्मसम्मान आ देवी-देवताक उपासनाक भाषिक स्वरूप सेहो अछि। वैज्ञानिक अनुसन्धानक दृष्टिसँ ग्रन्थक महत्त्वपूर्ण भूमिका आरम्भिक प्रमाणसंग्रह आ व्याख्याक द्वार खोलब अछि। एहि द्वारसँ आगाँ बढ़बाक लेल मूल पाठक सम्मान, समुदाय-सहभागिता, विस्तृत क्षेत्रकार्य आ स्रोत-आधारित पाठालोचनाक आवश्यकता अछि।

८. मूल विषय-सूचीअनुसार सम्पूर्ण प्रकरणक पृष्ठ-मानचित्र

मूल ग्रन्थक पृ. ३३क ‘क्रम’ आ पुस्तकक अन्तिम मुद्रित पृष्ठक आधारपर ई सूची बनाओल गेल अछि। पृष्ठ-परास अगिला शीर्षकक आरम्भसँ पहिनेक पृष्ठ धरि अछि; ई मूल अध्याय-शीर्षकक वैज्ञानिक क्रमवार संदर्शिका अछि।

मूल प्रकरण / खण्ड	मुद्रित पृष्ठ
भूमिका (प्रथम संस्करण)	
लेखकीय: लोकक अर्थ, साहित्य आ वर्गीकरण	११–३२
डोम जातिक सामाजिक स्वरूप	३५–४२
चमार जातिक सामाजिक स्वरूप	४३–४४
धोबी जातिक सामाजिक स्वरूप	४५–४९
हलुआइ जातिक सामाजिक स्वरूप	५०–५२
मलाह जातिक सामाजिक स्वरूप	५३–५९
कुरेड़ी जातिक सामाजिक स्वरूप	६०–६३
श्यामसिंह	६४–६६
लालवन बाबा	६७–६८

मूल प्रकरण / खण्ड	मुद्रित पृष्ठ
गरीबन भुजड़ा	६९–७३
मोतीदाइ	७४–७५
गणिनाथ–गोविन्द	७६–८६
फेकूराम	८७–८८
कारिख	८९–९३
दुलरा दयाल	९४–९६
गाड़ो देवी	९७–१००
जयसिंह	१०१–१०४
अमरसिंह	१०५–१०७
केवल महाराज	१०८–११०
दीना–भद्री	१११–१२०
बेनीराम	१२१–१३३
गहबर गीत	१३४–१४९

अध्याय 02 / १९८८–१९८९

संकल्प : विद्यापति-स्मृति-पर्व स्मारिका

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

मूल प्रकाशन-परिचय

शीर्षक: संकल्प (अङ्क ५)।

सम्पादक: डा॰ रामदेवझा; सहायक सम्पादक: डा॰ योगानन्दझा।

आयोजक/प्रकाशक-सन्दर्भ: संकल्पलोक (सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना मंच), लहेरियासराय, दरभंगा।

अवसर: विद्यापति-स्मृति-पर्व-समारोह १९८८; आयोजन तिथि: ४, ५, ६ फरवरी १९८९ (नामपृष्ठक शब्दानुसार)।

अन्त:सामग्री: सम्पादकीय, शुभकामना-पत्र, अध्यक्षीय/स्वागत भाषण, सचिवक प्रतिवेदन, शोध-निबन्ध, आलोचना, कविता, गीत, संस्मरण, कथा, आयोजन-विज्ञापन, प्रकाशन-सूची आ उपसमिति-विवरण।

मूल विषय-सूचीक ५५ प्रविष्टि: पाठ-आधारित विवेचन

नीचाँ प्रत्येक शीर्षकक सङ्गक आरम्भ-पृष्ठ आ ओहि सामग्रीक दस्तावेजी/साहित्यिक सार देल अछि। मूल विषय-सूचीमे शुभकामना-सन्देश आ कार्यक्रमगत सामग्री अलग-अलग क्रमांकमे अछि; ओहिकेँ साहित्यिक शोध-निबन्ध जकाँ नहि गनल गेल अछि।

01. सम्पादकीय

मैथिली भाषाक संवैधानिक मान्यता, बिहारमे द्वितीय राजभाषाक प्रश्न, शिक्षक-प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम, विद्यालय आ राजकीय निर्णयक प्रक्रियापर प्रत्यक्ष टिप्पणी। एहि आरम्भसँ स्मारिकाक सांस्कृतिक समारोहक चौहद्दी तोड़ि भाषायी अधिकारक सार्वजनिक दस्तावेज बनबाक दिशा स्पष्ट होइत अछि।

02. शुभकामना सन्देश: केन्द्र आ राज्य स्तर

सरकारी पदाधिकारीक पत्र, तिथि आ कार्यालयक मुद्रित संकेत समारोहक समकालीन सार्वजनिक सम्पर्क देखबैत अछि; एहिसँ कार्यक्रमक समर्थनक उपस्थिति सिद्ध होइत अछि, सरकारी नीतिक क्रियान्वयन नहि।

03. शुभकामना सन्देश: साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रतिनिधि

औपचारिक शुभेच्छा आ सहयोगक भाषा राजनीतिक-सांस्कृतिक नेटवर्कक द्योतक अछि। एहि सभ पत्रकेँ साहित्यिक आलोचनात्मक लेखक समकक्ष नहि, आयोजन-अभिलेखक अंश मानब उचित।

04. शुभकामना सन्देश: रेल-प्रशासन

रेल प्रशासनसँ प्राप्त पत्र समारोहक सामाजिक पहुँचक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। पत्रक आशय समर्थनक औपचारिक अभिव्यक्ति थिक; आर्थिक अथवा संस्थागत सहायता स्वत: सिद्ध नहि होइत अछि।

05. शुभकामना सन्देश: बिहार विधान परिषद

सांस्कृतिक आयोजन प्रति निर्वाचित संस्थाक प्रतिनिधिक प्रतिक्रिया मैथिली आन्दोलनक सार्वजनिक दृश्यता पर प्रकाश दैत अछि। पत्रमे व्यक्त सदिच्छा आ तथ्यगत उपलब्धिक बीच अन्तर राखब आवश्यक।

06. शुभकामना सन्देश: अन्य संस्थागत प्रतिनिधि

समारोहक सम्बन्ध-सम्पर्कक बहुपक्षीय स्वरूप देखाइत अछि। मूल पत्रक नाम, पदा आ तिथिक सहायता सँ संस्थागत इतिहास तैयार भऽ सकैत अछि; धुँधल अंकक आधार पर नाम पुनर्निर्मित नहि कएल गेल अछि।

07. शुभकामना सन्देश: अन्तिम पत्रसमूह

शुभकामना पत्रक क्रम सजग संस्थागत आयोजनक संकेत अछि। पत्रसभकेँ कार्यक्रमक घोषित उद्देश्य आ आयोजनक वास्तविक अभिलेखक बीच सेतु मानल गेल अछि।

08. समारोह-सन्दर्भक पत्राचार

स्मारिका मुद्रित करबाक पूर्वक संगठनात्मक प्रयास आ सम्पर्कक श्रृंखला स्पष्ट करैत अछि। किछु मुद्रित नाम अस्पष्ट होयबाक कारण एहि अध्ययनमे पाठक पुष्टि सँ बेगर व्यक्तिगत पहचान नहि देल गेल अछि।

09. शुभकामना

समारोहक निमित्त एकत्र शुभेच्छासभ एतय अपना आपमे सांस्कृतिक साक्ष्य अछि; साहित्यिक गुणवत्ता आ आयोजनक सामाजिक स्वीकृतिक मूल्याङ्कन पृथक् राखल गेल अछि।

10. संस्थाध्यक्षक भाषण

संकल्पलोकक अभिप्राय, विद्यापति-समारोहक औचित्य आ मैथिली-साहित्य-संरक्षणक उद्देश्यपर केन्द्रित। भाषण स्मारिकाक घोषित मिशन बुझबाक मूल स्रोत थिक; प्रचारात्मक वक्तव्यकेँ स्वतंत्र रूपसँ परीक्षित ऐतिहासिक तथ्य नहि मानबाक चाही।

11. स्वागताध्यक्षक भाषण

अतिथि-स्वागतक औपचारिक चौखट भीतर मैथिली भाषाक सामाजिक-प्रासंगिकता आ सम्मेलनक सामूहिक उद्देश्य रखल गेल अछि। साहित्यिक जनसमूह आ स्थानीय सांस्कृतिक संगठनक सम्बन्ध एहि लेखनमे देखाइत अछि।

12. सचिवक प्रतिवेदन

प्रशासनिक, आर्थिक आ आयोजनसम्बन्धी संकेत देनिहार महत्त्वपूर्ण समकालीन दस्तावेज। प्रतिवेदनक दावाक जाँच बजटक मूल खाता वा अन्य अभिलेखसँ करब उपयुक्त, कारण ई आयोजक पक्षक विवरण थिक।

13. कविकोकिल

विद्यापति-स्मृतिक आरम्भिक साहित्यिक स्वर। शीर्षक आ पाठमे कविक कर्तव्य, भाषा-प्रेम आ सार्वजनिक अभिव्यक्तिक प्रसंग देखाइत अछि; समारोहक आग्रह कवितात्मक भाषामे आएल अछि।

14. जागृति

मिथिला आ मैथिली समाजक जागरणक आवाहन मुखर अछि। पुनरावृत्ति आ उद्बोधनात्मक लय सार्वजनिक पाठ लेल उपयुक्त, तथापि एहि घोषणात्मक स्वरक संग सामाजिक जटिलताक विस्तृत चित्रण कम भेटैत अछि।

15. महाकवि विद्यापतिक मूर्ति कोन प्रकारक हो?

बाबू भोलालालदास कृत निबन्ध मूर्ति-रूपक प्रश्नकेँ सांस्कृतिक स्मृति, इतिहासक प्रमाण आ जातीय कल्पनाक सवाल बनबैत अछि। २४ दिसम्बर १९३७ केँ मिथिला मिहिरमे मुद्रित पूर्व निबन्धक संकेत आरम्भमे देल अछि। लेखक प्रतिमाक बाह्य रूपसँ अधिक ऐतिहासिक अस्मिताक सन्दर्भ उठबैत छथि।

16. युगपुरुष नेहरू

नेहरूक राजनीतिक व्यक्तित्व, आधुनिक भारतक परिवर्तन आ सार्वजनिक स्मृतिक साहित्यिक प्रतिपादन। ई रचना विद्यापति-विषयक संकीर्ण सीमासँ बाहर राष्ट्रीय विचारक प्रसंग आनैत अछि।

17. कहिया धरि? कहिया धरि

प्रश्नवाचक दोहराव प्रतीक्षा, असन्तोष अथवा परिवर्तनक आकांक्षाकेँ लय दैत अछि। प्रश्न-रचना एहि कविताक प्रमुख अलङ्कार बनैत अछि; अर्थ-पाठमे संदर्भक निर्णायकता बनल रहैत अछि।

18. अहाँकेँ स्वतन्त्र लिखय पड़त

कवि आरसीप्रसादसिंहक काव्यात्मक आत्मनिर्णयक प्रखर स्वर। कविता लिखबाक सामाजिक प्रयोजन, अभिव्यक्ति-स्वातन्त्र्य, लेखकीय विवेक आ पाठकक जिम्मेदारी पर बारम्बार प्रश्न उठबैत अछि। एहि रचनाकेँ संस्थागत आ भाषायी विमर्शक पृष्ठभूमिमे पढ़ला पर आलोचनात्मक प्रतिरोधक मूल्य बढ़ैत अछि।

19. एक गजल / गमे

गजल-रूपक समावेश सँ स्मारिका पद्य-परम्परा आ नूतन अभिव्यक्तिक संयोग प्रस्तुत करैत अछि। संक्षिप्त पंक्ति-विन्यास आ भाव-सघनता एहि विधाक विशिष्टता थिक; शीर्षकक एक अंशक मुद्रण अस्पष्ट अछि।

20. प्राचीन ओ अर्वाचीन

प्राचीन परम्परा आ समकालीन साहित्यिक चेतनाक सम्बन्ध पर विचार। एकरा अतीत-पूजाक सरल पाठ नहि, परम्परा-विचारक बदलैत मानदण्डक प्रश्नक रूपमे पढ़ब उपयोगी अछि।

21. शंका समाधान

प्रश्न-उत्तर अथवा संशय-निरसनक रूप प्रयोग कएल गेल अछि। गद्यक मध्य छोट रचनाक उपस्थिति अङ्ककक पठनलयमे विरामक काज करैत अछि।

22. प्रो॰ जगन्नाथप्रसादमिश्र: एक संस्मरण

व्यक्तिगत स्मृति मार्फत मैथिली बौद्धिक समाजक एक व्यक्तित्वक पुनर्स्मरण। आत्मीय संस्मरणक साक्ष्य-मूल्य महत्त्वपूर्ण होइतहुँ घटनाक प्रत्येक तिथि आ प्रत्यक्ष कथनक स्वतंत्र जाँच आवश्यक होइत अछि।

23. एक कविता: एक गीत

एके पृष्ठ पर कविता आ गीत राखि भिन्न लयात्मक स्वरक सह-अस्तित्व देखाओल गेल अछि। एहन प्रस्तुति समारोहक पाठ-संस्कृति, गेयता आ मुद्रित काव्यक अन्तःसम्बन्ध पर ध्यान खिचैत अछि।

24. ओ दिन, ओ लोक

‘दिन’ आ ‘लोक’क जोड़सँ बीतल समयक जीवन-परिवेशक स्मृति विकसित होइत अछि। आत्मस्मृतिक माध्यमे सामाजिक इतिहासक अंश सुरक्षित होइत अछि; निजी अनुभवकेँ समस्त समाजक प्रतिनिधि चित्र नहि मानब उचित।

25. स्वागत हे नव वर्ष

नव वर्षक प्रति सम्बोधनमे आशा, परिवर्तन आ सामूहिक आकांक्षाक रङ्ग अछि। स्मारिकामे विषयरूपेँ विद्यमान समकालीन समय-बोधक छोट प्रमाण थिक।

26. मिथिलाक स्थान-नाम: एक सर्वेक्षण

डा॰ श्रीविलोकनाथझाक लेखमे स्थाननामकेँ देवता, पुराण, राजा-महाराजा, लोक-नाम, व्यक्ति, वनस्पति आ स्थानीय उच्चारण सँ जोड़ि वर्गीकृत करबाक प्रयास अछि। उदाहरणक

सूची महत्त्वपूर्ण आरम्भिक सामग्री दैत अछि; प्रस्तावित व्युत्पत्तिक प्रमाणस्तर नाम-नाम पर समान नहि मानल जा सकैत अछि।

27. मैथिलीक व्यथा

भाषाक पीड़ाकेँ व्यक्तित्व दऽ जनचेतनाक स्वर तैयार करैत अछि। ई रचना सम्पादकीयक नीति-विमर्शक भावनात्मक समकक्ष-जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

28. पर हस्त गता गता

शीर्षकमे संस्कृत-उक्ति समान सूत्रक सहारे आश्रितता, स्वाधीनता अथवा हस्तान्तरणक प्रश्न आओत अछि। निबन्धक व्यङ्ग्य आ तर्कात्मक चाल पाठकसँ सामाजिक प्रतिमान पर विचार माँगैत अछि।

29. संकल्प

पत्रिकाक नामक समान शीर्षक सँ संस्था-स्वर आ काव्य-स्वरक सीधा सम्बन्ध बनैत अछि। संकल्पक भावी क्रियात्मकता आ आत्मप्रतिबद्धता एतय केन्द्रमे अछि।

30. अरजेन्ट चिट्ठी

‘चिट्ठी’क माध्यमे संवादक तत्परता आ बोलचालक विन्यास काव्य-भाषा/लघु रचनामे प्रवेश करैत अछि। शीर्षकक अंग्रेजीजन्य ‘अरजेन्ट’ उपस्थिति भाषिक सम्पर्कक रोचक साक्ष्य अछि।

31. नदी देवी कमला

कमला नदीक भौगोलिक अस्तित्व, देवीस्वरूपक लोकमान्यता, मिथिलाक नदी-समाज आ कथासम्पदाकेँ जोड़ि देखैत अछि। आलेखमे परम्परागत विश्वास आ भौगोलिक तथ्य दुनू उपस्थित छथि; शोधगत निष्कर्ष लेल दुनू प्रकारक साक्ष्य पृथक् राखब आवश्यक।

32. अतीतक गीत

विगतक स्मृति आ वर्तमानक दूरीक काव्यात्मक अर्थबोध। गीतक संक्षिप्तता अङ्ककक गद्यप्रधान क्रममे संवेदनात्मक संतुलन दैत अछि।

33. निर्वासिता

‘निर्वासिता’क शीर्षक विस्थापन, आत्मीय भूगोल आ स्वकीयताक प्रश्न उठबैत अछि। पाठक एहि रचनाकेँ मैथिली भाषायी-स्थानिक अस्मिताक व्यापक चर्चासँ सावधानीपूर्वक जोड़ि सकैत छथि।

34. खौँक

आँचलिक शब्दावली सहित कथात्मक वर्णनक उदाहरण; मुद्रणमे संवाद आ कथावाचनक रूप दिखाइत अछि। लोकभाषाक ठोस प्रयोग एहि अङ्ककक भाषिक विविधताक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

35. जायब बड्डु

मुख्य गद्यक बाद अङ्कित छोट पद्यांश। पंक्तिक संरचना, बोलीक अभिव्यक्ति आ विदाई/गमनक भाव काव्यांशक ग्रहणमे भूमिका निभबैत अछि।

36. जानि ने की छै भावी

भविष्यक अनिश्चयक सहज मैथिली अभिव्यक्ति शीर्षकमे समाहित अछि। लोकधर्मी वाक्यविन्यास सँ अस्तित्वगत आशङ्का आ आशाक द्वन्द्व साकार होइत अछि।

37. हम मैथिली कोना सिखलहुँ

व्यक्तिगत भाषा-अर्जनक अनुभवक माध्यमे मातृभाषा, शिक्षा, सामाजिक वातावरण आ भाषिक अभ्यासक सम्बन्ध उघाड़ल गेल अछि। शीर्षकक ‘कोना’ व्यक्तिगत अनुभवक प्रामाणिकता पर बल दैत अछि; ई अध्ययन भाषायी शिक्षण-इतिहास लेल उपयोगी।

38. सपना

स्वप्नक बिम्ब आ आकाङ्क्षाक उपयोग सँ भावी संसारक कल्पना। पत्रिकामे बहुत रचनाक सार्वजनिक स्वरक विरुद्ध ई छोट निजी संवेदना प्रस्तुत करैत अछि।

39. विद्यापति पर्वक प्रासंगिकता

डा॰ श्रीभीमनाथझा द्वारा प्रस्तुत लेखक आरम्भमे २७ फरवरी १९८७ कैँ संकल्पलोक द्वारा आयोजित विचारगोष्ठीक सन्दर्भ देल अछि। लेखक विद्यापति-जयन्ती आ स्मृति-समारोहक सामाजिक उपयोगिता तथा नाम-स्मरणकैँ रचनात्मक सांस्कृतिक कार्यमे बदलबाक आवश्यकता उठबैत छथि।

40. ध्वनिसाम्यक कतिपय शब्द

डा॰ शशिनाथझाक लेख ध्वनिसाम्य, शब्द-सम्बन्ध आ प्रचलित मैथिली प्रयोगक अर्थभेद पर दृष्टि दैत अछि। आरम्भमे अर्थसम्बन्धी उदाहरण आ ध्वनिसाम्यक क्रमबद्ध विवेचन उपलब्ध अछि; समान ध्वनि मात्रसँ व्युत्पत्तिक सिद्धि नहि होइत।

41. हमर दुःख नहि ओर

अन्तहीन दुःखक शीर्षक सामाजिक अथवा मानसिक पीड़ाक अनुभवक विस्तारक संकेत दैत अछि। बहुपृष्ठीय गद्यरचना कथन, तर्क आ अनुभवक प्रगतिक कारण अलग धैर्यसँ पढ़बाक अपेक्षा करैत अछि।

42. एक अनेक — दुः अनुभूति

कइएक खण्डमे रचित काव्य-स्वरमे निज अनुभवक अनेक रूप उजागर होइत अछि। खण्डक क्रम वियोग, प्रश्न आ अनुभूतिक बारीक रूपान्तर देखबाक अवसर दैत अछि।

43. परशुराम-विषयक पाख्यानाटक

राजा, परशुराम आ अन्य पात्रक संवाद, संघर्ष तथा धार्मिक–राजनीतिक सत्ता-सन्दर्भक विवेचन आ उद्धृत पंक्तिसभ एहि खण्डमे अछि। सन्दर्भक आलोचनात्मक पाठ करैत काल पुराकथाक पुनर्रचना आ ऐतिहासिक घटनाक प्रमाणक बीच स्पष्ट अन्तर जरूरी अछि।

44. राधाविरहमे शाक्त तत्त्व

डा॰ योगानन्दझाक अध्ययन ‘राधाविरह’क राधा–कृष्ण लीला पृष्ठभूमि पर शाक्त भावनाक सम्भावना विचारैत अछि। लेखक शाक्त उपासना, भारतीय भावपरम्परा आ ग्रन्थगत उदाहरणक आधार पर तुलना करैत छथि; तत्त्व-साम्य लेखकत्व अथवा ऐतिहासिक प्रभावक निर्णायक प्रमाण नहि।

45. लोकगाथा सलेहेसक भौगोलिक परिवेश

डा॰ मोतीलालयादव लोकगाथामे उल्लिखित स्थान, नद, जनपद आ सीमापरक निर्देश जुटबैत छथि। महिसौथा, ननमडुरी आदि प्रसंगक माध्यमे गाथाक भूगोलक रेखांकनक प्रयास; मौखिक परम्पराक स्थल-नामक सटीक ऐतिहासिक मानचित्र बनबैत काल पाठभेद विचारणीय।

46. अशर्फीक लुटि आ कोहलापर छाप

कुमार पवनक कथा/व्यङ्ग्यमे अशर्फी आ कोहलाक संकेत मार्फत गाँव, प्रतिष्ठा, सत्ता-समीकरण आ लोककथ्यक वातावरण निर्मित अछि। आरम्भमे लोकभाषायी बुनावट तथा पात्र-संवाद पर जोर अछि; एकरा ग्रामीण सामाजिक सम्बन्धक साहित्यिक पाठक रूपमे पढ़ब उचित।

47. मैथिली नव कविताक स्वर आख्या

नव कविताक बदलैत स्वर आ प्रयोगशीलतापर केन्द्रित विमर्श। परम्परागत गीतात्मकताक बादक आधुनिक संवेदनाशीलता बुझबाक लेल लेख अपन अङ्ककक एक महत्त्वपूर्ण समकालीन साक्ष्य बनैत अछि।

48. आह्वान गीत

सामूहिकता आ कर्मप्रेरणाक आवाहनक लय। भाषिक अधिकारपर जोर दैत सम्पादकीयक सन्देशकेँ उत्साहवर्धक काव्यभाषामे अग्रसर करैत अछि।

49. आधुनिक मैथिली कविताक स्थिति

डा॰ देवेन्द्रझाक लेखमे आधुनिक मैथिली काव्यक कालखण्ड, रचनाकार, प्रकाशित कविताक संख्यात्मक संकेत तथा १९००-पूर्व/पश्चात्क पृष्ठभूमिपर विचार अछि। संख्यात्मक दावाक सन्दर्भ ग्रन्थ/सङ्कलन सहित पुनर्परीक्षण अपेक्षित; तथापि ई अङ्ककक आत्म-इतिहासलेखनक ठोस उपक्रम।

50. पुरस्कार

साहित्यिक पुरस्कारक मानदण्ड, सामाजिक भूमिका आ मूल्यांकन-प्रक्रियापर प्रश्नक अवसर। पुरस्कारकेँ कृतिकारक व्यापक प्रभावक एक मात्र माप नहि मानबाक दृष्टि एतय आलोचनात्मक रूपसँ सम्भव।

51. कबीश्वरक पोथा ओ अप्रकाशित पद्य

कबीश्वरक पोथामे उपलब्ध अप्रकाशित पदक परिचय मार्फत अप्रसारित साहित्यिक स्रोतक ओर ध्यान आकर्षित। पाण्डुलिपिक मूल, पाठभेद, लिपि आ तिथि निर्दिष्ट कएला बिनु प्राचीनताक अन्तिम दावा टारब चाही।

52. मध्यकालीन दुइ कवि: किछु अप्रकाशित रचना

दुइ मध्यकालीन कविक अप्रकाशित रचनाक परिचय/प्रस्तुति अङ्कक अन्तिम गम्भीर शोध-योगदानमे सँ एक। पाठक समीक्षात्मक संस्करण लेल हस्तलिखित आधार, संपादकीय हस्तक्षेप आ पाठान्तरक आवश्यकता सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण।

53. स्वागत करेज

स्मारिकाक अन्तिम गीतकेँ स्वागतक विषयगत लयक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। समारोही आरम्भक स्वर पुनः अंतिम साहित्यिक खण्डमे लौटैत अछि।

54. संकल्पलोकक प्रकाशन

संकल्पलोकक अन्य प्रकाशित सामग्रीक सूची संस्थाक संपादकीय गतिविधि आ साहित्यिक प्रसारक आन्तरिक प्रमाण अछि। सूची अभिलेखीय शोध लेल दिशा दैत अछि, मुदा उपलब्धता अथवा समस्त शीर्षकक वास्तविक प्रकाशन-प्रति एकल सूची सँ पुष्ट नहि।

55. आयोजक उपसमिति

समारोह सँ सम्बन्धित सदस्यता आ दायित्व-विभाजनक अभिलेख। व्यक्ति-नाम आ पदक धुँधल मुद्रणक कारण गलत पुनर्लेखनसँ बचैत शोधार्थी केँ मूल पृष्ठ देखबाक सिफारिश।

विषयवार विस्तृत अनुसन्धान आ समालोचना

१. मूल ग्रन्थक स्वरूप आ काल-साक्ष्य

‘संकल्प’क प्रस्तुत प्रति बहुलेखकीय स्मारिका अछि। आन्तरिक नामपृष्ठपर ‘संकल्प’, ‘अङ्क —५’, सम्पादक डा॰ रामदेवझा, सहायक सम्पादक डा॰ योगानन्दझा आ ‘संकल्पलोक’ (सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना मंच), लहेरियासराय (दरभंगा) अंकित अछि। विद्यापति-स्मृति-पर्व-समारोह १९८८ क रूपमे उल्लेख तथा आयोजन तिथि ४, ५ आ ६ फरवरी १९८९ दिआ गेल अछि। समारोहवर्ष आ आयोजन-वर्षक भिन्न लिखावटकेँ जँ स्वतन्त्र प्रमाण बिनु

एके वर्ष मानि लेल जाय तँ अभिलेखीय अर्थ बिगड़ि सकैत अछि। एहि अध्ययनमे दुनू मुद्रित सूचनाकेँ यथावत् भिन्न-भिन्न दर्ज कएल गेल अछि। []

ईकुल १६४ पृष्ठक अछि। मुद्रित पृष्ठ-संख्या सँक्रमांकक सीधा समानता नहि अछि: मुखपृष्ठ, पत्राचार, विज्ञापन आ स्वागतीय सामग्रीक कारण बीच-बीचमे अन्तर पड़ैत अछि। विषय-सूचीमे ५५ क्रमबद्ध प्रविष्टि अछि, जिनकामे समान वजनक साहित्यिक रचना नहि, बल्कि सन्देश, समाचार-सदृश संस्थागत सूचना आ सूची सेहो अछि। []

समारोह-स्मारिका होयबाक अर्थ ई नहि जे सभ लिखल कथन इतिहासक निर्णायक प्रमाण अछि। भाषणक उद्घोषणा, लेखकक मत, लोककथाक विवरण, पाण्डुलिपिक अनुमान, स्थाननामक व्युत्पत्ति आ प्रशासनिक पत्र एक-दोसरासँ पृथक् साक्ष्य-प्रकार थिक। पाठमे ई अन्तर कायम रखल गेल अछि, कारण सांस्कृतिक निष्ठा आ आलोचनात्मक सत्यापनकेँ एक-दोसराक विकल्प मानब उचित नहि।

२. सम्पादकीय: भाषा-अधिकारक कार्यक्रम

सम्पादकीय मैथिलीक दिल्ली आ बिहारक सरकारी स्थितिक चर्चा सँ आरम्भ होइत अछि। संसद आ राज्यक राजनीतिक प्रक्रियामे मैथिलीक माँग, संवैधानिक अनुसूची, बिहारमे द्वितीय राजभाषाक प्रश्न आ सरकारी निर्णयक अनुपालनकेँ सम्पादकीय एके अधिकार-सङ्घर्षक अलग-अलग स्तर मानैत अछि। लिखित घोषणा आ वास्तविक सेवा-व्यवस्थाक बीचक अन्तर एतय बारम्बार उभरैत अछि। एकर कारण स्मारिका केवल सांस्कृतिक उत्सव-पत्रक रूपमे नहि, नीति-आलोचनाक स्रोतक रूपमे सेहो महत्त्व रखैत अछि। []

सम्पादकीय विद्यालय-शिक्षा, विश्वविद्यालय, शिक्षक-प्रशिक्षण, विषय-रूपेँ मैथिलीक स्वीकृति तथा शिक्षण-सामग्रीक व्यावहारिक परिस्थिति पर विवरण दैत अछि। एहि ठाम लेखक मैथिलीकेँ ‘आदर’ देबाक औपचारिक भाषा सँ आगाँ बढ़ि अधिकारक क्रियात्मक उपादान माँगैत छथि। प्रश्न एहि बातक अछि जे मान्यता भेटला पर शिक्षक, कक्षा, पाठ्यपुस्तक, प्रशिक्षण आ नियुक्तिक व्यवस्था बनल वा नहि। इहो स्पष्ट करब चाही जे सम्पादकीयक आरोप

तत्कालीन आयोजन-पक्षक कथन अछि; ओकर स्वतन्त्र शासकीय अभिलेख-पुष्टि प्रस्तुत प्रति भीतर नहि भेटैत अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ सम्पादकीयक शक्तिशाली पक्ष ओकर बहु-स्तरीय भाषानीति-दृष्टि अछि। कमजोर पक्ष ई जे अनेक निर्णय आ संस्थाक सम्बन्धमे विस्तृत सरकारी अधिसूचना-संख्या नहि देल गेल अछि। एहि कारण ई स्रोत नीति-अनुसन्धानक उत्कृष्ट प्रश्नावली तँ उपलब्ध करैत अछि, मुदा सभ निष्कर्षक पूर्ण अभिलेखी प्रमाण नहि।

३. विद्यापति-स्मृति: प्रतीक, समारोह आ इतिहासबोध

बाबू भोलालालदासक ‘महाकवि विद्यापतिक मूर्ति कोन प्रकारक हो?’ लेख पृष्ठ २५ सँ आरम्भ अछि। आरम्भमे लेखक एहि विषयपर अपन पुरान निबन्ध ‘मिथिला मिहिर’मे २४ दिसम्बर १९३७ कैं छपबाक उल्लेख करैत छथि। लेख प्रतिमाक दृश्य रूप तय करबाक प्रश्नक आगाँ बढ़ैत ऐतिहासिक स्मृति, प्रमाण, मैथिली-समाजक सामूहिक अधिकार आ कवीक स्वरूपनिर्माणक समस्या उठा दैत अछि। प्रतिमा बले अभिलेखक ठाम नहि लऽ सकैत; शिल्पात्मक कल्पना आ प्रमाणित ऐतिहासिक छविक भेद एतय मूल आलोचनात्मक बिन्दु अछि। []

‘विद्यापति पर्वक प्रासंगिकता’ अपन आरम्भमे २७ फरवरी १९८७ कैं आयोजित संकल्पलोकक विचारगोष्ठी सँ सम्बन्ध जोड़ैत अछि। लेख विद्यापति-जयन्तीक समारोही प्रचलन, साहित्यप्रेम, मैथिली-चेतना, भाषिक गौरव आ समाजपर पड़ैत प्रभावक परीक्षण करैत अछि। केवल नाम-सम्भ्रम वा उत्सवात्मक दोहरावक बदला रचनाकैं पढ़ब, आलोचना करब, आयोजन सँ संस्थागत लाभ उत्पन्न करब—एहि प्रश्नसभक सन्दर्भमे लेखकैं पढ़नाइ फलदायी अछि।

दुनू लेखक बीच एकर भेद उल्लेखनीय अछि: पहिल प्रतिमामे साहित्यकारकैं देखाबयवला ‘रूप’क प्रश्न सँ शुरू होइत अछि; दोसर प्रतिवर्ष स्मरण करबाक ‘उद्देश्य’क प्रश्न उठबैत अछि। रूप आ उद्देश्यक बीच साहित्यक प्रामाणिक पाठ स्थापित करबाक प्रश्न अनिवार्य भऽ जाइत

अछि। एहि दृष्टिसँ स्मारिका अपन शीर्षक ‘संकल्प’क अर्थ मूर्ति, समारोह आ रचनात्मक कर्मक त्रिभुजमे उद्घाटित करैत अछि।

४. मैथिली भाषा: शब्दार्थ, ध्वनि आ स्थाननाम

डा॰ श्रीविलोकनाथझाक ‘मिथिलाक स्थान-नाम: एक सर्वेक्षण’ स्थाननामक सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययनक सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि। पृष्ठ ५५ पर देवता, पुराण, राजपरम्परा, विभिन्न जातीय-सामाजिक नाम, लोकबोल आ ध्वन्यात्मक परिवर्त्तनक आधार पर ग्रामनामक उदाहरण प्रस्तुत होइत अछि। एकरा व्यवस्थित भूगोलक सूचीक रूपमे नहि, वर्गीकरणक प्रस्तावक रूपमे पढ़बाक चाही। नामक अर्थ लोकमान्यता, शब्दसाम्य आ ऐतिहासिक अभिलेख—तीन अलग स्रोतसँ सिद्ध होइत अछि; लेख जिज्ञासा जगबैत अछि, मुदा प्रत्येक उदाहरणक पूर्ण व्युत्पत्ति स्वतः सिद्ध नहि करैत अछि। []

‘ध्वनिसाम्यक कतिपय शब्द’ शब्दक समान ध्वनि आ पृथक् अर्थक अन्तरक अन्वेषण करैत अछि। आलेखक आरम्भमे एकर स्थान साहित्यिक संस्कृतिक पृष्ठभूमिमे राखल अछि आ विभिन्न शब्दयुग्मक अर्थभेद देखाओल गेल अछि। एहि लेखक योगदान अर्थक सूक्ष्म भिन्नता दिस पाठकक ध्यान अनबाक अछि; सीमाबोध ई जे ध्वनि समान होयब मात्रै ऐतिहासिक व्युत्पत्तिक प्रमाण नहि।

‘हम मैथिली कोना सिखलहुँ’ भाषा-अर्जनक व्यक्तिगत लेखनक कारण एहि विश्लेषणमे विशिष्ट स्थान रखैत अछि। भाषाक नीतिगत अधिकार (सम्पादकीय), स्थानीय नाम-परम्परा (स्थाननाम), शब्द-भेद (ध्वनिसाम्य) आ व्यक्तिक अपन भाषिक व्यवहार—ई चारि स्तर एकत्र पढ़ला पर मैथिली आन्दोलनक भाषावैज्ञानिक आ सामाजिक दुनू रूप खुलैत अछि।

५. मिथिलाक नदी, लोकदेवता आ लोकगाथाक भूगोल

‘नदी देवी कमला’ कमलाक एकसंग नदी आ देवी होयबाक परम्परागत अर्थ खुलबैत अछि। नदीक प्राकृतिक बाढ़, तट, परिवेश, जनश्रुति आ पूजा-मान्यता जकाँ पक्ष एके लोक-संस्कृति भीतर सम्मिलित अछि। ऐतिहासिक अध्ययनक दृष्टिसँ एहिमे भौगोलिक पहिचान आ धार्मिक

विश्वासकेँ समभावे परस्पर सम्बद्ध, मुदा साक्ष्य-रूपेँ पृथक् माननाइ जरूरी। पाठमे वर्णित जनश्रुतिक ‘लोकमान्यता’क रूपमे मूल्य अधिक अछि, भूविज्ञानक प्रमाणीकरणक रूपमे नहि।

डा॰ मोतीलालयादवक ‘लोकगाथा सलेहेसक भौगोलिक परिवेश’ गाथामे आएल स्थान, जनपद, नदी आ सीमाक संकेत व्यवस्थित करबाक प्रयास करैत अछि। पृष्ठ १२० पर गाथा पूर्वी-उत्तर भारतीय भूभागक बहुत स्थाननाम प्रस्तुत करैत अछि आ महिसौथा आदि स्थल-प्रसंगक चर्चा शुरू करैत अछि। लोकगाथाक कथा-भूगोल स्थिर प्रशासनिक नक्सा नहि: पीढ़ी-दर-पीढ़ी गायनमे स्थलनाम बदलि सकैत अछि, एहि कारण पाठभेद, गायन-क्षेत्र आ क्षेत्रीय स्मृतिक तुलनात्मक सर्वेक्षण आवश्यक।

दुनू लेख मिलि मिथिलाक ‘लोक-स्थान’क बहुआयामी प्रतिमा गढ़ैत अछि। कमला नदी प्रवाह आ श्रद्धाक केन्द्र अछि; सलेहेसक गाथा गाम–सीमा–यात्राक सामाजिक मानचित्र। अतः लोकसाहित्यक ऐतिहासिक उपयोग लेल क्षेत्रीय मानचित्र, ऐतिहासिक गजेटियर, ग्रामनाम-परम्परा आ मौखिक संस्करणकेँ परस्पर जाँचल जाय, एहि अङ्कसँ एहन शोध-कार्यक्रमक प्रेरणा भेटैत अछि।

६. मध्यकालीन काव्य, शाक्त चिन्तन आ पाठसम्पादन

डा॰ योगानन्दझाक ‘राधाविरहमे शाक्त तत्त्व’ पृष्ठ १११ सँ आरम्भ अछि। लेख ‘राधाविरह’क राधा-कृष्ण लीला-अनुभवक मध्य शाक्त भावनाक चिन्ह खोजबाक प्रयास थिक। पृष्ठ १११ पर लेखक भारतीय उपासनात्मक परम्परा, मातृरूप, शक्ति, वैदिक आ तान्त्रिक उल्लेख तथा काव्य-पाठक उदाहरण संग विमर्श आरम्भ करैत छथि। एहिमे शाक्त तत्वक व्याख्या साहित्यिक समानता आ धार्मिक परम्पराक पारस्परिक सम्पर्कक रूपमे बुझबाक सम्भावना अछि। []

ई पाठ आलोचनाक दृष्टिसँ फलदायी तखन बनैत अछि जखन ‘राधाविरह’क प्रमाणित संस्करण, उद्धृत श्लोक वा पदक मूल सन्दर्भ, रचयिताक मान्य पाठ आ पाठभेद अलग-अलग जाँचल जाय। काव्यमे देवी-सदृश गुणक उपस्थिति साक्षात् शाक्त तान्त्रिक अनुष्ठानक पुष्टि नहि

करैत; ओ पाठ-व्याख्याक सम्भावित स्तर थिक। मूल लेखक तर्क-शृङ्खला कैँ एहि अङ्कक एक प्रमुख अनुसन्धानात्मक योगदान कहि सकैत छी।

‘कबीश्वरक पोथा ओ अप्रकाशित पद्य’ तथा ‘मध्यकालीन दुइ कवि: किछु अप्रकाशित रचना’ शोधक दोसर दिशा खोलैत अछि—अवहेलित अथवा अल्पप्रसारित पाठक संरक्षण। एहि रचनासभक केवल प्रकाशित होएब सँ आलोचनात्मक सम्पादनक प्रश्न समाप्त नहि होइत; पाण्डुलिपि स्थल, प्रति-संख्या, पृष्ठावस्था, लेखन-वर्ष, पाठान्तर आ सम्पादकीय निर्णय प्रकाशित भेने आधुनिक पाठालोचन अधिक मजबूत होयत।

७. मैथिली कविता: परम्परा, आन्दोलन आ आधुनिक संवेदना

अङ्कमे ‘जागृति’, ‘कहिया धरि? कहिया धरि’, ‘अहाँकैँ स्वतन्त्र लिखय पड़त’, ‘मैथिलीक व्यथा’, ‘संकल्प’, ‘अतीतक गीत’, ‘निर्वासिता’, ‘जानि ने की छै भावी’, ‘सपना’, ‘आह्वान गीत’ आ अनेक गीतात्मक लेखन कविता-विधाक विविधता देखबैत अछि। एक ओर सामूहिक उद्बोधन अछि; दोसर ओर स्मृति, अनिश्चय, एकाकी अनुभव आ वैयक्तिक स्वतंत्रताक जटिल स्वर। एहि विविधताकैँ मात्र ‘भाषा-भक्ति’क एके खाँचा भीतर रखनाइ कवितासभक साहित्यिक भिन्नता नष्ट करैत।

‘अहाँकैँ स्वतन्त्र लिखय पड़त’ विशेषरूपेँ विचारोत्तेजक अछि। कविता लेखकीय विवेक, मुक्त विषय-चयन आ संस्थागत/अनुष्ठानिक पाखण्डक सोझाँ अभिव्यक्ति-स्वातन्त्र्यक प्रश्न रखैत अछि। ‘हम स्वतंत्र नहि लिखब’क पुनरावृत्तिमे वाङ्मयिक व्यङ्ग्यक तीक्ष्णता अछि—कवि जकर विरोधी उत्तर देबाक शैली चुनैत छथि, से स्वयं पाठकसँ आलोचनात्मक निर्णय माँगैत अछि। ई स्मारिकाक अनुष्ठानिक वातावरणमे आलोचनात्मक असहमति लेल स्थान बनबैत अछि।

‘आधुनिक मैथिली कविताक स्थिति’ इतिहासलेखनक आरो व्यापक प्रयास थिक। १९००क आसपाससँ आधुनिक कविताक क्रम, पत्रिका आ कविसङ्ख्या सम्बन्धी संकेत देल गेल अछि। लेखकैँ उपयोगी प्रारम्भिक सर्वेक्षण मानल जाय; इहाँ संख्यात्मक विवरणक स्रोत आ नमूना-

संग्रह अतिरिक्त जाँचक योग्य अछि। आधुनिकता समझबाक लेल काव्यभाषा, छन्द, पाठक, प्रकाशन-व्यवस्था आ राजनीतिक रूपान्तरणकेँ एक संग बुझनाइ उचित।

८. निबन्ध, संस्मरण, कथा आ नाटकक महत्त्व

‘प्रो॰ जगन्नाथप्रसादमिश्र: एक संस्मरण’ लेखक-व्यक्तित्वक स्मृति-संरक्षण करैत अछि। स्मरण-साहित्यक साक्ष्य आत्मीयता आ प्रत्यक्ष देखल अनुभवक कारण अमूल्य होइत अछि; मुदा समयक दूरी, व्यक्तिनिष्ठ चयन आ श्रद्धाक प्रवृत्ति पर आलोचनात्मक दृष्टि आवश्यक। ‘ओ दिन, ओ लोक’ एहि निजी स्मृतिक सामूहिक आयाम खोलैत अछि।

‘खौँक’ आ कुमार पवनक ‘अशर्फीक लुटि आ कोहलापर छाप’ जकाँ गद्य-रचनासभ बोलचालक मैथिली, घरेलू-सामाजिक व्यवहार आ कथोपकथनक माध्यमे अलग साहित्यिक संसार निर्मित करैत अछि। एतय प्रयोग कएल ग्रामीण बोलिक मूल्य एकर ‘मानक’ सँ विचलनमे नहि, ओहि सामाजिक जगतकेँ सुनबाक क्षमतामे अछि। भाषा-संपादनक नामपर लोक-बोलीक अनावश्यक समानीकरण जँ कएल जाय तँ रचनाक चरित्र बदलि जाइत।

परशुरामक प्रसंगमे आधारित नाट्य-विषयक विवेचन पुराणक कथानककेँ पात्रक नैतिक निर्णय आ सत्ता-संघर्षक मंचीय संरचनामे देखैत अछि। एतय मिथकीय पात्रकेँ आधुनिक नैतिक प्रश्नमे रखबाक साहित्यिक प्रक्रिया देखबाक अछि, नाटकक कथाकेँ इतिहासक सीधा वृत्तान्त मानबाक नहि।

९. संस्था, आयोजन आ सार्वजनिक मुद्रण-संस्कृति

पहिल १६ पृष्ठमे मुखपृष्ठ, सम्पादक-मण्डल, शुभकामना-पत्र, स्वागत-सन्देश आ विषय-सूची अछि। बादमे मुख्य रचनासभक बीच-बीचमे महाविद्यालय आ स्थानीय संस्थाक अभिनन्दन-विज्ञापन छपल अछि (उदाहरणार्थ। एहि सभकेँ ‘अनावश्यक पृष्ठ’ कहिकेँ हटा देब ऐतिहासिक अध्ययनक दृष्टिसँ त्रुटिपूर्ण होयत।

विज्ञापनक माध्यमे समारोह आ स्थानीय शिक्षण-संस्थाक साझेदारी, संस्थागत सद्भाव, नाम-प्रदर्शनक पद्धति आ मुद्रणक सम्भावित पोषक-संरचना देखबैत अछि। मुदा अभिनन्दन-सन्देशमे

छपल संस्था-नाम सँ आयोजनकेँ निश्चित धनराशि देल गेल छल—एहन निष्कर्ष नहि निकालल गेल अछि। वित्तीय योगदानक पुष्टि लेल मूल खाताबही वा रसीद अपेक्षित।

‘संकल्पलोकक प्रकाशन’ आ ‘आयोजक उपसमिति’ स्मारिकाक स्वकीय संस्थागत आत्मपरिचय प्रस्तुत करैत अछि। रचनासभक संग एहि सूचनासभ केँ पढ़ब अङ्ककेँ केवल साहित्यिक कृति नहि, सामाजिक संगठनक गतिविधि, पुस्तक-वितरण आ समारोहक नेटवर्कक अनूठ दस्तावेज बना दैत अछि।

१०. भाषा-शैली, लिपि आ ऐतिहासिक पाठक संरक्षण

मुद्रित मैथिली पृष्ठसभमे लेखकरूप, बोलिरूप, तत्सम पदावली, देशज क्रियापद, औपचारिक संस्कृतनिष्ठ वाक्यरचना आ हँसमुख संवाद-भाषा सभ एकसंग अछि। सम्पादकीय भाषामे अधिकार, संविधान, प्रशिक्षण, राजभाषा आ शिक्षक जकाँ प्रशासनिक-राजनीतिक पद अछि; कथा आ कविता मे लोक-विन्यास, प्रश्नोत्तर, पुनरावृत्ति आ मुहावरा उभरैत अछि। एहि भाषिक भिन्नताकेँ साहित्यिक वैविध्य मानब उचित।

स्रोतमे कतेको ठाम मुद्रण धुँधल, छाया गाढ़, किनार कटैत, आ अक्षर एक-दोसरामे मिलैत अछि। एहिसँ नाम, तिथि, पृष्ठाङ्क आ किछु शीर्षकक सूक्ष्म अक्षर बिना मूल मुद्रित प्रति देखनाइ सर्वथा सुनिश्चित नहि। एहि समीक्षा मे सन्दर्भ-सूची लेल मुख्य रूपसँ स्पष्ट विषय-सूची आ शीर्षक-पृष्ठक उपयोग भेल अछि; अस्पष्ट अंशक स्थान पर कल्पित पाठ नहि भरल गेल अछि।

अध्येताकेँ पुरान वर्तनी, अवहट्ट-प्रभाव, बोलिचालित शब्द, अंग्रेजी/हिन्दी सँ आगत पद आ लेखकक निजी रूप-निर्णयक रिकॉर्ड बनाबय चाही। भविष्यक डिजिटल संस्करणमे मूल-पृष्ठचित्र, कूटलिप्यन्तरण, सम्पादित पाठ आ पाठान्तर अलग-अलग स्तरमे राखल गेल तँ अनुसन्धानमे पारदर्शिता बढ़त।

११. अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक सीमा

‘संकल्प’ मैथिलीकेँ सांस्कृतिक अधिकारक आधार मानैत अछि, मुदा साहित्यक भीतर ओकर भिन्न स्वर सेहो उपस्थित अछि। उद्बोधनात्मक कविता जनसामूहिक आग्रह करैत अछि, जखन लेखकीय स्वातन्त्र्य पर आधारित कविता सामूहिकताक बीच व्यक्तिक असहमतिक अधिकार उठबैत अछि। एहि तनावमे अङ्ककक सौन्दर्यात्मक मूल्य अछि; एकरा एकमत प्रचार-पुस्तिका कहनाइ न्यायोचित नहि।

इतिहासक क्षेत्रमे प्रतिमा-विचार आ विद्यापति-पर्वक लेख स्मृतिक निर्मित रूप देखबैत अछि; भाषा-अध्ययनमे स्थाननाम आ ध्वनिसाम्यक लेख व्युत्पत्तिक प्रमाणक प्रश्न छोड़ैत अछि; लोकसाहित्यक क्षेत्रमे धार्मिक विश्वास आ भूगोलक अन्तर सोझाँ अबैत अछि; आधुनिक कविताक सर्वेक्षणमे कालविभाजन आ कवि-संख्या दाबी आगू जाँच माँगैत अछि। ई सभ कमी अङ्ककक महत्त्व घटबैत नहि, बल्कि ओकर पाठकेँ इतिहासबोधक अधिक जिम्मेदार स्तर पर लऽ जाइत अछि।

संस्थागत भाषण, प्रशंसापत्र आ विज्ञापनमे स्वभावतः आत्मप्रशंसात्मक स्वर अछि। आलोचनाक न्यायसंगत तरीका ई जे साहित्यिक रचनाक कलात्मक मूल्य, आलोचनात्मक निबन्धक तर्क-प्रमाण आ समारोहक संगठनात्मक स्व-वर्णनकेँ पृथक् कसौटी पर परखल जाय।

१३. समग्र मूल्याङ्कन

‘संकल्प’क सर्वप्रमुख उपलब्धि एके अंकमे मैथिली भाषानीति, साहित्यिक परम्परा, आधुनिक काव्य, लोकगाथा, स्थाननाम-विज्ञान, शाक्त आलोचना, पाण्डुलिपि-परिचय, संस्मरण आ सामूहिक आयोजनकेँ एकत्र अनब अछि। एहि सामग्रीक कारण स्मारिका भाषा-आन्दोलनक अभिलेख, साहित्यिक पत्रिका, स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास आ शोधोपयोगी स्रोत—चारि रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।

सम्पादकीयक भाषिक अधिकारक आग्रह, विद्यापति-स्मृतिक उद्देश्यपर बहस, स्थाननामक वर्गीकरण, कमलाक लोक-स्मृति, सलेहेसक भूगोल, राधाविरहक शाक्त विवेचन आ

मध्यकालीन अप्रकाशित पाठक प्रस्तुति—ई सभ मिलि मैथिलीक बहुस्तरीय सांस्कृतिक संसार निर्मित करैत अछि। साहित्यक स्वतंत्र प्रश्नवाची स्वर स्मारिकाकेँ प्रचारात्मक एकरसता सँ बचबैत अछि।

संकल्पक कतेको ऐतिहासिक दावा, आयोजन-सम्बन्धी विवरण आ साहित्यिक मूल्याङ्कन आगू स्वतन्त्र अभिलेखीय मिलान माँगैत अछि। एतबे सावधानी राखलापर ई स्मारिका आधुनिक मैथिली बौद्धिक जीवनक महत्त्वपूर्ण प्राथमिक पुस्तक बनैत अछि, जाहिमे समारोहक इतिहास आ साहित्यिक बहस एक संग सुरक्षित अछि।

प्रमुख रचनासभक स्वतंत्र आलोचनात्मक परीक्षण

एहि खण्डमे आरम्भिक प्रविष्टिवार परिचयसँ आगू बढ़ि प्रमुख रचनाक विशिष्ट तर्क, साहित्यिक काम, आ प्रमाण-परीक्षणक जरूरत अलग-अलग देखल गेल अछि।

सम्पादकीयक भाषानीति: अधिकारक व्यावहारिक अर्थ

सम्पादकीयक मूल तर्क एतबे नहि अछि जे मैथिली भाषा सम्मानक अधिकारी अछि; ओकर प्रश्न ई अछि जे राज्यक सार्वजनिक संस्थामे मान्यता प्राप्त करबाक बाद मैथिलीभाषी नागरिककेँ कोन सेवा उपलब्ध होयत। संविधानक अनुसूची, राज्यक द्वितीय राजभाषा, विषय-स्वीकृति, अध्यापन आ कर्मचारी नियुक्ति—ई सभ क्रमशः कानून, प्रशासन, शैक्षिक नीतिगत निर्णय आ वास्तविक क्रियान्वयनक भिन्न सोपान थिक। लेखक एहि सोपानसभक बीच देखल गेल अन्तरकेँ राजनीतिक समस्या मानैत छथि। पृष्ठ ५क दहिना स्तम्भमे बिहारक लोकसेवा-आयोग आ मैथिली-विषयक प्रसंग उल्लेखित अछि; ओहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे लेखक शिक्षित युवाक रोजगार आ भाषाक संस्थागत भविष्यक प्रश्न जोड़ैत छथि। एकरा जाँचबाक आधुनिक विधि १९८०क दशकक सरकारी अधिसूचना, शैक्षिक परिपत्र, नियुक्ति-विज्ञापन आ परीक्षा-विषयसूचीक वर्षक्रम बनाबऽ होयत। स्मारिकामे ओ सभ दस्तावेज संलग्न नहि अछि, ताहि लेल सम्पादकीय सशक्त समकालीन साक्ष्य अछि, सम्पूर्ण शासकीय डेटाबेस नहि।

विद्यापतिक प्रतिमापर विवाद: काव्यपाठ आ दृश्य प्रतीकक बीच

बाबू भोलालालदासक लेखक प्रश्न ‘मूर्ति कोन प्रकारक हो?’ इतिहास-लेखनक बहुत महत्वपूर्ण समस्या उठबैत अछि। कविक जीवनीसँ असम्बद्ध अनुमान पर आधारित चित्र जनमानसमे एहन रूपसँ स्थापित भऽ सकैत अछि मानू ओ प्रत्यक्ष ऐतिहासिक साक्ष्य हो। लेखमे मूर्ति-परिकल्पना, जनश्रुति, भाषाक सामूहिक स्वामित्व आ विभिन्न परम्पराक विद्वानसभक चर्चा एकत्र अछि। विशेष रूपसँ लेखक आरम्भमे १९३७क पूर्वप्रकाशनक उल्लेख दैत छथि; एहि सँ १९८८क स्मारिकामे पुनर्मुद्रणक कारण समयक दू परत बनैत अछि—एकटा मूल निबन्धक, दोसर वर्तमान स्मृति-समारोहक। एहन पुनर्मुद्रण सँ अङ्क बुझबैत अछि जे प्रश्न दशकोंसँ समाधानक प्रतीक्षामे छल। आलोचनामे मूर्ति-रचना लेल सुलभ वस्त्राभूषणक ज्ञान, विद्यापतिक नामसँ सम्बद्ध ऐतिहासिक लोक-छवि आ मूल रचनाक लेखकत्वक विवाद अलग राखब चाही। ई लेखक बौद्धिक उपलब्धि एहि ‘अलग राखबाक’ मांगक दार्शनिक महत्त्व अछि।

जागृति, संकल्प आ आह्वान गीत: सार्वजनिक काव्यक तीन मुद्रा

‘जागृति’क पंक्तिसभमे सामूहिक सम्बोधन आ समय-परिवर्तनक आग्रह प्रमुख अछि। ‘संकल्प’ शीर्षकक कविता संस्था-नामक साहित्यिक प्रतिध्वनि बनैत अछि; एतय भविष्यक क्रिया हेतु सार्वजनिक आत्मप्रतिबद्धता प्रमुख अछि। ‘आह्वान गीत’क गेयता एहि आग्रहकेँ पाठक-श्रोताक सहभागितामे रूपान्तरित करबाक क्षमता रखैत अछि। एहि तीनू रचनाकेँ एकसंग पढ़ला पर पद्यकेँ केवल विषयक आधार पर वर्गीकृत करब पर्याप्त नहि लगैत: कविता पाठकक अन्त:संवाद होइत अछि, घोषणात्मक पद्य सामूहिक उत्साह जगबैत अछि, आ आह्वान-गीत उपस्थित जनसमूहकेँ गेनाइ/दोहोराबैक सम्भावना दैत अछि। समारोहक मुद्रित स्मारिकामे एहि विधासभक सहअस्तित्व मौखिक प्रस्तुति आ मुद्रित पठनक सम्बन्ध बुझबैत अछि। मुदा वास्तविक समारोहमे कोन गीत गाओल गेल, ओकर स्वतन्त्र कार्यक्रम-रिपोर्ट एहि प्रति सँ प्रमाणित नहि होइत अछि।

अहाँकेँ स्वतन्त्र लिखय पड़त: कवितामे असहमतिपरक आत्मस्वर

कवि आरसीप्रसादसिंहक कविता शाब्दिक अर्थमे कविक लिखबाक स्वतंत्रता पर बातचीत जकाँ शुरू होइत अछि। अनेक प्रश्न, निषेध आ व्यङ्ग्यात्मक प्रतिक्रिया लेखकीय विवेकक सुरक्षा पर जोर दैत अछि। कविता स्वयं ‘स्वतन्त्र नहि लिखब’क कथनकेँ दुहराबैत अछि, मुदा एकर काव्यगत प्रभाव सचेत पाठककेँ ओहि बातक असंगति देखय लेल उकसाबऽ अछि; एहि प्रयोगमे उक्ति आ अभिप्राय एक नहि। सार्वजनिक संस्थाक स्मारिकामे एहन रचनाक उपस्थिति विशेष महत्त्व रखैत अछि—समारोह-निष्ठासँ भिन्न, लेखकीय स्वायत्तता लेल स्थान। आधुनिक पाठक सामाजिक प्रतिबद्धता आ कलात्मक स्वायत्तताकेँ परस्पर शत्रु मानबाक बदला कविताक द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध बुझि सकैत छथि। एहि रचनाक सटीक अलंकारिक पाठ लेल सम्पूर्ण तीन पृष्ठक पंक्ति-क्रम, प्रश्नचिह्न आ विराम-अन्तर देखनाइ जरूरी।

मिथिलाक स्थान-नाम: लोकव्युत्पत्ति बनाम अभिलेखीय व्युत्पत्ति

लेख स्थाननामक पाँच-सात स्रोत-श्रेणी निर्मित करबाक प्रयत्न करैत अछि—देवी-देवता, राजपरम्परा, स्थानीय व्यक्ति, सामाजिक समूह आ नामक ध्वन्यात्मक परिवर्तनक रूपमे। उदाहरण लेल ग्रामनामक ‘पुर’ प्रत्यय, व्यक्तिनामक छाप आ बोलिचालित विकृति एके क्षेत्रमे भेटैत अछि। समस्या ई जे स्थाननामक मौजूदा ध्वनि आ प्राचीन उद्गमक बीच अनेक शताब्दीक भाषिक विकास होइ सकैत अछि। लोकपरम्परामे दोसर कारणसँ नामक नव व्याख्या सेहो जन्म लैत अछि। शोधक अगिला कामक लेल प्रत्येक नामक चारि स्तम्भ बनाबय उचित: वर्तमान बोलिरूप, इतिहासमे सबसँ पुरान लिखित प्रमाण, स्थानीय कथित व्युत्पत्ति आ सम्भावित भाषिक परिवर्तन। ओहिमे नक्शाक स्थान जोड़ला पर एहि लेखक बृहत सर्वेक्षण-कार्य विकसित भऽ सकैत अछि। लेखक उदाहरण-संग्रहक महत्त्व एहि दिशा मे अछि, प्रत्येक नामक व्युत्पत्तिक अन्तिम सिद्धिमे नहि।

नदी देवी कमला: पवित्र भूगोलक दोहरा पठन

‘नदी देवी कमला’मे कमलाक जलधारा आ लोकक श्रद्धाक ‘देवी’ दुनू स्वरूप परस्पर उलझल अछि। लोक-साहित्यिक अध्ययन लेल एहन दोहरा स्वरूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: नदी भूगोलक वस्तु अछि, आ देवी सामाजिक सम्बन्ध, भय, आशा आ प्रार्थनाक चिह्न। नदिक मार्ग बदलनाइ अथवा बाढ़क स्मृति सामाजिक कथा जन्म दैत अछि; धार्मिक आख्यान फेर नदीक किनारक सामाजिक अर्थकेँ स्थायी रूप दैत अछि। एकरा पढ़ैत काल लेखकक वर्णित कथा अथवा लोकविश्वासकेँ आधुनिक नदीविज्ञान सँ भ्रमित नहि करबाक चाही। कमलाक लोकस्मृतिक अध्ययन हेतु नदीपथक ऐतिहासिक मानचित्र, पूजा-गीत, स्थानीय कथा आ तुलनात्मक जनश्रुति संग्रह भिन्न स्तरक स्रोत होयत। एहि आलेखक योगदान लोकधार्मिक भावक साहित्यिक भाषा भीतर नदी-समाजक विषयकेँ एकत्र अनबाक अछि।

हम मैथिली कोना सिखलहुँ: अपन भाषाक अर्जनक सामाजिक प्रश्न

एहि लेखक विशिष्टता ई जे भाषा केवला व्याकरण वा अधिसूचना नहि, बल्कि सीखबाक घटनाक रूपमे देखल गेल अछि। ‘हम’ कथावाचकक व्यक्तिगत इतिहासक द्योतक अछि आ ‘कोना’ विधि तथा परिवेशक प्रश्न अछि। बाल्यावस्थाक घरेलू सम्पर्क, विद्यालयी अनुशासन, बोलचाल, पुस्तकपठन आ समाजक भाषिक प्रतिष्ठा—ई सम्भाव्य शोध-चरसभ अछि, जिनकर जाँच व्यक्तिगत विवरणक वास्तविक प्रसंगसँ करब चाही। सामूहिक आन्दोलनक नारा ‘मैथिली बचाउ’ जकाँ सामान्यीकृत आग्रहक बीच एहन लेख प्रश्न उठबैत अछि जे वक्ता मैथिली कोन माध्यमसँ सीखैत छथि आ कोन प्रसंगमे मैथिली चुनैत छथि। यैह कारण पाठ भाषाशिक्षणक इतिहास लेल उपयोगी प्रारम्भिक आत्मवृत्तान्त अछि; एक व्यक्तिक अनुभवकेँ समूचा मैथिली समाजक शिक्षणरूप माननाइ तर्कसंगत नहि।

विद्यापति पर्वक प्रासंगिकता: स्मृतिक सामाजिक उत्तरदायित्व

डा॰ भीमनाथझाक लेखक आरम्भिक टिप्पणी ‘२७ फरवरी १९८७’क विचारगोष्ठीक उल्लेख सँ अपन अवसर स्पष्ट करैत अछि। एहन सन्दर्भ एहि लेखकेँ अनियत कालक सामान्य निबन्ध

बनबाक बदला सक्रिय सार्वजनिक बहसक दस्तावेज बनबैत अछि। आयोजक ‘विद्यापति’ नामक एकता-चिह्नकेँ सार्वजनिक मंच पर स्थापन करैत छथि, लेखक ओकर उपयोगिता विचारैत छथि। तीन प्रश्न पाठमे अनुसरणीय अछि—स्मरणक विषय केवल महाकवि थिक वा मैथिली समाजक बहुआयामी साहित्य? समारोह वार्षिक नामोच्चारण धरि सीमित रहत वा अध्ययन-पुस्तक-प्रचारक आधार बनत? एहि आयोजनमे सहभागी जनसमूहक वास्तविक भाषिक जीवन पर कोन प्रभाव पड़त? एहि तरह लेख स्मारिकाक घोषित मूल्य आ सामाजिक फलितार्थक बीच आलोचनात्मक दूरी बनबैत अछि। अङ्क अपन आपमे एहि प्रश्नक पूर्ण प्रत्यक्ष उत्तर नहि दैत, पर प्रश्नकेँ स्पष्ट रूपमे उपस्थित करैत अछि।

राधाविरहमे शाक्त तत्त्व: तुलनात्मक तर्कक परीक्षण

आलेखक आरम्भ राधा-कृष्ण लीला आ शाक्त भक्ति-साहित्यक सम्भाव्य सम्बन्ध सँ होइत अछि। शक्ति-उपासना, मातृ-देवता, भक्तिरस, नायिका-विरह आ दार्शनिक अवतारणा भिन्न परम्पराक विधा छथि। लेखक एहि सभकेँ एकत्र करैत ‘शाक्त तत्त्व’क खोज करैत छथि, जे विषयगत स्तर पर नूतन आलोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि। मुदा एहि विश्लेषणक प्रमाण एतय विशेष सावधानी माँगैत अछि: काव्यक भाव-रूपक, नारीमूर्तिक महत्ता आ शक्ति-संप्रदायक ऐतिहासिक सिद्धान्त स्वतः एक समान वस्तु नहि। उद्धृत श्लोकक संदर्भग्रन्थ आ काव्यमे ओकर प्रतीकात्मक प्रयोग अलग जाँचल जाय तँ शाक्त दृष्टिक वास्तविक व्याख्यात्मक सीमा देखल जा सकैत अछि। एहि लेखक महत्व नयी व्याख्याक सम्भावना खोलब अछि; ओकर अन्तिम रूप पाठान्तरसहित तर्क-परीक्षणसँ तय होयत।

सलेहेसक भूगोल: लोकगाथाक गतिशील मानचित्र

आलेखक आरम्भमे सलहेस गाथाक जनसम्पर्क आ स्थानीय भौगोलिक प्रसारक चर्चा अछि। पृष्ठ १२० पर महिसौथा सहित कतेको स्थान-सम्बद्ध सन्दर्भ प्रकट होइत अछि; लेखक गाथामे आएल नामकेँ साधारण कथात्मक पृष्ठभूमि नहि, अनुसन्धानक विषय मानैत छथि। लोकगाथामे स्थल-नामक महत्त्व दोहरा: एक ओर गाथाक पात्रक यात्रा आ क्षेत्रीय सत्ताक कल्पना, दोसर

ओर गायनसमाजक स्मृतिक विस्तार। पाठमे उल्लेखित भूगोलकेँ आजुक जिला-सीमासँ बिना परीक्षण मिलाय देब अनुचित होयत। सबसँ उपयोगी अग्रिम काम विभिन्न सलहेस-गायकक पाठमे स्थल-सूची मिलान, नामक स्थानीय उच्चारणक संग्रह आ मध्यकालीन स्थान-सन्दर्भक अभिलेखीय तुलना होयत। एहन दृष्टिसँ लेख विषयक एतिहासिक सम्भावना खोलैत अछि, न कि एकल अन्तिम नक्सा।

आधुनिक मैथिली कविताक स्थिति: संख्या आ साहित्य-मूल्यक विवाद

डा॰ देवेन्द्रझा पृष्ठ १४० पर आधुनिक कविता पर विचार शुरू करैत काल १८३० सँ १९०७ धरि, १९०९ सँ १९५२ धरि जकाँ काल-खण्डक उल्लेख करैत छथि आ कविक नाम तथा कृतिसंख्याक दावी प्रस्तुत करैत छथि। एहि लेखक प्रविधि इतिहासक मूल्याङ्कन लेल आकड़ा आ कालानुक्रम जोड़बाक प्रयत्न अछि। मुदा साहित्यिक गुणवत्ताक माप केवल रचनाकार-संख्या वा कविता-संख्या नहि; मुद्रण-प्रसार, स्त्री-लेखन, मौखिक परम्परा, प्रगतिवादी आ नवगीतक भिन्न रूप, तथा पत्रिकामे देखल रचनाक सीमा सेहो विश्लेषणमे प्रवेश करैत। लेखकक प्रयत्न एक कालविशिष्ट साहित्यिक आत्मबोधक प्राथमिक स्रोत अछि। आधुनिक शोधकर्ता लेखमे प्रस्तुत सारणी-समान दावा स्वतंत्र ग्रन्थसूचीसँ सत्यापित करैत ओकर व्याख्याक सीमा देखाबथि तँ इहो अङ्कक एक अति उपयोगी परवर्ती आलोचना भऽ सकैत अछि।

कबीश्वरक पोथा: अप्रकाशित रचनाक पाठप्रमाण

‘कबीश्वरक पोथा ओ अप्रकाशित पद्य’ क आरम्भमे लेखक अप्रकाशित अथवा अल्पपरिचित पाण्डुलिपिक प्रसंग उठबैत छथि। ‘पोथा’क शब्द स्वयं परम्परागत हस्तलिखित अथवा संकलित ग्रन्थक परिकल्पना सूचित करैत अछि, मुदा मूल प्रति देखनाइ, लिपि-पहिचान आ लेखनकालक विश्लेषण बिना ओकर वस्तुगत स्वरूप निश्चित नहि करबाक चाही। लेखक प्रस्तुत पाठ बीच रचनाकार, प्रति, लोकसंचार आ पाठक त्रुटिक बहुस्तरीय सम्बन्धक प्रश्न अछि। आलोचनात्मक सम्पादन लेल पाण्डुलिपि क्रम, पृष्ठ-फोटो, छन्द-संरचना, पदान्त,

पाठविभेद आ शब्दार्थक आवश्यक नोंद अत्यन्त उपयोगी होयत। एहि रूपमे स्मारिका नव पाठक सूचना जनसमक्ष अनबाक श्रेय रखैत अछि।

मध्यकालीन दुइ कवि: प्रकाशन आ अनुसन्धानक अन्तर

पृष्ठ १५२ सँ आरम्भ निबन्धमे मैथिली मध्यकालीन काव्यक अल्पज्ञात स्रोत पर ध्यान केन्द्रित अछि। लेखक प्रारम्भमे प्राचीन मैथिली पद-साहित्यक इतिहास, शोधकर्ताक पूर्व प्रयास आ अप्रकाशित काव्यक महत्त्व स्वीकार करैत छथि। एहिसँ बुझाइत अछि जे रचनाक लक्ष्य केवल पुरातनताक प्रशंसा नहि, बल्कि नवान्वेषित सामग्रीक ओर शोधसमाजकेँ आकृष्ट करब अछि। मुदा ‘अप्रकाशित’ होयब स्वयं प्रामाणिक/मूल पाठ होयबाक प्रमाण नहि; रचनाक कालनिर्धारण, प्रचलित पाठक रूप, कविक नामक ऐतिहासिक साक्ष्य आ उपलब्ध अन्य प्रति संग मिलान जरूरी अछि। अङ्ककक अन्तिम भागमे एहन शोध उपस्थित होयब एहि स्मारिकाक वैज्ञानिक सम्भावनाकेँ विशेष बल दैत अछि।

विज्ञापनक श्रृंखला: साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्रक सूक्ष्म अभिलेख

महाविद्यालयक अभिनन्दन पृष्ठसभकेँ कलात्मक आलोचना सँ बाहर रखल जा सकैत अछि, मुदा इतिहास-समीक्षा सँ नहि। विज्ञापनमे संस्थाक नाम, पदाधिकारी, स्थल आ सांस्कृतिक समारोहक समर्थनक मुद्रित निवेदन अछि। एहि सँ लहेरियासराय–दरभंगाक साहित्यिक समाज आ शैक्षिक संस्थाक दृश्य सम्बन्धक अध्ययन सम्भव अछि। मूल प्रति मे विज्ञापन अनेक साहित्यिक रचनाक बीच रखल गेल अछि; एहिसँ पत्रिका छपबाक आर्थिक-समाजिक प्रक्रिया आ पाठकक पठन-क्रम दुनू प्रभावित होइत अछि। भविष्यक अभिलेखी कार्यमे प्रत्येक विज्ञापनक काल, संस्था, छापाखाना आ स्थानीय नेटवर्क अंकित कएल जाय तँ ‘संकल्प’क आयोजनसम्बद्ध सामाजिक आधारक सूक्ष्म मानचित्र बनि सकत। नहि तँ केवल विज्ञापन छपल रहनाइ सँ वित्तीय सौदाक ठोस दावी करब अनुचित अछि।

अध्याय 03 / २००२

आलेख सञ्चयन

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

ग्रन्थक परिचय आ समीक्षाक आधार

‘आलेख सञ्चयन’ एकटा विषयविशेषक एकरेखीय पुस्तक नहि, अपितु मैथिली साहित्यक अध्ययनक तीनटा परस्पर सम्बद्ध दिशाकेँ एक ठाम अनैत अनुसन्धानात्मक आलेखसभक संग्रह थिक। मूल ग्रन्थक विषय-सूचीमे नौटा आलेख अछि। पहिल दू आलेख लोकसाहित्य आ लोकजीवनसँ सम्बन्धित अछि; बीचक पाँचटा आलेख काव्य, साहित्यकार, पत्रकारिता-इतिहास आ कथा-विधाक आलोचनासँ सम्बन्धित अछि; अन्तिम दू आलेख देशी शब्द आ ऐतिहासिक शब्दकोशक भाषावैज्ञानिक परीक्षणक विषय अछि। ई वर्गीकरण ग्रन्थक प्रस्तावनाक आन्तरिक विवेचनसँ सेहो पुष्ट होइत अछि। पुस्तकक एकताक आधार विषयक समानता नहि, अपितु भाषिक-सांस्कृतिक साक्ष्य जुटाक ओकर अर्थ निकालबाक अनुसन्धानशील प्रवृत्ति थिक। (मूल ग्रन्थ: प्रस्तावना, भूमिका आ विषय-सूची)

ग्रन्थक प्रकाशन-सूचनामे प्रथम संस्करण २००२, मूल्य एक सय टाका आ प्रकाशक मिथिला रिसर्च सोसाइटी निर्दिष्ट अछि। मूल विषय-सूची अनुसार पुस्तकक आलेख-पृष्ठ १३ सँ १०४ धरि विस्तार पबैत अछि। प्रस्तावना ओ भूमिकासँ पहिने चारि प्रारम्भिक मुद्रित पृष्ठ अछि;क ५७ पृष्ठमे पुस्तकक सम्मुख-अभिमुख पृष्ठ एक संग सुरक्षित अछि। एहि समीक्षामे ‘पृ.’ सँ तात्पर्य मूल पुस्तक पर छपल पृष्ठ-संख्या अछि,क-पृष्ठ नहि। ई अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एकटामे प्रायः दूटा पुस्तक-पृष्ठ अछि। (प्रकाशन-सूचना,४; विषय-सूची,५)

लेखक भूमिकामे पिता रामलखन झाक स्मृतिकेँ पुस्तक अर्पित करबाक अपन निर्णय, साहित्य-प्रकाशनक कठिनाइ आ निरन्तर अनुसन्धानक प्रेरणाक उल्लेख करैत छथि। फलतः

समर्पण पुस्तकक बाहरी औपचारिकता मात्र नहि रहि आत्मकथात्मक साक्ष्य बनि जाइत अछि। प्रस्तावनाक लेखक अनुसन्धान आ आलोचनाक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत योगानन्द झाक लोकवृत्त, साहित्य-समीक्षा आ भाषावैज्ञानिक अध्ययनकेँ एकर उपलब्धि मानैत छथि। एहि दूनू प्रारम्भिक रचनाक संग पढ़लापर पुस्तक अपन विषय-विस्तारक अतिरिक्त एकटा कार्ययोजनाक घोषणासमेत प्रतीत होइत अछि: लोकस्मृति, लिखित साहित्य आ शब्दक इतिहास—तीनूकेँ अनुसन्धानक बराबर महत्त्व देब। (प्रस्तावना, मुद्रित पृ. i–iv; भूमिका)

एहि आलोचनात्मक अध्ययनमेकेँ प्रधान प्रमाण मानल गेल अछि। जतय मुद्रण अथवा कारण शब्दशः पाठ पूर्ण सुनिश्चित नहि भऽ सकल, ओतय अनुमानित पद, अप्रामाणित संख्या अथवा बनाओल उद्धरण प्रस्तुत नहि अछि। बाहरी जाँच केवल चुनिन्दा पुस्तक-सूची, साहित्य अकादेमीक अभिलेख आ ‘देशीनाममाला’ सम्बन्धी अनुसन्धान-परिप्रेक्ष्य धरि सीमित अछि; लेखकक मूल कथन आ समकालीन अनुसन्धानक टिप्पणी केँ एक-दोसरक विकल्प नहि बनाओल गेल अछि।

अध्ययनक प्रश्न आ आलोचनात्मक कसौटी

एहि संग्रहक मूल्यांकन करबाक मुख्य प्रश्न अछि—योगानन्द झा कोन वस्तुकेँ प्रमाण मानैत छथि, ओहि प्रमाणक वर्गीकरण केना करैत छथि, साहित्यिक अर्थ कोना बनबैत छथि आ निष्कर्ष निकालैत समय कतेक सावधानी रखैत छथि? लोकसाहित्यक आलेखमे मौखिक परम्परा, कहबी, गीत आ कथा प्राथमिक वस्तु अछि; विद्यापति-सुमन सम्बन्धी आलेखमे पाठ आ काव्यशास्त्रीय अवधारणा आधार बनैत अछि; पत्रकारिता-विषयक आलेखमे पत्र-पत्रिकाक इतिहास आ प्रलेखन प्रधान अछि; देशी शब्दक आलेखमे ऐतिहासिक व्युत्पत्ति, रूपान्तर आ अर्थ-विकासक तुलनात्मक अध्ययन मुख्य पद्धति अछि। अलग-अलग प्रकारक प्रमाणक संग लेखकक व्यवहारकेँ एकहि मापदण्डसँ नहि, ताहि प्रमाणक अनुकूल कसौटीसँ जाँचबाक आवश्यकता अछि।

एहि पाठमे समीक्षा दुइ स्तरपर चलैत अछि। पहिल स्तर पुस्तकक भीतर लेखक जे प्रतिपादन करैत छथि, तकर यथासम्भव सटीक पुनर्निर्माण अछि। दोसर स्तरमे जाँचल गेल अछि जे उदाहरण ओ प्रतिपादनक बीच सम्बन्ध कतेक मजबूत अछि, श्रेणीकरण कतय उपयोगी आ कतय अपर्याप्त अछि, सामाजिक दृष्टि कतय खुलैत अथवा संकुचित होइत अछि, आ आजुक शोधकर्ता कतेक हद धरि एहि अध्यायकेँ स्रोत अथवा तर्कक रूपमे उपयोग कऽ सकैत छथि। एहि दू स्तरक पृथक्करण बिना कोनो शोध-समीक्षा अथवा प्रशंसात्मक परिचयमे बदलि सकैत अछि, अथवा वर्तमानक मान्यता लेखकपर पूर्वव्यापी रूपे आरोपित करबाक दोषमे पड़ि सकैत अछि।

१. ‘मैथिलीक लोकसाहित्य’: मौखिक परम्पराक स्वरूप आ वर्गीकरण (पृ. १३–३०)

‘लोक’ आ ‘लोकसाहित्य’क मूल अवधारणा

एहि दीर्घ आलेखक आरम्भ लेखक ‘लोक’ शब्दक सामाजिक व्याख्यासँ करैत छथि। हिनका लेल लोकसाहित्य मूलतः सामान्य जनक अनुभव, स्मृति, विश्वास, आचार-विचार आ सामूहिक अभिव्यक्तिक क्षेत्र थिक। लिखित अथवा शास्त्रीय साहित्यसँ एकर अन्तर केवल लिपिक नहि, सर्जकक सामूहिकता, प्रसारणक मौखिकता, प्रस्तुतीकरणक अवसर आ रीति-रिवाजक संग जीवन्त सम्बन्धक अछि। लेखक ‘रस’, ‘ध्वनि’, ‘अलंकार’, ‘रीति’ आदि काव्यशास्त्रीय पदक चर्चा करैत ई संकेत दैत छथि जे लोकसाहित्यक निर्माणकेँ संस्कृत काव्यशास्त्रक नियमित अनुशासनमे नापल नहि जा सकैत अछि। एतय लोकसाहित्यक स्वतन्त्र कलात्मकता स्वीकार करबाक महत्त्वपूर्ण आग्रह अछि। (पृ. १३–१४)

मुदा एहि आरम्भक एकटा सीमा सेहो अछि। शास्त्रीय परिपाटीसँ पृथकता देखेबाक क्रममे लेखक मौखिक साहित्यकेँ कतहु-कतहु ‘स्वतःस्फूर्त’ आ अकृत्रिम मानि लेलनि अछि। लोकगीतक छन्द, धुन, पुनरावृत्ति, गायन-क्रम आ समारोहजन्य नियम सेहो अपन कठोर संरचना रखैत अछि। अतः लोक आ शास्त्रक अन्तरकेँ नियम आ नियमहीनताक विरोधक रूपमे नहि, दू भिन्न प्रकारक परम्परागत अनुशासनक रूपमे बुझब अधिक उपयुक्त अछि। ई आपत्ति

पुस्तकक उदाहरणसभसँ उत्पन्न होइत अछि; कतोक गीतक निश्चित पाँतिक्रम आ प्रस्तुतिक अवसर स्वयं एहिमे उल्लिखित अछि।

वर्गीकरणक मौलिक योगदान

पुस्तकक पृ. १४–१५ पर लेखक पूर्ववर्ती वर्गीकरणसभक चर्चा कऽ अपन समेकित रूपरेखा दैत छथि। प्रस्तुत आलेखक सर्वाधिक उपयोगी अंश ओहिठामक आलेखीय वर्गीकरण अछि, जाहिमे मैथिली लोकसाहित्यकेँ दृश्य-विधा आ श्रव्य-विधाक सम्बन्धमे रखबाक प्रयास अछि। दृश्य पक्षमे लोकनृत्य आ लोकनाट्य तथा श्रव्य पक्षमे गेय आ कथ्य सामग्रीक भेद दर्शाओल गेल अछि। गेय विधामे लोकगाथा, गाथागीत आ लोकगीत; कथ्य पक्षमे लोककथा, लोकोक्ति, मुहावरा, लोकश्रुति-किंवदन्ती, फकड़ा, वचन, लोकमन्त्र आ बुझौअलि-जकाँ रूपकेँ राखल गेल अछि। वर्गीकरणक एहि क्रमसँ गीत मात्रकेँ लोकसाहित्यक पर्याय मानबाक प्रवृत्ति समाप्त होइत अछि। (विशेषतः पृ. १४–१५ पर मुद्रित वर्गीकरण-चित्र)

एहि वर्गीकरणक आलोचनात्मक परीक्षा करैत ध्यान देबाक चाही जे लोकनाट्य बहुधा गेय, कथ्य आ दृश्य तीनू होइत अछि। लोकगाथा कथा सेहो अछि आ गायन सेहो; गाथागीतक संग लोकगीतक सीमा स्थिर नहि; बुझौअलिक उच्चारण प्रदर्शनात्मक अवसर बनि सकैत अछि। अतः लेखकक नक्शा संग्रह आ पाठ्यक्रम-निर्माणक लेल उपयोगी अछि, मुदा एकरा अन्तिम वैज्ञानिक सीमांकन मानलापर विधासभक परस्पर मिश्रण छूटि जाइत अछि। अधिक सटीक सूचीकरणमे ‘रूप’, ‘प्रस्तुति-माध्यम’, ‘कार्य’, ‘अवसर’ आ ‘प्रदर्शक समुदाय’ अलग-अलग विवरणात्मक क्षेत्र बनयबाक चाही।

लोकगीतसँ लोकगाथा धरि: पाठक सामाजिक सन्दर्भ

आलेखमे संस्कार-संलग्न गीत, विवाह-विधि, ग्रामजीवन, अनुष्ठान, मौसमी अवसर आ जाति-समुदायक विशिष्ट गायनक चर्चा अछि। लोकगीतकेँ भक्तिपरक, संस्कारपरक आ सामयिक सन्दर्भक आधार पर बुझबाक प्रयास लेखक करैत छथि। एहि सूत्रमे गीत केवल शब्द-पाठ नहि, जीवनक क्रियाक संग जुड़ल अभिव्यक्ति बनि अबैत अछि। ‘कखन गाओल गेल’ आ ‘केकरा

द्वारा गाओल गेल’—ई प्रश्न अर्थक अभिन्न अङ्ग होइत अछि। पुस्तकमे गीतक पाँति आ तकर सामाजिक सन्दर्भ एक संग देबाक कारण पाठक दूनू स्तरक बोध प्राप्त करैत छथि। (पृ. १६–२१)

लोकगाथाक विवेचनमे कथात्मक विस्तार आ गेय रूपक अन्तर्सम्बन्ध लेखकक ध्यानमे अछि। गीतमे कथा प्रवेश करैत अछि, आ कथामे स्थानीय नायक, समुदाय, प्रेम, वीरता अथवा लोकविश्वास प्रवेश करैत अछि। लोकगाथाक उदाहरणक उपयोगसँ मैथिली परम्पराक मौखिक इतिहासक आंशिक झलक भेटैत अछि; मुदा एहि उदाहरणकेँ घटनाक यथार्थ ऐतिहासिक अभिलेख समझब उचित नहि। लोकगाथा ऐतिहासिक स्मृति, कल्पना आ सामाजिक मूल्यक मिश्रित निर्माण होइत अछि। लेखकक सामग्री एहि तीनू पर अलग अध्ययनक आधार देबामे सक्षम अछि। (पृ. १८–२०)

कथा, कहबी, वचन, मन्त्र आ बुझौअलिक विस्तार

लोककथाक प्रसंगमे लेखक कथानक आ कथन-विन्यासक उदाहरण दैत छथि; लोकश्रुति आ किंवदन्तीमे कथा-विश्वासक सामाजिक स्वीकार्यता महत्त्व पबैत अछि। लोकोक्ति, मुहावरा आ फकड़ाक चर्चा लोकक लघु-वाक्यात्मक ज्ञानक रूपमे भेल अछि। कहबीक अल्प शब्दमे अर्थक विस्तार, व्यंग्य, व्यवहारिक चेतावनी आ मानवीय सम्बन्धक अनुभव संचित रहैत अछि। ई विशेषता लेखकक संकलनकेँ केवल साहित्यिक नहि, समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टिएँ सेहो उपयोगी बनबैत अछि। (पृ. २२–२६)

लोकमन्त्र आ बुझौअलिक चर्चासँ पुस्तकक विषयपरिधि आरो विस्तृत होइत अछि। मन्त्रमे विश्वास, रोग-भय अथवा संकटसँ रक्षाक आकांक्षा भाषा द्वारा प्रकट होइत अछि; बुझौअलिमे कल्पना आ बौद्धिक खेलक रूप सोझाँ अबैत अछि। एहि दुनू विधाक समीक्षा करैत ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि जे मन्त्रक सांस्कृतिक भूमिका ओकर चिकित्सकीय प्रभावशीलताक प्रमाण नहि, आ बुझौअलिक उत्तर ओकर शब्द-रचनाक संयोगपर निर्भर करैत अछि। ग्रन्थक भाषिक

उदाहरण अध्ययनयोग्य अछि, किन्तु वैद्यकीय, धार्मिक अथवा ऐतिहासिक दावाक स्वतंत्र सत्यापन आवश्यक रहत। (पृ. २६–२८)

संकलनक इतिहास आ आलोचनात्मक सीमा

आलेखक अन्तिम भागमे लेखक मैथिली लोकसाहित्यक पूर्ववर्ती संकलन-प्रयास, अनुसन्धानक कठिनाइ आ सामग्री-संरक्षणक आवश्यकता पर विचार करैत छथि। एतय लोकवस्तुक नष्ट होइत मौखिक परम्पराकेँ लिखित रूपमे सुरक्षित करबाक चिन्ता प्रमुख अछि। ई विषय २००२क पुस्तकक एकटा जीवित प्रश्न बनल रहैत अछि: लोकगीतक शब्द लिखि लेब मात्रसँ धुन, गायक-शैली, प्रस्तुति-अवसर, श्रोता-प्रतिक्रिया आ एकरे अनेक पाठान्तर सुरक्षित नहि होइत अछि। एहि कारण सँ पृ. १३–३० पर प्रस्तुत वर्गीकरणकेँ क्षेत्रीय अभिलेखनक अग्रिम रूपरेखा मानल जा सकैत अछि, सम्पूर्ण अभिलेख नहि।

आलेखक समेकित उपलब्धि मैथिली लोकवृत्तक विवेचनमे गीत, कथा, कहबी, लोकमन्त्र आ नाटकक परस्पर सम्बन्ध स्थापित करब अछि। किन्तु संग्रहक प्रत्येक उदाहरण लेल स्थान, सूचनादाता, संकलन-तिथि आ पाठान्तरक पृथक साक्ष्य देल रहितय तँ ई सामग्री आजुक लोकसाहित्य-अनुसन्धानमे आरो अधिक जाँचयोग्य होइत। ई आलोचना पुस्तकमे प्रस्तुत उदाहरणक महत्व घटबैत नहि, अपितु ओकरा भविष्यक अभिलेख-निर्माणक उपयुक्त आरम्भिक आधारक रूपमे देखैत अछि।

२. ‘लोकोक्तिमे मलाह जाति’: व्यवसाय आ कहबीक अन्तर्सम्बन्ध (पृ. ३१–३५)

सामाजिक जीवनक पेशागत शब्द-संसार

एहि आलेखमे लेखक मलाह समुदायसँ सम्बद्ध कहबी-लोकोक्तिक माध्यमे मिथिलाक नदीप्रधान जीवनक परिचय दैत छथि। माछ, मखान, सिंघाड़ा, नाव, जाल, बंसी, डेली, माछक जाति आ जलचरसँ जुड़ल शब्द-सम्पदाकेँ लेखक सामाजिक व्यवहारक कथनक संग जोड़ैत छथि। एहि सम्बन्धमे लेखकक मुख्य प्रतिपादन ई अछि जे व्यवसाय मात्र आर्थिक गतिविधि नहि, लोकसमाजक अनुभवक भाषा बनबैत अछि। जल-व्यवसायमे प्रयुक्त उपकरण आ

क्रियासँ उत्पन्न अभिव्यक्ति कालान्तरमे अन्य सामाजिक प्रसंगक लेल उपमा, व्यंग्य अथवा चेतावनी बनि जाइत अछि। (पृ. ३१–३२)

लेखक समुदायसम्बद्ध उपनाम आ उपजातिक उल्लेख करैत पेशागत पहचानक व्यापक सामाजिक पृष्ठभूमि बनबैत छथि। मुदा एहि जानकारीकेँ वर्तमानक सम्पूर्ण समुदाय-वर्गीकरण मानब अनुचित होयत; ई पोथीमे प्रस्तुत विवरण थिक, सर्वेक्षणसँ प्रमाणित नवीन जनसांख्यिकीय आँकड़ा नहि। एहि अन्तरक ध्यान रखैत पढ़लापर आलेख सामाजिक इतिहासक शब्दप्रधान स्रोत बनैत अछि। (पृ. ३१)

उपकरणक अर्थसँ रूपकक अर्थ धरि

‘जाल पसरब’, नाव चलायब, ‘खेबा’, बंसी आ माछक उल्लेख लेखक अनेक लोकोक्तिमे देखबैत छथि। जालक वास्तविक उपयोग क्षेत्र-प्रसारक बिम्ब बनैत अछि; बंसीमे फँसल माछ अनुभवक कारण फेर सावधान होयबाक संकेत बनि सकैत अछि; नावक खेवनिहारक कुशलता सामाजिक नेतृत्व अथवा कार्य-संचालनक रूपक बनि सकैत अछि। एहि उदाहरणसभमे प्रत्यक्ष व्यवसायगत क्रिया आ अप्रत्यक्ष सामाजिक अर्थक बीच अर्थान्तरणक प्रक्रिया देखाइत अछि। एहि दृष्टिएँ आलेख शब्दार्थक अध्ययनसँ आगाँ बढ़ि लोक-रूपक-विज्ञानक सामग्री उपलब्ध करबैत अछि। (पृ. ३१–३३)

माछक भिन्न-भिन्न नाम, ओकर स्वाद, मूल्य आ व्यवहारक सम्बन्धमे प्रचलित कहबीसभक संग लेखक भोजन-संस्कृति आ बाजार-विनिमयक वर्णन करैत छथि। ‘सुकठी’क व्यापार आ पशुपतिनाथ-दर्शनक संयोगजकाँ प्रसंग व्यवसायसँ धार्मिक यात्रा धरि एकहि कथनमे अनेक सामाजिक अर्थ जोड़ैत अछि। एहि प्रकारक उदाहरण अध्ययनक लेल उपयोगी अछि, मुदा कहबीमे वर्णित व्यापारिक व्यवहार सभ दिन एकहि रूपमे उपस्थित छल, एकर स्वतन्त्र अभिलेख एहि आलेखक भीतर उपलब्ध नहि। अतः लोकोक्तिक सामाजिक कल्पना आ दस्तावेजी इतिहासकेँ पृथक रखबाक आवश्यकता अछि। (पृ. ३३)

हास्य, व्यंग्य आ पूर्वाग्रहक विश्लेषण

एहि कहबीसभमे बुद्धि, आलस्य, लोभ, कंजूसी, अतिथि-व्यवहार, लाभ आ दुर्भाग्य पर तीक्ष्ण टिप्पणी अछि। बगुलाक कथित तपस्या, माछक स्वभाव, कछुआ अथवा केकड़ाक व्यवहार लोकनीतिक प्रसंग बनैत अछि। लेखक एहि मुहावरासभक आशय अलग-अलग खोलैत छथि, जाहिसँ सामान्य पाठक कैं सन्दर्भ बुझबाक सुविधा होइत अछि। ई व्याख्यात्मक परिश्रम आलेखक एकटा स्पष्ट उपलब्धि अछि। (पृ. ३३–३५)

तथापि हास्य आ कहबीक प्रयोगकैं निरपेक्ष लोकबुद्धिक प्रमाण मानब सन्देहास्पद अछि। व्यवसाय आ जातिक प्रति उपहास, किछु खाद्य-पदार्थक दर्जाक निर्धारण, अथवा समुदायपर आरोपित स्वभाव सामाजिक शक्ति-सम्बन्धक चिन्ह सेहो भऽ सकैत अछि। कहबी कहनिहार समुदाय आ ओकर लक्ष्य समूह जखन अलग होइत अछि, तखन अर्थमे व्यंग्यक संग प्रभुत्वक भाषा सेहो समाहित भऽ सकैत अछि। एहि दृष्टिकोणसँ अगिला अनुसन्धानकैं ई देखबाक चाही जे मलाह समाज अपन विषयमे प्रचलित कहबीकैं स्वयं कोना बुझैत अछि। लेखकक संकलन एहन प्रश्न उठेबाक प्रेरणा दैत अछि, यद्यपि ओ स्वयं एहि विमर्शकैं प्रमुख विषय नहि बनबैत छथि।

आलेखक निष्पत्ति

पाँच पृष्ठक एहि आलेखक वास्तविक मूल्य कहबीक संख्या मात्र नहि, ओकर व्यावसायिक शब्द-संरचना आ सामाजिक अर्थक सम्बन्ध उजागर करब अछि। आरम्भक लेखक कथनमे जल-व्यवसायकैं मिथिलाक प्राचीन जीवनक एकटा महत्त्वपूर्ण आधार बताओल गेल अछि, आ अन्तमे लोकोक्तिक विस्तारकैं एहि पृष्ठभूमिक प्रमाण मानल गेल अछि। परन्तु ‘कहबीक व्यापकता’सँ ‘सर्वाधिक प्राचीन व्यवसाय’क ऐतिहासिक निष्कर्ष सीधे निकालब पर्याप्त नहि। ताहि लेल पुरातात्त्विक, आर्थिक आ अभिलेखीय स्रोत आवश्यक होयत। एतय लेखकक निष्कर्षकैं लोकसाहित्यसँ उत्पन्न ऐतिहासिक परिकल्पनाक रूपमे ग्रहण करब अधिक प्रमाणसम्मत अछि।

३. ‘विद्यापतिक राधाक स्वरूप’: भक्ति, काम आ काव्यक बहुव्याख्या (पृ. ३६–४२)

एकहि राधाक अनेक पाठ

आलेखक प्रारम्भमे राधा भारतीय साहित्य आ धार्मिक कल्पनाक ओहन पात्रक रूपमे प्रस्तुत छथि, जिनकामे प्रेम, अनुराग, दैहिक सौन्दर्य, समर्पण आ आध्यात्मिकता अनेक भिन्न अर्थ प्राप्त करैत अछि। योगानन्द झा राधाकेँ एकटा निश्चित धार्मिक प्रतीकमे सीमित नहि करैत, तीनटा व्याख्यात्मक क्षेत्र—वैष्णवी, कामशास्त्रीय आ काव्यशास्त्रीय—क माध्यमे विद्यापतिक पदावली देखैत छथि। एकरे कारण आलेख प्रचलित मतक पुनरावृत्ति मात्र नहि रहि पाठ-व्याख्याक पद्धति सम्बन्धी विमर्श बनि जाइत अछि। (पृ. ३६–३७)

वैष्णवी स्वरूपक समीक्षा

राधाक वैष्णवी स्वरूप वर्णित करैत लेखक पुराण-परम्परा, कृष्णप्रेम, नदिया आ सहजिया वैष्णव परम्पराक धारणा, तथा जीवात्मा-परमात्माक रूपकक चर्चा करैत छथि। ई भेद स्पष्ट अछि जे भावात्मक प्रेमक पदकेँ धार्मिक अनुभवक रूपमे पढ़ल जाय अथवा लौकिक विरहक रूपमे—दूनू सम्भावना पाठक समक्ष रहैत अछि। लेखक अनेक आलोचकक मतान्तर उपस्थित कऽ ई देखबैत छथि जे बंगीय वैष्णव सन्दर्भमे स्थापित राधाभावक व्याख्या विद्यापतिक प्रत्येक पदपर समान रूपसँ लागू कएल नहि जा सकैत अछि। (पृ. ३७–३९)

एहि तर्कक विशेषता एकार्थवादी पाठक प्रतिरोध अछि। राधाक विरहकेँ केवल आध्यात्मिक प्रतीक मानला पर शरीर, सामाजिक जोखिम, लोकलाज आ प्रेमक पीड़ा अनदेखल रहि सकैत अछि; केवल लौकिक शृंगार मानला पर भक्ति-परम्परामे पदसभक ग्रहण आ पुनर्पाठक इतिहास अदृश्य भऽ सकैत अछि। लेखकक विवेचन एहि दूनू अतिशयताकेँ आलोचनात्मक रूपे देखबाक अवसर दैत अछि। मुदा विद्यापतिक रचनाक मूल काल-सन्दर्भ आ उत्तरवर्ती वैष्णव पाठक ग्रहण-इतिहास स्पष्ट पृथक खण्डमे देल गेल रहितय तँ कालक्रमक स्तर पर तर्क आरो मजबूत होइत।

कामशास्त्रीय स्वरूप आ नैतिक निर्णयक प्रश्न

आलेखक दोसर पक्ष राधाक कामशास्त्रीय निरूपण अछि। एतय नारी-सौन्दर्य, प्रणयोपचार, रतिक अवस्था, अंगवर्णन, विलास-प्रसंग आ देहगत अनुभवकेँ लेखक पाठक प्रमाणसँ जोड़ैत छथि। राधाकेँ केवल पूजा-अर्चनाक अलौकिक मूर्ति मानबाक बदलामे कवि द्वारा सृजित अनुभवशील नायिका मानबाक ई एकटा उपाय अछि। एहि प्रसंगमे लेखक विद्यापति पर लगैत अश्लीलताक आरोपक चर्चा कऽ विरहिणी राधाक वेदनाक कलात्मक संवेदनाकेँ ओहि आरोपक विरुद्ध महत्वपूर्ण मानैत छथि। (पृ. ३९–४०)

एकर आलोचनात्मक उपलब्धि यौन-अभिव्यक्तिक कलात्मक प्रश्नकेँ नैतिक लांछनसँ अलग करबाक प्रयास अछि। परन्तु कामशास्त्रीय वर्गमे प्रत्येक सौन्दर्यबिम्बकेँ रखबाक जोखिम सेहो छैक: पदक भाव, बोलनिहारक स्थिति, सखी-संवाद, हास्य, संकोच आ प्रतीकात्मकता सभकेँ केवल कामशास्त्रक सूचीमे बदलि देलापर कविताक मौलिक नाटकीयता घटि सकैत अछि। आलेखक अन्दर साक्ष्यक विस्तार देखाइत अछि, मुदा पाठान्तर आ गीतक संगीत-सन्दर्भक प्रत्यक्ष चर्चा अपेक्षाकृत कम अछि। एहि दूनू क्षेत्रक समावेश राधा-व्याख्याक बहुपरतीयता आरो बढ़ा सकैत अछि।

काव्यशास्त्रीय वर्गीकरणक उपयोगिता

तेसर प्रमुख भागमे राधा शृंगार-रसक आलम्बन, नायिका-भेद आ अनुभाव-व्यभिचारी भावक अनुषंगमे विवेचित छथि। लेखक स्वकीया-परकीया, मुग्धा-मध्या-प्रौढ़ा, अभिसारिका, खण्डिता, मानिनी आ विरहिणी-जकाँ अनेक नायिका-अवस्थाक चर्चा करैत छथि। एहि सूचीक उपयोगिता ई अछि जे राधाक रूप गतिहीन प्रतिमा नहि रहि परिस्थिति-विशेषमे बदलैत पात्रक रूपमे देखाइत अछि। एकहि नायिका प्रेमक अलग-अलग अवसरमे भिन्न सामाजिक आ भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि। (पृ. ४०–४१)

एहि वर्गीकरणक सीमा सेहो कविता आ काव्यशास्त्रक बीच सम्बन्धमे अछि। आलोचनाक उद्देश्य केवल ई प्रमाणित करब नहि जे अमुक पद अमुक नायिका-भेदमे समाहित अछि; मुख्य

प्रश्न ई अछि जे ओहि पदमे विद्यापतिक काव्यभाषा पारम्परिक भेदकेँ कोना परिवर्तित करैत अछि। पुस्तकक अन्तिम निष्कर्षमे राधाक एकरे अनेक रूपकेँ समेकित देखबाक आग्रह एहि सीमाक समाधान दिस संकेत करैत अछि। लेखक एकाङ्गी विद्वत्-व्याख्याक आलोचना करैत राधाकेँ रस, साधना, सौन्दर्य आ अनुभूतिक संगम मानैत छथि। (पृ. ४१–४२)

समग्र निर्णय

ई आलेखक केन्द्रवर्ती योगदान कोनो एकटा ‘अन्तिम राधा’ घोषित करब नहि, वरन् राधा-विवेचनमे प्रयुक्त भिन्न-भिन्न व्याख्यात्मक उपकरणक सीमा स्पष्ट करब अछि। अहिना विद्यापति अध्ययनमे सम्प्रदायगत ग्रहण, साहित्यशास्त्र आ लौकिक अनुभूतिक स्तर परस्पर संवाद करैत अछि। आलोचकक दृष्टिमे ई बहुविधता स्वयं साहित्यक समृद्धि थिक; शोधार्थीक लेल शिक्षा ई जे पदक प्रसंग, भाषा, भाव, पाठान्तर आ उत्तरवर्ती व्याख्या अलग-अलग प्रमाण-वर्गमे रखि तखन समेकित निष्कर्ष निकालल जाय।

४. ‘विद्यापतिक पार्वतीक स्वरूप’: शाक्त अवधारणा आ गृहस्थ जीवनक यथार्थ (पृ. ४३–५२)

पौराणिक पात्रसँ मैथिल नारीक अनुभव धरि

लेखक पार्वतीक अध्ययनक आरम्भ नारीक कन्या, भार्या आ माता—एहि तीन सामाजिक अवस्थाक उल्लेखसँ करैत छथि। गौरी, उमा, भवानी आ माहेश्वरीक पौराणिक पहचान उपस्थित करैत ओ मिथिलामे गौरीपूजनक वैवाहिक प्रसंगसँ विद्यापतिक पदावली धरि पहुँचैत छथि। ई पद्धति पाठककेँ बुझबैत अछि जे शिव-पार्वतीक कथा स्थानीय सांस्कृतिक अर्थ प्राप्त करैत कोना पारिवारिक जीवनक कथा बनि जाइत अछि। गौरीक पूजा केवल देवपूजन नहि, मनोवाञ्छित वर, सौभाग्य, दाम्पत्य-सहयोग आ घरेलू स्थिरतासँ जोड़ल लोकविश्वासक एकटा सामाजिक रूप सेहो अछि। (पृ. ४३–४४)

एहि आरम्भमे संस्कृति आ साहित्यक सम्बन्ध सघन अछि। पार्वतीक पौराणिक श्रेष्ठता आ सामान्य कन्याक वैवाहिक विवशता बीच दूरी रहितो लेखक पदावलीमे हुनक पारस्परिक प्रविष्टि देखैत छथि। एहि कारण आलेखकेँ केवल शिव-पार्वतीक चरित्र-परिचय मानब उचित नहि;

एकरा पढ़ैत काल विवाह-संस्था, स्त्रीक निर्णयाधिकार, आर्थिक विपन्नता आ पारिवारिक मान-अपमान जकाँ सामाजिक प्रश्न लगातार सोझाँ अबैत अछि।

पराशक्ति आ घरेलू चरित्रक द्वैत

आलेखमे देवीमाहात्म्यक सन्दर्भसँ गौरीक पराशक्ति-स्वरूपक विवेचन अछि। ब्रह्मा, विष्णु आ शिवक शक्तिरूपक समेकन, सृष्टि-पालन-संहारक अवधारणा आ देवीक विविध रूपक वर्णनसँ लेखक शाक्त साहित्यिक पृष्ठभूमि स्थापित करैत छथि। ई पृष्ठभूमि आवश्यक अछि कारण विद्यापतिक पदावलीमे शिवपत्नीक घरेलू व्यवहारक संगहि शक्तिस्वरूपिणी देवीक महिमा उपस्थित अछि। लौकिक आ अलौकिक दूनू स्तर बिना पाठक गौरीक चित्र अपूर्ण रहि सकैत अछि। (पृ. ४४–४५)

एहि द्वैतक व्याख्या लेखकक श्रेष्ठ आलोचनात्मक कार्यसभमे अछि। एक दिस पार्वती जगत्शक्ति छथि; दोसर दिस ओ कम आय, भिक्षाटन, अस्थिर भोजन-व्यवस्था आ पतिक नशाक कारण दुखी स्त्रीक रूपमे चित्रित छथि। एहि दुइ रूपकेँ विरोध नहि, काव्यक अर्थोत्पादक तनाव मानल जा सकैत अछि। जखन देवी साधारण गृहिणीक चिन्तामे बोलैत छथि, तखन लोकपाठक धार्मिक पात्र अपन परिचित परिवेशमे उतारि अनैत अछि। एहि रूपान्तरणमे विद्यापतिक हास्य आ करुणा एक दोसरकेँ सबल करैत अछि। (पृ. ४७–५१)

पूर्वराग, परिणय आ अनमेल विवाह

पार्वतीक पूर्वरागक चर्चा करैत लेखक तपस्वी शिवकेँ देखलाक बाद गौरीक आकृष्ट होयब, मेनाक सन्देह, वरक रूप-रङ्ग, उम्र, धनहीनता आ विवाहक सामाजिक दबावक प्रसंग प्रस्तुत करैत छथि। शिवक कुरूपता आ निर्धनता पर हँसी केनिहार लोकसमुदायक समक्ष मेनाक क्रोधक अन्तर्गत मातृत्वक भय अछि। लेखक एहि प्रसंगकेँ मैथिल समाजमे अनमेल विवाहक अनुभूतिसँ जोड़ैत छथि। एहि जोड़सँ पौराणिक कथा सामाजिक आलोचनाक रूप पबैत अछि। (पृ. ४५–४६)

महत्त्वपूर्ण प्रश्न ई अछि जे विवाहमे कन्याक अभिलाषा आ परिवारक निर्णयक सम्बन्ध केना बनैत अछि। लेखक कतोक पदक आधार पर गौरीक प्रेमनिष्ठा आ परिवारक विवशताकेँ एकहि कथामे पहचानैत छथि। मुदा जखन विवश स्वीकृतिकेँ आदर्श स्त्रीधर्म मानबाक पुरातन दृष्टि प्रमुख बनैत अछि, तखन नारीक स्वतन्त्र इच्छा पाछाँ छूटि सकैत अछि। आलेखक सामग्री स्वयं एहि तनाबकेँ उजागर करैत अछि: गौरी प्रेम करैत छथि, विरोध अथवा असन्तोषक परिवेश देखैत छथि, आ तकर बाद सामाजिक मर्यादा भीतर अपन स्थान निर्माण करैत छथि। एतय आलोचनात्मक पाठकेँ समर्पण आ प्रतिरोध दूनू पढ़बाक चाही।

पतिनिष्ठा, नैहरक उपेक्षा आ आर्थिक असुरक्षा

लेखक विवाहित गौरीक पतिनिष्ठाक अनेक पद उद्धृत करैत छथि। शिवक अपमान होयब, सासुर-नैहरक सम्बन्धमे तकर प्रभाव पड़ब, आर्थिक रूपसँ असमर्थ पतिक उपेक्षा सहब—ई उदाहरण मिथिलाक दाम्पत्य जीवनक वर्गीय आ सामाजिक यथार्थ सोझाँ अनैत अछि। विशेषतः नैहरमे शिवक अनादर आ पार्वतीक मौन ग्लानि-वेदना वाला प्रसंग नायिकाक गुप्त मनःस्थिति प्रकट करैत अछि। लेखक एहि मौनकेँ लज्जा, स्नेह, मान आ मर्यादाक बीच संघर्षक रूपमे व्याख्यायित करैत छथि। (पृ. ४६–४८)

आर्थिक अभावक अंशमे शिवक भिक्षाटन आ घरक दैन्य मुख्य कारण बनैत अछि। गौरीक चिन्ता महज धनलोभ नहि, भोजन, घर, वस्त्र आ परिवारक जीवनयापनक व्यावहारिक समस्या थिक। एहि बिन्दुपर लेख आलोचनासँ अधिक समाजार्थिक पाठ बनि जाइत अछि। शैव पदावलीमे स्त्रीक श्रम आ गृहस्थी पर पड़ैत आर्थिक दबावकेँ लेखक पहचानैत छथि। ई दृष्टि विद्यापतिक शैव गीतकेँ केवल भक्तिपरक पाठसँ अलग सामाजिक दस्तावेजक काव्यात्मक रूपमे देखबाक अवसर दैत अछि। (पृ. ४८–४९)

साचिव्य, व्यसन-विरोध आ दाम्पत्यक सक्रिय नारी

पार्वतीक ‘साचिव्य’क व्याख्या एहि आलेखक महत्त्वपूर्ण मौलिक पक्ष अछि। गौरी शिवकेँ श्रम आ कृषि-कर्म करबाक सलाह दैत छथि, भिक्षाटनसँ प्रतिष्ठाक हानि पर विचार रखैत छथि आ

भाङ-प्रसंगक परिणामपर चिन्तित होइत छथि। ई नारी मात्र पतिक अनुगामिनी नहि; ओ घरेलू अर्थनीति आ आचरणमे विवेकशील हस्तक्षेप करैत छथि। लेखक एहि सलाहकेँ पत्नी-सुलभ करुणा, स्नेह आ सुधारक सक्रियताक परिचायक मानैत छथि। (पृ. ५०–५१)

एतय आधुनिक आलोचनाक लेल सूक्ष्म अन्तर राखब आवश्यक अछि। ‘पतिनिष्ठा’क आदर्शक अन्तर्गत पत्नीकेँ पतिक सुधारक बनाओल गेल अछि, मुदा पतिक व्यसन, काम-विभाजन आ संसाधन-वितरणपर प्रश्न उठायब स्त्रीक आलोचनात्मक चेतनाक साक्ष्य सेहो अछि। पार्वतीक कथनमे केवल त्याग नहि, पारिवारिक निर्णयक प्रश्न सेहो उपस्थित अछि। लेखकक उदाहरणसभक एहि पुनर्पाठसँ गीतक सामाजिक गम्भीरता आरो स्पष्ट होइत अछि।

मुख्य आलोचनात्मक उपलब्धि

एहि आलेखमे विद्यापतिक पार्वती शाक्त उपासनाक मूर्ति, प्रेममे आकुल कन्या, विवाहक तनावमे फँसल नारी, अपमान सहनिहार पत्नी आ गृहस्थीक व्यावहारिक सलाहकार—सभ रूपमे अबैत छथि। लेखकक विश्लेषणक सार्थकता एहि बहुस्तरीय चरित्र-निर्माणमे अछि। तथापि लोकक विवाहगीत आ विद्यापतिक मूल पदक पाठ-परम्परा अलग-अलग स्रोतमे तुलना कएल जाए तँ कोन मोटिफ पदावलीक निजी सर्जना अछि आ कोन व्यापक मिथिला-लोकपरम्पराक अंश, से आरो स्पष्ट होयत। एहि सम्भावनाकेँ पुस्तकक सामग्री पर्याप्त आधार दैत अछि।

५. ‘सुमनजीक मुक्तककाव्यमे नारी’: परम्परा, प्रकृति आ सामाजिक नारी-रूप (पृ. ५३–६४)

आलोचनाक चारि प्रमुख कोटि

सुमनजीक कविता सम्बन्धी आलेख चारि प्रमुख कोटिमे नारी-चित्रणक विवेचन करैत अछि: पौराणिक स्वरूप, प्रकृतिमे आरोपित स्वरूप, काव्यशास्त्रीय स्वरूप आ लौकिक स्वरूप। ई कोटि सरल शीर्षक नहि; प्रत्येकक संग नारीक स्थान, रूपायनक विधि आ कविक भावनात्मक अभिप्रायक अन्तर बदलैत अछि। लेखक पहिले भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिमे नारीक महिमा

प्रस्तुत करैत छथि, तखन सुमनजीक अनेक काव्य-रचनाक आधार पर एहि चारि रूपक विस्तार करैत छथि। (पृ. ५३–५४)

एहि वर्गीकरणक एकटा मुख्य लाभ ई अछि जे नारीकेँ मात्र शृंगारक पात्रक रूपमे सीमित नहि कएल गेल अछि। देवीक शक्ति, प्रकृतिक जीवित प्रतिमा, काव्यक नायिका आ घर-समाजक व्यक्ति—प्रत्येक रूपक अलग सांस्कृतिक प्रयोजन अछि। मुदा एहि कोटिसभक बीच सम्बन्ध प्रश्नातीत नहि। मातृत्व पौराणिक आ लौकिक दूनूमे अबैत अछि; प्रकृतिमे आरोपित स्त्री सेहो शृंगारशास्त्रीय प्रतिमासँ निर्मित भऽ सकैत अछि; अतः वर्गीकरण अध्ययनक सुविधा दैत अछि, सर्वथा पृथक वस्तुस्थितिक दावा नहि।

पौराणिक देवी आ घरक श्रम

पौराणिक कोटिमे लेखक शक्तिरूपिणी नारी, देवीक अनेक अभिधान, सृष्टि-पालनक कल्पना आ सुमनजीक शक्तिस्तुति-साहित्यक चर्चा करैत छथि। विशेष बात ई जे देवीक उच्च शास्त्रीय रूपक बाद लेख घरेलू स्त्रीक दैनिक श्रमक सजीव चित्र दिस मुड़ैत अछि। घर, द्वार, बाल-बच्चा, साफ-सफाइ आ परिवारक व्यवस्थामे व्यस्त स्त्रीकेँ शक्तिक सामाजिक रूपक रूपमे देखाओल गेल अछि। एहि प्रसंगमे कविताक घरेलू क्रियासभ नारीक कार्यदक्षता आ सामाजिक अदृश्य श्रमक बिम्ब बनि अबैत अछि। (पृ. ५४–५५)

एतय एकटा द्वन्द्व अछि। घरक नारीकेँ देवी कहब सम्मानक भाषिक रूप थिक, मुदा एहि सम्मानक आड़मे ओकर श्रमक असमान वितरण, शिक्षा-अवसरक अभाव आ स्वायत्तताक सीमा ओझरायल नहि रहबाक चाही। पुस्तकक आलेख सुमनजीक संवेदनशील चित्रणक प्रशंसा करैत अछि, किन्तु घरेलू शक्तिरूपक अन्तर्गत स्त्रीपर पड़ैत सामाजिक दायित्वक आलोचनात्मक परीक्षण अपेक्षाकृत कम करैत अछि। आजुक पाठक एहि कवितासभमे आदर्शीकरण आ यथार्थ—दूनू प्रश्न देखब।

प्रकृतिक नारीकरण: बिम्ब-विधानक कार्य

प्रकृतिमे आरोपित स्वरूपवाला खण्डमे चान, इजोरिया, लता, किसलय, ऋतु, नदी आ मौसमक मानवीकरण उपस्थित अछि। लेखक नारीक रूप, वयःस्थिति, स्वर, भाव आ वात्सल्यकेँ प्रकृतिक दृश्य आ अनुभवक संग जोड़ैत सुमनजीक काव्यक सौन्दर्य-विन्यास बुझबैत छथि। ‘इजोरिया’केँ स्त्रीक रूपमे देखब प्रकृति-वर्णनक एकटा विशिष्ट कल्पनाशील उपाय अछि; एतय बाहरी संसारकेँ मानवीय सम्बन्धसँ अर्थवान बनाओल जाइत अछि। (पृ. ५५–५७)

लेखकक एक महत्त्वपूर्ण अवलोकन ई अछि जे प्रकृतिक सौन्दर्यक संग नारीक भीतरी वेदना, करुणा आ मातृत्व सेहो जुड़ल अछि। शरदक वृद्धा-माताक स्वरूप होअय अथवा वर्षाक वात्सल्यपूर्ण प्रकृति—एहि चित्रसभसँ नारीक जीवनकेँ केवल युवती-सौन्दर्यक संकीर्ण दायरासँ बाहर अनबाक प्रयास देखाइत अछि। एहि उदाहरणसभक बल पर प्रकृति-काव्यक समीक्षा केवल अलंकारक सूची नहि रहि भावक इतिहास बनैत अछि। (पृ. ५७–५८)

तथापि प्रकृतिक नारीकरणक सांस्कृतिक राजनीति पर प्रश्न उठेब आवश्यक अछि। स्त्रीकेँ ‘स्वाभाविक रूपसँ’ ममतामयी, त्यागमयी आ सौन्दर्यमयी मानबाक रूढ़ि सामाजिक भूमिकाकेँ प्राकृतिक सत्यजकाँ प्रस्तुत करि सकैत अछि। सुमनजीक काव्यबिम्बक कलात्मकता स्वीकार करैत ई सेहो देखल जाय जे कोन सामाजिक अपेक्षा एहन रूपकद्वारा पुष्ट होइत अछि आ कोन जीवनानुभव अदृश्य रहि जाइत अछि। एहि स्तरपर लेखकक आलोचनात्मक सामग्री पुनर्विचारक लेल उपयोगी अछि।

नायिका-भेद, ‘ललना-लहरी’ आ परम्परागत शिल्प

काव्यशास्त्रीय खण्डमे लेखक नख-शिख वर्णन, नायिका-भेद, वयःसन्धि, अलंकार, देशभेद, रस आ वृत्तिक आधार पर कवितासभ पढ़ैत छथि। ‘ललना-लहरी’जकाँ रचनामे क्षेत्रानुसार नारीक सौन्दर्य आ प्रवृत्तिक काव्यात्मक वर्गीकरण तथा संस्कृत काव्यशास्त्रक भेदसभक प्रयोग चिन्हित कएल गेल अछि। लेखक ईहो स्वीकार करैत छथि जे कतिपय नारी-चित्र पुरातन

परम्पराक पुनरावृत्ति बनि जाइत अछि आ ताहिमे नूतनता सीमित रहैत अछि। ई आत्मसचेत आलोचना आलेखक गुण थिक; लेखक केवल प्रशंसात्मक निर्णय नहि दैत छथि। (पृ. ५८–६१)

एहि खण्डमे काव्यशास्त्रीय शब्दसंग्रहक प्राचुर्यसँ आलोचनाक ज्ञानपरकता बढ़ैत अछि, मुदा नारी-चित्रक स्वयं बोलबाक स्थानक परीक्षण कम होइत अछि। नायिका-भेदक सूचीमे पात्र प्रायः बाह्यदृष्टिसँ निरूपित होइत छथि। एखन शोधक प्रश्न होयत जे सुमनजीक रचनामे स्त्रीक निजी कथन, संवाद, निर्णय आ प्रतिरोध कतेक भेटैत अछि। केवल रूप-वर्गीकरणसँ ई प्रश्नक उत्तर नहि भेटि सकैत अछि।

लौकिक नारी: प्रेमिका, पत्नी, कन्या, माता

लौकिक स्वरूपक अन्तर्गत लेखक पारिवारिक सम्बन्धक अनेक अवस्था देखैत छथि। कन्याक विदाइ, प्रियाक आशा, विवाहित जीवनक सहचर्य, माँक वात्सल्य आ विधवाक वेदनाक चर्चा नारी-अनुभवक भावात्मक विस्तार दैत अछि। सुमनजीक रचनामे राष्ट्रबोध आ कर्मप्रेरणाक प्रसंगमे नारी शक्तिरूपमे आवाहन कएल जाइत छथि। लेखक एहि बहुविध रूपकेँ कविक सामाजिक चेतना आ करुणाशीलताक साक्ष्य मानैत छथि। (पृ. ६१–६४)

एहि विवेचनक सशक्त पक्ष नारीक सौन्दर्यबोधसँ सामाजिक संवेदना धरि क्रमिक विस्तार अछि। मुदा ‘माता, पत्नी, बहिन, कन्या’ एहन सम्बन्ध-सूची नारीक स्वायत्त नागरिक व्यक्तित्वक सम्पूर्ण परिभाषा नहि। लेखिका, श्रमिक, शिक्षार्थिनी अथवा निर्णय लेनिहार स्त्रीक व्यक्तिगत चेतनाक अनुपस्थिति स्वयं अध्ययनक विषय बनि सकैत अछि। लेखकक काल-सन्दर्भक भीतर एहि कमीकेँ देखैत ‘सुमनजीक नारी-चित्रण’केँ कविक संवेदनशीलता आ परम्परागत लिंग-भूमिकाक द्वैतक रूपमे समझब अधिक न्यायसंगत होयत।

समग्र मूल्यांकन

बारह पृष्ठक एहि आलेखक महत्त्व ई जे लेखक नारीक साहित्यिक कल्पनाक सम्बन्ध पुराण, प्रकृति, शास्त्र आ परिवारसँ एक संग जोड़ैत छथि। काव्यक परम्परागत चमत्कार आ नारीक घरेलू जीवनक यथार्थक बीच आलोचनात्मक अन्तर देखबाक आधार तैयार होइत अछि। जँ एहि

आलेखकेँ अगिला अनुसन्धानक आधार बनाओल जाय, तँ सुमनजीक मूल कविता-प्रकाशनक काल, संग्रहानुसार भिन्नता आ स्त्रीक स्वतन्त्र वाणीकेँ अलग विश्लेषणात्मक स्तम्भ बनायब उपयोगी होयत।

६. ‘अमरजी ओ हुनक मैथिली पत्रकारिताक इतिहास’: साहित्यकारक रचनात्मकता आ इतिहासलेखनक समीक्षा (पृ. ६५–७८)

व्यक्तित्वपरक आलेखसँ पुस्तक-समीक्षा धरि

एहि आलेखमे डॉ. योगानन्द झा पहिले चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क शिक्षण, साहित्यसेवा, कविता, हास्य-व्यंग्य, नाटक, कथा आ पत्रकारितासँ जुड़ल गतिविधिक विवरण प्रस्तुत करैत छथि। तखन अमरजीक ‘मैथिली पत्रकारिताक इतिहास’क उद्देश्य, सामग्री, कालविभाजन, पत्र-पत्रिकाक विश्लेषण आ निष्कर्षपर विवेचन करैत छथि। ई रचना साधारण जीवनपरिचय अथवा प्रशंसापरक पुस्तक-समीक्षा नहि; एकटा इतिहासकारक जीवनानुभव आ हुनक लिखल इतिहासक पद्धति बीच सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रयत्न अछि। (पृ. ६५–७३)

आलेखमे अमरजीक अनेक काव्यसंग्रह, हास्य-व्यंग्यक रचनाशीलता, साहित्यिक पत्रिकासँ जुड़ाव आ सामाजिक रूढ़ि-विरोधी दृष्टिक परिचय देल गेल अछि। लेखकक मान्यता अछि जे सामाजिक विसंगति पर सतत दृष्टि रखनिहार साहित्यकार पत्रकारिता-इतिहासमे सेहो जीवित सामाजिक प्रक्रियाकेँ पहचानि सकैत छथि। ई सम्बन्ध सम्भावनापूर्ण अछि, मुदा रचनात्मक साहित्यक प्रतिभा अपने-आप इतिहासलेखनक प्रमाणिकता नहि बनबैत। इतिहासक दावाक जाँच मूल पत्रिका, अङ्क, सम्पादकीय, कालक्रम आ दस्तावेजसँ करब पड़ैत अछि। सौभाग्यसँ आलेखक उत्तरार्द्ध एहि स्रोतगत प्रश्न दिस बढ़ैत अछि।

पत्रकारितामे सक्रिय सहभागिताक महत्त्व

अमरजीक पत्र-सम्पादन, स्तम्भ-लेखन आ मैथिली भाषाक सार्वजनिक प्रसारमे सक्रिय भूमिकाकेँ लेखक महत्वपूर्ण मानैत छथि। पत्र-पत्रिकाक व्यवहारिक कठिनाइ—सामग्री संकलन, सम्पादन, प्रकाशन, पाठकवर्ग आ वितरण—सम्बन्धी अनुभव इतिहासकारकेँ

संस्थागत पक्ष बुझबामे सहायता करैत अछि। आलेखमे ‘वैदेही’, ‘स्वदेश’ आ अन्य पत्रिकासँ सम्बन्धित गतिविधिक उल्लेख एहि सन्दर्भमे कएल गेल अछि। (पृ. ७१–७३)

परन्तु एतय आलोचनाक मूल प्रश्न ई अछि जे स्वयं आन्दोलनक सहभागी इतिहासकारक मूल्यांकनमे आत्मीयता कतेक प्रवेश करैत अछि। नजदीकी अनुभव दुर्लभ सामग्री उपलब्ध करबैत अछि, संगहि पक्षधरता सेहो आन सकैत अछि। योगानन्द झा अमरजीक अनुभवकेँ महत्वपूर्ण योग्यता मानैत छथि; शोधार्थीकेँ एहि महत्त्वकेँ स्वीकार करैत वैकल्पिक स्रोतक मदति सँ कथनक परीक्षण करबाक चाही। प्रत्यक्ष अनुभव आ अभिलेखीय निष्पक्षता पूरक होइत अछि, स्वतः एकरूप नहि।

‘मैथिली पत्रकारिताक इतिहास’क संरचना

लेखकक विवरण अनुसार इतिहासग्रन्थमे पत्रकारिताक सिद्धान्त, पत्र-पत्रिकाक सामाजिक भूमिका, प्रकाशक-सम्पादकक दायित्व आ मैथिली पत्रकारिताक विकासक चर्चा अछि। पृ. ७४ पर विवेच्य पत्र-पत्रिकाक समय-सीमा १९०५ सँ १९७९ धरि आ पत्र-पत्रिकाक संख्या ८७ बताओल गेल अछि। ई संख्या अमरजीक इतिहासग्रन्थक संदर्भमे योगानन्द झा द्वारा उद्धृत विवरण थिक; एकरा मैथिली पत्रकारिताक सार्वकालिक अन्तिम गणना नहि मानल जाय। आलेख पत्रिकाक प्रकाशन-अवधि, प्रकार आ भाषिक-सांस्कृतिक योगदानक अनुसार खण्ड-विभाजनक विवेचन करैत अछि। (पृ. ७३–७५)

एहि स्वरूपक बल पत्र-पत्रिकाकेँ मात्र शीर्षक-सूची मानबाक बदला संस्थागत इतिहासक वाहक बनायब अछि। कोन पत्र शिक्षा-प्रसारमे योगदान देलक, कोन भाषा-आन्दोलनक स्वर बनल, कोन सामाजिक प्रश्न उठेलक, आ कोन आर्थिक वा सम्पादकीय कारणसँ स्थिर नहि रहि सकल—एहन प्रश्न इतिहासकेँ सामाजिक इतिहासमे विस्तृत करैत अछि। लेखक अमरजीक पत्रिका-विश्लेषणमे राजनीतिक, शैक्षणिक, भाषिक आ सांस्कृतिक योगदानक समेकित मूल्यांकनक प्रशंसा करैत छथि।

कालक्रम, सुधार आ प्रामाणिकताक परीक्षण

आलेखमे भिन्न इतिहासकारक कथनमे पत्रिकाक प्रारम्भ-वर्ष, सम्पादक अथवा पुनर्प्रकाशन सम्बन्धी मतभेदक चर्चा अछि। अमरजी कतोक पूर्ववर्ती भ्रान्तिक संशोधन करबाक प्रयास कयने छथि—ई योगानन्द झाक प्रमुख मूल्यांकन अछि। एहि प्रसंगमे लेखक ग्रन्थक कालक्रमकेँ महत्त्व दैत छथि आ पत्रकारिताक लगभग तीन चरणक संकेतक चर्चा करैत छथि। (पृ. ७६–७७)

ई तुलना इतिहासलेखनक प्रामाणिकताक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि। तथापि ‘अमुक पूर्ववर्ती मत गलत छल’ एहन निर्णायक टिप्पणी आन्तरिक विवेचनक आधार पर तखनहि मान्य होयत जखन सम्बन्धित मूल अङ्क अथवा दस्तावेज देखल जाय। एहि समीक्षामे उक्त सुधारसभकेँ मूल पुस्तकक ऐतिहासिक दावा मानल गेल अछि, स्वतन्त्र रूपे प्रमाणित तथ्य नहि। एही सावधानीसँ आलेखक उपयोगिता सुरक्षित रहैत अछि आ अनुसन्धानक उत्तरदायित्व सेहो स्पष्ट होइत अछि।

ग्रन्थक अपूर्णता आ नामकरण-विवाद

योगानन्द झा अमरजीक इतिहासग्रन्थक अपूर्णता सेहो स्वीकार करैत छथि: सभ पत्र-पत्रिकाक सभ अङ्क उपलब्ध नहि छल, ताहि कारण कतोक विवेचन उपलब्ध सामग्री अथवा पूर्वमत पर निर्भर रहल। इतिहासग्रन्थक नाम ‘पत्रकारिताक इतिहास’ हेबाक औचित्य पर उठाओल आलोचनाक चर्चा करैत लेखक पत्रकारिताकेँ केवल दैनिक समाचारपत्रक संचालन धरि सीमित करबाक विरुद्ध तर्क दैत छथि। पत्रिका, विचार-विनिमय, जनचेतना, सम्पादकीय हस्तक्षेप आ सामाजिक आन्दोलन सेहो पत्रकारिताक व्यापक अर्थमे अबैत अछि—ई लेखकक पक्ष अछि। (पृ. ७७–७८)

नामकरण-विवादमे लेखकक तर्क सशक्त अछि। जँ पत्रकारिताकेँ केवल दैनिकता-सापेक्ष मानल जाय तँ साप्ताहिक, पाक्षिक आ मासिक पत्रक सार्वजनिक हस्तक्षेपक इतिहास उपेक्षित भऽ सकैत अछि। तथापि पत्रकारिता-इतिहास, पत्रिका-सूची आ सम्पादकीय-सांस्कृतिक

इतिहासक बीच कार्यपद्धतिक अन्तर स्पष्ट राखब आवश्यक अछि। लेखक नामकरणक प्रतिरक्षा करैत छथि; भावी अनुसन्धानमे प्रत्येक विधाक स्रोतसम्पदा आ विश्लेषणात्मक प्रश्न अलग रूपे निश्चित करब सम्भव अछि।

बाहरी अभिलेखसँ पुष्ट भऽ सकल तथ्य

साहित्य अकादेमीक आधिकारिक पुरस्कार-सूची चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’केँ ‘Maithili Patrakaritaka Ithihas’ लेल १९८३क मैथिली साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्तकर्ता बतबैत अछि। पुस्तकक प्रकाशन-सूची सम्बन्धमे जापानक CiNii पुस्तकालयीय अभिलेख ग्रन्थक लेखक चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’, प्रकाशक मैथिली अकादमी, पटना, प्रकाशन-वर्ष १९८१ आ मुख्य ग्रन्थक ४०५ पृष्ठक विवरण दैत अछि। ई दू तथ्य बाहरी सन्दर्भसँ पुष्ट अछि; योगानन्द झाक आलेखमे उल्लिखित अन्य पत्रिका-वर्ष आ सम्पादकीय विवरणक समुच्चयक एहन स्वतन्त्र जाँच एहि अध्यायमे कएल नहि गेल अछि। (बाहरी स्रोत: साहित्य अकादेमी पुरस्कार-सूची; CiNii, BA83217091)

समग्र निर्णय

एहि आलेखक सर्वाधिक महत्त्व ई जे एकटा साहित्यकारक जीवनीक माध्यमे मैथिली पत्रकारिताक ऐतिहासिक साक्ष्य, सम्पादकीय-परम्परा आ भाषा-आन्दोलनक अन्तर्सम्बन्ध उजागर होइत अछि। साथे इतिहासग्रन्थक अपूर्णता स्वीकार करबाक कारण समीक्षा केवल स्तुति नहि रहैत अछि। तदपि पुस्तकमे देखाओल सुधारसभक मूल अभिलेख-आधारित पुनःपरीक्षण, पत्रिका-विशेषक सम्पूर्ण डिजिटल सूची आ संस्थागत आर्थिक विवरण अगिला आवश्यक कार्य अछि। ई प्रश्न उठेब स्वयं लेखकक शोधभावनाक विस्तार थिक।

७. ‘मैथिली कथा साहित्यमे वर्णन, संवाद ओ भाषा’: कथा-शिल्पक ऐतिहासिक विवेचन (पृ. ७९–९३)

कथाक अङ्ग आ रूपक प्रश्न

लेखक कथा-विधाक छओ प्रमुख तत्त्वक उल्लेख कऽ वर्णन, संवाद आ भाषाकेँ कथानक आ चरित्रक प्रभावकारी सम्प्रेषणक उपकरण मानैत छथि। कथा साहित्यक लक्ष्य मात्र घटना कहल नहि, अपितु पात्रक अन्तरमन, परिवेशक दबाव, घटनाक गति आ पाठकक अनुभूति धरि पहुँचनाइ अछि। एहि दृष्टिएँ लेखक वस्तु आ चरित्रक संग शिल्पक सम्बन्ध जोड़ैत छथि। शिल्पकेँ बाहरी सजावट मानबाक बदलामे कथ्यकेँ अर्थवान बनयबाक सक्रिय प्रक्रिया बुझब एहि आलेखक मूल पद्धति अछि। (पृ. ७९–८०)

आलेखक प्रवेशमे ‘आधुनिक कथा’क अनेक गुणक चर्चा भेटैत अछि—संगठन, औत्सुक्य, संक्षिप्तता, मनोवैज्ञानिकता, अनुकूल संवाद आ प्रभावपूर्ण भाषा। ई कसौटी कथा-पठनक लेल उपयोगी अछि, किन्तु आधुनिक कथाक सभ प्रयोग एकहि प्रकारक संगठन वा उत्कर्षबिन्दुक अनुसरण नहि करैत अछि। खण्डित संरचना, अविश्वसनीय कथावाचक आ जानि-बुझिक अवसादपूर्ण अन्त सेहो समकालीन कथा-शिल्पक साधन भऽ सकैत अछि। ताहि लेल लेखकक प्रस्तावित गुणकेँ वर्णनात्मक मानदण्ड मानल जाय, अनिवार्य शास्त्रीय नियम नहि।

मैथिली कथाक विकास-यात्रा

लेखक आरम्भिक अनुवाद, आख्यान-आख्यायिका, नैतिक उपदेशप्रधान गद्य आ आधुनिक मौलिक कथा बीच ऐतिहासिक अन्तर देखैत छथि। मुद्रण, भाषासम्पर्क आ बंगला कथा-साहित्यक प्रभावक उल्लेखक बाद ओ सामाजिक कुरीति-विरोध, कथानकक संक्षिप्तीकरण आ चरित्रक मनोविज्ञान दिस मैथिली कथाक विकासक रेखा खींचैत छथि। आरम्भिक लेखकसभक संग हरिमोहन झा आ अनेक उत्तरवर्ती कथाकारक उल्लेख एहि विवेचनकेँ केवल सिद्धान्त-चर्चा नहि रहि साहित्येतिहाससँ जोड़ैत अछि। (पृ. ८०–८१)

एतय इतिहास-लेखनक एकटा आवश्यक सावधानी अछि। ‘अनुवाद’सँ ‘मौलिकता’ आ ‘उपदेश’सँ ‘मनोवैज्ञानिकता’ दिस विकासक एकरेखीय यात्रा बनाओलापर समान कालमे उपस्थित भिन्न कथा-शैलिक विविधता अनदेखल रहि सकैत अछि। अनुवादित कथामे सेहो सर्जनात्मक रूपान्तरण सम्भव अछि; लोकआख्यान आ आधुनिक लघुकथा एक दोसरसँ विच्छिन्न नहि। लेखकक विकासक्रम उपयोगी परिचय दैत अछि, मुदा एहि क्रमक वैकल्पिक शाखासभकेँ स्रोत-आधारित पृथक इतिहासमे देखबाक चाही।

वर्णन-वैशद्य आ संक्षिप्त कथाभाषा

वर्णन-विषयक खण्डमे लेखक आरम्भिक गद्यक अलंकारबहुल, दीर्घ आ काव्यात्मक चित्रणकेँ आधुनिक कथाक अपेक्षाक संग तुलना करैत छथि। पात्र, दृश्य आ घटना स्पष्ट करबाक वर्णन-शक्ति आवश्यक अछि, किन्तु अत्यधिक अलंकार कथाक गति रोकि सकैत अछि। लेखक ‘गागरमे सागर’क संक्षिप्तता दिस झुकावकेँ आधुनिक कथाक शिल्पगत उपलब्धि मानैत छथि। एहि आधार पर ओ आवश्यक विवरण आ अनावश्यक विस्तारक बीच भेद करैत छथि। (पृ. ८२–८४)

एहि तर्कक लाभ व्यावहारिक अछि। कथा लिखैत समय दृश्य-वर्णनक प्रत्येक वाक्यसँ पूछल जा सकैत अछि—ई घटना, पात्र अथवा भावकेँ की नव अर्थ दैत अछि? किन्तु अलंकारबहुल गद्य स्वतः दोष नहि; सामाजिक विडम्बना, कथावाचकक व्यक्तित्व, भाषिक स्मृति अथवा स्थानीय परिवेशक सघनता हेतु दीर्घ वर्णन आवश्यक भऽ सकैत अछि। अतः ‘कम शब्द’केँ ‘श्रेष्ठ कथा’क सार्वभौम कसौटी नहि बनायब उचित। लेखकक उद्धृत उदाहरणसभकेँ शैलीक कार्य-विश्लेषणक माध्यमे बुझब अधिक सम्यक् होयत।

पात्रक चित्रण, समाजचित्र आ अन्तःस्थितिक विस्तार

वर्णनक अन्य रूपमे लेखक पात्रक वेश-भूषा, शारीरिक रूप, मनोभाव, सामाजिक परिस्थिति आ समयविशेषक वर्णनक चर्चा करैत छथि। एहि विवरणक माध्यमे कथा एकटा अमूर्त नैतिक कथनसँ मूर्त सामाजिक संसारमे प्रवेश करैत अछि। वर्ग-संघर्ष, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, शोषण आ

विस्थापनसँ सम्बन्धित उदाहरण देखबैत अछि जे सामाजिक यथार्थ कथाक प्रारम्भिक दृश्यसँ प्रकट होयब सम्भव अछि। वर्णन कथानकक गति रोकैत नहि; ओ आगाँक घटना लेल पाठकक अपेक्षा निर्मित सेहो करैत अछि। (पृ. ८३–८५)

लेखकक विश्लेषणमे मनोवैज्ञानिक कथाक विकासक चर्चा सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। बाह्य क्रियाक वर्णनसँ पात्रक भीतरक आशंका, हीनभाव, क्रोध, प्रेम वा भ्रमक चित्रण दिस बदलाव कथाक अनुभूति गाढ़ करैत अछि। मुदा ‘भीतर’ आ ‘बाहर’ स्वतः अलग नहि; देहभाषा, सामाजिक सम्बोधन, घरेलू वस्तु आ मौन सेहो मनःस्थितिक संकेत बनैत अछि। एहू दृष्टिएँ आलेखक उदाहरणसभक पुनर्पाठ कएल जाए तँ सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक कथाक बीच कृत्रिम विरोध कम होयत।

संवादक नाटकीयता आ चरित्र-निर्माण

आलेखमे संवादकेँ कथाक गति आ पात्रक स्वभाव उद्घाटित करबाक महत्त्वपूर्ण साधन मानल गेल अछि। लेखक नाटकीय संवाद, कथन-चिह्नसँ रहित संवाद आ स्वाभाविक लोकसंवादजकाँ रूपक विवेचन करैत छथि। संवाद कतय कथाकारक बाहरी टिप्पणी कम करैत अछि, कतय पात्रक वर्गीय भाषा परिचित करबैत अछि आ कतय केवल बातचीतक सहारे कथा-वस्तु आगाँ बढ़ैत अछि—ई भेद उदाहरणसभक संग सोझाँ अबैत अछि। (पृ. ८५–८७)

लेखक संवादक मात्रा आ कार्यक चर्चा करैत जखन संवादप्रधान कथा दिस संकेत करैत छथि, तखन कथा-विधाक सीमासभपर महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठैत अछि। नाटकजकाँ बातचीत प्रधान होइतो कथा अपना कथन-संरचनाकेँ सुरक्षित रखि सकैत अछि। प्रश्न ई नहि जे संवाद कतेक पाँति अछि; प्रश्न ई जे ओकर भीतर पाठक पात्रक बीच अव्यक्त तनाव, कथानकक अन्तराल आ कथनक अर्थसँ केना परिचित होइत अछि। एहि दृष्टिकोणसँ संवादक स्वाभाविकता केवल बोलीक नकल नहि, कलात्मक चयनक परिणाम अछि।

संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक आ लोकचलित भाषा

भाषा-विषयक खण्डमे लेखक मैथिली कथागद्यक परिवर्तित स्वरूपक विवेचन करैत छथि। प्रारम्भिक संस्कृतनिष्ठ शब्द-विन्यासक बाद सरस साहित्यिक मैथिली, सामान्य बोलचाल, वर्गविशेषक बोली आ क्षेत्रीय उच्चारणक प्रयोगकेँ साहित्यिक संवेदनाक विस्तारक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। हरिमोहन झाक भाषा-संरचनाकेँ लेखक विशेष महत्त्व दैत छथि। एतय कथाक भाषिक लोकतन्त्रीकरणक संकेत अछि: जे भाषा पहिने ‘ग्राम्य’ बुझल जाइत छल, ओ पात्र आ कथ्यक आवश्यकताक कारण साहित्यिक अभिव्यक्तिक केन्द्रमे आबि सकैत अछि। (पृ. ८७–९०)

लेखक पात्रक जातीय, पेशागत आ क्षेत्रीय अनुभव अनुरूप भाषा-प्रयोगक प्रशंसा करैत छथि। एहि स्थानपर ई आलेख पुस्तकक प्रथम लोकसाहित्य-विषयक लेखसँ संवाद करैत अछि। पहिल आलेखमे जे लोकक मौखिक अभिव्यक्ति साहित्यिक अध्ययनक स्वतन्त्र वस्तु छल, सातम आलेखमे सएह लोक-भाषा आधुनिक रचनाक औजार बनैत अछि। दूनूकेँ जोड़ि देखलापर योगानन्द झाक भाषिक दृष्टिक व्यापकता स्पष्ट होइत अछि।

कृत्रिम बोली आ अन्य भाषाक प्रयोगपर आपत्ति

आलेखक एकटा तीक्ष्ण पक्ष ओहि कथाकारसभक आलोचना अछि जे निम्नवर्ग वा ग्रामीण पात्रक संग पर्याप्त सम्पर्क बिना ओकर भाषा बनायबाक प्रयास करैत छथि। लेखक एहन प्रयोगकेँ कृत्रिम भाषा मानैत छथि। एहि आपत्तिक सार्थकता स्पष्ट अछि: सामाजिक अनुभवक अभाव केवल भाषा-दोष नहि, प्रतिनिधित्वक त्रुटि बनि सकैत अछि। बोलीकेँ विचित्र अथवा हास्यास्पद बनाक प्रस्तुत करब पात्रक गरिमाक हानि पहुँचा सकैत अछि। (पृ. ९०–९१)

लेखक हिन्दी, उर्दू, बंगला, भोजपुरी, अंग्रेजी आदि भाषाक प्रयोगक सन्दर्भमे पात्रानुकूल स्वाभाविक मिश्रण आ अप्रासंगिक आरोपणक बीच भेद करैत छथि। ई भेद उचित अछि, मुदा ‘विजातीय भाषा’क संज्ञाकेँ आजुक बहुभाषी परिवेशक तथ्यसँ जाँचबाक आवश्यकता अछि। नगर, प्रवासन, शिक्षा, बाजार, डिजिटल संवाद आ सीमा-पार सम्बन्धक कारण मिश्रित भाषा

स्वयं पात्रक यथार्थ होइत अछि। ताहि लेल केवल शब्दक अन्य भाषासँ उत्पत्ति दूषणक प्रमाण नहि; ओकर प्रसंगगत सत्यता आ कलात्मक कार्यक परीक्षण अधिक उचित अछि। (पृ. ९१–९२)

आलोचनात्मक निर्णय

पन्द्रह पृष्ठक ई आलेख कथा-विधाक व्याकरण प्रस्तुत करबाक संग मैथिली गद्यक भाषिक इतिहासक एकटा रूपरेखा दैत अछि। एतय वर्णन, संवाद आ भाषाक चर्चा अलग-अलग होइतो तीनू कथाक अर्थ-निर्माणमे परस्पर निर्भर अछि। पुस्तकक अन्य अध्यायसँ तुलना करैत ई स्पष्ट होइत अछि जे लेखक लोकभाषाक सामर्थ्यक प्रबल समर्थक छथि, किन्तु अभिव्यक्तिक सहजता आ शुद्धताक सन्दर्भमे कतहु मानकीकरणक कड़ा आग्रह सेहो रखैत छथि। ई द्वन्द्व मैथिली भाषा-चर्चाक अध्ययन लेल विशेष मूल्यवान अछि।

८. ‘देशी शब्दक अवधारणा’: व्युत्पत्तिक सीमा आ शब्द-वर्गीकरण (पृ. ९४–९८)

‘देशी’ शब्दक समस्या केवल ‘ठेठ’ शब्द नहि

आलेखक आरम्भमे तत्सम, तद्भव, गृहीत आ देशी शब्दसभक भेद उपस्थित अछि। सामान्य अनुभवमे जे शब्दक संस्कृत अथवा अन्य ज्ञात मूल स्पष्ट नहि, ओकरा ‘देशी’, ‘देशज’ अथवा ‘ठेठ’ कहल जाइत अछि। लेखक मैथिलीमे प्रचलित एहन अनेक शब्दक उदाहरण दैत छथि आ ई चेतबैत छथि जे ‘अज्ञात व्युत्पत्ति’ अपने-आप ‘संस्कृतसँ असम्बद्ध उत्पत्ति’क निर्णायक प्रमाण नहि। जखन भाषाज्ञान बदलैत अछि, शब्दक वर्गीकरण सेहो बदलि सकैत अछि। एहि आलेखक सभसँ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त यैह अछि। (पृ. ९४)

व्युत्पत्ति जाँचबाक प्रक्रिया बहुस्तरीय होइत अछि। शब्दक ध्वनि, अर्थ, ऐतिहासिक प्रयोग, पड़ोसी भाषामे उपलब्ध रूप, ध्वनि-परिवर्तनक नियम आ सम्भावित उधार—सभ पक्ष जोड़लापर मात्र उत्पत्तिक निष्कर्ष निकलैत अछि। लेखक एतय मुख्यतः पूर्ववर्ती सिद्धान्तकारक मत विवेचित करैत छथि; एहि विवेचनक मूल शिक्षा ई अछि जे शब्दक स्रोत नहि भेटब आ स्रोत कखनो छलैहि नहि—दूनू एक बात नहि।

प्राचीन आचार्यक धारणाक अन्तर

भरत, दण्डी, रुद्रट आ हेमचन्द्रक सन्दर्भ उपस्थित करैत लेखक शब्दवर्गीकरणक ऐतिहासिक विकास देखबैत छथि। एहि प्रवाहमे ‘देशी’ शब्दक अर्थ लेखक आ कालानुसार बदलैत अछि: कतहु संस्कृत-विनिर्मित रूपसँ पृथक जनप्रयोग, कतहु अज्ञात व्युत्पत्तिक शब्द, कतहु प्राकृत साहित्यक व्यवहारगत शब्द। एतय परिभाषाक स्थिरता नहि, बल्कि विद्वत्-परम्पराक प्रश्नोत्तर महत्त्वपूर्ण अछि। (पृ. ९४–९५)

हेमचन्द्रक परिभाषाक विवेचनमे ग्रन्थ अज्ञात उद्गम, व्याकरणसँ सिद्ध नहि होयबाक प्रश्न, संस्कृत कोशमे अर्थान्तर आ प्राकृत साहित्यक दीर्घ प्रयोगक सम्बन्ध रेखाङ्कित करैत अछि। देशी शब्दकेँ संस्कृतक एकटा ठोस विपरीत खेमामे राखब एहि इतिहासक जटिलता घटा दैत अछि। लेखकक प्रस्तुति स्पष्ट करैत अछि जे मध्यकालीन शब्दकोशकारक वर्गीकरण स्वयं निश्चित व्याकरणिक-कोशीय प्रयोजनक अन्तर्गत बनल छल। (पृ. ९५)

आधुनिक भाषावैज्ञानिकक पुनर्विचार

आलेखमे पिशेल, ग्रियर्सन, सुनीतिकुमार चटर्जी आ अन्य विद्वानक मतान्तरक विवेचन अछि। किछु दृष्टिकोण देशी शब्दक भण्डारमे प्राचीन आर्यभाषाक अप्रत्याशित अथवा अप्रत्यक्ष विकसित रूप देखैत अछि; किछु द्रविड़, मुण्डा आ अन्य भाषासम्पर्कक सम्भावनाक चर्चा करैत अछि; किछु शब्दक अज्ञात उद्गमकेँ भाषाशास्त्रीक ज्ञान-सीमासँ जोड़ैत अछि। लेखकक निष्कर्ष एहन नहि जे सभ मत समान रूपे सत्य अछि, अपितु ‘देशी’ वर्गक निश्चितता एतेक सहज नहि जतेक साधारण कोशीय सूची देखैत समय बुझना जाइत अछि। (पृ. ९६–९७)

एतय लेखकक सावधानी आधुनिक ऐतिहासिक भाषाविज्ञानसँ अनुरूप प्रश्न उठबैत अछि। ध्वनि-साम्य वा अर्थ-साम्य मात्र व्युत्पत्ति प्रमाणित नहि करैत अछि; नियमित ध्वनि-संगति, ऐतिहासिक कालक्रम आ भाषासम्पर्कक दिशा जाँचल जेनाइ आवश्यक अछि। केवल ‘संस्कृतमे नहि भेटल’ कहि कोनो शब्दकेँ अनार्य स्रोतक घोषित करब अथवा उल्टा सभ

शब्दक संस्कृत-मूल प्रस्तावित करब—दूनू अतिशयता समुचित नहि। एतय पुस्तकक तर्कक पद्धतिगत महत्त्व व्यापक अछि।

‘अज्ञात’ आ ‘अनुसन्धानाधीन’क बीच अन्तर

आलेखक अन्तिम निष्कर्षमे देशी शब्दक अवधारणाकेँ अनिश्चित आ भाषाज्ञानक सीमा-सापेक्ष मानल गेल अछि। शब्दक मूलस्रोत स्पष्ट होयबाक पूर्व ओकरा देशी कहल जा सकैत अछि; नव प्रमाण भेटलापर वर्गीकरण बदलि सकैत अछि। भाषावैज्ञानिक शोधक लेल ई निष्कर्ष उपयोगी अछि, कारण एतय कोशीय लेबल स्थायी जातिगत पहचान नहि, शोधक वर्तमान स्थितिक संकेत बनैत अछि। (पृ. ९७)

मुदा व्यावहारिक क्षेत्रमे ‘देशी’ शब्दक दोसर अर्थ सेहो अछि—स्थानीय बोली, शैली, आत्मीयता आ लोक-समुदायक पहचान। ऐतिहासिक व्युत्पत्ति स्पष्ट भेला बादो कोनो शब्द समुदाय लेल ‘ठेठ’ रहि सकैत अछि। एहि कारण व्युत्पत्तिगत ‘देशी’ आ समाजभाषावैज्ञानिक ‘देशी’क पृथक विवरण उपयोगी होयत। लेखकक लेख मुख्यतः पहिल प्रश्नपर केन्द्रित अछि; दोसर प्रश्न पुस्तकक लोकसाहित्य-सम्बन्धी आलेखसभसँ जोड़लापर उभरैत अछि।

९. ‘देशीनाममाला ओ मैथिली’: ध्वनि आ अर्थपरिवर्तनक तुलनात्मक अध्ययन (पृ. ९९–१०४)

ऐतिहासिक कोशक मैथिलीसँ सम्बन्ध

अन्तिम आलेखमे लेखक हेमचन्द्रक ‘देशीनाममाला’मे संकलित शब्दक संग मैथिली शब्दावलीक रूप आ अर्थक तुलना करैत छथि। मूल तर्क ई अछि जे प्राकृत कोशमे सुरक्षित कतोक शब्दक समान अथवा समीपस्थ रूप मैथिलीमे भेटैत अछि; एहि निरन्तरताकेँ ध्वनि आ अर्थक परिवर्तन-सहित देखला पर भाषाक ऐतिहासिक विकास बुझबाक सामग्री प्राप्त होइत अछि। लेखकक पद्धति केवल ‘दूनू शब्द एक-जकाँ लगैत अछि’ पर आधारित नहि, अपितु आगम, रूपविकार, समीकरण, अर्थसङ्कोच आ अर्थविस्तारजकाँ विश्लेषणात्मक वर्गक उपयोग करैत अछि। (पृ. ९९–१०४)

ई आलेख पूर्ववर्ती ‘देशी शब्दक अवधारणा’क स्वाभाविक विस्तार अछि। आठम आलेख वर्गीकरणक सिद्धान्त पूछैत अछि; नवम आलेख किछु वास्तविक शब्दपर तुलना लागू करैत अछि। ई क्रम संग्रहक रचनात्मक गठनक एकटा बल अछि। सिद्धान्तकेँ शब्द-उदाहरणसँ जाँचल गेल अछि आ उदाहरणकेँ भाषावैज्ञानिक वर्गमे रखल गेल अछि।

जीवित शब्दक ऐतिहासिक स्तर

पृ. ९९–१०१ पर लेखक कतोक शब्द-युग्मक प्रस्तुति करैत छथि। ‘ओढ़ना’, ‘कोसिआ’, ‘कसौनी’, ‘खाली’, ‘झंखार’, ‘बुलबुल्ला’, ‘ओस’ आदि मैथिली रूपक संग ऐतिहासिक कोशरूपक तुलना देखाओल गेल अछि। ई शब्द वस्तु, परिधान, भोजन, मौसम आ दैनिक व्यवहारसँ सम्बन्धित अछि। एहि चयनक महत्त्व ई जे ऐतिहासिक भाषाविज्ञानकेँ राजकीय अभिलेख अथवा केवल साहित्यिक शब्दसँ बाहर साधारण घरेलू शब्दावली धरि पहुँचाओल गेल अछि। (पृ. ९९–१०१)

एहि तुलनासभक प्रकाशमे भाषा-संरक्षणक एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य देखाइत अछि: लिखित उच्च साहित्यक इतिहाससँ अलग घर-आँगनक शब्दावली पुरान रूपक अंश सुरक्षित राखि सकैत अछि। मुदा दूनू युगक शब्दमे ध्वनि-साम्य भेटब अपने-आप सीधा वंशानुक्रम सिद्ध नहि करैत अछि। मध्यवर्ती प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, पड़ोसी भाषाक सम्पर्क अथवा समानान्तर विकासक सम्भावना परीक्षा करबाक चाही। लेखकक रूपतुलना भविष्यक पूर्ण व्युत्पत्ति-अध्ययनक प्रारम्भिक प्रमाण थिक, समस्त शब्दक अन्तिम व्युत्पत्तिक निर्णय नहि।

ध्वनि-परिवर्तनक वर्गीकरण

लेखकक सूचीमे आगम, विभिन्न ध्वनि-विकार आ अन्य रूपान्तरणक उदाहरण पृथक कएल गेल अछि। ‘ओढ़ना’ अथवा ‘कोसिआ’जकाँ शब्दक रूपान्तरक चर्चा भाषाक ध्वनि-इतिहास पढ़बाक अवसर दैत अछि। एकर महत्व केवल रूपपरिवर्तनक नामकरण नहि; ई देखब सेहो अछि जे परिवर्तनक फलस्वरूप स्थानीय उच्चारण आ अर्थक प्रयोग कोना निश्चित होइत अछि। (पृ. ९९–१०२)

तथापि तुलनात्मक पद्धतिक कड़ाईक दृष्टिएँ प्रत्येक शब्द लेल स्रोतक निश्चित पाठ, कोशक क्रमाङ्क, मूल अर्थ, मैथिली उच्चारणक क्षेत्र, प्रमाणित प्रयोग, सम्भावित मध्यवर्ती रूप आ नियमित ध्वनि-नियमक उल्लेख आवश्यक होयत। पुस्तकमे उदाहरणक पर्याप्त आधार अछि, मुदा शब्द-दर-शब्द एहि सभ विवरणक समान विस्तार नहि। एहि सीमा ओ उपयोगिता—दूनू स्वीकार करबाक चाही। एकटा भावी अनुसन्धानमे एहि युग्मसभकेँ प्रमाण, सम्भावना आ अनिर्णीत—तीन श्रेणीमे विभाजित कएल जा सकैत अछि।

अर्थसङ्कोच: सामान्यसँ विशिष्ट धरि

पृ. १०३ पर अर्थसङ्कोचक उदाहरण दैत लेखक ‘कसौनी’, ‘काल्हि’, ‘कबाड़’ आदि शब्दक वर्तमान अथवा सीमित मैथिली प्रयोगक तुलना पुरान कोशार्थसँ करैत छथि। विशेषतः ‘कसौनी’केँ काँच आमसँ बनल विशिष्ट व्यंजनक सन्दर्भमे व्याख्यायित करब भोजन-संस्कृतिक इतिहासक दृष्टिएँ उपयोगी अछि। ‘काल्हि’जकाँ समयबोधक शब्दमे अवधिक सीमा आ उपयोगक भिन्नता देखब भाषा-अर्थक सूक्ष्म परिवर्तनकेँ समझबैत अछि। एहि उदाहरणसभसँ अर्थशास्त्र आ लोकसंस्कृति बीच सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि।

एहि उदाहरणक तर्कपर प्रश्न करैत सावधानी रखब आवश्यक अछि: ‘पुरान शब्दक अर्थ व्यापक छल आ आधुनिक अर्थ संकुचित’ एहन निर्णय लेल पुरान कोशमे सभ अर्थक वास्तविक सीमा तथा आजुक मैथिलीमे सम्भावित अनेक स्थानीय अर्थक जाँच आवश्यक अछि। कोनो शब्द मैथिलीक एकटा बोलीमे संकुचित आ दोसरमे व्यापक अर्थमे बचल होय, ई सम्भावना खुलल रहैत अछि। ताहि लेल लेखकक उदाहरणसभकेँ समकालीन क्षेत्रीय शब्दकोश आ बोलचालक दस्तावेजसँ पूरक बनायब उचित।

अर्थविस्तार: दैनिक तकनीक आ नूतन उपयोग

‘कोल्हु’, ‘गाँठ’ आ ‘रोट’क उदाहरणमे लेखक अर्थविस्तारक विवेचन करैत छथि। कोल्हुकेँ केवल एकटा वस्तु-प्रकारक यन्त्रक अर्थमे नहि, अलग-अलग पदार्थ पेरबाक उपकरणक विस्तृत अर्थमे बुझल जा सकैत अछि। गाँठक अर्थ वस्त्रक विशिष्ट बन्धनसँ व्यापक गँठानक अर्थ धरि

पहुँचेबाक चर्चा अछि। रोट शब्दक विशेष खाद्यरूपसँ व्यापक प्रयोगक तुलना सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। एहि उदाहरणसभमे अर्थ-बदलाव वस्तुक उपयोग, तकनीक आ दैनिक जीवनक परिवर्तनसँ जुड़ैत अछि। (पृ. १०३–१०४)

एहि अध्ययनक विशेष सामर्थ्य अर्थशास्त्रकेँ सामाजिक वस्तुसंसारसँ जोड़ब अछि। शब्दक अर्थ शब्दकोशक निर्जीव परिभाषा मात्र नहि; वस्तुक आकार, बनानेक तरकीब, भोजन-पद्धति आ आर्थिक तकनीकक संग बदलैत अछि। लेखकक उदाहरण भोजन-सम्बन्धी शब्दावली, कृषियन्त्र आ घरेलू शब्दक पृथक ऐतिहासिक कोश बनयबाक प्रेरणा देबैत अछि।

आधुनिक अनुसन्धानसँ संवादक सीमा

हेमचन्द्रक ‘देशीनाममाला’ विषयक नवीन भाषावैज्ञानिक अनुसन्धानमें ‘देशी’ वर्गक आन्तरिक विषमता तथा तत्सम-तद्भव-देशी विभाजनक ऐतिहासिक प्रयोजनपर पुनर्विचार कएल जा रहल अछि। आन्द्रेआ द्रोक्कोक अनुसन्धान एहि कोशीय वर्गीकरणकेँ मध्यकालीन प्राकृत-शिक्षण आ शब्दार्थ-बोधक सन्दर्भमे देखैत अछि। एहि नवीन परिप्रेक्ष्यक उपयोग योगानन्द झाक मूल लेख बदलबाक हेतु नहि, बल्कि ओकर प्रश्नक आजुक प्रासंगिकता बुझबाक हेतु अछि। पुरान शब्दक आधुनिक मैथिली रूपसँ तुलना करब महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा कोशक ‘देशी’ लेबलकेँ एकल ऐतिहासिक भाषाक जन्मप्रमाणपत्र मानब उचित नहि। (बाहरी अनुसन्धान: Andrea Drocco, Kervan, DOI 10.13135/1825-263X/11454)

एहि सन्दर्भमे एकटा अतिरिक्त सावधानी अछि: मूल कोशक प्रकाशित सम्पादनसभ, पाण्डुलिपि-पाठ आ अलग-अलग सम्पादकक पाठनिर्णय एके समान नहि मानल जा सकैत अछि। समकालीन सम्पादनक सहायतासँ प्रत्येक शब्दयुग्मक पुनःमिलान भविष्यक समुचित कार्य होयत। प्रस्तुत समीक्षामेक अस्पष्ट कोश-संख्या वा अपाठ्य रूप अनुमानसँ सुधारि नहि देल गेल अछि।

समग्र निर्णय

अन्तिम आलेखमे पुस्तकक अनुसन्धानधर्मिता अपन अत्यन्त मूर्त रूप पबैत अछि। वर्गीकृत शब्दकोशक ऐतिहासिक सामग्रीकेँ मैथिलीक जीवित शब्दसभसँ मिलायब एकटा बहुमूल्य पद्धतिगत पहल थिक। तथापि एहन तुलनाक सफलता शब्द-साम्यक संख्या पर नहि, प्रत्येक युग्मक ऐतिहासिक परीक्षणक गुणवत्ता पर निर्भर करैत अछि। एहि आधार पर ‘देशीनाममाला ओ मैथिली’केँ विस्तृत प्रमाणसूची बनयबाक आरम्भिक अनुसन्धान-नक्शाक रूपमे पढ़ल जाय—आगाँक व्यवस्थित व्युत्पत्तिकोश निर्माणक प्रेरणा एहि आलेखक सर्वाधिक स्थायी उपलब्धि अछि।

संग्रहक समेकित आलोचनात्मक मूल्यांकन

लोकसाहित्यसँ भाषाविज्ञान धरि एकटा अन्तर्धारा

नौटा आलेखकेँ क्रमानुसार पढ़लापर एकटा विचारधारा स्पष्ट होइत अछि। लोकसाहित्य-विषयक पहिल अध्याय सामूहिक मौखिक अभिव्यक्तिक रूप चिन्हित करैत अछि; मलाहसम्बद्ध आलेख विशेष पेशागत भाषामे संचित जीवनानुभव खोलैत अछि; राधा-पार्वती-सुमन-विषयक आलेख साहित्यिक रूपमे सांस्कृतिक अर्थक निर्माण देखैत अछि; कथा-विषयक आलेख बोलचालक भाषाकेँ आधुनिक कलात्मक गद्यसँ जोड़ैत अछि; अन्तिम शब्दविषयक आलेख भाषिक रूपक कालक्रमक परीक्षण करैत अछि। एहि तरहेँ संग्रहक तीन क्षेत्रक बीच ‘भाषा सामाजिक स्मृति कतेक सुरक्षित रखैत अछि’ ई एकटा साझा अनुसन्धानीय प्रश्न निरन्तर उपस्थित रहैत अछि।

लोकसाहित्यक आधारपर कहल जाय तँ लेखक साहित्यक ‘लोक’ घटककेँ स्वतन्त्र मान्यता देबाक पक्षधर छथि। मुदा काव्यक मूल्यांकनमे ओ पारम्परिक रसशास्त्र आ नायिका-भेदक उपकरण सेहो अपनबैत छथि। ई द्विविधता विरोधाभास मात्र नहि; मिथिलाक बहुस्तरीय साहित्यक सन्दर्भमे दू प्रकारक ज्ञान-परम्पराकेँ एक संग उपयोग करबाक प्रयास सेहो अछि। हँ, जखन लोकसाहित्य शास्त्रीय बन्धनसँ स्वतन्त्र घोषित होइत अछि आ नारीक साहित्यिक

विवेचन पूर्णतः शास्त्रीय श्रेणीमे बन्हि जाइत अछि, तखन आलोचनाक पद्धतिमे असमानता स्पष्ट देखाइत अछि। पाठकक लेल एहि असमानताकेँ चिन्हित करब आवश्यक अछि।

क्षेत्राधारित साक्ष्य आ ग्रन्थाधारित साक्ष्य

दू आरम्भिक आलेखमे मौखिक सामग्री, सामाजिक शब्दावली आ कहबीक प्रयोग प्रमुख अछि। काव्य-विषयक तीन आलेखमे पाठ-उद्धरण, आचार्यक मत आ अलंकार-रसक तर्क प्रधान अछि। अमरजी सम्बन्धी आलेख ऐतिहासिक अभिलेखनक प्रश्न उठबैत अछि। अन्तिम दू आलेख शब्दकोश, व्युत्पत्ति आ तुलनात्मक भाषाविज्ञानकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। एतेक भिन्न प्रकारक सामग्रीक प्रयोगसँ लेखकक शोध-रुचिक विस्तार सिद्ध होइत अछि; एकरे संग साक्ष्यक पद्धतिक अन्तरक सावधानी सेहो जरूरी अछि। मौखिक कहबी, साहित्यिक पद, प्रकाशन-वर्ष आ कोशीय शब्द—चारि वस्तु समान प्रकारक सत्यापनीय तथ्य नहि।

विशेषतः जतय लेखक कहबीकेँ प्राचीन व्यवसायक प्रमाण, नायिका-भेदकेँ कविता-चरित्रक अन्तिम रूप अथवा शब्द-साम्यकेँ ऐतिहासिक निरन्तरताक आधार बनबैत छथि, ओतय तर्कक एक अतिरिक्त कड़ी अपेक्षित अछि। एहि समीक्षाक आलोचनात्मक आपत्ति लेखकक मूल सामग्रीपर नहि, सामग्रीसँ निश्चयात्मक निष्कर्ष धरि जायबाक छलाँगपर अछि। एहि सूक्ष्म भेदकेँ सुरक्षित राखलापर संग्रहक मूल्य न्यायपूर्ण रूपमे निर्धारित कएल जा सकैत अछि।

सामाजिक आलोचनाक उपलब्धि

मलाह समुदाय, अनमेल विवाह, निर्धन घरक गृहस्थी, नारीक श्रम, पत्रकारिताक वर्गीय पक्ष, दलित पात्रक भाषा आ बोलचालक स्वीकृति—ई सभ प्रसंग संकेत करैत अछि जे लेखकक साहित्य-दृष्टि पूर्णतः सौन्दर्यशास्त्रीय नहि। ओ साहित्यकेँ सामाजिक सम्बन्धक अभिलेखक रूपमे सेहो देखैत छथि। पार्वतीक आर्थिक कष्ट, अमरजीक पत्रकारिताक समाजोपयोगिता आ कथाक पात्रानुकूल बोलीपर आग्रहक बीच स्पष्ट बौद्धिक सम्बन्ध अछि। ई संग्रहक एकटा विशेष गुण अछि।

दोसरा दिस नारीकेँ त्यागमयी, पतिव्रता अथवा आदर्श माताक रूपमे उन्नत करबाक प्रवृत्ति किछु आलेखमे प्रश्नातीत रहि जाइत अछि। जाति-आधारित लोकोक्तिमे निहित उपहास आ भाषिक शुद्धताक नामपर वास्तविक बहुभाषी अनुभवक उपेक्षा सम्भावनाकेँ सेहो अधिक आलोचनात्मक ध्यान देल जा सकैत छल। लेखकक सामग्री एहि सभ प्रश्नक लेल पर्याप्त आधार उपलब्ध करबैत अछि; वर्तमानक दृष्टिसँ ओकर पुनर्पाठ मूल पुस्तकक विरोध नहि, ओकर अध्ययनक विस्तार अछि।

भाषाशैली आ आलोचनाक स्वर

लेखकक भाषा मूलतः संस्कृतपदसम्पन्न शोधात्मक मैथिली अछि। स्थान-स्थानपर लोकपद, मुहावरा, गीतांश आ स्थानीय शब्दक उपयोग एहि शास्त्रीय प्रवाहमे जीवंत हस्तक्षेप करैत अछि। वाक्य-रचनामे परिभाषा, उदाहरण, पूर्वमत, तुलना आ निष्कर्षक क्रम प्रमुख अछि। एहि कारण आलोचनात्मक तर्कक दिशा प्रायः स्पष्ट रहैत अछि। किछु ठाम उद्धरण आ शास्त्रीय पदावलीक बहुलतासँ पाठककेँ मूल निष्कर्ष धरि पहुँचबाक लेल विशेष सावधानी चाही। तथापि लेखकक पाठकसँ अपेक्षा गंभीर अध्ययनक अछि; ओ लोकप्रिय परिचयक स्थान पर अनुसन्धानात्मक विवेचन प्रस्तुत करैत छथि।

एहि पुस्तकक रूप-रचना सेहो आलोचनाक विषय अछि। प्रस्तावना एकर आलेखसभकेँ विषयगत तीन कोटिमे बाँटि बोधगम्य बनबैत अछि। विषय-सूचीक क्रम लोकजीवनसँ साहित्यिक काव्य आ तकर बाद शब्दभाषाक अध्ययन दिस बढ़ैत अछि। किन्तु नव अध्यायकेँ जोड़निहार स्वतन्त्र सम्पादकीय उपसंहार नहि रहबाक कारण पाठककेँ अन्तर्धाराक पुनर्निर्माण स्वयं करब पड़ैत अछि। एहि समीक्षामे प्रस्तुत समेकित तुलनाक प्रयोजन मूल पुस्तकक खाली स्थानमे कल्पित तर्क ठूसब नहि, बल्कि लेखकक उपस्थित उदाहरणसभक अन्तर्सम्बन्ध स्पष्ट करब अछि।

उपलब्धिक क्रमित मूल्यांकन

‘मैथिलीक लोकसाहित्य’क बड़ उपलब्धि मौखिक विधासभक व्यापक रूपरेखा अछि; ‘लोकोक्तिमे मलाह जाति’ पेशागत जीवनसँ भाषा-रूपकक सम्बन्ध खोलैत अछि; ‘राधाक स्वरूप’ बहुस्तरीय व्याख्याक आग्रह रखैत अछि; ‘पार्वतीक स्वरूप’ पौराणिक पात्रमे मैथिल गृहस्थ जीवनक वास्तविकता पहचानैत अछि; ‘सुमनजीक मुक्तककाव्यमे नारी’ काव्य-रूप आ स्त्री-प्रतिमाक वर्गीकृत पाठ दैत अछि; ‘अमरजी’क समीक्षा पत्रकारिता-इतिहासक पद्धति आ दस्तावेजक समस्या चिन्हित करैत अछि; कथा-विषयक आलेख भाषा आ शिल्पक विकासक रूपरेखा बनबैत अछि; ‘देशी शब्द’क आलेख व्युत्पत्तिगत निश्चयक सीमा सिखबैत अछि; ‘देशीनाममाला’क अध्ययन शब्दकोशीय प्रमाणकेँ मैथिलीक जीवित रूपसँ जोड़ैत अछि। ई प्रत्येक दावा उक्त-उक्त मूल आलेखक प्रतिपादन अथवा एकर आलोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन पर आधारित अछि।

भावी शोधक उपयुक्त दिशा

एहि संग्रहक आधारपर चारि स्पष्ट अनुसन्धान-कार्य सम्भव अछि। प्रथम, लोकगीत, लोकगाथा आ कहबीक प्रत्येक संकलित पाठक स्थान, सूचनादाता, प्रस्तुति-अवसर, पाठान्तर आ ध्वनि-रिकॉर्ड सहित नूतन अभिलेखन। द्वितीय, विद्यापति आ सुमनजीक उद्धृत काव्यांशक मूल पाठ, पाठभेद आ सामाजिक सन्दर्भक अलग-अलग तुलनात्मक सूची। तृतीय, अमरजी द्वारा वर्णित पत्रकारिताक प्रत्येक पत्र-पत्रिकाक उपलब्ध मूल अङ्क, सम्पादकीय विवरण, प्रकाशन-अवधि आ पुस्तकालयीय सन्दर्भक पुनःसत्यापन। चतुर्थ, ‘देशीनाममाला’क कोशपाठ आ आधुनिक मैथिली भाषिक रूपक शब्द-दर-शब्द बहु-स्रोत परीक्षा। एहि चारू दिशाक जड़ पुस्तकक प्रत्यक्ष सामग्रीमे अछि; कोनो अज्ञात अथवा कल्पित अध्यायक अनुमानपर निर्भर नहि।

अन्तिम निष्कर्ष

‘आलेख सञ्चयन’क विशिष्टता एकटा निर्णायक सिद्धान्त देबामे नहि, अपितु मैथिली भाषा-साहित्यक अनेक अनुसन्धानीय क्षेत्रमे प्रमाण जुटेबाक लगन आ विवेचनक पद्धति विकसित

करबामे अछि। पुस्तकक विस्तार विषयगत अछि, किन्तु अन्तर्निहित आग्रह एकटा: मैथिलीक साहित्यिक आ सामाजिक अनुभवकेँ व्यवस्थित अध्ययनयोग्य सामग्रीक रूपमे स्वीकार कएल जाय। लोकसाहित्यक विधासूची, लोकोक्तिक पेशागत सन्दर्भ, विद्यापतिक पात्र-विवेचन, सुमनजीक नारी-परिकल्पना, पत्रकारिताक इतिहास, कथागद्यक शैली-विकास आ शब्दक ऐतिहासिक परिवर्तन—सभ मिलि मैथिली अध्ययनक बहुआयामी चित्र बनबैत अछि।

एहि व्यापकताक संग सीमा सेहो स्पष्ट अछि: लोकस्रोतक क्षेत्रीय विवरणक अभाव, किछु इतिहासगत दावाक स्वतन्त्र अभिलेखीय सत्यापनक आवश्यकता, नारीक परम्परागत आदर्शीकरण आ कोशीय रूप-साम्यक निष्कर्षमे अतिरिक्त ध्वनि-नियमक अपेक्षा। एहि सीमा देखाउब पुस्तककेँ कमतर करब नहि; एकर यथार्थ अकादमिक महत्त्व निर्धारित करब अछि। शोध-पुस्तकक स्थायी शक्ति केवल अपन समयमे देल उत्तरमे नहि, बल्कि ओहिसँ उत्पन्न अगिला प्रश्नसभमे सेहो होइत अछि। ‘आलेख सञ्चयन’ एहि अर्थमे उपयोगी सन्दर्भग्रन्थ आ पुनर्पाठक योग्य आलोचनात्मक दस्तावेज दूनू थिक।

अध्याय 04 / दोसर संस्करण २००२

मैथिली शाक्त साहित्य

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

१. ग्रन्थ-परिचय आ प्रमाणक स्थिति

मूल शीर्षक — मैथिली शाक्त साहित्य (शास्त्रीय भगवती गीत)।

सम्पादन — डॉ. योगानन्द झा; शीर्षक-पृष्ठ पर सम्पादकक नामक संग कविलपुर, दरभंगाक उल्लेख भेटैत अछि।

प्रकाशन — उर्वशी प्रकाशन, १३ एम.आइ.जी., हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना–२०। मूल प्रकाशन-विवरणमे वर्ष २००२ ई., प्रति ५०० आ मूल्य १५.०० अंकित अछि -पृष्ठ ३, बायाँ फलक)।

संस्करण — भूमिकाक अन्तमे “दोसर संस्करण” आ ०७–११–२००२ दिनांक स्पष्ट अछि -पृष्ठ ४, बायाँ फलक)।

आरम्भिक आवरण, शीर्षकपृष्ठ, प्रकाशन-विवरण, भूमिका, गीतसूची आ मुद्रित पृष्ठ १० सँ ७२ धरि गीत-पाठ समाहित अछि; अन्तिम-पृष्ठ पर ग्रन्थक समाप्ति-चिह्न सेहो देखाइत अछि।

दुइ भिन्न क्रम — गीतसूचीमे ७६ रचनाकार-प्रविष्टि अछि -पृष्ठ ४–६)। मूल गीत-पाठक भीतर स्वतंत्र गीतक अंकन (१) सँ (१९१) धरि अछि; अन्तिम गीत जगतचन्द्रक अछि -पृष्ठ ३८)। अतएव “७६ गीत” कहल तथ्यात्मक रूपसँ अशुद्ध होयत; सूचीमे ७६ प्रविष्टि, पाठमे १९१ क्रमांकित गीत अछि।

अध्ययनक पद्धति: प्रत्येक रचनाकार-प्रविष्टिक शीर्षक/आरम्भिक पाँति आ मुद्रित पृष्ठ-स्थान कैं मूल गीतसूचीसँ मिलाओल गेल अछि। प्रतिनिधि गीतक निकट-पाठमे मूल पाठक विशिष्ट सम्बोधन, बिम्ब, तात्त्विक पदावली, विनय, करुणा आ सामाजिक प्रश्न पर ध्यान देल गेल

अछि। गीतक पाठ जतय कठिन अथवा धुँधल अछि, ओतय शब्दशः उद्धरणसँ परहेज कएल गेल अछि।

२. भूमिका: सम्पादकक वैचारिक प्रस्तावना

पहिल संस्करणक भूमिकामे “शक्ति उपासना” केँ भारतीय जीवन-पद्धतिक महत्त्वपूर्ण अङ्ग मानल गेल अछि। सम्पादकक अनुसार मातृभाव, दया, सर्जकता, पालन आ संहार-जेकाँ पृथक् अनुभूतिक साहित्यिक परिणति देवीक विभिन्न स्वरूपमे होइत अछि -पृष्ठ ३–४)। ई भूमिका केवल धार्मिक अनुमोदन नहि; शाक्त काव्यक अध्ययन लेल ओ एकटा सौन्दर्यात्मक आधार सेहो दैत अछि, कारण देवीक रूप-विविधता सँ रूपक, प्रतीक आ रसानुभूतिक विविधता निकलैत अछि।

भूमिकामे विद्या, दुर्गा, काली, चण्डी, तारा, भुवनेश्वरी, कमला, षोडशी, भैरवी, सीता, छिन्नमस्ता, धूमावती, बंगला, मातङ्गी आ सरस्वती आदि स्वरूपक उल्लेख देखाइत अछि। एहि सूचीसँ बुझाइत अछि जे सम्पादक “शाक्त” केँ केवल दुर्गा-स्तोत्रक संकुचित अर्थमे नहि, व्यापक देवी-परम्पराक रूपमे बुझैत छथि। मुदा एही विस्तारक कारण संकलनमे गङ्गा, भारती, वीणावादिनी आ शिव-संबद्ध छविक प्रवेशकेँ अलग सँ परखबाक आवश्यकता बनैत अछि।

मध्यकालीन कविसभक नामक पश्चात् सम्पादक आधुनिक कवि-गीतकारसभक एकटा दीर्घ सूची दैत छथि। भूमिका स्वयं एहि दीर्घकालिक साहित्यिक निरन्तरताक दावा करैत अछि; तैयो एहि संग्रहमे कवि-क्रमक कालनिर्धारण, पाण्डुलिपिक रचनातिथि अथवा पाठान्तरक व्यवस्थित प्रमाण-तालिका नहि देखाइत अछि। एकरा साहित्येतिहासक उपयोगी पाठ-संकलन मानब उचित अछि, मुदा निर्णायक कालक्रमक स्थानापन्न नहि।

दोसर संस्करणक टिप्पणीमे सम्पादक पुनर्प्रकाशनक उद्देश्य “मैथिली शाक्त साहित्य”क उपलब्धता बढ़ेबा आ अधिक लोक धरि पहुँचेबामे देखैत छथि। एहि आत्मविवरणसँ संकलनक संरक्षणात्मक अभिप्राय स्पष्ट होइत अछि। प्रकाशक प्रति आ वर्षक मुद्रित तथ्य सँ पृथक्, पुनर्प्रकाशनक प्रेरणा भूमिकाक प्रत्यक्ष कथन अछि।

३. सम्पादकीय बनावट: ७६ प्रविष्टि आ १९१ गीत

एहि पोथीक केन्द्रीय संरचनागत विशेषता अछि जे गीतसूची “रचनाकार आ गीत”क अनुसार बनल अछि, जखनकि मूल गीत-पाठ अपन स्वतंत्र क्रमांक रखैत अछि। उदाहरणार्थ, विद्यापतिक नाम एकटा सूची-प्रविष्टि अछि, मुदा हुनक अन्तर्गत पृष्ठ १०–१३ पर अनेक पृथक् रचना क्रमांक (१) आदिसँ छपल अछि। पुस्तकक पहिल विद्यापति-गीतमे भैरवीक आवाहन अछि, तकर बाद अन्य देवी-रूपक गीत अछि। एहि व्यवस्थासँ कविक एकाधिक शाक्त अभिव्यक्ति एक ठाम पढ़बाक सुविधा भेटैत अछि।

संकलनक अन्तिम अंश विशेष अर्थवान अछि: जगज्ज्योतिमल्ल, जगत्प्रकाशमल्ल, जितामित्रमल्ल, भूपतीन्द्रमल्ल, प्रतापमल्ल आ जगतचन्द्र सन नाम एक संग अबैत छथि (गीतसूची ७१–७६; मुद्रित पृ. ६७–७२)। एहि कारण मिथिलाक शाक्त गीतक अध्ययनमे नेपाल-संबद्ध दरबारी-साहित्यिक परम्पराक पाठ सेहो समाहित होइत अछि। मुदा केवल उपनाम “मल्ल” देखि प्रत्येक रचनाकारक विस्तृत राजकीय जीवनी, काल वा परस्पर सम्बन्ध निश्चित करब उचित नहि; ताहि लेल स्वतंत्र ऐतिहासिक स्रोत चाही।

गीत-पाठक नीचाँ कतहु “प्राचीन गीत”, कतहु “मैथिल भक्त प्रकाश”, “मैथिली शैव साहित्य”, “मैथिली नाटकक उद्भव आ विकास” अथवा आन ग्रन्थ-संकेत अंकित अछि। ई महत्वपूर्ण स्रोत-चिह्न अछि; मुदा सम्पूर्ण संग्रहक प्रत्येक गीत लेल समान रूपमे सम्पादकीय पाठ-परम्परा, मूल प्रति, संस्करण-सङ्ख्या आ पाठभेद नहि देल गेल अछि। समीक्षा एहि अन्तर कैँ विधिसम्मत सम्पादनक भविष्यगत काजक रूपमे चिन्हित करैत अछि।

४. प्रतिनिधि गीतक सूक्ष्म पाठ-परीक्षण

४.१ विद्यापति: भैरवीक विभीषिका आ मातृरक्षा (मुद्रित पृ. १०–१३)

आरम्भिक गीत “जय-जय भैरवि असुर-भयाउनि” मे देवीक भयङ्कर रूपक सम्बोधनक संग भक्तक निर्भयताक आकांक्षा जुड़ैत अछि। श्मशान, खप्पर, रुधिर आ असुर-विनाशक बिम्ब देवीक अघोर स्वरूप जगबैत अछि; गीतक अन्त दिस कविक अपन रक्षाक माँग ई

भयङ्करताकेँ करुणामय आश्रयमे बदलैत अछि। देवी ‘असुर-भयाउनि’ छथि, भक्तक लेल अभय-दायिनी। एहि विपरीतार्थी संयोजनक कारण रचना केवल गुणगान नहि, भीति आ विश्वासक नाटकीय अनुभव बनैत अछि।

४.२ विद्यापति: एक देवी, अनेक नाम (पृ. १०–१३)

विद्यापति-समूहमे भैरवी, गायत्री, भगवती, काली, दुर्गा, कालिका आदि सम्बोधन-परम्परा देखाइत अछि (प्रथमक गीत-पृष्ठसभ)। एके कवि-सूत्रक भीतर विध्वंसिनी आ पालनकर्त्री, मन्त्रात्मक आ आत्मीय सम्बोधनक क्रमिक फेर-बदल होइत अछि। शीर्षकक “शास्त्रीय” विशेषणक ठोस आधार एतय संस्कृतनिष्ठ नाम-परम्परा आ देव्या नामावली अछि; मुदा लोक-सुलभ विनती ओकर भाषा कैँ स्तोत्र-मात्रक जड़ता सँ बचबैत अछि।

४.३ सदानन्द: दुःख-निवारणक सीधा प्रार्थना (पृ. १४)

गीत “जय जय दुर्गे दुर्गति हारिणि”क पहिल पाँतिमे ‘दुर्गा’ आ ‘दुर्गति’क ध्वन्यात्मक सम्बन्ध स्पष्ट अछि। देवीक नामे भक्तक दुःख-हर्ता रूपक अर्थसंग्रह बनि जाइत अछि। भाषाक विन्यास ठामे-ठाम शास्त्रीय, मुदा अनुभूतिक केन्द्र दैनन्दिन संकटसँ मुक्ति अछि; एही रूपमे शाक्त साहित्य दार्शनिक तत्त्वसँ लोकजीवनक व्यथा दिस बढ़ैत अछि।

४.४ महेश ठाकुर: उग्रता आ कृपाक तान (पृ. १५–१६)

“जय जय जय भय भञ्जनि” सँ शुरू होइत गीतमे भयक अपहर्ता रूप प्रमुख अछि। एही रचनाकारक अन्य गीतक शाब्दिक परिवेशमे असुर-वध, भयानक आविर्भाव आ शरणागतक उद्धार एकहि स्तुतिमे जुड़ैत अछि। शाक्त स्तुति एतय एकतरफा हिंसात्मक चित्रण नहि बनि भक्त-केन्द्रित करुणा-दर्शनक रूप लैत अछि।

४.५ कृष्णपति आ जीवदत्त: शरणागतिक व्याकरण (पृ. १७, १९)

“शंकरी शरणं धयल हम तोर” आ “जय-जय शंकरि” जेकाँ आरम्भिक पाँति देखबैत अछि जे शाक्त गीतमे ‘हम’ आ ‘तोर’क सम्बन्ध सर्वाधिक कार्यकारी होइत अछि। उपासक अपन

दुर्बलता प्रकट करैत अछि, देवीकेँ संरक्षणक दायित्व सँ सम्बोधित करैत अछि। सामीप्यक एहि भाषा मे शास्त्रीय देवी साधारण लोकक विश्वासक केन्द्र बनि जाइत छथि।

४.६ रत्नपाणि: नाम-सङ्कीर्तनक विस्तृत शृङ्खला (पृ. २६–३१)

रत्नपाणिक प्रविष्टि पाँचसँ अधिक मुद्रित पृष्ठमे पसरल अछि। गीतसूचीमे “जय जगजननि”, “जय शिशुधानु”, “जय भुवनेशि”, “जय जगज्जननि” आदिक पुनरुक्त ध्वनि आ देवीक बहुरूपक उल्लेख भेटैत अछि। आन-आन लघु स्तुतिक अपेक्षा ई खण्ड विस्तारित भक्ति-संहति जेकाँ भासैत अछि। दोहराओल “जय” शब्द गीतक लयक संकेत अवश्य अछि, मुदा वास्तविक गायन-तालक निर्धारण बिनु स्वर-साक्ष्य सम्भव नहि।

४.७ चन्दा झा: शरणागति आ जीवन-संकट (पृ. ३४–३८)

“जय देवि महेश-पुत्रि”, “रहु देवि दासी”, “जय गिरिवर मैया” आदि अनेक आरम्भिक पाँतिक कारण चन्दा झाक खण्ड व्यक्तिपरक भक्ति आ देव्या स्तुति दुनूक संगम बनैत अछि। पृ. ३४–३५ पर “से कर देवि दयामयि” सन विनय आ ‘मन’क अवस्था उल्लेखनीय अछि। भक्त आत्मसमर्पण करैत अछि, मुदा अपन दुःखक भाषा नहि छोड़ैत; शास्त्रीय देवीनाम आ निकटवर्ती सम्बोधनक एहि मेलमे कवित्वक विशेष शक्ति अछि।

४.८ आदिनाथ: देवी-नामावलीक विस्तार (पृ. ४०–५०)

आदिनाथक प्रविष्टि एकटा लम्बा पाठ-समूह अछि। सूचीमे “नहि जगबहार हम”, “भगवति पद पंकज”, “काली तारिणि”, “महिम वसन अरुण” आदि भिन्न आरम्भ-सूत्र एकत्र देल गेल अछि। देह, जगत, असुर, कमला आ त्रिभुवन सम्बन्धी पदावली अनेक धार्मिक स्तरक समन्वय करैत अछि। केवल शब्द-सूचीक विस्तारसँ ओतबे धार्मिक सिद्धान्त सिद्ध नहि होइत; शब्द कोन प्रसङ्गमे आबि रहल अछि, ई समझब जरूरी अछि।

४.९ तेजनाथ झा: नैतिक प्रश्न आ शास्त्रीय भक्ति (पृ. ५२–५४)

“जननि पद”, “जय जय काली”, “गंगे विनति सुनिय दय कान” आदि आरम्भ-संकेत तेजनाथ झाक रचनासभमे मातृकृपा आ नैतिक विवशताक सह-अस्तित्व देखबैत अछि। पृ. ५४ पर सामाजिक दम्भ आ ज्ञानक अभावक प्रश्न उठैत अछि; एहि कारण ई रचना केवल देवी-वन्दना नहि, आत्मपरीक्षणक भाषा सेहो अछि। समर्पणक बीच प्रश्न करबाक क्षमता एकरा आलोचनात्मक रूपसँ महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि।

४.१० सूरदास, दामोदर आ लक्ष्मीपति: अपराधबोधसँ क्षमाधर्म धरि (पृ. ५४–५५)

सूरदासक “जगदम्बा भवानी हे”, दामोदरक “जाग जननि हे” आ लक्ष्मीपतिक “क्षमा समुद्र क्षमिय अब जननी”क निकट स्थान एक अर्थपूर्ण लघु-क्रम बनबैत अछि। पहिलमे भगवतीक लोकमातृ रूप, दोसरमे दुर्दशित भक्तक पुकार, तेसरमे क्षमा-दायिनी देवीक आश्रय देखाइत अछि। अल्पाक्षर गीतमे अपराध-स्वीकार आ अपेक्षित उद्धारक बीचक दूरी भावनात्मक घनत्व रचैत अछि।

४.११ ललितेश्वरी देवी आ नन्दनी देवी: स्त्री-स्वरक उपस्थिति (पृ. ५५–५६)

सूचीमे ललितेश्वरी देवीक “जयति जगदम्बिके काली” आ नन्दनी देवीक “जय काली कलि कलुष” छपल अछि। ललितेश्वरीक गीतमे जगदम्बिकाक पूजाक संग ‘हम जननी नहि पूजा पाठ गुरु सेवा’ जेकाँ आत्मालोचनक स्वर भेटैत अछि -पृष्ठ २९, दहिना फलक)। स्त्री-रचनाकारक उपस्थिति देखबैत अछि जे ई परम्परा केवल पुरुषक कविकर्म धरि सीमित नहि; मुदा एहिसँ सम्पूर्ण युगक स्त्री-साक्षरताक अनुपात निकालब असंगत होयत।

४.१२ सुरेन्द्र झा सुमन आ मधुप: रूपायनक प्रभाव (पृ. ५६, ५८)

सुरेन्द्र झा सुमनक प्रविष्टिमे “धयल मुण्डमयी श्यामा”क छवि उग्र देवीक मूर्तिकल्पना दैत अछि। मधुपक “सम्प्रति सहस-सूर्य, राजय जगमग माँ”क प्रकाश-बिम्ब उद्भासित शक्तिक अनुभूति करबैत अछि। एक ओर रौद्र दृश्य, दोसर ओर दीप्ति; दुनू देवीक असीम सामर्थ्यकेँ भिन्न संवेदनात्मक साधनसँ उपस्थित करैत अछि।

४.१३ राजलक्ष्मी आ त्रिलोचन झा: पूजा आ मिथिला-बोध (पृ. ६२–६३)

राजलक्ष्मीक “श्यामा चरण कमल हम पूजब”मे चरणपूजाक आत्मीयता साफ अछि। त्रिलोचन झाक “चण्डी तोहर मिथिला देश, आब करू जजु देरी” देवीकेँ स्पष्ट स्थानीय भूगोलक भीतर सम्बोधित करैत अछि। इएह स्थानीयकरण शास्त्रीय देवीकेँ मैथिली भाषाक सामाजिक परिदृश्यमे लबैत अछि; मिथिला एतय भौगोलिक नाम मात्र नहि, संकट आ आशाक अनुभव-क्षेत्र बनैत अछि।

४.१४ आरसी प्रसाद सिंह: सरस्वती-छविक पुनर्संयोजन (पृ. ६४)

“जननि वीणा-वादिनी!”क सम्बोधनमे सरस्वतीक वाद्य, वाणी आ विद्याक रूप आगाँ अबैत अछि। ई उदाहरण ‘शाक्त साहित्य’क परिधिक प्रश्न उठबैत अछि: संग्रहक शक्ति-कल्पना केवल युद्धमयी देवीमे सीमित नहि, वाणी, ज्ञान आ सर्जनात्मक ऊर्जा धरि पसरल अछि। एहि कारण ग्रन्थकेँ विशुद्ध दुर्गा-गीत-संग्रह कहब अपर्याप्त अछि।

४.१५ प्रभु नारायण ‘प्रदीप’: प्रश्नक नाटकीय प्रयोग (पृ. ६५)

“जगदम्ब अही बिनु आश्रय ककर?”क पुनरावृत्त प्रश्न देव्या स्तुतिक संग निर्बल मनुष्यक आश्रयहीनताकेँ रखैत अछि। कवि ‘हम’क दैन्यकेँ देवी पर निर्भरता बनबैत छथि; “ककर?” एतय सीधा तथ्य-प्रश्न नहि, भक्ति-नाटकीयता उत्पन्न करयबला अलङ्कारिक प्रश्न अछि।

४.१६ अन्तिम मल्ल-समूह: राजनीतिक भूगोलसँ पारक पाठ-परम्परा (पृ. ६७–७२)

जगज्ज्योतिमल्लसँ जगतचन्द्र धरि संग्रह अपन अन्तिम खण्डमे नेपाल-संबद्ध नामसभक गीत रखैत अछि। भूपतीन्द्रमल्लक गीत “जय हिमालय नन्दिनी” हिमालयक स्थानबिम्बसँ देवीकेँ सम्बोधित करैत अछि; प्रतापमल्लक “किदहु करम मोर हीन रे” आत्मग्लानिक स्वर खोलैत अछि; जगतचन्द्रक अन्तिम गीत “जयति जगदम्बे काली” छोट आ संक्षिप्त स्तुति अछि। अन्तिम रचनाक स्रोत-टिप्पणी “मैथिली नाटकक उद्भव आ विकास” उल्लेखनीय अछि, मुदा स्वत: एकर रचनातिथि स्थापित नहि करैत।

५. भाषिक रचना, छवि, लय आ भक्तिक वक्तृता

एहि गीतसभक सबसँ स्पष्ट अलङ्कारिक साधन सम्बोधनक पुनरावृत्ति अछि: “जय जय”, “जननि”, “माँ”, “हे देवी”, “भवानी”, “काली”, “दुर्गा”। एहिसँ स्थायी गेयता आ सामूहिक उच्चारणक सम्भावना बनैत अछि। मुदा संग्रहमे व्यवस्थित राग-ताल, धुन-संकेत अथवा प्रस्तुति-साक्ष्य नहि देखाइत; ताहि लेल केओ गीतकेँ अमुक रागमे निश्चित रूपसँ गाओल जाइत छल, एहन दावा स्रोत-समर्थित नहि होयत।

शब्दक एक स्तर पर संस्कृतनिष्ठ समास अछि—“त्रिभुवनतारिणि”, “महिषासुरमर्दिनि”, “भयभञ्जनि”, “जगज्जननि”, “कमलासिनि”; दोसर स्तर पर आत्मीय मैथिली सर्वनाम आ क्रिया अछि—“हम”, “तोर”, “दिअ”, “करू”, “अहाँ”, “मैया”। तेसर स्तर पर तान्त्रिक आ पुराणसम्मत संज्ञा अछि—शूल, खड्ग, खप्पर, त्रिशूल, रक्त, मुण्ड, सिंह, महिष। ई स्तर एक-दोसराक विरोधी नहि, बल्कि संकलनक भाषिक वास्तुक रचैत अछि।

रूपक-प्रणालीमे त्रिशूल, सिंह, कमल, रुधिर, शिरमाला आ अभय-हस्तक छवि प्रमुख अछि। उज्ज्वल/भयावह, करुण/दण्डदात्री, जननी/युद्धमयी—एहि विरोधाभास सभक संग कवि देवीक सम्पूर्णता प्रस्तुत करैत छथि। रौद्र-छविक वर्णनकेँ वास्तविक हिंसाक ऐतिहासिक विवरण मानब अनुचित अछि; ई धार्मिक प्रतीकक काव्यमूल्य अछि।

कविताक वक्ता बहुधा असहाय शरणागत अछि, मुदा किछु रचनामे ओ प्रश्न सेहो करैत अछि—किएक दुःख, कखन उद्धार, कोन शरण? एहि प्रश्नक कारण स्तुति खालि आदेश/गुणक पुनरावृत्ति नहि रहि संवाद बनैत अछि। “अपराध”, “दुख”, “क्षमा”, “शरण” आ “चरण”क पद-परिवार एहि मानवीय नाटकक केन्द्रमे अछि।

६. समाज, स्त्री, स्थानीयता आ भक्तिक द्वन्द्व

लोकमाता आ देवी-महिमा: माता-केंद्रित भक्ति शक्तिक एगो विशेष नैतिक कल्पना अछि। एहि कल्पनामे सर्वशक्तिमान देवीक सँगे अबोध सन्तान-जेकाँ भक्त उपस्थित अछि। ताहि लेल देवीक आदेशक अपेक्षा कृपाक अपील अधिक सुनबामे अबैत अछि। जखन कवि अपन अपराध

स्वीकार करैत अछि, तखन ओ धार्मिक आत्मग्लानि मात्र नहि, सामाजिक दीनताक भाषा सेहो बनि सकैत अछि—ई पाठाधारित व्याख्या अछि, प्रत्येक कविक निजी जीवनक तथ्य नहि।

स्त्री-उपस्थिति: सूचीमे “भैरनी देवी”, “ललितेश्वरी देवी”, “नन्दनी देवी” आ “राजलक्ष्मी” सन रचनाकार-नाम भेटैत अछि। महिला-नामक एहि उपस्थिति कें चिन्हित कएनाइ जरूरी अछि, कारण शाक्त कविता केवल स्त्री-देवता पर पुरुष-दृष्टिक आख्यान नहि रहि स्त्री-कविस्वरक स्थान सेहो खोलैत अछि। तैयो नाम-साक्ष्य मात्रसँ कविसभक सामाजिक जीवन, शिक्षा, अधिकार आ ऐतिहासिक सम्बन्धक पूर्ण चित्र नहि बनैत अछि; एहि पर जीवनीगत खोज अलग चाही।

स्थानीयता: त्रिलोचन झाक “मिथिला देश”, चन्दा झाक “मैया”, तेजनाथ झाक “गंगे” आ अनेक कविक “जननि”क एक संग पठनसँ स्पष्ट होइत अछि जे ई देवी भौगोलिक, भाषिक आ घरेलू संसारसँ अलग नहि छथि। यद्यपि संग्रहक व्यापक स्वरूप शास्त्रीय अछि, ओकर काव्य-ऊर्जा स्थानीय बोलचाल आ क्षेत्रीय अनुभवसँ निरन्तर पुष्ट होइत अछि।

सामाजिक आलोचनाक सम्भावना: जखन भक्त ज्ञानविहीनता, दम्भ, पाप, विपत्ति आ आश्रयहीनता स्वीकार करैत अछि, एही पदमे व्यवहार-नीति आ आत्मालोचनक संकेत भेटैत अछि। मुदा प्रत्येक पदकें राजनीतिक प्रतिरोध अथवा निश्चित सामाजिक आन्दोलनक घोषणापत्र कहब मूल स्रोतक अपेक्षा बहुत आगाँ बढ़ब होयत। आलोचनाक उचित पद्धति अछि—जे पद खुलैत अछि, ओतबे कहब।

७. संकलनक उपलब्धि आ सम्पादकीय सीमासभ

प्रथम उपलब्धि — मैथिली शाक्त पद-परम्पराक बहुविस्तृत, कवि-आधारित पाठ एक संक्षिप्त संग्रहमे उपलब्ध करेनाइ। ७६ सूची-प्रविष्टि आ १९१ आन्तरिक गीतक्रमक संग ई पठनीय पाठ-संहति बनैत अछि।

दोसर उपलब्धि — विद्यापति-जेकाँ प्रसिद्ध नामक संग कम चर्चा भेल रचनाकारक नामक उपस्थिति; शोधार्थी लेल पाठ-चयन आ तुलनात्मक अध्ययनक आधार।

तेसर उपलब्धि — देवीक अनेक स्वरूप—भैरवी, दुर्गा, काली, कमला, गङ्गा, सरस्वती/वीणावादिनी—कैं एकहि व्यापक शाक्त आस्वादक अन्तर्गत रखनाइ।

चारिम उपलब्धि — अनेक गीतक अन्तमे पुरान स्रोतग्रन्थक संकेत; यद्यपि अपूर्ण, पाठक इतिहास खोजबाक दिशामे ई उपयोगी सुराक दैत अछि।

पाठालोचनक सीमा — पाण्डुलिपिक क्रम, मूल स्रोतक संस्करण, वैकल्पिक पाठ, विराम-व्यवस्थाक सिद्धान्त, कविक तिथिक प्रमाण आ संशोधन-नीति क्रमबद्ध रूपेँ संग्रहमे स्पष्ट नहि कएल गेल अछि।

सङ्गीत-अध्ययनक सीमा — गीतक बोल उपलब्ध अछि, मुदा राग, ताल, गायकी, प्रस्तुति-प्रसंग, गायन-परम्परा आ ध्वनि-अभिलेखक अभावमे निष्कर्ष सीमित राखब आवश्यक अछि।

प्रविष्टि-विधानक सीमा — गीतसूची रचनाकार-केन्द्रित अछि; गीत-विशिष्ट सूचीक अभावसँ १९१ पदमे कोन गीत कोन पृष्ठ पर आरम्भ होइत अछि, तकर तत्काल खोज कठिन होइत अछि।

ऐतिहासिक सीमा — पहिल संस्करणक सटीक वर्ष, गीत-स्रोतक काल, नेपाल-मिथिला सम्पर्कक प्रकृति, महिला कविसभक जीवनी आ हस्तलिखित प्रतिक परस्पर सम्बन्ध पर अनुसंधान करबाक आवश्यकतानि अछि।

ई सीमासभ गिनेनाइ पोथीक महत्त्व घटेबाक प्रयत्न नहि। साहित्यिक संरक्षणक पहिले चरणमे पाठसम्पादन आ उपलब्धता, आ दोसर चरणमे वैज्ञानिक पाठभेद, टिप्पणी, राग-ताल, शब्दकोश आ कालक्रम—दुनू अलग कार्य अछि। ई पुस्तक पहिल प्रकारक उल्लेखनीय प्रयत्न अछि; दोसर प्रकारक आलोचनात्मक संस्करण भविष्यक अनुसन्धानक विषय बनैत अछि।

८. गीतसूचीक ७६ प्रविष्टिक क्रमबद्ध पाठ-संकेत

निम्नलिखित सूची मूल “गीत सूची” -पृष्ठ ४–६)क क्रमपर आधारित अछि। “आरम्भ/सङ्केत” स्तम्भमे रचनाक पहिल पाँति अथवा गीत-समूहक पहिचान मात्र देल गेल अछि; ई सभ गीतक स्वतन्त्र संख्या नहि अछि। प्रत्येक टिप्पणी पाठमे देखाएल शीर्षक,

आरम्भिक शब्द अथवा सम्बन्धित रचनाक अवलोकनपर आधारित संक्षिप्त आलोचनात्मक संकेत अछि। गीत-सूचीमे जतय एक रचनाकारक अनेक गीत अछि, ओतय पहिल अथवा प्रतिनिधि गीत देल गेल अछि।

01. विद्यापति (मुद्रित पृ. १०–१३) — «जय-जय भैरवि»। भैरवीसँ आरम्भ करैत गायत्री, काली, दुर्गा आदिक बहुरूपक स्तोत्रपरम्परा; रौद्रता आ अभयक तनाव प्रमुख अछि।

02. लखनचन्द (मुद्रित पृ. १४) — «नमो नमो चण्डी»। प्रणामात्मक पुनरुक्तिसँ गीतक मन्त्रोच्चार-सदृश आरम्भ; देवीक चरण शरणस्थल बनैत अछि।

03. चतुरानन (मुद्रित पृ. १४) — «जयमण्डला जयमण्डला»। मण्डलात्मक स्तुतिमे दुर्गाक विजय-प्रतिमा; आवृत्तिक लय महत्त्वपूर्ण अछि।

04. सदानन्द (मुद्रित पृ. १४) — «जय जय दुर्गे दुर्गति»। नाम आ कार्यक ध्वनि-साम्यसँ दुःख-निवारणक देवी उभरैत छथि।

05. महाराज महेश ठाकुर (मुद्रित पृ. १५–१६) — «जय जय जय भय भञ्जनि»। भय-भञ्जन, महिष-वध आ भक्त-रक्षाक समवेत प्रतिमा।

06. महाराज महिनाथ ठाकुर (मुद्रित पृ. १६) — «वदन भयान कान»। देवीक उग्र मुखरूप आ भक्तक विस्मय बीच वर्णनक गति।

07. लोचन (मुद्रित पृ. १६) — «जय जय जय नत सतत»। नत मस्तकक भावभूमि आ सतत वन्दनाक लघु विन्यास।

08. कृष्णपति (मुद्रित पृ. १७) — «शंकरी शरणं धयल हम तोर»। “हम तोर” सम्बोधन शरणागतिसँ उपजल निजी सम्बन्ध रचैत अछि।

09. मंगनीराम (मुद्रित पृ. १७) — «तोही धरनी तोही करनी»। सृष्टि आ क्रियाशक्तिक एके देवीमे आरोपण।

10. शम्भुदत्त (मुद्रित पृ. १७) — «जय जय आदि शक्ति»। संसारक मूल शक्तिक संक्षिप्त दार्शनिक स्वीकृति।

11. शंकर (मुद्रित पृ. १८) — «गिरिनन्दिनी शुभ दिन»। पर्वत-सुताक प्रतिमा आ शुभ-प्रार्थनाक सह-अस्तित्व।

12. जीवदत्त (मुद्रित पृ. १९) — «जय-जय शङ्करि»। शंकर-संबद्ध देवीक स्तुति; ध्वन्यात्मक पुनरुक्ति प्रभावी।

13. वांगीश्वर (मुद्रित पृ. १९–२०) — «जय जय त्रिगुण»। त्रिगुणक तत्त्व-संकेत देवीक विश्वव्यापी रूप खोलैत अछि।

14. श्रीकान्तगणक (मुद्रित पृ. २०) — «जय जय भगवति जय»। सीधा देवी-संबोधन आ गुणपरक आवृत्तिक गेय विन्यास।

15. रामनाथ (मुद्रित पृ. २१) — «जे जे जे भवसागर तारिणि»। संसार-सागर सँ उद्धारक वैष्णवी-शाक्त प्रतीक-साम्य।

16. देवनाथ (मुद्रित पृ. २१) — «नील वसनी शम्भु धरनी»। वस्त्र-वर्ण आ शिव-सहचर्यसँ प्रतिमाक दृश्यात्मक रूप।

17. जयकृष्ण (मुद्रित पृ. २२) — «जै कालिके स्वर्गधारिणि»। कालीक उग्रता आ ऊर्ध्वलोकक पालन-दायित्वक मेल।

18. रामदास (मुद्रित पृ. २२) — «प्रणमओ प्रणत कलपतरु»। कल्पतरु-रूपक देवीकेँ अभिलाषापूर्तिक केन्द्र बनबैत अछि।

19. साहेब रामदास (मुद्रित पृ. २२) — «जनकल्लोलि महिमा»। चञ्चल मनमे स्मरण आ महिमाक सम्बन्धक आग्रह।

20. गोविन्ददास (मुद्रित पृ. २३) — «जयति जय वृषभानु»। वृषभ-सम्बद्ध प्रतीक स्तोत्रक देवपारिवारिक पृष्ठभूमि खोलैत अछि।

21. उमापति (मुद्रित पृ. २३) — «जय जय मधुकेटभ मर्दिनि»। मधु-कैटभ-वधक स्मृति सृष्टि-रक्षिणी देवीक परम्परासँ जुड़ैत अछि।

22. रमापति (मुद्रित पृ. २४) — «जय जय त्रिभुवनतारिणि»। त्रिभुवनक उद्धारकर्त्री देवीक विराट विस्तार।

23. लालकवि (मुद्रित पृ. २५) — «जय हरिरमनी»। हरि-संबद्ध नामक प्रयोगसँ सम्प्रदायगत सीमाक लचीली भाषा।

24. देवानन्द (मुद्रित पृ. २५) — «जय जय दुर्गा»। लघु स्तुतिमे दुर्गाक नामे लय आ श्रद्धाक केन्द्र।

25. गोकुलानन्द (मुद्रित पृ. २५) — «जय जय भारति भगवति»। भारतीक वाणी-शक्ति सेहो शाक्त परिधिक अङ्ग बनैत अछि।

26. काहाराम (मुद्रित पृ. २६) — «जय जय दुर्गा दुर्गि, जै जै कमला»। दुर्गा आ कमलाक युग्म-आवाहन रूप-विविधता देखबैत अछि।

27. रत्नपाणि (मुद्रित पृ. २६–३१) — «जय जगजननि»। बहुगीतात्मक विस्तृत खण्ड; जननी, भुवनेशि, कमला आ दुर्गाक स्तोत्र-शृङ्खला।

28. भानुनाथ (मुद्रित पृ. ३२) — «जय जय त्रिभुवन»। त्रिभुवन-व्यापी देव्या सामर्थ्यक उद्घोष।

29. हर्षनाथ (मुद्रित पृ. ३२–३३) — «जय जय कुमति विनाशिनि»। दुःखक संग कुमतिक निवारण—शक्ति आ विवेकक सम्बन्ध।

30. चन्दा झा (मुद्रित पृ. ३४–३८) — «जय देवि महेश-पुत्रि»। दीर्घ खण्डमे दास्य, करुणा, मातृसंबोधन आ कल्याणक व्याकुल विनती।

31. कान्हदास (मुद्रित पृ. ३८) — «जय गंगाजी»। गङ्गाक देवी-स्वरूप जोड़ि शाक्त परिभाषाकेँ नदी-पूजा धरि बढ़ेनाइ।

32. जलधरदास (मुद्रित पृ. ३८) — «जननि ! अब जानु»। समय-सापेक्ष पुकार आ अपन कष्ट देखबाक अनुरोध।

33. दास (मुद्रित पृ. ३९) — «जा के पीर हरे»। पीड़ा-हरणक अनुभूति गीतक केन्द्रीय प्रत्याशा बनैत अछि।

34. चिरंजीव (मुद्रित पृ. ३९) — «जय काली जय तारा»। काली आ ताराक समानान्तर सम्बोधन तान्त्रिक देवी-बहुलता देखबैत अछि।

35. नरसिंहदत्त (मुद्रित पृ. ३९) — «दुर्गी लेखा दय-दय तोर»। कृपाक पुनःपुनः याचना दीन वक्ताक स्वरकेँ प्रधान करैत अछि।

36. श्रवण सिंह (मुद्रित पृ. ४०) — «जय कमलनयनी कमल»। कमल-प्रतिमाक सौम्यता देवीक रौद्र छविक प्रतिपक्ष रचैत अछि।

37. भैरनी देवी (मुद्रित पृ. ४०) — «जय जय दुर्गा अनुपम रूपे»। नामानुसार स्त्री-कविस्वर आ सौन्दर्यमयी दुर्गाक आवाहन।

38. आदिनाथ (मुद्रित पृ. ४०–५०) — «नहि जगबहार हम»। दीर्घतम खण्डसभमे सँ एक; अनेक नाम, रूपक आ शरणागतिपरक गीत।

39. दुर्गादत्त सिंह (मुद्रित पृ. ५०) — «तुअ पदे कमल संतत»। देवीक चरण-कमलमे मनक निरन्तर निबद्धता।

40. दीनबन्धु झा (मुद्रित पृ. ५१) — «जयति भगवति भक्त-तारिणि»। भक्त-तारण, दारुण वेष आ करुणाशक्तिक द्वैध।

41. जीवन झा (मुद्रित पृ. ५२) — «दिन पुन फेरहु भुवनेशि»। बदलि गेल जीवन-स्थिति सुधरेबाक तात्कालिक अपेक्षा।

42. तेजनाथ झा (मुद्रित पृ. ५२–५४) — «जगत जननि पद»। जगत-जननीक चरण, काली आ गङ्गा समेटैत नैतिक आत्मपरीक्षण।

43. सूरदास (मुद्रित पृ. ५४) — «जगदम्बा भवानी हे»। मातृभावक सरल आवाहनक केन्द्रमे दैन्य आ आशा।

44. दामोदर (मुद्रित पृ. ५४) — «जाग जननि हे»। जागरणक पुकार देव्या ध्यान प्राप्त करबाक भावभङ्गिमा।

45. लक्ष्मीपति (मुद्रित पृ. ५४) — «क्षमा समुद्र क्षमिय अब जननी»। क्षमा-समुद्रक उपमा आत्मस्वीकृत अपराधबोधकेँ शान्त करैत अछि।

46. यदुनाथ मिश्र (मुद्रित पृ. ५५) — «दैत्यों दमन»। असुर-दमनक आख्या संग उग्ररूपक स्मृति।

47. ललितेश्वरी देवी (मुद्रित पृ. ५५) — «जयति जगदम्बिके काली»। पूजा-अपर्याप्तताक आत्मालोचनक संग करुणामयी कालीकेँ स्मरण।

48. नन्दनी देवी (मुद्रित पृ. ५५) — «जय काली कलि कलुष»। कलियुगक कलुष आ कालीक शुद्धिकारी सामर्थ्यक ध्वनि।

49. जीवानन्द (मुद्रित पृ. ५६) — «जय जय भवजननि»। अस्तित्वक मूल मातृरूप आ सम्बोधनक ऊर्जस्विता।

50. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ (मुद्रित पृ. ५६) — «धयल मुण्डमयी श्यामा»। उग्र प्रतिमा रचनाक दृश्यात्मक आकर्षण बनैत अछि।

51. ईशनाथ झा (मुद्रित पृ. ५७) — «जय जय दुर्गे दलनि»। दलनक क्रियाशक्ति आ भक्त-सम्बोधनक सहमेल।

52. मधुप (मुद्रित पृ. ५८) — «सम्प्रति सहस-सूर्य राजय जगमग माँ»। असीम तेजक हजार-सूर्य बिम्ब देवीक ज्योति-रूपक विस्तार करैत अछि।

53. श्रीकृष्ण (मुद्रित पृ. ५९) — «जय जय जननि»। मातृ-स्तुतिक लघु, आवृत्ति-आधारित विधान।

54. विश्वनाथ (मुद्रित पृ. ६०) — «जय जय सकल असुर»। विजय-गाथाक स्मृतिसँ देवीक पराक्रम स्थापित होइत अछि।

55. महाराज रामेश्वर सिंह (मुद्रित पृ. ६०) — «जय जय जगजननि, कि कहब जननि»। कथनीयताक अपर्याप्तता बतबैत महिमाक असीमता प्रकट होइत अछि।

56. शिवदत्त (मुद्रित पृ. ६१) — «ब्रह्मशक्ति जे चहिय आइली»। ब्रह्मशक्ति शब्दसँ उपासनाक दार्शनिक क्षितिज।

57. तन्नाथ झा (मुद्रित पृ. ६१) — «सिंह चढ़ल माता»। सिंहवाहिनी प्रतिमाक लोकदृश्य आ भय-निवारणक भाव।

58. यदुनाथ झा ‘यदुवर’ (मुद्रित पृ. ६२) — «मण्डलमय मैथिल»। मैथिली सांस्कृतिक शब्द-संयोगक संग देव्या सामर्थ्य।

59. ऋषिनाथ झा (मुद्रित पृ. ६२) — «जननी तनय विनय»। माता-पुत्र सम्बन्धक माध्यमसँ क्षमाक विनती।

60. राजलक्ष्मी (मुद्रित पृ. ६२) — «श्यामा चरण कमल हम पूजब»। चरणसेवा आ भक्तिक आत्मीय कृत्य एकठाम।

61. त्रिलोचन झा (मुद्रित पृ. ६२–६३) — «चण्डी तोहर मिथिला देश»। देवीकेँ सीधे मिथिलाक समाज आ भूगोलमे आमन्त्रित करबाक विरल स्वर।

62. गणनाथ (मुद्रित पृ. ६३) — «अकथ तत्त्व तुअ तारिणि»। अनिर्वचनीय शक्ति आ उद्धारक सम्बद्ध अवधारणा।

63. श्यामानन्द झा (मुद्रित पृ. ६४) — «जय कमलासिनि»। कमलासनक सौम्य रूप देवीक तत्त्व-विविधता बढ़बैत अछि।

64. आरसी प्रसाद सिंह (मुद्रित पृ. ६४) — «जननि, वीणा-वादिनी!»। विद्या, वाणी आ वीणाक सरस्वती-संकेतसँ व्यापक शाक्त अर्थ।

65. काञ्चीनाथ झा ‘किरण’ (मुद्रित पृ. ६४) — «जननी ! लिअ आब सुधि»। स्मरणक प्रतीक्षामे पीड़ित भक्तक तात्कालिक सम्बोधन।

66. चन्द्रभानु सिंह (मुद्रित पृ. ६५) — «जननि तोहर चरण»। चरणक निकटता भक्तिक लक्ष्य आ मनोवैज्ञानिक आश्वासन।

67. प्रभु नारायण ‘प्रदीप’ (मुद्रित पृ. ६५) — «जगदम्ब अही»। “अहाँ बिनु आश्रय ककर?” प्रश्नक पुनरावृत्ति स्तुतिमे नाटकीयता लबैत अछि।

68. चन्द्रमणि (मुद्रित पृ. ६५) — «जयति भवानी»। संक्षिप्त जयघोषक भीतर रक्षाक अभिलाषा।

69. चन्द्रकान्त झा (मुद्रित पृ. ६६) — «जागु जागु मैया»। निद्रा-विपर्ययक रूपक—देवीकेँ जागयबाक आग्रह दरअसल लोक-दुःख पर दृष्टि देबाक आग्रह।

70. अज्ञात कवि (मुद्रित पृ. ६७) — «गीत-पाठ (नाम अनिर्दिष्ट)»। रचनाकार अज्ञात रखल गेल अछि; स्रोत-अभावकेँ कल्पित जीवनीसँ भरब अनुचित।

71. जगज्ज्योतिमल्ल (मुद्रित पृ. ६७–६८) — «मधुकैटभ महिषासुर मारल»। पुराणिक असुर-वध आ मातृ-शक्तिक युग्म-स्वरूपक स्तुति।

72. जगत्प्रकाशमल्ल (मुद्रित पृ. ६९–७०) — «नहि आन गति हमरा»। आश्रयक एकमात्र आधार देवी, अपराध-स्वीकृति आ करुणा-याचनाक अनुक्रम।

73. जितामित्रमल्ल (मुद्रित पृ. ७०) — «नमो रुद्रानी गिरितनया»। शिव-संबद्ध रुद्राणी आ गिरितनयाक द्विनाम-आवाहन।

74. भूपतीन्द्रमल्ल (मुद्रित पृ. ७१) — «जय हिमालय नन्दिनी»। हिमालय-विम्ब देवीक उर्ध्वगौरव आ सांस्कृतिक भूगोलक संकेत।

75. प्रतापमल्ल (मुद्रित पृ. ७२) — «किदहु करम मोर हीन रे»। आत्मग्लानि, कर्म आ कृपाक विनय-पद्य; जपसँ बेसी आत्मस्वीकार।

76. जगतचन्द्र (मुद्रित पृ. ७२) — «जयति जगदम्बे काली»। अन्तिम गीतमे कालिकाक विजय आ शरणक संक्षिप्त समापन।

९. आलोचनात्मक निष्कर्ष

मैथिली शाक्त साहित्यक मूल्य केवल एहि बातमे नहि अछि जे ई देवीगीतक संकलन अछि; ओकर विशेषता अलग-अलग समय, शैली आ भाषिक स्तरक रचनाकारसभक संहति अछि। ७६ रचनाकार-प्रविष्टि आ १९१ गीतक भीतर देवी कखन असुर-विनाशिनी, कखन क्षमा-समुद्र, कखन ज्ञानदात्री, कखन मिथिलाक लोकमाता बनि उपस्थित होइत छथि। एही बहुरूपताक कारण पोथी मिथिलाक धार्मिक कल्पना, स्तोत्र-विन्यास, काव्य-भाषा आ सामाजिक संवेदनाक संयुक्त अध्ययनक आधार बनैत अछि।

सम्पादकक पहिल संस्करणक भूमिका शाक्त साहित्यक सांस्कृतिक-दार्शनिक क्षितिज दैत अछि आ दोसर संस्करणक टिप्पणी पाठ-प्रसारक अभिप्राय स्पष्ट करैत अछि। संग्रहक कवि-आधारित क्रम शोधक सहज आरम्भबिन्दु अछि, मुदा भविष्यक आलोचनात्मक संस्करणमे १९१ गीतक स्वतंत्र अनुक्रमणिका, समग्र स्रोत-सूची, पाठभेद, रचनाक कालनिर्धारणक प्रमाण, कठिन शब्दक कोश आ गायनपरम्पराक साक्ष्य जोड़ला सँ एकर उपयोगिता बहुत बढ़त।

ग्रन्थक समग्र मूल्याङ्कन: ई संरक्षित शाक्त काव्य-सम्पदाक महत्त्वपूर्ण पाठ-संकलन अछि, अन्तिम पाठ-निर्णायक संस्करण नहि। एकर अपूरणीय पक्ष अछि मैथिलीमे देवीक अनेक रूप, अनेक कविक आवाज आ अनेक प्रकारक विनय-गीत एकठाम देखबाक अवसर। एकर पढ़ाइमे पाठक कैं न आस्था छोड़बाक आवश्यकता अछि, न आलोचनात्मक विवेक; दुनूकैं पृथक् विधि मानि एक-संग राखलासँ ई संग्रह आरो अर्थवान होइत अछि।

अध्याय 05 / २००६

मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

ग्रन्थमे आरम्भक ‘भव्य ओ दिव्य प्रभा’ शीर्षक भूमिका मैथिलीमे अछि, मुदा मुद्रित पृष्ठ १७ सँ मुख्य इतिहास-विवेचन प्रायः हिन्दीमे लिखल गेल अछि। ई भाषिक भेद शोधक प्रमुख तथ्य अछि। एहि समीक्षा मे मूल कथनकेँ मैथिलीमे विवेचित कएल गेल अछि, किन्तु मूलक भाषा केँ मैथिली बताकऽ प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। लेखकक हिन्दी विवेचन, मैथिली उद्धरण, पत्रिकाक नाम आ तिथिकेँ परस्पर अलग पहचान देल गेल अछि। मूल पाठमे आन्तरिक असंगति अथवा बाहरी स्रोतसँ भिन्नता भेटला पर ओकर उल्लेख ‘जाँचबाक विषय’क रूपमे अछि, अन्तिम सत्यक रूपमे नहि।

२. पोथीक मूल प्रतिपाद्य: शताब्दी उपलब्धिक संग अधूरा सार्वजनिक जीवन

योगानन्द झाक प्रतिपाद्य दुटा विपरीत तथ्यक बीच विकसित होइत अछि। पहिल, मैथिली पत्रकारिताक सौ वर्षमे असंख्य साहित्यिक पत्रिका, मासिक, साप्ताहिक, हस्तलिखित पत्र, बालपत्रिका, शोधपत्र, स्मारिका आ दैनिक प्रकाशित भेल; हिनका सभक माध्यमे आधुनिक मैथिली साहित्य, भाषा-चेतना, लिपि, वर्तनी, नाटक, कथा, कविता आ आलोचनाकेँ महत्वपूर्ण आधार भेटल। दोसर, पत्रिकाक ई विस्तार टिकाउ समाचार-व्यवस्था, व्यापक पाठकवर्ग, नियमित वितरण, व्यावसायिक आमदनी आ लोकजीवन सँ प्रत्यक्ष सम्बन्धमे समान अनुपातमे नहि बदलि सकल। लेखकक अन्तिम मूल्यांकनक केन्द्र ‘साहित्यकारिता’ आ ‘पत्रकारिता’क बीचक अन्तर अछि। (मुद्रित पृ. १८–१९, ६२–६४।)

एहि द्वन्द्वकेँ पोथीक मुख्य वैचारिक उपलब्धि मानल जा सकैत अछि। लेखक केवल पत्रिकाक सूची नहि देबैत छथि; ओ प्रश्न उठबैत छथि जे पत्रिका समाजक दैनन्दिन समस्या, सूचना, शिक्षा, अर्थव्यवस्था आ सार्वजनिक विमर्शक वाहक बनि सकल कि नहि। तथापि

‘सफल पत्रकारिता’ लेल दैनिक पत्रकेँ लगभग सर्वोच्च कसौटी मानबाक कारण ओ साहित्यिक, वैचारिक, सामुदायिक आ लघुपत्रिका सभक उपलब्धिकेँ कखनो-कखनो कम आँकैत छथि। समीक्षाक आगामी भागमे एहि तनावक परीक्षण कएल गेल अछि।

३. ग्रन्थक रचना-विन्यास आ लेखकीय स्वर

पोथी पारम्परिक क्रमाङ्कित अध्यायमे विभाजित नहि अछि; विषयगत शीर्षकक आधार पर एकटा दीर्घ इतिहास-निबन्धक रूपमे विकसित अछि। मुद्रित पृ. ५–१६ मे आत्मीय मैथिली भूमिका, साहित्यिक सम्बन्धक स्मृति, पं. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क प्रतिदान आ भाषा-आन्दोलनक प्रसंग अछि। पृ. १७–१९ मे पत्रकारिताक ऐतिहासिक आरम्भ आ समग्र मूल्यांकन; पृ. १९–२३ मे ‘दैनिक पत्र’ अन्तर्गत ‘स्वदेश’ आ ‘मिथिला मिहिर दैनिक’; पृ. २३–५४ मे ‘अन्य पत्र-पत्रिकायें’ अन्तर्गत प्रकाशनक विस्तृत परिचय; पृ. ५४–५५ मे ‘नेपालीय मैथिली पत्रिकायें’; पृ. ५५–५६ मे ‘हस्तलिखित पत्र-पत्रिकायें’; पृ. ५६–६२ मे ‘वर्तमान मैथिली पत्र-पत्रिकायें’; आ पृ. ६२–६४ मे निष्कर्ष देल गेल अछि।

आरम्भक भूमिकामे लेखक अपन संस्मरण, संगोष्ठीक अनुभव, सुमनजीक सान्निध्य, दैनिक ‘स्वदेश’क अङ्क देखबाक अवसर, आ विभिन्न सम्पादक–शोधकर्ताक सहयोगक स्मरण करैत छथि। ई विवरण ग्रन्थकेँ केवल द्वितीयक पुस्तक-समीक्षाक स्थानपर साक्षात् पत्रकारिता-जगतसँ सम्बद्ध सहभागी शोधक रूप दैत अछि। लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे उपलब्ध पत्रिकाक आधार पर चयन भेल अछि आ किछु दुर्लभ अथवा अनियमित पत्र छूटि सकैत अछि। एहि आत्मस्वीकृतिकेँ इतिहासलेखनक ईमानदार सीमा मानल चाही, नहि जे एकर सूची सर्वसमावेशी अछि। (मुद्रित पृ. १०–१४।)

शुभाशंसा, समर्पण, व्यक्तिगत कृतज्ञता आ संस्मरणक विस्तृतता पुस्तकक सांस्कृतिक वातावरणक साक्ष्य तऽ अछि; मुदा इतिहास-निबन्धक समीक्षात्मक अध्येता लेल ई पृष्ठ स्रोत-सामग्रीक वर्गीकरण सँ पृथक् पढ़ल जाय। व्यक्तिक प्रति कृतज्ञता, तथ्यक स्वतन्त्र प्रमाण नहि बनैत अछि।

४. १९०५ सँ पूर्व पत्रकारिताक कल्पना: योजना आ प्रकाशनक अन्तर

मुख्य विवेचनक आरम्भमे लेखक अयोध्या प्रसाद खत्रीक ‘तिरहुत’ शीर्षक पत्रक योजना आ १९०१ क पत्राचारक उल्लेख करैत छथि। हुनक कथन अनुसार योजना वास्तविक पत्र-प्रकाशनमे नहि बदलि सकल। एहि ठाम लेखक ‘प्रस्तावित पत्र’ आ ‘प्रकाशित पत्रिका’क बीच आवश्यक भेद स्थापित करैत छथि। ओ ‘अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रन्थ’ आ ‘अमरजीक परिचय संसार ओ पत्राचार’क उल्लेख कऽ पुरान पत्राचारक प्रमाण दिस संकेत करैत छथि। (मुद्रित पृ. १७।)

एहि प्रसंगक उपयोग इतिहासक प्रारम्भ-वर्षकेँ विवेकपूर्वक परिभाषित करबाक लेल उपयुक्त अछि। कोनो विचार, घोषणा अथवा छापाखानाक तैयारी पत्रकारिता-संस्थाक इतिहासक अङ्ग भऽ सकैत अछि; मुदा प्रथम प्रकाशित अंकक प्रमाण बिना ओकरा नियमित पत्रिका मानि लेब अशुद्ध होयत। योगानन्द झाक १९०५क चुनाव एहि अर्थमे प्रकाशित पत्रक परम्पराक आरम्भ-बिन्दु अछि। खत्रीक योजना सम्बन्धी मूल पत्राचार एहि संलग्न पोथीक भीतर उद्धृत स्रोतक माध्यमे ज्ञात होइत अछि; मूल पत्रक प्रतिलिपि एहि समीक्षा लेल स्वतन्त्र रूपसँ प्राप्त नहि भेल।

५. ‘मैथिल हित साधन’: जयपुर, प्रवास आ मुद्रित सार्वजनिकताक जन्म

लेखक जयपुरसँ प्रकाशित ‘मैथिल हित साधन’केँ मैथिली पत्रकारिताक प्रारम्भिक पत्रिका मानैत छथि आ विद्यावाचस्पति मधुसूदन झाकेँ अग्रणी प्रवर्तकक रूपमे स्थापित करैत छथि। पोथीमे एहि पत्रक उद्देश्यक केन्द्र शिक्षा-विस्तार, मैथिल समाजक हित, सामाजिक कुरीति पर विचार, तथा व्याकरण, गणित, भूगोल, इतिहास आ दर्शनसँ जुड़ल पुस्तक-प्रकाशनक उल्लेख अछि। एकर संग ‘मैथिल चारुचर्या’क प्रकाशनक प्रसंग सेहो अछि। (मुद्रित पृ. १७–१८, २४।)

एहि विवरणक ऐतिहासिक अर्थ ई अछि जे मैथिली पत्रकारिताक संस्था भौगोलिक मिथिलाक केन्द्रमे नहि, प्रवासी बुद्धिजीवीक संयोजनसँ सुदूर जयपुरमे प्रारम्भ भेल। भाषा-समुदायक निर्मिति लेल पत्रिका केवल समाचारक माध्यम नहि, लेखक, पाठक, विद्यालय, संघ

आ प्रकाशक कैं एक सूत्रमे जोड़बाक साधन छल। राजस्थानक मैथिल प्रवास आ ज्ञान-विनिमयपर रिपुञ्जय कुमार ठाकुरक स्वतन्त्र शोध-सार सेहो १९०५क जयपुर प्रकाशन, मधुसूदन झा आ अन्तरक्षेत्रीय सम्पर्कक व्याख्या करैत अछि। ई बाहरी मिलान पोथीक व्यापक प्रसंगकैं बल दैत अछि; तथापि एहि समीक्षामे पत्रिकाक प्रथम अंकक मूल आवरणक स्वतन्त्र परीक्षण नहि भेल।

लेखक ‘मैथिल हित साधन’कैं समाज-सुधारक सार्थक प्रयास मानैत छथि, मुदा ओकर सीमित जीवनकालक उल्लेख सेहो करैत छथि। एहि ठाम पाठकवर्गक आकार, प्रतिमाह अङ्क-संख्या, मुद्रण-व्यय अथवा ग्राहक-संख्या ग्रन्थमे दत्त नहिएँ अछि। अतः बन्द होयबाक आर्थिक कारणक विशिष्ट आँकड़ा एकरा आधार बना नहि कहल जा सकैत अछि।

६. ‘मिथिलामोद’: भाषिक मिश्रण, सम्पादन आ साहित्यिक विस्तार

पोथीक अनुसार काशीसँ प्रकाशित ‘मिथिलामोद’ मैथिली पत्रकारिताक आरम्भिक आधारस्तम्भ छल। ग्रन्थ एकर प्रारम्भ १९०५ क श्रावणी पूर्णिमासँ जोड़ैत अछि; सम्पादनमे मुरलीधर झा, परवर्ती समयमे सीताराम झा आ उपेन्द्रनाथ झाक उल्लेख अछि। लेखक कहैत छथि जे प्रारम्भिक वर्षमे पत्रिका हिन्दी आ मैथिली दुनू भाषा उपयोग करैत छल, बादमे मैथिलीकैं प्रधान स्थान भेटल; पत्रिका द्वारा पुस्तक-प्रकाशन, महिला लेखिकाक रचनासँ परिचय, वर्तनी-विमर्श, तिरहुता, भाषा-अधिकार आ सामाजिक प्रश्न सभ आगाँ आयल। (मुद्रित पृ. २४–२५।)

मुख्य विश्लेषणीय तथ्य ई जे भाषा-निर्माणक आरम्भिक छपाइ-संसार एकभाषी नहि छल। मैथिली-हिन्दी मिश्रित पत्रिकाक अस्तित्व नहि तऽ ओकर योगदान अस्वीकार करैत अछि, नहि पछिला कालक पूर्ण मैथिली-पत्रक समान मानदण्डक अनिवार्यता सिद्ध करैत अछि। पत्रिकाक भाषा-चयन समय, शिक्षित पाठकक आदत, छापाखानाक संसाधन आ सार्वजनिक उद्देश्यसँ जुड़ल प्रश्न छल। एहि बिन्दुपर ग्रन्थक तथ्य मूल्यवान अछि।

एहि पत्रिकाक प्रथम वर्ष पर स्रोतभेद अछि। योगानन्द झा १९०५ लिखैत छथि; डॉ. धनाकर ठाकुरक प्रकाशित सूचीमे सेहो १९०५ भेटैत अछि, मुदा किछु अन्य इतिहास-विवरण १९०६ बतबैत अछि। केवल परवर्ती सूची देखिकऽ १९०५ वा १९०६ मे कोनो एककेँ अविवादित निर्णयक रूपमे लिखब उचित नहि। प्रथम अङ्क, प्रकाशन-घोषणा आ समकालीन विज्ञापनक मिलान आवश्यक अछि।

७. ‘मिथिला मिहिर’: मिथिलाक छपाइ-केन्द्र आ दीर्घकालिक संस्थान

योगानन्द झा ‘मिथिला मिहिर’क आरम्भ दरभंगामे १९०९ क मकर संक्रान्तिसँ मानैत छथि। प्रारम्भिक अवस्थामे हिन्दी प्रधान सामग्री, पछिला समयमे मैथिलीकेँ बढ़ैत स्थान, मासिकसँ साप्ताहिक रूपान्तरण, १९३६ क ‘मिथिलांक’, आ १९६०क आसपास पटना-केन्द्रित पुनर्प्रकाशनक चर्चा करैत छथि। ग्रन्थक अनुसार पत्रिकासँ विष्णुकान्त झा, परमेश्वर झा, सुरेन्द्र झा ‘सुमन’, सुधांशु शेखर चौधरी आदि अनेक सम्पादक जुड़ल रहलाह। (मुद्रित पृ. २५–२६।)

एहि पत्रक शक्ति केवल दीर्घजीविता नहि, ओकर संस्थागत रूपान्तरण अछि। एकटा प्रकाशन मासिक साहित्यिक-अभिव्यक्तिसँ साप्ताहिक सार्वजनिक विमर्श धरि आ पुनः दैनिक सूचना-संरचना धरि यात्रा कएलक। ई रूपान्तरण स्थानीय सम्पादन, प्रकाशन-पूँजी, पाठकीय अपेक्षा आ विज्ञापनक तकनीकी सम्बन्ध बुझबाक आधार बनैत अछि। पृष्ठ २५–२६ आ २२–२३ केँ संग पढ़ला पर पोथीक इतिहास ‘अलग-अलग पत्रक सूची’सँ बढ़ि कऽ एकटा माध्यमक रूप-विकासक अध्ययन बनि जाइत अछि।

‘मिथिला मिहिर’क प्रारम्भ-वर्षपर सेहो बाहरी स्रोत एकमत नहि छथि—मराठी विश्वकोशमे १९०८, डॉ. धनाकर ठाकुरक सूचीमे १९०९, आ किछु नेपालीय समीक्षामे १९१२ भेटैत अछि। योगानन्द झाक १९०९ केँ पोथीक कथन मानि उद्धृत करब आवश्यक अछि; तथाकथित अन्तिम तिथि निश्चित करबाक लेल आरम्भिक अंकक प्रत्यक्ष साक्ष्य चाही। एकटा पुस्तकक तिथि दोसरा पुस्तकक तिथिकेँ अपने-आप असत्य नहि बनबैत अछि।

८. दैनिक ‘स्वदेश’: १९४८ क मासिकसँ १९५५ क ऐतिहासिक दैनिक धरि

योगानन्द झाक विवेचनमे ‘स्वदेश’ विशेष महत्त्व रखैत अछि। पं. सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ १९४८ मे मासिक ‘स्वदेश’ निकालने छलाह, जकर छओ अंकक उल्लेख अछि। पोथीक अनुसार ९ अक्टूबर १९५५ सँ दैनिक संस्करण आरम्भ भेल। एहि चारि पृष्ठक पत्रमे साहित्यक अपेक्षा समाचार, विचार, जनप्रश्न, लोकमत, राजनीतिक टिप्पणी, गृहस्थोपयोगी सूचना, रेल-समय-सारिणी, बाजार-भाव, खेलकूद आ व्यंग्यकेँ स्थान भेटल। लेखक एकरा उत्तर बिहारक प्रारम्भिक दैनिक-पत्रकारी प्रयोगक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। (मुद्रित पृ. १९–२१।)

स्वदेशक अध्ययन ग्रन्थक सभसँ सघन वर्णनमे एक अछि। लेखक पत्रक आकार, स्तम्भ, प्रथम पृष्ठक सूक्ति, पाठक-पत्रक ‘लोकमत’ खण्ड, ‘जय जय स्वदेश’ कविताक उल्लेख आ चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क व्यंग्य-परम्पराक चर्चा करैत छथि। एहि विवरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे ‘समाचार’ संग राजनीतिक चेतना, पाठकीय सहभागिता आ दैनिक उपयोगिताक सामग्री सम्मिलित कएल जा रहल छल। एहि दृष्टिसँ स्वदेशकेँ केवल भावनात्मक मातृभाषा-प्रयोग कहि छोड़ि देब लेखकक उपलब्ध स्रोत-पाठक प्रति अन्याय होयत।

एहि चरणक समापन-विवरणमे सावधानी जरूरी अछि। मुद्रित पृ. २० पर दिसम्बर १९५५ धरि कुल पैंसठ अंकक उल्लेख अछि, मुदा मुद्रित पृ. २१ पर बन्द होयबाक दिनक विवरण अलग ढङ्गसँ आयल अछि। एतय एकटा निश्चित अन्तिम अङ्क-तिथि घोषित नहि कएल गेल अछि। स्वयं लेखकक भूमिकामे सुमनजीक १९५७क प्रतिवेदन उद्धृत अछि, जाहिमे आर्थिक घाटाक कारण दैनिक स्थगित भेलाक चर्चा अछि। ई पत्रक आर्थिक अस्थिरताक साक्ष्य अछि, किन्तु निर्धारित आय-व्ययक लेखा नहि। (मुद्रित पृ. ९, २०–२१।)

९. ‘स्वदेश’क दोसर चरण: १९८१–१९८३ आ दैनिकताक संकट

ग्रन्थक अनुसार ५ अगस्त १९८१ सँ ‘स्वदेश’क दैनिक प्रकाशन फेर आरम्भ भेल आ अक्टूबर १९८३ धरि ओकर प्रयोग चलल। एहि चरणमे प्रेस-संसाधन, अंकक आकार, पृष्ठ-संख्या आ प्रकाशनक नियमितता अस्थिर छल। लेखक व्यंग्य, मातृभाषाक प्रति आग्रह, लोकजीवनक

विषय, कविता-कथा आ सार्वजनिक विचारक सहअस्तित्व देखबैत छथि। ओ संकेत करैत छथि जे समाचार-केंद्रित दैनिक फेर साहित्यिक पत्रिकाक रङ्ग ग्रहण करैत गेल। (मुद्रित पृ. २१–२२।)

पहिल आ दोसर ‘स्वदेश’क तुलना पुस्तकक पत्रकारिता-सिद्धान्त बुझबाक कुंजी अछि। ओही नाम, सम्पादकीय प्रतिबद्धता आ भाषा-आन्दोलनक पृष्ठभूमि रहलो पर संसाधन आ सामाजिक परिस्थिति बदलिए गेल छल। आर्थिक रूपसँ कमज़ोर पत्रक दैनिक कार्यप्रवाह अत्यन्त कठिन होइत अछि; सामग्री-संग्रह, नियमित मुद्रण, वितरण, सम्पादन आ विज्ञापन प्रत्येक दिन नवीकृत करबाक पड़ैत अछि। योगानन्द झा दैनिकताक एहि व्यावहारिक संकटकेँ प्रकट करैत छथि, मुदा सटीक लागत, वितरण-क्षेत्र, ग्राहक-प्रतिशत आ प्रति-अङ्क आयक आँकड़ा प्रस्तुत नहि करैत छथि। अतः ई सशक्त गुणात्मक अध्ययन अछि, परिमाणात्मक आर्थिक इतिहास नहि।

१०. ‘मिथिला मिहिर दैनिक’: १९८४–१९८६ मे समाचार-संस्थानक मॉडल

पोथीक अनुसार २० फरवरी १९८४ सँ ‘मिथिला मिहिर’ दैनिक रूपमे अवतरित भेल आ जून १९८६ धरि चलल। एकरा ‘आर्यावर्त’ आ ‘इण्डियन नेशन’सँ सम्बद्ध समाचार-प्रकाशन संरचनाक सुविधा भेटैत छल। लेखक पत्रक पृष्ठ-विन्यास, समाचारक वर्गीकरण, सम्पादकीय, राजनीतिक व्यंग्य, गुरुवार आ रविवारक अतिरिक्त सामग्री, सिनेमा, खेल, राशिफल, साहित्य आ वार्षिकांकक विशिष्टताक चर्चा करैत छथि। (मुद्रित पृ. २२–२३।)

एहि तुलनामे ‘मिथिला मिहिर दैनिक’क संस्थागत बल ‘स्वदेश’क व्यक्तिगत प्रतिबद्धतासँ भिन्न देखाइत अछि। उपलब्ध प्रेस, सम्पादनक संरचना आ बहुभाषिक समाचार-संस्थानसँ सम्बन्ध दैनिक पत्रक स्थायित्व लेल सहायक भऽ सकैत अछि। तथापि दू वर्षसँ किछु बेसी अवधि पश्चात दैनिक बन्द भेल—एहि अनुभवसँ केवल पूँजी उपलब्ध रहब पर्याप्त नहि, पाठक-बाजार आ दीर्घकालिक आर्थिक व्यवस्था सेहो आवश्यक अछि। एहि निष्कर्षमे आर्थिक कारक

सम्भावित कारणक रूपमे समझल गेल अछि; बन्द होयबाक निर्णायक लेखापरीक्षित कारण मूल पुस्तक प्रस्तुत नहि करैत अछि।

एकटा महत्वपूर्ण विशेषता ई अछि जे ग्रन्थ लेखकद्वारा देखल अंकक बाह्य रचना, सम्पादकीय व्यवहार आ विशिष्ट स्तम्भक विवरण देइत अछि। एहि प्रकारक अंश पाठ-पत्रक प्रत्यक्ष अध्ययनक नजदीक अछि, आ शीर्षकसूचीसँ कहीं बेसी प्रमाणमूल्य रखैत अछि। शोधक अगिला चरणमे एहि वर्णित अंकसभक प्रतिलिपि, तारीख, विज्ञापन-विन्यास आ मुद्रण-सूचना अलगसँ सूचीबद्ध कएल जा सकैत अछि।

११. १९२०–१९४०: प्रवासी मैथिल, शुद्ध मैथिली लेखन आ साहित्यिक संस्थान

‘मैथिली प्रभा’ तथा ‘मैथिल प्रभाकर’क चर्चामे लेखक अजमेर, आगरा आ अलीगढ़क प्रवासी मैथिल समूहक प्रयास रेखांकित करैत छथि। ‘श्रीमैथिली’केँ दरभंगासँ प्रकाशित पूर्ण मैथिली पत्रक रूपमे विशेष स्थान दैत छथि। ‘मिथिला’क सम्पादकीय उदारता, ‘मिथिला मित्र’क पाक्षिक स्वरूप, ‘मैथिल बन्धु’क प्रवासी सम्पर्क, ‘मैथिल युवक’ आ ‘जीवन प्रभा’क समाजकेन्द्रित भूमिका अलग-अलग चिन्हल गेल अछि। (मुद्रित पृ. २६–२८।)

एहि कालखंडक इतिहासमे भाषाक शुद्धता, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ व्यापक प्रसार तीनटा अलग प्रश्न छथि। ‘श्रीमैथिली’केँ एकभाषी रूपक पहिल प्रयोग कहब भाषिक इतिहासमे निर्णायक मानल जा सकैत अछि; मुदा मिश्रित भाषावाली आरम्भिक पत्रिकासभकेँ ‘कम मैथिली’ बुझबाक आग्रह उचित नहि। एहन परिवर्तनक अध्ययनमे वास्तविक लेख, विज्ञापन, सम्पादकीय आ पाठक-पत्रक भाषा अनुपात जाँचब अपेक्षित अछि।

‘भारती’, ‘विभूति’ आ ‘मैथिली साहित्य पत्र’क विवेचन साहित्यिक पत्रिकाक विविध पक्ष खोलैत अछि। ‘भारती’क विश्वविद्यालयीय मान्यता आ भाषा-आन्दोलन; ‘विभूति’क निर्भीक, परन्तु लेखकक दृष्टिमे विवादास्पद आलोचनात्मक रवैया; आ रमानाथ झाक सम्पादनमे ‘मैथिली साहित्य पत्र’क पुस्तक-जेकाँ सामग्री प्रकाशित करबाक आयोजन—ई सभ अलग मॉडल छल। (मुद्रित पृ. २८–२९।) ‘पीत पत्रकारिता’ सन कठोर विशेषणक प्रयोगमे लेखकक

निर्णायक मत देखाइत अछि, मुदा पत्रिकाक विशिष्ट पंक्ति वा पूरा अंकक तुलनात्मक नमूना प्रस्तुत नहि होयब मूल्यांकनक सीमा अछि।

१२. १९४०–१९६०: ‘स्वदेश’, ‘बैदेही’, बालपत्रिका आ नवसृजन

द्वितीय विश्वयुद्धक आसपासक प्रकाशन-क्रममे ‘सत्य सन्देश’, १९४८ क मासिक ‘स्वदेश’, ‘मिथिला ज्योति’, ‘पल्लव’, ‘बैदेही’, ‘मिथिला दर्शन’, ‘मिथिला दूत’ आ ‘नूतन विश्व’ सन पत्रक चर्चा अछि। लेखक कतहु एक-दू अङ्क, कतहु दशकौँक उपलब्धि दर्ज करैत छथि। ‘पल्लव’क ग्रामीण प्रकाशनस्थान आ नवलेखक प्रोत्साहन, ‘बैदेही’क दीर्घ साहित्यिक भूमिका आ ‘मिथिला दर्शन’क राजनीतिक भाषिक अभियान विशेष महत्त्व रखैत अछि। (मुद्रित पृ. २९–३२।)

‘बैदेही’क सम्बन्धमे विभिन्न सम्पादक, प्रकाशन-केन्द्रक परिवर्तन, विशेषांक आ लगभग १९९० धरि चलल पत्रिकाक चर्चा अछि। एकरा आधुनिक मैथिली लेखनक अखड़ा बुझल जा सकैत अछि, जतय लेखकक पीढ़ी, साहित्यिक विधा आ विचारक प्रवाह बनैत रहल। मुदा पत्रिकाक सम्पूर्ण अङ्क-सूची बिना लेखकक गुणवत्तागत ‘उत्कृष्ट’ वा ‘अवनति’क निर्णय सभ वर्षपर समान रूपसँ लागू कएल नहि जा सकैत अछि।

‘बटुक’, ‘धियापुता’ आ ‘शिशु’क विवेचन ई सिद्ध करैत अछि जे मैथिली पत्रकारिता केवल वयस्क साहित्यकारक बौद्धिक क्षेत्र नहि छल। बाल-शिक्षा, अनुवाद, चरित्रकथा, शिशु-पाठमाला आ मनोरंजन लेल विशिष्ट पत्रक प्रयोग भेल। लेखक ‘बटुक’क अनेक कालखंड, बालसाहित्य-विशेषांक आ ‘धियापुता’क बालमनोविज्ञानपर बलक वर्णन करैत छथि। एतय ओ मातृभाषामे संस्थागत शिक्षा उपलब्ध नहि भऽ सकबाक कारण पाठकीय विकास सीमित रहल मानैत छथि। (मुद्रित पृ. ३२–३३।) ई समाजशैक्षिक अनुमान महत्वपूर्ण अछि; एकर पुष्टिक लेल विद्यालय, पाठ्यक्रम, वितरण-संख्या आ पाठक-प्रतिक्रियाक स्वतन्त्र आँकड़ा चाही।

१३. १९६०–१९७०: आन्दोलन, प्रयोग आ साहित्यिक विमर्शक विस्तार

‘इजोत’, ‘अभिव्यञ्जना’, ‘मिथिला’ साप्ताहिक, ‘मिथिला सेवक’, ‘मैथिली साहित्य परिषद् पत्रिका’, ‘अभियान’, ‘मैथिली कविता’, ‘मैथिली प्रकाश’, ‘आखर’ आ ‘सोनामाटि’क चर्चा लेखकक लेल साहित्यिक पत्रकारिताक विविध प्रयोग प्रस्तुत करैत अछि। ‘अभिव्यञ्जना’ नवता आ प्रयोगवादी साहित्य; ‘मैथिली कविता’ काव्य-केंद्रित चयन; ‘मैथिली प्रकाश’ शोध-अनुसन्धान; ‘आखर’ नवलेखन आ भाषा-आन्दोलन; ‘सोनामाटि’ बहुविध पाठक-रुचिक माध्यम बनबाक प्रयास करैत अछि। (मुद्रित पृ. ३३–३६।)

एहि पत्रिकासभक वर्गीकरणमे एकटा विधागत इतिहास छिपल अछि। कथा, कविता, आलोचना, रंगमंच आ भाषा-चेतनाक अलग मंच बनेबाक अर्थ ई छल जे सम्पादक विस्तृत साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्रक भीतर विशेष पाठक-समुदाय चिन्हि रहल छलाह। लेखक कखनो एहि विशिष्टीकरणकेँ उपलब्धि आ कखनो व्यापक समाचार-पत्रकारितासँ विचलन मानैत छथि। दुनू मत समेटि देखला पर बुझाइत अछि जे ‘पत्रकारिता’ आ ‘लघु साहित्यिक पत्र’क उद्देश्य सदैव एक नहि होइत अछि; ताहि कारण दुनूक सफलताक कसौटी सेहो एकसर नहि होयबाक चाही।

१४. १९६०–१९८०: राजनीति, भाषा-अधिकार आ वैचारिक पत्र

‘जनक’ (चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क सम्पादन), ‘स्वदेशवाणी’, ‘मिथिला टाइम्स’, ‘चर्चा’, ‘समाद’, ‘विकल्प’, ‘मिथिला भूमि’, ‘मैथिली समाचार’ आ अन्य पत्रक परिचय सँ स्पष्ट अछि जे मैथिली छपाइ-क्षेत्र राजनीतिक विचारक वाहक सेहो बनल। विश्वविद्यालयक स्थापना, रेडियो-केंद्र, मातृभाषाक परीक्षा-अधिकार, संविधानक आठम अनुसूची, पृथक् मिथिला राज्य आ दलगत वैचारिकी सन प्रश्न पत्रिकामे सक्रिय रहल। (मुद्रित पृ. ३६–४१।)

एतय लेखकक दृष्टि सर्वाधिक सक्रिय परन्तु कखनो असमान अछि। जखन कोनो पत्रिका मैथिलीक मान्यता लेल संघर्ष करैत अछि तँ ओकर प्रशंसा करैत छथि; जखन ओ कोनो दल वा सम्पादकीय विरोधसँ जुड़ैत अछि तँ भाषा अथवा ‘पीत पत्रकारिता’क आधारपर कठोर निर्णय

दैत छथि। उदाहरणतः ‘मिथिला टाइम्स’केँ कम्युनिस्ट दलक वैचारिक पत्र, ‘चर्चा’केँ कांग्रेस-समर्थित आ ‘नूतन विश्व’केँ आनन्दमार्ग-संबद्ध लेखनक रूपमे वर्णित कएल गेल अछि। वैचारिक पक्षधरता अपने-आप अनैतिक पत्रकारिता नहि अछि; तथ्यक अशुद्धि, विरोधी विचारक दमन, स्रोतक अपुष्टि, द्वेषपूर्ण आरोप आ पाठककेँ भ्रमित करबाक प्रमाणक आधार पर आचारगत मूल्यांकन करबाक चाही।

‘समाद’ आ ‘विकल्प’ सम्बन्धी १९७८ क चर्चा विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। लेखकक अनुसार प्रवेशिका परीक्षामे मैथिलीक स्थान सँ सम्बन्धित सरकारी निर्णयक विरोध लेल पत्रक प्रयोग भेल। एहि उदाहरणमे पत्रिका सार्वजनिक नीति बदलबाक प्रयासक प्रत्यक्ष साधन अछि। मुदा यतय सरकारी अधिसूचना, प्रकाशित सम्पादकीय आ निर्णय-पलटबाक प्रशासनिक अभिलेख मूल पुस्तकक संग संलग्न नहि अछि। ताहि कारण घटनाक क्रम पुस्तकक अभिलेखित दावा अछि, सम्पूर्ण दस्तावेजी पुनर्निर्माण नहि।

१५. ‘मिनी पत्रिका’ आ लघु पत्रिका: आकारक भीतर नवता

‘मि०’, ‘अनामा–कथादिशा’, ‘चाडुर’, ‘सन्निपात’, ‘अग्निपत्र’, ‘माहुर’, ‘भुम्हुर’, ‘भूर’, ‘शिखा’, ‘लालधुआँ’, ‘संकल्प’, ‘अक्षत’, ‘मिथिला समुदाय’ आ ‘फराक’क विवेचनमे लेखक नवलेखन, पारम्परिकता-विरोध, वैचारिक असहमति, लघुरूप आ अनियत प्रकाशनक इतिहास दर्ज करैत छथि। ‘मि०’क छोट आकार विशेष उल्लेखनीय अछि। ‘कथादिशा’ सन कथा-केंद्रित प्रयास विशिष्ट विधा लेल पाठक-समुदाय गठबाक संकेत अछि। (मुद्रित पृ. ४२–४४।)

लेखक एहि छोट-छोट प्रयोगसभमे व्यक्तिवाद आ अनियतताक प्रवृत्ति देखैत छथि। एहि आलोचनामे किछु सत्य प्रश्न अछि—ग्राहक केतबा अङ्क पओलक, वादा कएल आवृत्ति निभल कि नहि, सम्पादकीय संस्था कोना चलल? मुदा एक-अंकक पत्रिकाक ऐतिहासिक मूल्य शून्य नहि होइत अछि। कोनो एक अङ्क सँ कविता आन्दोलनक दिशा बदलि सकैत अछि, नाटक छपि सकैत अछि, वा नव लेखक प्रवेश करि सकैत छथि। अतः ‘दीर्घजीविता’ आ ‘बौद्धिक प्रभाव’ दूटा स्वतन्त्र मापदण्ड बनल चाही।

आलोचनात्मक रूपसँ देखल जाय तँ १९७०क दशकक लघुपत्रिकाकेँ लेखक एकर राजनीतिक-सांस्कृतिक संघर्षक केन्द्रमे रखैत छथि, मुदा एकर प्रचार-साधन—साइक्लोस्टाइल, कम लागतक छपाइ, छात्र-संघ, संगोष्ठी आ कविता-पाठ—पर व्यवस्थित तकनीकी चर्चा नहि करैत छथि। ई आगाँक शोधक अवसर अछि।

१६. १९८०–१९९०: वर्तनी, स्त्री-सम्पादन, जनवादी साहित्य आ विषयगत विस्तार

पुस्तक ‘देसकोस’, ‘विदेह’, स्त्री-सम्पादित पत्रक उदाहरण, ‘माटि-पानि’, ‘कोसी कुसुम’, ‘बसात’, ‘सन्दर्भ’, ‘चिनगी’, ‘लोकवेद’, ‘हालचाल’, ‘भाखा’, ‘कुशलक्षेम’, ‘आँखि-पाँखि’ आदि पत्रिकाक विविध भूमिका चर्चा करैत अछि। किछु पत्रिकामे साहित्यक संग समाचार, राजनीति आ सामाजिक विमर्श समेटबाक प्रयत्न अछि; किछु पत्र विशुद्ध आलोचना, नवकविता अथवा जनवादी साहित्यक मंच बनैत अछि। (मुद्रित पृ. ४५–४८।)

एहि विवरणमे स्त्री-सम्पादन आ महिला-केन्द्रित विषयक संकेत विशेष ध्यान योग्य अछि। लेखक ‘विदेह’ आ दोसर महिला-प्रायोजित पत्रक चर्चा करैत छथि; तथापि प्रत्येक ठाम महिला लेखिका, सम्पादिका, प्रकाशिका, मुद्रक, वितरक आ पाठिका सभक भूमिका समग्ररूपेण अलग इतिहासक रूपमे विकसित नहि करैत छथि। महिला भागीदारीक सूची दऽ देब आ ओकर संस्थागत बाधा-विवेचन करब अलग बात अछि। स्त्री-पत्रिकाक वास्तविक विषय-सूची, सम्पादकीय निर्णय आ पाठक-पत्र उपलब्ध भेलापर मैथिली पत्रकारिताक लैङ्गिक इतिहास अधिक स्पष्ट होयत।

‘चिनगी’क जनवादी विमर्श, ‘लोकवेद’क विशिष्ट सज्जा आ साहित्यिक स्तर, ‘भाखा’क नवलेखन सँ परवर्ती साहित्यिक-रूपान्तरण, आ ‘माटि-पानि’क समाचार-विचार मिश्रण लेखकक दृष्टिमे प्रयोगक प्रकार सभ छथि। एकर अर्थ ई नहि जे सभ पत्रिका एक-समान ऐतिहासिक प्रभाव छोड़लक; पुस्तक विभिन्न मानदण्डसँ हिनका सभकेँ परखैत अछि। समीक्षक लेल आवश्यक अछि जे ‘सम्पादकक मत’ आ ‘पत्रिकाक अंकमे वास्तविक प्रकाशित सामग्री’क अन्तर सदैव मनमे राखल जाय।

१७. १९९०–२००५: महानगरीय प्रवास, शोध-सामयिकी आ बहुआयामी सम्पादन

ग्रन्थक पछिला खण्डमे ‘मैथिलीआलोचना’, ‘चतुरंग’, ‘मिथिला परिक्रमा’, ‘मिथिला समाद’, ‘जानकी’, ‘मिथिला प्रकाश’, ‘कोकिल मंच’, ‘आकांक्षा’, ‘मैथिली टाइम्स’, ‘जय मिथिला’, ‘मिथिला सुरभि’, ‘बागमती दामोदर टाइम्स’, ‘अन्तिका’, ‘देशज’, ‘देसिल वयना’, ‘आंकुर’, ‘लोरिक सलहेस दीनाभद्री’, ‘सूत्रधार’, ‘भोरुकवा’ आ ‘प्रवासी’ सन पत्र सभ आएल अछि। एहि सूचीमे दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, पटना, दरभंगा, सहरसा, मधुबनी, धनबाद आ प्रवासी संस्थाक सघन नेटवर्क उभरैत अछि। (मुद्रित पृ. ४८–५४।)

एहि दशकमे बहुते पत्र अपनाक ‘समाचार-विचार’क मंच कहैत अछि, मुदा लेखकक परीक्षणमे बहुतो अङ्क फेर साहित्यक प्रमुख वाहक बनैत अछि। ‘आकांक्षा’क संदर्भमे समाज, शिक्षा, स्त्रीविषय, स्वास्थ्य आ विज्ञान समेटबाक प्रयास; ‘अन्तिका’क नवप्रकाशन-विन्यास; ‘देशज’क विशिष्ट काव्यविमर्श; ‘आंकुर’क प्रवासी सम्पर्क; आ ‘सूत्रधार’क कोशी-क्षेत्रपर दृष्टि—ई सभ भिन्न पाठकवर्गक चिन्ह अछि। एहि प्रकारक भिन्नता देखला पर ‘मैथिली पत्रकारिता सिर्फ साहित्यिक अछि’ सन सार्वत्रिक फैसला सरलीकरण सिद्ध होइत अछि।

किछु पत्रिकासँ सम्बन्धित लेखकक आलोचनात्मक भाषा कठोर अछि। ‘अन्तिका’क विरुद्ध लिखल टिप्पणी अथवा किछु सम्पादकीय गुटबन्दीक आरोप ऐतिहासिक बहसक विषय तऽ अवश्य अछि, किन्तु आरोपक समर्थनमे उद्धृत समाचार, प्रकाशित प्रत्युत्तर वा विरोधी सम्पादकक पक्ष नहि रहला कारण एकरा लेखकक मूल्यांकनक रूपमे पढ़बाक चाही। पुस्तक अपन युगक साहित्यिक वाद-विवादक साक्षी सेहो अछि; एहि बातसँ एकर महत्त्व घटैत नहि, स्रोत-आलोचनाक आवश्यकता बढ़ैत अछि।

१८. नेपालक मैथिली पत्रकारिता: सीमापार भाषिक सार्वजनिक क्षेत्र

‘नेपालीय मैथिली पत्रिकायें’ शीर्षक अन्तर्गत लेखक नेपालक मैथिली भाषाक पत्रिकाक स्वतन्त्र परम्पराकेँ भारतीय मिथिला-सन्दर्भसँ जोड़ैत छथि। ‘नवजागरण’क त्रिभाषिक स्वरूप, ‘फूलपात’, ‘इजोत’, ‘मैथिली’, ‘गामघर’, ‘दुभि-धान’, ‘हिलकोर’, ‘नैमिकानन’ आ ‘सलहेस

वाणी’क चर्चा करैत छथि। ओ साहित्यक आदान-प्रदान, सांस्कृतिक सम्बन्ध आ अनियमित प्रकाशनक समस्याकेँ महत्त्व दैत छथि। (मुद्रित पृ. ५४–५५।)

एहि खण्डक वास्तविक योगदान राष्ट्रीय सीमा पार करैत मैथिली मुद्रित संसारक परिकल्पना अछि। देश बदललासँ भाषा-समुदायक पाठकीय सम्बन्ध समाप्त नहि होइत अछि। मुदा नेपालक विक्रम संवत् आ भारतक ईसवी सन्क तिथि मिलान, स्थानीय प्रकाशन-नीति, नेपाली/हिन्दी/मैथिलीक सहभागिता आ पत्रिकाक संस्थागत इतिहास पर स्वतंत्र दस्तावेज चाही। एहिक सूचनासँ नेपालक समग्र पत्रकारिता-इतिहास सम्पन्न भेल मानब उचित नहि। लेखक स्वयं खण्ड संक्षिप्त रखैत छथि।

बाहरी नेपाली समीक्षा-सन्दर्भमे ‘नवजागरण’केँ आरम्भिक त्रिभाषिक पत्रक रूपमे देखल गेल अछि, मुदा प्रथम प्रकाशन-वर्षक प्रस्तुति सभ स्रोतमे एकसर नहि। मैथिली भागक सम्पादक, प्रथम अंकक तिथि आ प्रकाशनस्थान जँ मूल प्रतिलिपिसँ मिलत तँ एहि पोथीक सीमापार खण्डक विश्वसनीयता आ बढ़त।

१९. हस्तलिखित पत्र-पत्रिका: ग्राम्य शिक्षित समाजक वैकल्पिक छापाइ-जगत

ग्रन्थमे ‘हितैषी’, ‘अयाची’, ‘गोविन्द’, ‘अक्षत’, ‘किरण’, ‘लोचन’, ‘मिथिला मानस’, ‘मित्रवाणी’, ‘प्रभात’, ‘मन्दार’, ‘जानकी’, ‘कौशिकी’, ‘सौरभ’ आदि हस्तलिखित पत्रक उल्लेख अछि। काशीमे ‘मैथिली सुधाकर’, ‘मिथिलोदय’, ‘भारती’ आ ‘वैदेही’ सन पत्रक सेहो चर्चा अछि। किछु ठाम हस्तलिखित पाठक साइक्लोस्टाइल वा प्रतिलिपि-आधारित प्रसारक उल्लेख भेटैत अछि। (मुद्रित पृ. ५५–५६।)

ई खण्ड पोथीक अत्यन्त मूल्यवान भाग अछि, कारण ‘प्रकाशन’केँ केवल व्यावसायिक छापाखानासँ सीमित नहि करैत अछि। गामक विद्यार्थी, स्थानीय गोष्ठी आ साहित्य-प्रेमी हस्तलिखित पत्रद्वारा सार्वजनिक लेखनक प्रशिक्षण दैत छलाह। एहि परम्परामे पाठक सीमित होइतो लेखक-निर्माण, भाषा-अभ्यास आ सामूहिक सम्पादनक विधा बनैत छल। दस्तावेज

लुप्त भऽ रहल होयबाक लेखकक चिन्ता संग्रहालय, निजी पाण्डुलिपि, पुस्तकालय आ विद्यार्थी-संग्रहक सर्वेक्षणक आवश्यकता देखबैत अछि।

एहि इतिहासक सीमास्वरूप पोथी हर पत्रक सुरक्षित प्रति, हस्तलेखक पहिचान, संचिका-संख्या आ वर्तमान संग्रहस्थान नहि दैत अछि। ताहि लेल ई सूची खोज-निर्देशिका अवश्य अछि, पूर्ण अभिलेख-सूची नहि। एहि अन्तरक पहचानक बिना पत्रिकाक नामसभ पाठकीय स्मृतिमे रहि जेतैक, मुदा शोधक लेल वस्तुगत प्रति उपलब्ध नहि होयत।

२०. २००६क ‘वर्तमान’: लेखकक समय-बिन्दुकेँ सही पढ़ब

‘वर्तमान मैथिली पत्र-पत्रिकायें’ शीर्षकक ‘वर्तमान’ २००६क लेखकीय समयसँ सम्बद्ध अछि; ओकरा २०२६क प्रकाशित स्थिति मानब इतिहासगत भूल होयत। एहि खण्डमे ‘आइ-काल्हि/समय-साल’, ‘भंगिमा’, ‘भारती मण्डन/मण्डन निकेत’, ‘रचना’, ‘मिथिलाञ्चल सम्पर्क’, ‘मैथिली अकादमी पत्रिका’, ‘कर्णामृत’, ‘मिथिला महान’, ‘श्रीमिथिला’, ‘भूमिजा/मिथिमालिनी’, ‘आरम्भ’, ‘घर-बाहर’, ‘मैथिली सन्देश’, ‘हिलकोर’, ‘जखन-तखन’, ‘हालचाल’, ‘मिथिला दर्पण’ आ ‘विद्यापति टाइम्स’ सन नाम चर्चित छथि। (मुद्रित पृ. ५६–६२।)

एहि सूचीसँ एकटा रोचक विविधता देखाइत अछि: नाटक-विशेषज्ञ ‘भंगिमा’, अर्थव्यवस्थापर केन्द्रित ‘श्रीमिथिला’, प्रशासनिक-साहित्यिक ‘मैथिली अकादमी पत्रिका’, प्रवासी ‘कर्णामृत’, पुस्तक/साहित्यिक ‘रचना’, समाचार-चिन्तनक ‘आइ-काल्हि/समय-साल’ आ विभिन्न शहरक सामुदायिक पत्र। लेखक सम्पादकीय नियमितता आ विषय-विस्तारक सराहना करैत छथि, मुदा अनियमित अङ्क, व्यक्तिगत प्रचार आ गुटबन्दीक आलोचना सेहो करैत छथि।

पुस्तकक ‘आज एको मैथिली दैनिक नहि’ कथन लेखकक २००५–०६क परिस्थिति सम्बन्धी आकलन अछि। एहि वाक्यसँ २०२६क वर्तमान मीडिया-दृश्यपर कोनो सीधा निष्कर्ष नहि निकलैत अछि। समीक्षामे हिनका सभक काल्पनिक सूची जोड़ल नहि गेल अछि।

२१. साहित्यक विकासमे पत्रिकाक योगदान: पुस्तकक सर्वाधिक समर्थ पक्ष

योगानन्द झा आधुनिक मैथिली कविता, कथा, नाटक, उपन्यास, आलोचना, संस्मरण, शोध, अनुवाद आ बालसाहित्यक विकासक श्रेय पत्रिकाक सार्वजनिक मंचकेँ दैत छथि। एहि प्रतिपाद्यक समर्थनमे पोथी अनेक विशिष्ट उदाहरण दैत अछि—‘मिथिलामोद’क पुस्तक-प्रकाशन; ‘मैथिली साहित्य पत्र’क ग्रन्थ प्रकाशन; ‘बटुक’क बालसाहित्य; ‘अभिव्यञ्जना’क नवकाव्य; ‘मैथिली कविता’क विधागत केन्द्र; ‘कथादिशा’क कथासाहित्य; ‘भंगिमा’क नाट्यालेख; आ ‘श्रीमिथिला’क आर्थिक चिन्ता। (मुद्रित पृ. २४–२५, २८–२९, ३२–३५, ४२–४३, ५७–५९, ६३।)

पत्रिका एकटा निरन्तर संवाद रचैत अछि: रचना प्रकाशित होइत अछि, पाठक प्रतिक्रिया दैत अछि, सम्पादक विवाद उठबैत छथि, आगाँक अंकमे उत्तर आ नव लेखन अबैत अछि। पुस्तक एहि संवादक अनेक ठोस नाम आ घटना देइत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास जँ केवल पुस्तक-सूची पर आधारित रहत तँ सम्पादकीय चयन, साहित्यिक आन्दोलनक समयबद्ध रूप आ पाठक-संघटन छूटि जाएत। एहि कारण पत्रिकाक इतिहास साहित्य-इतिहासक परिशिष्ट नहि, ओकर बुनियादी प्रमाणक्षेत्र अछि।

मुदा ओहि योगदानकेँ नापबाक लेल कालावधि, लेखन-विधा, लेखक-पीढ़ी, साहित्यिक बहस, प्रत्यक्ष पुनर्मुद्रण आ सम्मानक प्रमाण अलग-अलग संकलित होयबाक चाही। योगानन्द झा गुणात्मक प्रभावक इतिहास रचैत छथि; व्यवस्थित सामग्री-विश्लेषण वा अंकवार अनुक्रमणिका प्रस्तुत नहि करैत छथि। ई पुस्तकक घटी नहि, ओकर शोध-विधाक स्पष्ट सीमा अछि।

२२. भाषा, लिपि, मानकीकरण आ हिन्दी–मैथिली सम्बन्ध

ग्रन्थ आरम्भिक पत्रिकामे हिन्दी–मैथिली मिश्रण, पूर्ण मैथिली पत्रक उदय, वर्तनीक उन्नयन, तिरहुता लिपिक संरक्षण आ मैथिलीकेँ स्वतंत्र भाषा मानबाक संघर्षक इतिहास जोड़ैत अछि। लेखकक मतमे पत्रिका भाषा-आन्दोलनक प्रमुख साधन बनल। काशीक मिश्रित भाषिक

पत्रिकासँ दरभंगाक पूर्ण मैथिली पत्र आ सार्वजनिक दैनिक धरि यात्रा, भाषा-अस्मिताक मुद्रित निर्माण सेहो अछि। (मुद्रित पृ. २४–२७, ६३–६४।)

एहि ठाम दोसर पक्ष सेहो आवश्यक अछि। भाषा-मानकीकरण सामाजिक प्रक्रिया अछि—सम्पादकीय प्रचलन, पाठकक बोली, विद्यालयीय शिक्षण, मुद्रण-तकनीक आ संस्थागत निर्णयक संगम। पुस्तक एहि प्रक्रियाक सार प्रस्तुत करैत अछि, मुदा विभिन्न वर्तनी-रूपक वर्षानुसार तुलनात्मक पाठ वा मुद्रण-नमूना नहि दैत अछि। अतः ‘फलाँ पत्रिकासँ मानकीकरण पूर्ण भेल’ सन एकरेखीय निष्कर्ष टारल चाही।

पुस्तकक किछु अंशमे अंगिका आ बज्जिका सम्बन्धी भाषा-आन्दोलनक पक्षधर मत उद्धृत अछि। एहि मुद्दाक साहित्यिक इतिहास समझबाक समय पुस्तकक सम्पादकीय-राजनीतिक दृष्टिकोणकेँ लेखकक स्रोतगत अभिमतक रूपमे चिन्हब आवश्यक अछि; एकरा भाषावैज्ञानिक वर्गीकरणक अन्तिम निर्णय मानब उचित नहि। अलग भाषा-समुदायक अपन साहित्यिक, सामाजिक आ शैक्षिक इतिहासक स्वतन्त्र अध्ययन आवश्यक अछि।

२३. मैथिली पत्रकारिता आ संवैधानिक मान्यता

लेखकक भूमिकामे सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क संघर्ष, जनसभा, मैथिली दैनिकक प्रयत्न, बिहारक राजनीतिक नेतृत्वकेँ ज्ञापन आ संसदमे भाषिक माँग उठबाक प्रसंग अछि। ग्रन्थक निष्कर्षमे संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेशकेँ पत्रकारिता-आन्दोलनक उल्लेखनीय उपलब्धिक संग जोड़ल गेल अछि। (मुद्रित पृ. ९–१०, ६३–६४।)

एहि ऐतिहासिक दावाक बाहरी विधिक मिलान सम्भव अछि। भारत सरकारक गृह मन्त्रालयक २२ दिसम्बर २००४क आधिकारिक विज्ञप्ति स्पष्ट करैत अछि जे बोडो, डोगरी, मैथिली आ संथाली संविधान (बानबेम संशोधन) अधिनियम, २००३ द्वारा आठम अनुसूचीमे जोड़ल गेल, जकर राजपत्र-प्रकाशन ८ जनवरी २००४ केँ भेल। अतः ‘संवैधानिक मान्यता’ स्वयं सत्यापित घटना अछि। मुदा ‘पत्रिकासभक कारणेँ मात्र मान्यता भेटल’ सन एकल-कारणक प्रस्तावक पुष्टि लेल संसदीय बहस, संगठनक आवेदन, जनान्दोलन आ अन्य

राजनीतिक प्रक्रियाक तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक अछि। पत्रकारिता एक प्रभावकारी सहभागी साधन छल, एकमात्र कारण सिद्ध नहि।

२४. आलोचनात्मक मापदण्ड: नियमितता, गुणवत्ता आ सामाजिक प्रभाव अलग-अलग

पोथीमे ‘अल्पजीवी’, ‘अनियतकालीन’, ‘साहित्यकारिता’, ‘पीत पत्रकारिता’, ‘गुटबन्दी’ आ ‘आत्मतुष्टि’ सन निर्णय बारम्बार भेटैत अछि। एहि पदसभसँ लेखकक ऐतिहासिक चिंता स्पष्ट होइत अछि: नियमित प्रकाशन, आर्थिक ईमानदारी, तथ्यपरक समाचार आ लोक-समाजक प्रति उत्तरदायित्व। वास्तवमे एकटा पत्रिका जँ वार्षिक ग्राहकसँ धन लऽ कऽ घोषित अङ्क नहि दैत अछि तँ ओकरा प्रति आलोचनात्मक प्रश्न उचित अछि। (मुद्रित पृ. ४३–४४, ६२–६४।)

मुदा ‘पीत पत्रकारिता’ जकाँ गम्भीर आरोप सिद्ध करबाक लेल प्रकाशित सामग्रीक उद्धरण, प्रतिवाद, समाचारक विश्वसनीयता, सुधार प्रकाशित करबाक पद्धति, सम्पादकीय स्वार्थ आ प्रत्यक्ष नुकसानक प्रमाण चाही। केवल कठोर भाषा, राजनीतिक वाम वा दक्षिण पक्षधरता, पुरान साहित्यक अस्वीकार, अथवा नूतन छन्दक प्रयोगसँ स्वतः ‘पीत’ सिद्ध नहि होइत। ग्रन्थमे एहन मूल्यांकन कएक बेर प्रमाणक व्यापक प्रदर्शन बिना भेटैत अछि। ऐतिहासिक समीक्षामे लेखकक मूल्यांकन कैं तथ्यक संग मिलाकऽ नहि राखल जाय।

समान रूपसँ अल्पजीविता स्वयं असफलताक पर्याप्त मापदण्ड नहि। एकटा एक-अंकक विशेषांक यदि नव साहित्यिक आन्दोलनक प्रामाणिक आरम्भ-बिन्दु अछि तँ प्रभावक दृष्टिसँ ओकर महत्व टिकाउ किन्तु निर्जीव मासिकसँ बेसी होयत। आर्थिक स्थिरता, अङ्क-संख्या, सम्पादकीय गुणवत्ता, पाठकीय विश्वास, विषयक व्यापकता, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ बौद्धिक प्रभावक स्वतंत्र कसौटी बनब पुस्तकक उपयोगिताकैं अधिक बढ़बैत अछि।

२५. वर्ग, जाति, गाँव, स्त्री आ साधारण पाठकक अनुपस्थित इतिहास

लेखक स्वीकार करैत छथि जे पत्रकारिता गाँवक गरीब, अशिक्षित, पलायनग्रस्त आ दैनन्दिन संघर्षरत जनतक समुचित रूपेण नहि पहुँचि सकल। ई आत्मालोचना पुस्तकक एकटा गंभीर

उपलब्धि अछि। मुदा एहि दावाक भीतर जातीय स्तर, आर्थिक वर्ग, स्त्री-पाठक, दलित समुदाय, कृषक-मजदूर, बाजार आ बाल-पाठकक पृथक विवरण बहुत कम अछि। कतहु-कतहु महिला लेखिकाक नाम, ग्राम्य पत्रक उल्लेख वा सामाजिक न्यायसँ सम्बन्धित रचना भेटैत अछि; मुदा व्यवस्थागत सर्वेक्षण नहि। (मुद्रित पृ. १८–१९, २४–२५, ३२–३३, ५५–५६, ६४।)

मैथिली पत्रकारिताक व्यापक सामाजिक इतिहास लिखबाक लेल पुछल जाय: प्रति अङ्क छपाइ-व्यय के देइत छल? ग्राहकक पेशा, लिंग, भाषा-अभ्यास आ भौगोलिक वितरण की छल? पत्रिका पुस्तक-दुकानमे बिकैत छल वा सदस्यता द्वारा जायत छल? के महिला सम्पादन निर्णयमे छलि, के केवल रचना पठबैत छलि? कोन समाजक लोक अपन जीवन-संकट प्रकाशित कराबय सकैत छलाह? एहि सभ प्रश्नक उत्तर बिना ‘लोक-पत्रकारिता’क परिमाण नापब कठिन अछि।

एहि आलोचना पुस्तककेँ वर्तमान वैचारिक रुचिक आधार पर दोषारोपण नहि, बल्कि ग्रन्थक अपन सार्वजनिक-जीवन सम्बन्धी कसौटीकेँ आगाँ बढ़ायब अछि। लेखक स्वयं ‘वर्गीय उपादान’ आ सामान्य जनसँ दूरीक बात कहैत छथि; ताहि निदानक लेल सामाजिक प्रमाणक नूतन पद्धति अपेक्षित अछि।

२६. आर्थिक इतिहास: लेखकक निदान आ ओकर प्रमाणगत सीमा

लेखक अन्तिम भागमे अपर्याप्त व्यावसायिक योजना, अनियमित वितरण, व्यक्तिगत सम्पादकीय आग्रह, ग्राहकीय अस्थिरता आ साधनाभावक कारण पत्रिकाक अल्पजीविता बतबैत छथि। ‘स्वदेश’क १९५०क दशकक घाटाक संस्मरण, ‘मिथिला मिहिर दैनिक’क संस्थागत संरचना आ अनेक पत्रिकाक अङ्क-संख्या एहि तर्कक अलग-अलग उदाहरण प्रदान करैत अछि। (मुद्रित पृ. ९, २०–२३, ६४।)

एहि शोधमे प्रेसक खर्च, कागजक दाम, वितरकक कमीशन, डाक-व्यय, विज्ञापनदाताक संख्या, प्रति-अङ्क बिक्री, ग्राहकक बकाया आ सम्पादकक मानदेयक व्यवस्थित तालिका नहि अछि। एहि अभावमे आर्थिक निष्कर्षक दिशा सार्थक होइतो ओकर मात्रात्मक पुष्टिक स्तर

सीमित अछि। जँ लेखापुस्तिका, ग्राहक-पञ्जी, प्रेस बिल आ सम्पादकीय पत्राचार भेटय तँ मैथिली पत्रकारिताक संस्थागत इतिहास नव प्रमाण पाबि सकैत अछि।

एकटा अन्य प्रश्न—पत्रिका नियमित बनेलासँ की ओ अवश्य लोकहितकारी सेहो होयत? नहि। नियमितता विश्वसनीयताक एकटा आवश्यक शर्त भऽ सकैत अछि, मुदा समाचारक सत्यता, विचारक विविधता आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व अलग मूल्य छथि। पुस्तकक ‘टिकाउ दैनिक’क आकांक्षाकेँ एहि विस्तृत कसौटीमे पुनः व्यवस्थित करबाक आवश्यकता अछि।

२७. स्रोत-समालोचना: कोन दावाक प्रमाण कतेक सुदृढ़ अछि

प्रथम स्तरपर प्रकाशन-सूचना, पुस्तकक समर्पण, लेखकक स्वतः लिखल भूमिका, पृष्ठ-संख्या आ शीर्षक मूल प्रतिमासँ प्रत्यक्ष जाँचल जा सकैत अछि। तृतीय स्तरपर साहित्यिक प्रभाव, समाजपर असर, भाषिक आन्दोलनक योगदान, सम्पादकीय प्रवृत्ति आ आर्थिक असफलताक कारणसँ सम्बन्धित लेखकक व्याख्या अछि। एहि तीन स्तरकेँ एक समान ‘सत्यापित तथ्य’ मानब शोधगत त्रुटि होयत।

पुस्तकक एकटा दुर्लभ बल—किछु वास्तविक अंकक पृष्ठ-विन्यास, कविता, स्तम्भ आ सम्पादकीय सूत्रक उल्लेख—प्रथम-हाथ पठनक सम्भावना देखबैत अछि। दोसर दिस, संकलित सूची सभक मूल अंकक प्रकाशन-तिथि, संपादकीय मण्डल, संख्या आ संग्रहस्थान नहि देल गेल अछि। ताहि कारण ग्रन्थ व्याख्यात्मक शताब्दी-दर्शन आ अनुसंधानक सूचकपञ्जी अछि, परिपूर्ण समालोचनात्मक पत्रिका-सूची नहि।

१९०५, १९०६, १९०८, १९०९, १९१२ सन अलग वर्षक उल्लेख केवल मुद्रण-त्रुटि मानि रद्द नहि करबाक चाही। प्रथम अङ्क, निबन्धन, नियमित आवृत्तिक आरम्भ, नव सम्पादकक स्थापना, पुनर्प्रकाशन अथवा स्थानपरिवर्तन अलग-अलग समय-बिन्दु भऽ सकैत अछि। जखन धरि सन्दर्भक प्रथम अङ्क देखल नहि जाय, परवर्ती लेखकक मतक तुलनात्मक प्रस्तुति बेसी ईमानदार तरीका अछि।

२८. जाँचल जा सकल तिथि आ खुलल रहि गेल प्रश्न

‘मैथिल हित साधन’—मूल ग्रन्थ १९०५ कहैत अछि; २०२१क जयपुर-विषयक शोध-सार आ अन्य प्रकाशित इतिहासो एहि वर्षक समर्थन करैत अछि। प्रथम अंकक मूल प्रति एहि अध्ययनमे उपलब्ध नहि। ‘मिथिलामोद’—मूल १९०५; बाहरी स्रोतमे १९०५ आ १९०६ दुनू रूप भेटैत अछि। ‘मिथिला मिहिर’—मूल १९०९; बाहरी सूचीमे १९०८, १९०९ आ अन्य ठाम १९१२ भेटैत अछि। ‘स्वदेश’—मूल पुस्तक दैनिकक आरम्भ ९ अक्टूबर १९५५ दैत अछि, मुदा एकटा परवर्ती ऑनलाइन सूची ‘१९६५’ उल्लेख करैत अछि। ‘मिथिला मिहिर दैनिक’—मूलक अनुसार २० फरवरी १९८४ सँ जून १९८६; डॉ. धनाकर ठाकुरक सूचीमे सेहो १९८४–१९८६ क चरण अछि। एहि मतभेदसभक अन्तिम निर्णय एहि अध्ययनमे घोषित नहि कएल गेल अछि।

अष्टम अनुसूची—भारतीय सरकारी स्रोतद्वारा कानूनक तथ्य स्वतन्त्र पुष्ट अछि: संविधानक बानबेम संशोधन अधिनियम, २००३, राजपत्र ८ जनवरी २००४। ‘मैथिली पत्रकारिताक इतिहास’—पं. चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क १९८१क पुस्तकक प्रकाशक मैथिली अकादमी अछि; ई विवरण बिहार सरकारक पुस्तक-सूची आ अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तकालयीय अभिलेखमे सेहो भेटैत अछि। ताहि कारण योगानन्द झाक ई पूर्ववर्ती इतिहास-ग्रन्थक उल्लेख पुस्तक-सूची स्तरपर पुष्ट होइत अछि। (मूल, मुद्रित पृ. १९।)

२९. व्यापक मूल्यांकन: ग्रन्थ कोन रूपमे विशिष्ट अछि

ई पुस्तक मैथिली पत्रकारिताकेँ शताब्दी-पर्यन्त एकट्ठा देखबाक सफल प्रयत्न अछि। पहिल विशिष्टता प्रवासी केन्द्र—जयपुर, काशी, अजमेर, आगरा, कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, प्रयाग आ अन्य नगर—केँ मूल मिथिलाक छपाइ-इतिहासमे सम्मिलित करब अछि। दोसर विशिष्टता प्रकाशनक स्वरूप—दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, शोधपत्रिका, बालपत्रिका, लघुपत्र, संस्था-स्मारिका आ हस्तलिखित पत्र—सभकेँ एकहि पत्रकारिता-इतिहासमे राखब अछि। तेसर विशिष्टता साहित्यक विकास आ सामाजिक जनसंचारक बीच अन्तर करैत लेखकीय निष्कर्ष पर पहुँचनाइ अछि।

चौथ विशिष्टता लेखकक जीवित संस्मरण अछि। सुमनजीक सान्निध्य, सम्पादकीय अङ्क देखबाक उल्लेख आ भाषा-आन्दोलनमे सहभागिता पुस्तकमे व्यक्तिसम्बद्ध इतिहासक रङ्ग भरैत अछि। पाँचम विशिष्टता पुस्तकक खुलल आत्मालोचना अछि: लेखक स्वयं सम्पूर्ण सूची नहिएँ होयबाक सम्भावना स्वीकारैत छथि आ सामाजिक धरातलपर पत्रकारिताक कमी देखबैत छथि। एहि स्वीकृतिसँ पुस्तकक विश्वसनीयता घटैत नहि, ओकर प्रयोजन स्पष्ट होइत अछि।

तथापि ग्रन्थक एक प्रमुख शैलीगत समस्या अछि—मैथिली पत्रकारिताक इतिहास लिखैत मुख्य निबन्ध हिन्दीमे अछि। एहि चयनसँ तात्कालिक व्यापक पाठक उपलब्ध करबाक सम्भावना रहल हो, मुदा लेखक एहिक कारण नहि बतबैत छथि। शुद्ध मैथिली समीक्षा करबाक समय एहि तथ्य कैं नजि लुकाओल जा सकैत अछि। दोसर सीमा स्रोत-टिप्पणी आ अंकवार प्रमाणक असमानता; तेसर सीमा कठोर व्यक्तिगत निर्णयमे उद्धरणक अभाव; चारिम सीमा सामाजिक-आर्थिक आँकड़ाक अभाव; पाँचम सीमा नेपाल, स्त्री-सम्पादन आ हस्तलिखित पत्रक विषयपर संक्षेप अछि।

३०. अन्तिम निष्कर्ष: साहित्यिक पत्रसँ लोकउत्तरदायी सार्वजनिक माध्यम धरि

योगानन्द झा मैथिली पत्रकारिताक शताब्दीकैं सफलताक एकरेखीय उत्सव नहि बनबैत छथि। ओ एकर उपलब्धिक प्रशंसा करैत-करैत प्रश्न उठबैत छथि जे विशाल मातृभाषी समाजक लेल सार्वजनिक सूचना आ लोकमतक टिकाउ व्यवस्था किएक नहि बनि सकल। एहि कारण पोथी इतिहासक संग विचारोत्तेजक सम्पादकीय हस्तक्षेप सेहो अछि। ई दृष्टि केवल प्रकाशन-वर्ष याद राखबाक अपेक्षा बेसी महत्व रखैत अछि।

सम्पूर्ण पुस्तक पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली पत्रकारिता किछु विफल दैनिकक इतिहास नहि, एक विस्तृत छपाइ-संस्कृतिछल: प्रवासी समुदाय, भाषिक आन्दोलन, साहित्यिक पीढ़ी, विद्यालयीय पाठक, नाट्यमंच, महिला-सम्पादन, अनुसन्धान, राजनीतिक विमर्श, नेपाल–भारतक सांस्कृतिक सम्पर्क आ हस्तलिखित पत्रक संयुक्त अनुभव। संकीर्ण व्यावसायिक

मापदण्डसँ देखला पर किछु प्रयास अल्पजीवी बुझाएत; सांस्कृतिक स्मृति आ साहित्यिक प्रभावक कसौटीसँ ओही अङ्क अमूल्य बनि सकैत अछि।

एहि पोथीक सर्वोत्तम उपयोग स्रोतकेँ अन्तिम मानबाक बजाय ओकर विस्तृत नाम-सूची, काल-विभाजन, सम्पादकीय संकेत आ वैचारिक प्रश्नक आधार पर नूतन अभिलेख-अनुसन्धान प्रारम्भ करब अछि। मूल अङ्क, डाक-रजिस्टर, विज्ञापन, पाठक-पत्र, सम्पादकीय उत्तर, प्रेस-बिल, स्त्री-पाठिका आ ग्रामीण वितरणक दस्तावेज जुटला पर शताब्दी इतिहास आ गाढ़ होयत। पुस्तकक मूल योगदान ई अछि जे लेखक पत्रिकाकेँ साहित्यिक रचना छपबाक ठाम मात्र नहि, मैथिल समाजक आत्मबोध, असहमति आ सार्वजनिक भविष्य रचबाक मंचक रूपमे देखैत छथि। ताहि अर्थमे ‘मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष’ मैथिली इतिहासलेखनक उपयोगी, समृद्ध आ संग-संग समालोचना आमन्त्रित करऽवला दस्तावेज अछि।

३१. मूल पाठक विषयानुसार पृष्ठ-पथ

प्रकाशकीय सूचना, समर्पण आ शुभाशंसा:। आत्मीय मैथिली भूमिका ‘भव्य ओ दिव्य प्रभा’, शताब्दी-चिन्ता, सुमनजी, ‘स्वदेश’ आ कृतज्ञता: मुद्रित पृ. १–१६,। ऐतिहासिक आरम्भ, ‘मैथिल हित साधन’ आ पत्रकारिताक कसौटी: मुद्रित पृ. १७–१९,। ‘दैनिक पत्र’ (‘स्वदेश’, ‘मिथिला मिहिर दैनिक’): मुद्रित पृ. १९–२३,। आरम्भिक मासिक, प्रवासी पत्र आ साहित्यिक संस्था: मुद्रित पृ. २३–३२,। १९५०–१९८०क प्रयोग, बालपत्रिका, शोध, राजनीति आ लघुपत्र: मुद्रित पृ. ३२–४४,। १९८०–२००५क पत्र-पत्रिका: मुद्रित पृ. ४४–५४,। नेपालक पत्रिका: मुद्रित पृ. ५४–५५,। हस्तलिखित पत्र: मुद्रित पृ. ५५–५६,। ‘वर्तमान’ अर्थात् २००५–०६क पत्र: मुद्रित पृ. ५६–६२,। ऐतिहासिक निष्कर्ष: मुद्रित पृ. ६२–६४,।

अध्याय 06 / २००७

गहबर गीत

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

आलोचनाक आधार तीन स्तरपर व्यवस्थित अछि: (क) पोथीक आरम्भिक विवरण, समर्पण आ भूमिका; (ख) दृश्य गीतांश, शीर्षक, आवृत्ति, चित्र-विधान आ कथन-स्वर; (ग) मैथिली लोकगीतक व्यापक वर्गीकरण अथवा लोक–जाति–लिङ्गक विमर्शसँ सम्बन्धित स्पष्ट रूपेँ चिन्हित बाह्य अध्ययन। मूल पोथीमे जे कहीनाइ अछि आ समीक्षकक जे व्याख्या अछि, दुनूक भेद बनौने रखल गेल अछि।

२. समर्पणक अर्थ: बच्चन भगत आ जीवित परम्पराक योगदान

समर्पण-पृष्ठ डॉ. योगानन्द झाक क्षेत्राधारित लोकसाहित्य-दृष्टिक सर्वाधिक ठोस आरम्भिक प्रमाण अछि। पोथी स्व. बच्चन भगत (१९२८–१९९१)क स्मृतिमे समर्पित अछि। समर्पणक अनुसार ओ बहादुरपुर, लहेरियासराय, दरभंगाक निवासी, भगती परम्पराक साधक आ गहबर-गीतक विशिष्ट जानकार छलाह। ओ अनेक गोहारी अथवा अनुष्ठानिक गायनक माध्यमसँ जनसमुदायक बीच सक्रिय रहलाह। सङ्कलक अपन पी-एच.डी. अनुसन्धान हेतु गीत-सङ्कलनमे हुनक योगदानक उल्लेख करैत छथि। (समर्पण-पृष्ठ;१)

ई समर्पण केवल व्यक्तिगत श्रद्धाञ्जलि नहि, मौखिक परम्परामे ज्ञान-निर्माणक साझेदारीक साक्ष्य सेहो अछि। पुस्तक मुद्रित रूपमे सङ्कलकक नामपर प्रसारित होइत अछि, मुदा गीतक स्मृति, प्रस्तुति आ उपलब्धता समुदाय-वहनकर्ता सँ सम्भव बनैत अछि। बच्चन भगतक नाम, जीवनकाल आ उपलब्ध योगदानक स्पष्ट उल्लेख एही कारणेँ संग्रहक महत्वपूर्ण गुण थिक। संगहि, एतेक सूचनासँ हुनकर प्रत्येक गीतक मूल रचयिता होएबाक निष्कर्ष निकालब अनुचित होएत; स्रोतमे ओ ज्ञान-वहनकर्ता आ सङ्कलन-सहायकक रूपमे प्रकट होइत छथि।

समर्पणक भाषा गहबर-गीतकेँ ‘अनपढ़’ अथवा ‘अर्द्धशिक्षित’ समाजक जीवन आ सांस्कृतिक अनुभवसँ जोड़ैत अछि। आधुनिक पाठक लेल एकरा सावधानीसँ पढ़ब आवश्यक अछि: औपचारिक शिक्षा सँ बाहर रहनाइ सांस्कृतिक विशेषज्ञताक अभाव नहि थिक। बच्चन भगतक भूमिका एहि भेदकेँ मूर्त रूप दैत अछि।

३. गहबरक अवधारणा: गायन, अनुष्ठान आ आवाहन

भूमिकामे गहबर गीतकेँ मैथिली लोकगीतक एहन रूप मानल गेल अछि जे गोहारी–भगताइ सम्बन्धी लोकमान्यतासँ जुड़ल अछि। देवता अथवा पूर्वजक आवाहन, भगतक देहपर देवताक ‘भाव’ आबि जाएबाक विश्वास, देहगत हिलन-डोलन, मुखसँ उच्चरित पुकार आ कर्मकाण्डक क्रमक वर्णन भेटैत अछि। सङ्कलक ई प्रक्रिया आ गीतक सम्बन्धकेँ एकटा समेकित परम्परा बुझैत छथि। (मुद्रित पृ. २)

एहि प्रसङ्गमे ‘गहबर’ शब्दकेँ केवल सघन वन अथवा काव्यात्मक रहस्यक पर्याय बना देब पोथीक आन्तरिक साक्ष्यसँ मेल नहि खाइत। पुस्तकक अर्थक्षेत्रमे ई लोकदेवता, भगत, आह्वान-स्थल, पूजाक वस्तु, सामूहिक स्मृति आ देव-सम्बन्धी प्रचलनक संगम-बिन्दु अछि। गहबरक स्थानिक संरचना, वास्तु अथवा भौगोलिक वितरणक निर्णायक इतिहास उपलब्ध अंशमे नहि देल गेल अछि, अत: ओकर अतिरिक्त रूपरेखा बनाओल नहि गेल अछि।

भूमिकाक वर्णनमे धार्मिक प्रदर्शन देह आ आवाजक संयुक्त क्रिया अछि। आवाहन करबाक समय हाथ-पाएरक गति, धरती पर पड़बाक क्रिया, ध्वनि-उच्चारण आ पूजासामग्रीक उपस्थिति गीतकेँ मात्र लिखित पदसँ भिन्न बनबैत अछि। मुद्रित रूपमे पंक्ति अछि, मुदा वास्तविक लोक-प्रदर्शनमे क्रम, लय, स्वर, विराम, हाँक आ प्रत्युत्तर सेहो रहैत होएत—ई पाठमूलक सम्भावना अछि, प्रमाणित ध्वनि-विश्लेषण नहि। गीतक सङ्गीतात्मक अनुलेखन, ताल-मान आ धुन पोथीक एहि दृश्य अंशमे उपलब्ध नहि अछि।

४. भूमिका आ सम्पादकीय दृष्टि: उपेक्षित स्वरक पुनःस्थान

सङ्कलक लिखैत छथि जे लोकसाहित्यक प्रचलित संग्रहमे किछु ‘अभिजात्य संस्कारक’ गीत विशेष प्रमुखता पबैत रहल अछि, जखन कि बहुते लोकगीत ओहि सीमासँ बाहर रहि जाइत अछि। अपन संकलनकेँ ओ एहन उपेक्षित गहबर-गीत दिस ध्यान देबाक प्रयासक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। (मुद्रित पृ. १–२) ई स्थापना पुस्तकक सांस्कृतिक तर्क बनैत अछि: लोकसाहित्यक प्रतिनिधित्व सामाजिक प्रतिष्ठाक बराबर नहि होएत, आ गीतक महत्त्वक निर्णय केवल संस्थागत स्वीकृतिसँ नहि कएल जा सकैत अछि।

भूमिकामे ‘भाओ’क भेला, रोग-निवारण वा सङ्कटकालीन देव-आवाहन, धूप, गुग्गुल, धाक, सिरनी, कपड़ा आ पूजाक आन वस्तुक उल्लेख अछि। एही संकलनक भीतर लोकविश्वास आ दैनन्दिन जीवन एक-दोसरासँ पृथक नहि: बीमार पड़ब, संकट आबब, फसल-संसार, सामूहिक भेंट आ देवताक स्मृति सभ गीतक अर्थ-निर्माणमे प्रवेश करैत अछि। धार्मिक क्रियाक वास्तविक चिकित्सकीय प्रभावपर एहि पोथीसँ कोनो वैज्ञानिक निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत अछि।

भूमिकामे मान्यताप्राप्त गीत-परम्पराक अपेक्षा गहबर गीतक उपेक्षित स्वरकेँ विशेष स्थान देबाक संकेत अछि। संकलनक घोषित केन्द्र सामाजिक रूपसँ उपेक्षित समुदायक लोकसंगीत थिक; मुदा एहि प्राथमिकताक आधारपर प्रत्येक गीतक सामुदायिक स्वामित्व अथवा जाति-विशिष्ट उत्पत्ति स्वतः प्रमाणित नहि होइत अछि।

५. काली, सलहेस आ देवी-आवाहनक संयुक्त संसार

मुद्रित पृ. ४क आरम्भमे कालीकेँ सम्बोधित गीतमे कठोर शारीरिक अनुभव, हथियारक बिम्ब, दान आ शक्तिशाली देवीक शरणागतिक भाषा भेटैत अछि। एहि प्रसङ्गमे ‘काली’क संगें ‘सलहेस’क नामो अबैत अछि। कालीक लौकिक शक्ति आ राजा सलहेसक लोकनायकत्वकेँ एकहि गीत-परिसरमे स्मरण कएल जाएब, धार्मिक कथाविश्वक अन्तर्सम्बन्धक संकेत अछि।

तथापि ई पाठ-सम्पर्क; एहि आधारपर दू सम्प्रदायक उत्पत्ति अथवा ऐतिहासिक विलयनक तिथि बताओल नहि जा सकैत अछि।

“मैयाँ के गोद से उतरल राजा सलहेस” — मुद्रित पृ. ४

एहि पंक्तिमे ‘मैयाँ’क ममतामयी देह आ ‘राजा’क वीरतामयी छवि एक-दोसराक विरोधी नहि रहैत। सलहेसक प्रतिष्ठा मातृ-सम्बन्धक माध्यमसँ उजागर होइत अछि। अनुष्ठानिक काव्यमे मातृत्व, शौर्य आ देवसंरक्षणक ई संगति महत्त्वपूर्ण अछि। पृ. ४पर ‘तनी गुनमा हमरो दिअउ सिखाय’ जकाँ कथन ज्ञानक याचना रूपेँ अबैत अछि; ई पुकार भक्तक विनीत स्वर आ देवीक सामर्थ्यक नाटकीय अन्तर बनबैत अछि।

मुद्रित पृ. ६मे देवी-स्मरणक संगें रङ्ग, केश, दाँत, पहिरन, शृङ्गार आ पूजाक वस्तुक चित्र आबैत अछि। ‘तिसिया खेतमे तिसिया’ सँ आरम्भ पदमे खेतक परिचित वस्तु देवी-आह्वानक लयमे प्रवेश करैत अछि। अनुष्ठान न केवल अलौकिक दृश्य रचैत अछि, बल्कि खेती आ जीवनोपयोगी वस्तुक शब्दावली सेहो सहेजैत अछि। पदमे नित्य-जगत आ देवी-जगत एकहि ध्वनिसूत्रमे बन्हल अछि। (मुद्रित पृ. ६)

“तिसिया खेतमे तिसिया मसुरिया खेतमे राइ” — मुद्रित पृ. ६

मुद्रित पृ. ८मे ‘कओने दिन आहे काली तोहरो जनम भेल’ जकाँ प्रश्नवाचक आरम्भ कालीक सम्बन्धमे जन्म-स्थान, जन्म-दिन, फूल, वन आ सुगन्धक वस्तुक अन्वेषण करैत अछि। देवीक अलौकिक सत्ता लोकगाथात्मक पारिवारिक जिज्ञासाक वस्तु बनि जाइत अछि। ई गीत भगवतीकेँ लोकजीवनक प्रश्नोत्तरक अन्दर अनैत अछि; ‘देवी जन्मलि कखन?’क संरचना मे जनमक दृश्यक माङ्ग होइत अछि, दार्शनिक ब्रह्मतत्त्वक प्रतिपादन नहि।

“कओने दिन आहे काली तोहरो जनम भेल” — मुद्रित पृ. ८

५.१. देवीगीत, कालीक गीत, महामाया आ फुलमति

मुद्रित पृ. ५क देवीगीतमे बाँस, डगवा आ फूलक उल्लेखक संग देवीक पूजाक पद भेटैत अछि। ‘ओही फूल पुजबे काली हमार देव’ जकाँ दृश्य शब्दक्रम पूजाक अर्पण-विधानक बिम्ब रचैत अछि। ओही पृष्ठक नीचाँ ‘कालीक…’ सँ आरम्भ एक शीर्षकक अंश देखाइत अछि; ओकर सम्पूर्ण नाम आ पदक पंक्तिसभ-सीमाक कारण नहि पढ़ल जा सकैत। तैँ ई अनुच्छेद शीर्षक-सूची पूरा करबाक अनुमान नहि, उपलब्ध फूल–पूजा–कालीक छिटपुट प्रमाणक विवेचन थिक। (मुद्रित पृ. ५क दृश्य अंश;४)

मुद्रित पृ. ९ पर ‘महामाया’ तथा ‘फुलमति’क उल्लेख शीर्षक-जकाँ दृश्य रूपमे अछि। ‘उत्तर दिसासँ अयली महामाया’ आ ‘बीचिया से अयली फुलमति’ जकाँ पंक्तिक आरम्भ दिशासूचक आगमनक कल्पना रचैत अछि। उत्तर आ बीचक दिशासंकेतसँ देवताक प्रवेशकेँ क्रममे अनुभव कराओल जाइत अछि। ई दृश्य तत्त्व आवाहनक नाटकीयता सँ मेल खाइत अछि, मुदा शेष पंक्ति नहि भेटबाक कारण यात्राक सम्पूर्ण क्रम वा देवताक पारस्परिक सम्बन्धक कथा एतए नहि गढ़ल गेल अछि। (मुद्रित पृ. ९क दृश्य अंश;६)

देवीसम्बन्धी गीतसभमे फूल, दिशा, पुकार आ देवीनामक समीपता ध्यान खींचैत अछि। एहि बिम्बक समवेत प्रयोग आवाहनक अनुष्ठानिक क्रमकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि; तथापि देवीनामक समीपतासँ सभ पदक एकही रचनाक अंश होएबाक निर्णय नहि निकालल जा सकैत अछि।

६. लुकेशरिक गीत: यात्रा, जल आ देव-पहुँचक पद

मुद्रित पृ. १०पर ‘लुकेशरिक गीत’ शीर्षक स्पष्ट अछि। एहि पदमे बहराइत यात्रा, काशीधाम, गङ्गा, सोनमा आ नाना भौगोलिक बिम्बक संगेँ ‘लुकेशरि’क पुकार सुनाइत अछि। ‘कुँअवा के पानी’ आ ‘सेला मे बहय निर्मल पानी’ जकाँ पंक्ति जलकेँ स्थानीय पवित्रता आ देवताक यात्रा-संसारसँ जोड़ैत अछि। एही गीतक एक विशेषता ई अछि जे दैवी व्यक्तित्व कथात्मक

गति सँ उभरैत अछि—गीत कहियो बुलबैत अछि, कहियो चलबैत अछि, कहियो नदीक किनार पहुँचबैत अछि।

“कुँअवा के पानी बाबा सड़ल गन्हाइ छै” — मुद्रित पृ. १०

ई पंक्ति स्मृति-आधारित यथार्थवादी निरीक्षणक संभावना उठबैत अछि: कुआँक पानि निर्मल वा दूषित भऽ सकैत अछि। दोसर पंक्तिमे निर्मल पानि प्रतिलोम चित्र बनबैत अछि। तैँ गीतमे जल मात्र धार्मिक प्रतीक नहि, अनुभवक गुणात्मक भेदक वाहक अछि। तखन ई मानब जे पूरा गीत जल-प्रदूषण पर सामाजिक आन्दोलन थिक, उपलब्ध पाठसँ आगाँ बढ़ल दावा होएत।

‘सेला, सेला मत भूक देवि लुकेशरि’ जकाँ निर्देशात्मक स्वर सँ आह्वानक संवाद-रूप प्रकट होइत अछि। देवताक प्रति केवल प्रशंसा नहि, विनती, नियन्त्रण अथवा आदेश-जकाँ सम्बोधन सेहो सम्भव अछि। ई लोकभक्ति के एकरूपी अधीनता बनि रहबाक बाध्यता सँ बाहर अनैत अछि। (मुद्रित पृ. १०)

७. बामतिक गीत: वन, विरह आ पुकारक संयुक्त बिम्ब

‘बामतिक गीत’ शीर्षकक अन्तर्गत मुद्रित पृ. १०पर ‘बामति सुरति देखि भुलले बरहमन छोड़ा’ सँ आरम्भ होइत पद स्पष्ट भेटैत अछि। एक वन, दोसर वन, बड़का वन आ आँचरक दृश्य गीतमे क्रमशः खुलैत अछि। ‘छोड़ू छोड़ू आहो बरहमन हमरो अँचरवा’ जकाँ सम्बोधन मानवीय सम्बन्धक आकुलता आ मुक्तिक आग्रह एकहि स्थानपर राखैत अछि। (मुद्रित पृ. १०)

“छोड़ू छोड़ू आहो बरहमन हमरो अँचरवा” — मुद्रित पृ. १०

एहि पदक अर्थमे ‘बरहमन’ शब्द सामाजिक पहचान, देवक वेश अथवा कथापात्र—ककरा बुझब—से सुनिश्चित करबाक लेल गीतक आगेक पूर्ण पाठ आवश्यक अछि। पृ. ११क दहिना भाग कटि गेल अछि; तैँ एतए ‘ब्राह्मण-विरोध’ वा ‘ब्राह्मण-समर्थन’क निश्चित निष्कर्ष नहि बनाओल गेल अछि। मुदा आँचर पकड़ेबाक स्थिति आ छोड़बाक याचना गीतमे सम्बन्धक

असमान शक्ति-विन्यासक प्रश्न अवश्य खोलैत अछि। एहन पाठ-स्थलपर लोकगीतक लिङ्गगत अर्थ विशेष सावधानीसँ देखबाक चाही।

८. अघोरिक गीत: देह, द्रव्य आ आत्मीय देवनाम

मुद्रित पृ. १२मे ‘अघोरिक गीत’ शीर्षक अन्तर्गत ‘कथि बिनु आहे नाताजी मुहमा मलिन भेल’ जकाँ वाक्यसँ अभाव, दैनन्दिन देखभाल आ देहगत दशाक चित्र बनैत अछि। पान, गाँजा, फूल आ गजरा जकाँ वस्तु गीतक गोटेक विवरणमे अबैत अछि। ई शब्द मात्र अलङ्कार नहि, सम्भावित अनुष्ठानिक पदार्थक सूची सेहो बनैत अछि; तथापि पदार्थक प्रयोगक विधि आ क्षेत्र एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल जा सकैत अछि।

“कथि बिनु आहे नाताजी मुहमा मलिन भेल” — मुद्रित पृ. १२

‘नाताजी’ जकाँ आत्मीय सम्बोधन देवता आ साधकक बीच घरेलू भाषा अनैत अछि। लोक-धर्मक एक विशेष काव्यगुण ई जे सामाजिक सम्बोधन धार्मिक दूरी घटबैत अछि। गीतक पुनरुक्त प्रश्न देवताक मुखक मलिनता के कारण पूछैत अछि आ उत्तरक अपेक्षा बनबैत अछि। लिखित भजनक औपचारिक प्रशस्ति-संरचना सँ एकर कथोपकथनात्मक पद-विधान अलग अछि।

९. महिषासुरक गीत: स्थापित आख्यानसँ अलग लोक-स्वर

‘महिषासुरक गीत’ शीर्षक मुद्रित पृ. १२पर अछि। गीतमे ‘महिषासुर’कैं सन्दर्भ मानि ‘कहमा बिसरलह’ आ ‘सेवक’ जकाँ शब्द प्रयुक्त अछि। एहि गीतक विशिष्टता शीर्षक आ सम्बोधनक सम्बन्धमे निहित अछि: शास्त्रीय देवी-आख्यानमे एक विशेष स्थान रखनेवाला नाम एतए लोकआह्वानक परिवेशमे प्रवेश करैत अछि। मुदा शास्त्रीय आख्यान आ एहि पदक ‘महिषासुर’ पूर्णत: एके कथा-पात्र छथि अथवा लोकपरम्परामे हुनक पृथक रूप अछि, ई प्रश्न वर्तमान अंशसँ निर्णीत नहि होइत।

“कहमा बिसरलह हो महिषासुर भैसया के नथवा” — मुद्रित पृ. १२

‘भैसया’, ‘नथवा’, ‘गोना’ आ ‘गोठा’ जकाँ शब्द पशुपालन, देहाभूषण, ग्राम्य स्थान आ पुकारक नजदीकी स्थापित करैत अछि। गीतकेँ केवल पुराणक प्रतिध्वनि मानलासँ एहि ग्रामीण अर्थपरिसरक उपेक्षा होएत। एक ओर संस्कृत-पुराणपरम्पराक परिचित नाम, दोसर ओर पशु आ घर-आँगनक भाषा—एहि द्वैतक भीतर गहबर गीतक रचनात्मकता देखल जा सकैत अछि।

१०. गरीब भुइँयाक गीत: निर्धनता, सेवा आ आश्रयक भाषा

मुद्रित पृ. १२पर ‘गरीब भुइँयाक गीत’क स्पष्ट शीर्षक अछि। पदक आरम्भ ‘किए भगता काशी जाइय’क प्रश्न सँ होइत अछि आ आगेँ ‘किए सुतलै तिरिया संग साथ हो’ जकाँ पंक्ति अबैत अछि। गीतमे तीर्थयात्रा, सम्बन्ध, आवास, बाधा आ सेवा एकसाथ जुड़ैत अछि। भुइँया शब्दकेँ समुदाय अथवा पात्रक पदनामक रूपमे पढ़बाक सम्भावना अछि, मुदा केवल एकटा मुद्रित शीर्षकसँ गायकक जाति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अथवा सम्पूर्ण जातीय परम्पराक दावे नहि बनाओल जा सकैत।

“किए भगता काशी जाइय किए परयगवा हो” — मुद्रित पृ. १२

एहि प्रश्नक उत्तर-रचना भक्तक व्यक्तिगत यात्रा के सामाजिक रूप दैत अछि। काशी आ प्रयागक धार्मिक भूगोल, घरक अन्तरंग सम्बोधन, आ वटियाक अवस्थाक जोड़ सँ भक्ति बाहरी तीर्थ मात्र नहि रहैत; घर–सड़क–राति–जागरणक संग जीवित अनुभव बनि जाइत अछि। पृ. १३क दहिना भाग कटि गेल अछि आ पृ. १४क आरम्भ मे पूर्वगीतक निरन्तरता भऽ सकैत अछि। एहि सीमा केँ ध्यानमे रखि पाठक सोझाँ गीतक ई स्वरूप प्रस्तुत कएल गेल अछि।

मुद्रित पृ. १४क आरम्भमे ‘दीनानाथ’ आ नदी-किनार सम्बन्धी पंक्तिसभ भेटैत अछि। हुनका तुरन्त ‘गरीब भुइँयाक गीत’क निश्चित शेष भाग कहब सम्भव नहि, कारण पृ. १३क मध्यवर्ती भाग अनुपस्थित अछि। मुदा एहि निकट पाठक्रममे दीनता, नदी, देह आ आश्रयक शब्दक पुनरावृत्ति अध्ययन योग्य अछि।

११. पीर बाबाक गीत: सीमारेखासँ परक लोकश्रद्धा

मुद्रित पृ. १४पर ‘पीर बाबाक गीत’ शीर्षक उपलब्ध अछि। ‘आहो साहेब औलिया पीर’ सँ आरम्भ पंक्तिसभमे पीरकेँ दुआ, शरीरक अङ्ग, चढ़ावा-जकाँ वस्तु, फल आ नदी/पथक चित्रक माध्यमसँ सम्बोधित कएल गेल अछि। पीर, साहेब आ औलिया जकाँ सम्बोधन गहबरक गीत-संसारकेँ केवल एकटा देवनाम-मण्डल धरि सीमित नहि राखैत। एहि पुस्तकमे काली, सलहेस, महिषासुर आ कारिखक संग पीर-भक्तिक उपस्थिति स्वयं प्रमाणित पाठीय तथ्य अछि।

“आहो साहेब औलिया पीर, आहो साहेब औलिया पीर” — मुद्रित पृ. १४

एहि सहअस्तित्वकेँ ‘सर्वधर्मसमभाव’क आधुनिक वैचारिक घोषणापत्र कहि देब पाठक उपर बाह्य आदर्श आरोपित करब होएत। अधिक ठोस कथन ई अछि जे स्थानीय लोकदेवता-संसारमे ‘पीर’क सम्बोधन एहन परम्परागत पूजा-पुकारक भाषामे समाहित अछि जाहिमे अन्य देवताक नामो उपस्थित अछि। गीतक वाचिक संरचना परस्पर धार्मिक भेटक जीवित साक्ष्य बनैत अछि, मुदा अनुष्ठानमे भाग लएनिहार समुदायक सांख्यिक पहचान उपलब्ध नहि अछि।

गीतमे ‘सात खण्ड कुरता’ आ ‘पाकल बीड़ा पनमा’क चित्र भौतिक वस्तुकेँ उपासकक स्नेहपूर्ण उपहार बनबैत अछि। पीरक व्यक्तित्व दूरस्थ रूढ़ धर्मप्रवचनक बजाय लोक-संवादमे उतरल प्रतीत होइत अछि। निरन्तर ‘आहो’क पुनरावृत्ति उच्चारणक लय बनबैत अछि; एहि पुनरावृत्तिसँ गीतक ‘बोल’ पक्ष स्पष्ट देखाइत अछि।

१२. कारिखक गीत: वन, जल, पशु आ सेवकक परिश्रम

मुद्रित पृ. १४पर ‘कारिखक गीत’ शीर्षक अछि, जे पृ. १६ धरि दृश्य अंशमे विस्तार पबैत अछि। आरम्भ ‘सितले अमुनिजा बाबू सितले जमुनिजा हो’ जकाँ पदक संग होइत अछि। पृ. १६मे ‘नदिया के तीरे तीरे’, ‘शिकार’, ‘मंजर’, ‘पियार’, ‘वन’, ‘जमुनि’ आ ‘बकस’ जकाँ शब्दक समूह सँ गीतक प्राकृतिक आ श्रमजीवी दृश्यक स्वर स्पष्ट उभरैत अछि। एतए ठाम-दृश्यक क्रम महत्त्वपूर्ण अछि: नदीक तट, वनक अन्तःप्रदेश आ सेवकक गतिविधि मिलि गीतक पात्रकेँ गतिशील बनबैत अछि।

“नदिया के तीरे तीरे खेललउ शिकार, हो कारिख दुलरुआ” — मुद्रित पृ. १६

पृ. १६क एक अंशमे ‘राम केदलिया वनमे ना’ ध्रुवपद फेरि-फेरि आएल अछि। एतए ‘राम’ शब्दक प्रयोगक संपूर्ण धार्मिक आशय बिना पृ. १५क अखण्ड पाठ निर्धारण करब कठिन अछि। मुदा निश्चित ई जे गीतमे ध्वनि-आवृत्ति कथामूलक पदक आन्तरिक जोड़क काज करैत अछि। एकहि संकेतक पुनरुक्त उच्चारण सामूहिक गायनमे स्मरण आ लय देबामे सहायक भऽ सकैत अछि।

“सेवक उदेस हे अगमा रन वन फिरलहुँ हे” — मुद्रित पृ. १६

‘सेवक’क प्रथमपुरुषीय स्थिति लोकदेवता-संबोधनक सामाजिक संरचना खोलैत अछि। देवता पूर्ण समर्थ, सेवक अथक प्रयासरत—मुद्रित पद एहन सम्बन्धक अनुभूति करबैत अछि। वनमे खोज, रास्ताक बाधा, मौसम-जकाँ संकेत आ चढ़ावाक इच्छा आस्थाकेँ श्रमसँ जोड़ैत अछि। एतए ‘श्रमजीवी स्वर’ केवल विषय नहि, काव्यिक दृष्टिबिन्दु बनि उठैत अछि।

कारिखक गीतमे यात्रा, वन, जल आ सेवकक कथात्मक गतिशीलता प्रमुख अछि। प्रस्तुत पदावलीमे देवताक स्थिर स्तुति सँ आगाँ बढ़ि लोकनायकक काज आ प्रकृतिक सम्बन्ध उभरैत अछि।

१३. पाठक भाषा: लोकबोली, पदरचना आ व्याकरणिक रूप

एहि गीतसभमे ‘कओने’, ‘कथि’, ‘तोहरो’, ‘हमरो’, ‘सुतलै’, ‘मैयाँ’, ‘घरलउ’, ‘भेल’, ‘कहमा’, ‘कहुँ’, ‘अँचरवा’, ‘नथवा’ आ ‘दुलरुआ’ जकाँ बोलचालक रूप देखल जा सकैत अछि। एहि रूपसभकेँ एकरूप साहित्यिक रूपमे बदलिए देलासँ उच्चारण, जातीय-सामाजिक नजदीकी, आ लयभङ्गिमाक क्षति भऽ सकैत अछि। एहिठाम भाषा शास्त्रीय मानकीकरणसँ स्वतंत्र अपन लोक-प्रदर्शनक प्रयोजन पूरा करैत अछि।

छन्दक मूल आधार स्थिर अक्षरगणना नहि, गीतक बोल, ध्रुवपद, प्रश्न–उत्तर आ पुनरावृत्तिपर निर्भर देखाइत अछि। ‘कओने’, ‘किए’, ‘आहो’, ‘हे’ आदि पद अनेक ठाम

अनुच्छेदक आरम्भ करैत अछि। गीतक समान्तर रचना पाठक बीच प्रत्याशा उत्पन्न करैत अछि: पहिल प्रश्नक अगिला रूप, पहिल नामक बदलल रूप, अथवा ध्रुवपदक पुनरागमन। एकर मौखिक स्मरण-मूल्य स्पष्ट अछि; वास्तविक गायक-संवादक ध्वनि-साक्ष्य नहि भेटबाक कारण गति वा राग निर्धारण नहि कएल गेल अछि।

पुस्तकक छपाइमे देवनागरीक अनेको क्षेत्रीय आ ध्वन्यात्मक रूप, अन्त्याक्षरक विकल्प आ सम्भावित मुद्रण-दोष सेहो देखाइत अछि। पाठसम्पादनक समय ‘अशुद्धि’ आ ‘आञ्चलिक उच्चारण’ बीच भेद करब आवश्यक होएत। उदाहरणार्थ, गीतमे दोहरायल सम्बोधनक मानकीकरण सँ कथोपकथन टूटि सकैत अछि। एहेन संकलनक भावी आलोचनात्मक संस्करणमे एक दिस मूल पाठक यथारूप प्रस्तुति आ दोसर दिस अलग कोश तथा पाठान्तर-सूची श्रेष्ठ पद्धति होएत।

१४. दृश्य-भाषा आ लोककाव्यक सौन्दर्य

गहबर गीतक एक महत्त्वपूर्ण सौन्दर्यगुण एतय अछि जे ऊँच धार्मिक नामक संग सामान्य वस्तुक सम्मिलन सहज अछि। कालीक संग तिसिया आ राइ, महिषासुरक संग भैंस आ नथ, लुकेशरिक संग कुआँ आ नदी, पीर बाबाक संग बीड़ा-पान, आ कारिखक संग नदी-तट आ वन—एहि उदाहरणसभमे लोकविश्वास वस्तुगत जीवन सँ पोषित अछि। पंक्तिक बिम्ब-पटल गामक दृश्यभाषामे खुलैत अछि; देवता गामसँ बाहर नहि, गामक भाषा भीतर परिचालित छथि।

किछु पदमे देवीक शरीर अत्यन्त तीव्र आ कठोर छविसँ बनैत अछि, जखन अन्यत्र ‘मैयाँ’, ‘गोद’, ‘बाबा’, ‘दुलरुआ’ आ ‘साहेब’सँ स्नेहपूर्ण सम्बोधन होइत अछि। ई विपरीत स्वर लोकधर्मक भावसम्पदा दर्शबैत अछि: भय आ भरोसा, शरणागति आ साहस, दैनन्दिनता आ अद्भुतता एक-दोसराक संग प्रतिस्पर्धा नहि, परस्पर पूरक बनि रहैत अछि।

पंक्ति-पंक्तिमे प्रदर्शनक आह्वान छैक: ‘आहो’क दीर्घ उच्चार, ‘हे’क अवसान, ‘किए’क पुनरुक्त प्रश्न, ‘ना’क स्थायी टुकड़ा। लिखित अनुक्रममे सेहो ई शाब्दिक सङ्गीतात्मकता

अनुभव होइत अछि। मुदा एकरा राग-विशेष, मात्रिक-छन्द-विशेष वा नृत्य-विशेषक नाम देब बिना श्रव्य प्रमाण सम्भव नहि।

१५. जाति, लिङ्ग आ धार्मिक बहुलता: साक्ष्य आ सावधानी

पोथीक अङ्गरेजी परिचय उपेक्षित वर्गक गायक-परम्पराक विशेष उल्लेख करैत अछि। समर्पणमे बच्चन भगतक ज्ञानपरम्पराक सम्मान अछि; भूमिका अभिजात्य-केंद्रित सङ्कलन-पद्धति प्रति असन्तोष व्यक्त करैत अछि; गीतसमूहमे भुइँया, भगता, सेवक, पीर आ अनेको स्थानीय देवनाम एकठाम भेटैत अछि। एहि तीन स्तरकेँ जोड़ि देखला पर पुस्तक सामाजिक बहिष्करणक विरुद्ध लोकस्मृतिक संरक्षण-प्रयास बनैत अछि।

एकर बादो जातीय परिचय आ मूल प्रदर्शनकारीक पहचान समानार्थी नहि अछि। ‘गरीब भुइँयाक गीत’क शीर्षक ‘भुइँया’ शब्दक पाठ-साक्ष्य दैत अछि, मुदा एहि एक पंक्तिक आधारपर गीतक ककर गाम, कोन उपजाति, कोन वर्षक गायिका वा गायक, अथवा मूल प्रसारण-इतिहास तय नहि कएल जा सकैत। सामाजिक न्यायमूलक आलोचनाक विश्वसनीयता एहि सावधानीमे अछि।

लिङ्गगत रूपेँ काली, देवी, ‘मैयाँ’, आँचर, गोद आ तिरिया जकाँ शब्द पाठक ध्यान स्त्री-आकृति दिस लैत अछि। स्त्री देवताक केन्द्रीयता आ वास्तविक महिला गायकक भागीदारी दू अलग प्रश्न छथि। संग्रहमे गायक–गायिकाक सूची, प्रस्तुति-विभाजन आ स्थलवार गणना उपलब्ध नहि; अतः सम्पूर्ण परम्परा महिलाद्वारा संचालित छल—एहन निष्कर्ष एतए नहि कएल गेल अछि। तथापि बामतिक गीतमे आँचर पकड़बाक नाटकीय प्रसंग आ कालीक शक्ति-प्रतिमा स्त्री-देह आ अधिकारक विमर्श लेल सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि।

धार्मिक विविधता मिथिलाक लोकविश्वासकेँ एकटा कठोर सिद्धान्तमे बान्हब असम्भव बनबैत अछि। संकलनमे पीर बाबाक गीतक उपस्थिति विशेष अर्थवान अछि; ओकर संग शाक्त गीतक एके पुस्तकमे स्थान भेटब लोकभक्तिक बहुल संरचनाक पाठीय प्रमाण अछि।

साहित्येतिहासक दाबी बनबैत समय ‘गीतमे सहअस्तित्व’ आ ‘समाजमे सर्वत्र सद्भाव’क बीच भेद रखबाक चाही।

१७. सङ्कलनक उपलब्धि आ शेष पाठसम्पादकीय प्रश्न

ग्रन्थक प्रमुख उपलब्धि तीन रूपमे देखल जा सकैत अछि। पहिल, लोकसाहित्यक परिधिमे रहि गेल आवाहन-गीतकेँ लिखित अध्ययनक विषय बनाओल गेल। दोसर, गीतक अन्दर अनेक देवता, लोकनायक, पीर, वन, तीर्थ, घरेलू वस्तु, श्रम आ स्नेहक समानान्तर संसार देखल जा सकैत अछि। तेसर, सङ्कलक समर्पण-पृष्ठपर बच्चन भगतक योगदान स्वीकार करैत छथि, जे लोकसाहित्यक स्रोत-व्यक्तिकेँ अनाम राखबाक साधारण त्रुटिसँ अलग एक उपयोगी उदाहरण अछि।

एकर सीमाक आलोचना पाठ-विशेषक साक्ष्यसँ करबाक चाही। उपलब्धमे प्रत्येक गीतक गायक, स्त्रोत-गाम, संकलन-तिथि, कार्यक्रम-परिस्थिति, धुन, प्रस्तुति-क्रम, स्थानीय पाठान्तर आ भाषिक टिप्पणी व्यवस्थित रूपेँ देखाइत नहि अछि। एकर अर्थ ई नहि जे मूल पुस्तकक कोनो अदृश्य भागमे ई विवरण अवश्य अनुपस्थित अछि; केवल ई जे उपलब्ध सामग्रीसँ एकर पुष्टिकरण नहि भेल। वैज्ञानिक लोकसाहित्य-संस्करणमे एहि सूचनाक महत्व अत्यधिक अछि।

आगाँक विश्वसनीय आलोचनात्मक संस्करणमे समग्र पृष्ठक उच्च-गुणवत्ताक प्रतिकृति, प्रत्येक गीतक मूल पाठमुद्रण, आवश्यक ठाम पाठ-संशय-चिह्न, बोलिक शब्दार्थ, गायन-स्थल/कलाकार, सम्भव हो तँ श्रव्य प्रस्तुति, आ अलग सम्पादकीय परिशिष्ट रहबाक चाही। एहि अनुशंसाक उद्देश्य मूल लोकभाषाकेँ ‘शुद्ध’ करि मेटा देब नहि, ओकर मौखिक वैविध्यकेँ दस्तावेजी प्रमाणक संग संरक्षित करब थिक।

१८. निष्कर्ष: ‘गहबर गीत’क साहित्यिक आ सांस्कृतिक अर्थ

‘गहबर गीत’क उपलब्ध पाठ स्पष्ट करैत अछि जे मिथिलाक लोककाव्यक अर्थ केवल पर्व-गीत वा विवाह-गीतक सुविख्यात धारा धरि सीमित नहि। भगतक आवाहन, देवीक शक्तिपुकार,

सलहेसक स्मरण, लुकेशरिक जल-यात्रा, बामतिक आँचर-प्रसंग, अघोरिक दैनन्दिनता, महिषासुरक ग्राम्य शब्द, गरीब भुइँयाक व्यथा, पीर बाबाक आत्मीय सम्बोधन आ कारिखक वन–नदी–श्रमक कथा मिलि एक बहुध्वनिक सांस्कृतिक पाठ बनबैत अछि। एतय धार्मिक संसारक रचना माथपर थोपल अवधारणासँ नहि, लोकभाषाक संबोधन, गीतक ध्रुवपद आ समुदायगत स्मृतिसँ होइत अछि।

डॉ. योगानन्द झाक संकलनक ऐतिहासिक महत्त्वक मूल आधार पुस्तकक स्वघोषित लक्ष्य आ उपलब्ध गीतक स्वर अछि। एहि दू आधारक बीच समर्पण-पृष्ठपर बच्चन भगतक योगदान लोकज्ञानक जीवित परम्परा उपस्थित करैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ पोथीक सफलताकेँ मूल्याङ्कित करबाक संग वर्तमानक अपूर्णता स्वीकार करब आवश्यक अछि। जतय पाठ अछि, ओतए निकटपाठ; जतय पाठ कटि गेल अछि, ओतए मौन; जतय अन्य शोधसँ तुलना अछि, ओतए स्रोतक स्पष्ट पहचान—एहने अनुशासनसँ ‘गहबर गीत’ पर विश्वसनीय अनुसन्धान सम्भव होइत अछि।

	विषय/मुद्रित पाठ	पाठ-स्थिति
	समर्पण-पृष्ठ; बच्चन भगत (१९२८–१९९१), क्षेत्रीय लोकविद्या आ सङ्कलकक आभार	समर्पण स्पष्ट; सङ्गे लगल आवरणक केवल अंश
	प्रकाशन-विवरण; २००७, मिथिला रिसर्च सोसाइटी; भूमिका पृ. १क अंश	प्रकाशन-विवरण स्पष्ट; पृ. १ कटित
	भूमिका पृ. २ स्पष्ट; गहबर, भगता, आवाहन, पूजा; पृ. ३क अंश	पृ. २ स्पष्ट; पृ. ३ कटित
	मुद्रित पृ. ४; काली–सलहेसक प्रसङ्ग; मुद्रित पृ. ५क देवीगीतक अंश	पृ. ४ स्पष्ट; पृ. ५ कटित
	मुद्रित पृ. ६; कालीक पद; पृ. ७क अंश	पृ. ६ स्पष्ट; पृ. ७ कटित
	मुद्रित पृ. ८; कालीक जन्म/फूल-आवाहन;	पृ. ८ स्पष्ट; पृ. ९

	विषय/मुद्रित पाठ	पाठ-स्थिति
	पृ. ९क लोकदेवीगीतक अंश	कटित
	मुद्रित पृ. १०; लुकेशरिक गीत, बामतिक गीत; पृ. ११क अंश	पृ. १० स्पष्ट; पृ. ११ कटित
	मुद्रित पृ. १२; अघोरिक, महिषासुरक आ गरीब भुइँयाक गीत; पृ. १३क अंश	पृ. १२ स्पष्ट; पृ. १३ कटित
	मुद्रित पृ. १४; पूर्वगीतक अंश, पीर बाबाक गीत आ कारिखक गीत; पृ. १५क अंश	पृ. १४ स्पष्ट; पृ. १५ कटित
	मुद्रित पृ. १६; कारिखक गीतक दृश्य अन्त्य; अन्तमे समाप्ति-चिह्न	पृ. १६ स्पष्ट; बगलमे विज्ञापनक अंश

अध्याय 07 / २००७ • द्वितीय संस्करण २०२४

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

अन्ततः एहि आलेखक असल साहित्यिक प्रश्न ‘विद्यापतिक सभ कथा तथ्यतः सत्य अछि कि नहि’ नहि, बल्कि ‘लोक विद्यापतिक रूपक निर्माण किएक आ कोना करैत अछि’ थिक। ई प्रश्न आलोचनाकेँ व्यक्ति-पूजासँ किछु हटाक पाठ, समाज आ स्मृतिक अन्तःसम्बन्ध दिस मोड़ैत अछि। लोकगाथाक तुलनात्मक पाठ, मन्दिर-परम्परा आ मौखिक प्रस्तुतिक अभिलेख जोड़ि भविष्यक अनुसन्धान एहि अध्यायक महत्त्व बढ़ा सकैत अछि।

२. मैथिली लोकगीतमे राष्ट्रीय समन्वय | मूल पृ. ३०–३५

एहि आलेखक मूल प्रस्ताव ई अछि जे मैथिली लोकगीतक स्थानीय स्वर भारतीय सांस्कृतिक एकता सँ विरोधी नहि, प्रत्युत ओकर एकटा जीवित अभिव्यक्ति अछि। आरम्भमे लेखक पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिणक सांस्कृतिक सम्बन्ध, पारिवारिक मर्यादा आ साझा आध्यात्मिक प्रतीकक बात करैत छथि। तकर बाद ओ लोकगीतकेँ सामूहिक जीवनदर्शनक वाहक मानैत छथि। एहि बिन्दु पर लोकगीत मात्र मनोरञ्जन नहि रहि, समाजक स्मृति, नीति, सम्बन्ध आ बहुभाषिक सांस्कृतिक आवागमनक माध्यम बनि जाइत अछि। (पृ. ३०–३१)

मूल आलेखमे धार्मिक आ सामाजिक गीतक पंक्तिसँ समन्वयक भाव देखेबाक चेष्टा अछि। गीतमे राम, कृष्ण, देवी-देवता, कुलपरम्परा, अतिथि, पारिवारिक आदर, साझा मानवीय आकांक्षा आदि बिम्ब पर चर्चा कएल गेल अछि। अन्तिम अंशमे जीवनक भौतिक आवश्यकता आ सामाजिक सहकारक प्रसंगक संग लोकभाषाक गीतक स्थान निर्दिष्ट भेल अछि। एहि उदाहरणसभकेँ देखला सँ बुझाइत अछि जे लेखकक ‘राष्ट्रीय’ शब्द केवल राज्यक राजनैतिक

अर्थमे नहि, बल्कि जनसमुदायक नैतिक-सांस्कृतिक जुड़ावक अर्थमे प्रयुक्त अछि। (पृ. ३०–३५)

आलोचनात्मक दृष्टिएँ एहि लेखनक शक्ति ओकर भाव-सूत्रक खोजमे अछि। ताहि संग एकटा महत्त्वपूर्ण सावधानी आवश्यक अछि: लोकगीतक भीतर जतए एकता, प्रेम आ स्नेहक बोध अछि, ततए भेद, शोक, विरोध, लिंग-असमानता वा सामाजिक तनावक स्वर सेहो सम्भव अछि। जँ केवल समन्वयपरक गीत चुनल जाए तँ जीवनक कठिन अनुभव आ विरोधी आवाज अदृश्य भऽ सकैत अछि। एहि लेल चयनित गीतक प्रतिनिधित्व, संकलन-क्षेत्र आ अवसरक विवरण अनुसन्धानक निष्पक्षता लेल अनिवार्य आधार होइत अछि।

लोकगीतक शब्द आ धुन एक संग सामाजिक अर्थ उत्पन्न करैत अछि। गीतक लिखित पंक्ति पाठककेँ अर्थ दैत अछि, मुदा ओकर गायक, गायन-अवसर, सामूहिक प्रत्युत्तर आ लयक विवरण बिना लोकानुभवक समग्रता नहि भेटैत। ताहि हेतु समीक्षात्मक विस्तारक सम्भावना लोकगीतक सामाजिक प्रयोग, स्त्री-पुरुषक गायनभूमिका, संस्कारविशेष आ क्षेत्रीय विविधताक तुलनामे अछि। एकै भावक अलग-अलग गाममे चलैत पाठान्तर समन्वय आ स्थानीयताको एक-संग देखेबाक अवसर दऽ सकैत अछि।

एहि अध्यायक मूल्य मुख्यतः विचारधारात्मक सूत्र स्थापना आ मैथिली लोकगीतक व्यापक भारतीय सन्दर्भ पर केन्द्रित अछि। ओकरा कठोर लोकसंगीत-विज्ञानक सर्वेक्षण मानबाक अपेक्षा, सांस्कृतिक व्याख्याक प्रतिपादन मानल जाए तँ तर्कक सीमा आ उपलब्धि दुनू स्पष्ट होइत अछि। समन्वयक विचारक संग सामाजिक विषमताक साक्ष्य सेहो पढ़ल जाए, तखन अध्यायक लोकतान्त्रिक व्याख्या समृद्ध होएत।

३. मैथिल लोकसंस्कृतिमे सामा–चकेबा | मूल पृ. ३६–४६

सामा–चकेबा सम्बन्धी आलेख मैथिल लोकजीवनक एक विशिष्ट गीत-नाट्य परम्पराकेँ विस्तृत सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यमे रखैत अछि। आरम्भमे लेखक मैथिल लोकसंस्कृतिक भीतर लोककथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोकनृत्य, लोकमान्यता आ व्यवहारक परस्परता देखबैत छथि। एहि

आधार पर सामा–चकेबाक अर्थ केवल पर्वक अनुष्ठान नहि, बल्कि कथा, अभिनय, गीत, वस्तु-निर्माण, उत्सवक सामुदायिकता आ सम्बन्ध-संरचनाक संयुक्त प्रदर्शन ठहरैत अछि। (पृ. ३६–३८)

आलेखक केन्द्रमे भाइ–बहिनक स्नेह, लोक-आख्यानक नैतिक द्वन्द्व तथा सामूहिक गायनक भूमिका अछि। लेखक पूर्ववर्ती विद्वान, लोकसंग्राहक आ गीतक सन्दर्भ पर चर्चा करैत विषयकेँ पुस्तकबद्ध अनुसन्धानक परम्परासँ जोड़ैत छथि। मूल पाठमे सामा गीतक प्रचलित पंक्ति आ रामदेव झा तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ सम्बन्धित उल्लेख भेटैत अछि, जाहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे लेखक तुलनात्मक सांस्कृतिक संकेतक सहारा लैत छथि। कथा आ लोकगीतिक सम्बन्धकेँ ओ समान साहित्यिक विधा नहि, बल्कि एक-दोसराकेँ पोसैत प्रस्तुति-रूप मानबाक दिशा सुझबैत छथि। (पृ. ३९–४३)

एहि आलेखक विशिष्टता ओकर प्रदर्शनपरक दृष्टि थिक। सामा–चकेबामे पातर, प्रतीक, खेल, गीत आ सामूहिक क्रिया एकै भावक अलग-अलग माध्यम बनैत अछि। समीक्षाक दृष्टिएँ एहि रूपकेँ ‘जीवित लोकनाट्य’ कहबा लेल प्रयोगशील प्रमाण चाही: कोन पात्र केँ के प्रस्तुत करैत अछि, गीतक क्रम की अछि, प्रतिदिनक कार्यविधि बदलैत अछि कि नहि, आ दर्शक-अभिनेताक सम्बन्ध केहन अछि। एहन प्रश्न आलेखक स्थापना संग विरोध नहि, बल्कि ओकर व्याख्यात्मक क्षमता बढ़ेबाक साधन अछि।

भाइ–बहिनक स्नेहक आदर्श एहि लोकपर्वक एक महत्त्वपूर्ण अर्थ होएत; तथापि स्त्रीसमुदायक सामूहिक मिलन, स्मृति, परिहास आ स्वराधिकारक पक्षकेँ बराबर गम्भीरतासँ देखब आवश्यक अछि। लोकपर्वक कथा सामाजिक व्यवस्था रचैत अछि, मुदा गीत आ प्रदर्शन कखनो ओही व्यवस्थाक भीतर अनौपचारिक स्वतन्त्रता सेहो बनबैत अछि। एहि दूहरा अर्थक अध्ययनसँ सामा–चकेबा घरक सीमामे बन्हल अनुष्ठान नहि, व्यापक सार्वजनिक सांस्कृतिक घटना रूपेँ बुझाइत अछि।

पाठमूलक निकष ई अछि जे लेखक मिथिला-विशेषक परम्पराकेँ लोकसाहित्यक मान्य विषय बनबैत छथि। अध्यायक आगाँक शोध-दिशा सामग्रीक स्रोत-सूची, स्थानीय पाठान्तर, गीत-संगीतक ध्वन्यभिलेख, प्रतिमा-विन्यास आ पर्वक समयगत बदलावक दस्तावेजीकरण अछि। एहि दिशा मे कार्य भेलासँ एखनक विवेचन अमूर्त प्रशंसासँ आगाँ बढ़ि प्रदर्शन-इतिहासक विश्वसनीय अध्ययन बनि सकैत अछि।

४. लोकगाथा: दीना–भद्री | मूल पृ. ४७–५६

दीना–भद्रीक आलेख पुस्तकक सामाजिक इतिहास सम्बन्धी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रविष्टिमे सँ एक अछि। आरम्भमे कृषिमजदूरक श्रम, भूमि-स्वामित्वक अभाव, जाति-व्यवस्था आ मुसहर समुदायक सामाजिक परिस्थिति चर्चा मे अनल गेल अछि। लेखक गाथाक पृष्ठभूमि समझेबा लेल समुदायगत जीवनयापन, परम्परागत श्रम तथा स्थानीय वर्गभेदक विवरण दैत छथि। एहि प्रकार गाथाक नायककेँ शुद्ध अलौकिक वीर नहि, बल्कि श्रम आ सामाजिक तनावक विशिष्ट परिवेशसँ उभरैत लोकनायक रूपमे स्थान भेटैत अछि। (पृ. ४७–४९)

मुख्य कथासूत्रमे दीना आ भद्री, हुनक पारिवारिक-सामुदायिक सम्बन्ध तथा अत्याचारसँ टकरावक कथा आबैत अछि। लेखक लोकगाथाक पद, संवादात्मक अंश, कथाविस्तार आ प्रसंगक सहारा लैत संघर्षकेँ प्रस्तुत करैत छथि। मूल पाठमे विरोध, प्रतिशोध, शौर्य, सामूहिक निष्ठा आ लोकधर्मक मिलन देखल जा सकैत अछि। एक स्थल पर लेखक कथामे कृष्णक कालिय-दमन आ तन्त्र-संकेतक प्रभावक चर्चा करैत छथि; एहि सँ गाथा स्थानीय ऐतिहासिक अनुभव आ व्यापक पौराणिक स्मृतिक परस्पर सहवासक उदाहरण बनैत अछि। (पृ. ४९–५३)

समीक्षाक दृष्टिएँ एहि आलेखक उल्लेखनीय पक्ष ई अछि जे मुसहर समुदायकेँ अध्ययनक केन्द्रमे अनल गेल अछि। मैथिली साहित्यक मुख्यधारा मे सामाजिक हाशियाक जनजीवनकेँ प्रायः फुटनोट समान स्थान भेटैत अछि; एतय हुनक संघर्षक अपना मौखिक महागाथाक स्वतंत्र गरिमा अछि। तथापि लोकगाथाक प्रत्येक सामाजिक पात्रकेँ प्रत्यक्ष इतिहासक व्यक्ति मानि लेब आवश्यक नहि। गाथाक कथात्मक काल, संकलनक काल आ सम्भावित सामाजिक

स्मृतिक काल अलग-अलग रहि सकैत अछि। एहि भेदकेँ सुरक्षित रखबासँ गाथाक सामाजिक महत्त्व घटैत नहि, ओकर ऐतिहासिक उपयोग विश्वसनीय होइत अछि।

गाथाक पदमाला लोकसमुदायक सामूहिक अनुभूतिक समृद्ध साक्ष्य अछि। ओकर पाठ-रूप सदा एके नहि रहैत होयत; भिन्न कलाकार कथाक लय, संवाद, पात्रक गुण आ प्रसंग बदलि सकैत छथि। एहि कारण गायकक परिचय, संग्रहस्थल, कथागायनक प्रसंग, स्त्रोत आ पाठान्तर दर्ज करब लोकोन्मुख अनुसन्धानक अनिवार्य अगिला चरण अछि। जाति-विषयक अध्ययनमे समुदायकेँ केवल पीड़ितक निष्क्रिय रूपमे नहि, अपन नैतिकता, आस्था, प्रतिरोध आ सृजनशीलताक कर्ता मानब विशेष आवश्यक अछि।

एहि आलेखक आलोचनात्मक उपादेयता स्थानीय वीरगाथाक मार्फत श्रम, शक्ति आ प्रतिष्ठाक प्रश्न उठेबामे अछि। लेखक जे कथा प्रस्तुत करैत छथि, ओकरा समाजशास्त्रीय परिकल्पना, पौराणिक संरचना आ लोकसाहित्यिक शिल्पक तीन अलग स्तर पर पढ़ल जाए तँ हिन्दी-मैथिली लोकगाथा-अध्ययनमे तुलनात्मक अनुसन्धानक बहु सम्भावना खुलैत अछि।

५. गहबर गीत | मूल पृ. ५७–७०

गहबर गीत नामक आलेख लोकगीतक वर्गीकरण, सांस्कृतिक प्रयोग आ अल्पचर्चित परम्पराक पाठसंरक्षण पर केन्द्रित अछि। लेखक आरम्भमे मिथिलाक लोकगीतक व्यापक भण्डारक उदाहरणस्वरूप सोहर, समदाउन, विवाह-सम्बन्धी गीत, ऋतुगान, जाति आ व्यवसाय-विशेषक गीत तथा धार्मिक आख्यानसँ जुड़ल गानक अनेक नाम प्रस्तुत करैत छथि। एहि विस्तृत पृष्ठभूमिमे गहबर गीतकेँ पृथक परिचय देबाक निर्णय महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ई दर्शबैत अछि जे सामान्य श्रेणी ‘लोकगीत’क भीतर असंख्य विशिष्ट सामाजिक-आनुष्ठानिक रूप छिपल अछि। (पृ. ५७–५८)

मूल अध्यायमे गीत-पाठक पर्याप्त उपस्थिति अछि। कालिका, गोर, सोनोरा आ महामायासँ सम्बन्धित गेय अंश तथा आवर्ती पंक्तिक विन्यास पाठककेँ एहन गीतक आन्तरिक लयक संकेत दैत अछि। पृ. ६३ पर कालिका गीतक क्रमिक आवर्तन आ ‘महामायाक गीत’क अलग

उल्लेख भेटैत अछि। ई सामग्रीक महत्त्व एतबे नहि जे नव गीत उद्धृत भेल अछि; गीतमे स्थाननाम, देवीसम्बन्धी प्रतीक, यात्रा-बिम्ब आ सामूहिक गायनक स्वर एक-दोसराक संग जुड़ैत देखाइत अछि।

एहि लेखनक एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक उपलब्धि अज्ञात अथवा कम लिखित गीतपरम्पराकेँ पोथीक स्थिर अभिलेखमे अनब अछि। मौखिक गीत गायकक स्वरसँ पाठक धरि जखन आबैत अछि तँ किछु लाभ आ किछु हानि दुनू होइत अछि: शब्द संरक्षित होइत अछि, मुदा स्वरतत्त्व, विराम, तान, प्रत्युत्तर आ अवसरक सजीव रूप सहजहि नहि बचैत। ताहि लेल पाठक सँग ध्वनि-संग्रह, गायकक नाम, समुदाय, लिप्यन्तरणक सिद्धान्त आ गीत-क्रमक साक्ष्य राखल जाए तँ एहन अध्ययनक प्रमाणमूल्य बहुगुणित होएत।

गहबर गीतक धर्म-सांस्कृतिक अर्थ बुझबा लेल देवीक उपासना, स्थानविशेष आ सामुदायिक समागमक सम्बन्ध देखब आवश्यक अछि। मुदा एतय सावधानी अछि जे देवता-सम्बन्धी समान शब्द भेटलामात्रसँ सभ गीतक समान उत्पत्ति वा सम्पूर्ण क्षेत्रमे एकरूप प्रयोग सिद्ध नहि होइत अछि। गीतक भिन्न रूप सामाजिक स्तर, जातिगत व्यवहार आ अवसरअनुसार विकसित भऽ सकैत अछि। एहिमे स्थानीय विविधताकेँ मूल्य मानि सुरक्षित रखब, ‘प्रामाणिक एकमात्र रूप’ खोजबासँ अधिक फलदायक अछि।

ग्रन्थक लोकखण्डक अन्तिम आलेख होएबाक कारण ‘गहबर गीत’ पूर्वक चारि आलेखकेँ नव सन्दर्भ दैत अछि। मिथक, समन्वय, उत्सव आ वीरगाथाक बाद एतय लोकस्वर अपने शब्दमे पाठक धरि पहुँचैत अछि। अतः एहि अध्यायक महत्त्व संग्रहात्मक सेहो अछि आ व्याख्यात्मक सेहो। चुनल गीत-पाठक आलोचनात्मक पाठसम्पादन आ संगीतविश्लेषणक विस्तारित संस्करण भविष्यक शोधक स्वाभाविक दिशा अछि।

दोसर खण्ड: साहित्य

६. कविवर जीवनझाक नाट्यगीतमे अलंकार योजना | मूल पृ. ७१–७७

साहित्य खण्डक पहिल अध्याय अलंकारशास्त्रक सिद्धान्तक आधार पर जीवन झाक नाट्यगीतक अध्ययन करैत अछि। आरम्भमे आचार्य विश्वनाथक काव्यविचार उल्लेखित अछि। लेखक अलंकारकेँ काव्यक आवश्यक मूलभूत अस्तित्व नहि, किन्तु काव्यसौन्दर्य बढ़ेबाक शक्तिशाली साधन मानैत छथि। एहिसँ प्रश्न उठैत अछि जे अलंकार शब्दक चमत्कार धरि सीमित रहैत अछि अथवा पात्रक भाव, नाटकीय स्थिति आ गीतक प्रभावक अङ्ग बनैत अछि। लेखकक उद्देश्य नाट्यगीतमे प्रयुक्त रूपात्मक कारीगरीकेँ एहि कसौटी पर देखब अछि। (पृ. ७१–७२)

अध्यायमे उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आ अनेक अर्थालंकारक प्रयोगक सन्दर्भ भेटैत अछि। पृ. ७४ पर अर्थालंकारक उदाहरणसँ लेखक शब्द-विन्यास आ अर्थक संयुक्त प्रभावक विवेचन करैत छथि। जीवन झाक नाट्यगीतमे प्रकृति, सौन्दर्य, भावाभिव्यक्ति आ पात्र-वाचन जँ एक-संग क्रियाशील होइत अछि, तँ अलंकारक मूल्य केवल नामकरणमे नहि, नाटकक अर्थसर्जनामे अछि। लेखकक उदाहरणपद्धति एही प्रश्नक आरम्भिक उत्तर देबाक प्रयत्न करैत अछि।

एहि निबन्धक विशिष्टता शास्त्रीय शब्दावलीक स्थानीय सृजनपरक उपयोगमे अछि। विश्वनाथ, काव्यगुण आ रसक सिद्धान्त स्वयंसिद्ध ढङ्गसँ आरोपित नहि होयबाक चाही; नाट्यगानक संदर्भमे छन्द, पात्र, मंचीय समय आ संवादक वेग अलग-अलग तत्त्व अछि। उदाहरणक कोन अंश अलंकार अछि आ कोन अंश सामान्य काव्यात्मक बिम्ब—एहि सीमारेखाक स्पष्ट व्याख्या अध्यायक आलोचनात्मक विश्वसनीयता लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

जीवन झाक नाट्यगीत लोकसंगीत आ लिखित साहित्यक बीच स्थित अछि। एहन रचनाक विश्लेषणमे ध्वनि, उच्चारण, समूह-गायन आ अभिनयक प्रभावकेँ सेहो ग्रहण करब अपेक्षित अछि। जँ कोनो पंक्ति कागज पर उपमा छैक, मुदा अभिनयमे ओ हास्य, करुणा वा व्यङ्ग्यक नाटकीय अवकाश बनबैत अछि, तँ काव्यार्थक अर्थव्याप्ति बढ़ि जाइत अछि। एहि कारण

औपचारिक अलंकार-वर्गीकरणकेँ नाट्य-व्यवहारक अध्ययनसँ जोड़ब आगाँक अनुसन्धानक महत्त्वपूर्ण उपक्रम होएत।

समग्रतः निबन्ध मैथिली नाट्यगीतकेँ संस्कृत काव्यशास्त्रीय आलोचनाक योग्य सामग्री सिद्ध करैत अछि। मूल्याङ्कनक अगिला कसौटी ई होयबाक चाही जे लेखकक चुनल उदाहरण जीवन झाक समस्त नाट्यकृतिमे कतेक प्रतिनिधि अछि, आ कोन अलंकार नाटकीय प्रयोजनक कारण बारम्बार आबैत अछि। एहि सांख्यिक-सन्दर्भगत विश्लेषणसँ पुस्तकक आरम्भिक स्थापना अधिक ठोस रूप लेत।

७. नारी शिक्षा आ हरिमोहनझा | मूल पृ. ७८–८५

ई आलेख मिथिलामे स्त्रीशिक्षाक प्रश्नकेँ हरिमोहन झाक सामाजिक व्यङ्ग्य आ कथा-साहित्यक संग जोड़ैत अछि। लेखक आरम्भमे ज्ञान-विमर्शक पारम्परिक स्त्री-पात्रसभ आ इतिहासक उदाहरणक उल्लेख करैत छथि, तकर बाद आधुनिक शैक्षिक असमानता, सामाजिक नियन्त्रण तथा स्त्रीक शिक्षाक आवश्यकता पर ध्यान दैत छथि। एहि पूर्वपीठिकासँ हरिमोहन झाक रचनाकेँ केवल हास्य-व्यङ्ग्यक पाठ नहि, समाजसुधारक सन्दर्भमे पढ़बाक स्थिति बनैत अछि। (पृ. ७८–७९)

आलेखमे ‘कन्यादान’, ‘द्वादशोऽध्याय’-प्रकारक सामाजिक व्यङ्ग्य-सन्दर्भ आ शिक्षित-अशिक्षित जीवनक विरोधक चर्चा दृष्टिगोचर होइत अछि। पृ. ८१ पर ‘कन्यादान’क प्रसंगमे अंग्रेजी शिक्षा, विवाह-व्यवस्था, वरक आचरण तथा स्त्रीक अनुभवक सम्बन्ध उठाओल गेल अछि। लेखकीय तर्कक महत्त्व एहि मे अछि जे शिक्षा केवल पाठशाला जाएबाक घटना नहि, आत्मनिर्णय, सामाजिक चेतना आ बदलैत पारिवारिक व्यवहारक प्रश्न बनि जाइत अछि। (पृ. ८०–८२)

हरिमोहन झाक साहित्य व्यङ्ग्यक माध्यमसँ समाजक दोगलापन उजागर करैत अछि। मुदा आलोचनात्मक अध्ययनमे कथावाचक, पात्रक बोली आ स्वयं रचनाकारक मान्यताकेँ एक मानि लेब उचित नहि। पात्रक कृत्यक हास्यास्पदता पाठकमे सामाजिक विवेचना उत्पन्न करैत

अछि; ओहिसँ रचनाकारक अंतिम मूल्यनिर्णय सिद्ध करबाक लेल पूरा कथा-संरचना देखब आवश्यक अछि। एहि पद्धतिगत भेदकेँ दृढ़ रखल जाए तँ लेखकक सामाजिक आशयक विश्लेषण अधिक सटीक होएत।

नारीशिक्षा पर विमर्श करैत काल ‘परम्परा’ आ ‘आधुनिकता’क दू सरल कोठरी बनाबि देब सेहो पर्याप्त नहि। संस्कार, विवाह, आर्थिक सुरक्षा, मातृभाषा, औपनिवेशिक शिक्षा आ सामाजिक प्रतिष्ठाक बीच जटिल सम्बन्ध अछि। हरिमोहन झाक कथा एहि टकरावकेँ व्यङ्ग्यक माध्यमसँ व्यक्त करैत अछि। अध्ययनक विस्तारमे कथाक स्त्री-पात्रक भाषिक स्वायत्तता, निर्णयक अधिकार, परिहासक लक्ष्य आ शिक्षा-प्राप्तिक वास्तविक परिणामक पृथक परीक्षण उपयोगी होएत।

एहि आलेखक मुख्य उपलब्धि हरिमोहन झाक रचना-जगतमे नारी शिक्षा एकटा महत्त्वपूर्ण सामाजिक विचार रूपेँ चिन्हित करब अछि। सीमासम्बन्धी आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे सामाजिक परिवर्तनक एकाधिक स्वरक तुलना कतेक कएल गेल अछि। जँ अन्य समकालीन मैथिली रचनाकार आ स्त्रीलेखिकाक पाठसँ तुलना जोड़ल जाए, तँ एहि बहसक साहित्येतिहासिक गाम्भीर्य आरो बढ़त।

८. पण्डित आनन्दझाक ‘महेशशतक’ | मूल पृ. ८६–८९

चारि पृष्ठक एहि संक्षिप्त आलेखमे पण्डित आनन्द झाक ‘महेशशतक’क शैवभक्ति, पदावली आ काव्यभाषाक परिचय भेटैत अछि। आरम्भमे शिवसम्बन्धी स्तुतिपदक उद्धरण देल गेल अछि आ विद्यापति-चन्द्र झाक शैवपद-परम्परासँ सम्बन्ध स्थापित कएल गेल अछि। लेखकक दृष्टिमे शिवक विश्वनाथ, विशेश्वरनाथ, हर, शंकर आदि रूपक सम्बोधनमात्र पूजा नहि, बल्कि मैथिली भाषामे अनूदित आ पुनर्सृजित धार्मिक संवेदनाक संकेत अछि। (पृ. ८६)

एहि अध्यायमे भक्ति पदक अतिरिक्त लौकिक संस्कार, विवाह, पारिवारिक कलह-विरह, लोकव्यवहार आ सांस्कृतिक चिह्नक उल्लेख होइत अछि। ताहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे धार्मिक पदावली आ सामाजिक जीवनक साहित्यिक रूप चित्रित करबाक सम्भावना एक-

दोसरासँ पृथक नहि। ‘महेशशतक’क सौन्दर्य समझबाक लेल देवताक महिमा-वर्णनसँ आगाँ जा कऽ शब्दक स्थानीयता, सम्बोधनक लय, शैव चिन्तन आ लोकानुभवक समावेश देखब आवश्यक अछि।

संक्षिप्तता एहि आलेखक लाभ आ सीमा दुनू अछि। लेखक अल्प स्थानमे विषयक परिचय आ प्रमुख प्रतिमान उपस्थित करैत छथि। मुदा शतकक काव्यरूपक व्यवस्थित अध्ययन करबा लेल शीर्षकमे ‘शतक’क सङ्ख्यात्मक अर्थ, ग्रन्थक पूर्ण पद-सूची, पाठान्तर आ सम्पादित संस्करणक स्थितिक परीक्षण चाही। एहि सबकेँ नहि जोड़ल जाए तँ एकल उदाहरणमे दृष्टिगोचर सौन्दर्य समस्त ग्रन्थक सामान्य धर्म थिक कि नहि, से निर्धारित करब कठिन रहैत अछि।

शिव-उपासना एक पारम्परिक धार्मिक विषय भेला पर सेहो मैथिलीमे ओकर अभिव्यक्ति भाषिक दृष्टिएँ विशिष्ट अछि। संबोधन, स्थानीय अनुष्ठान, गीतक बोल आ संस्कृत काव्यपदक मिश्रणक सूक्ष्म विवेचन एहि आलेखकेँ शैलीगत अनुसन्धान रूपमे विकसित कऽ सकैत अछि। विशेषतः साहित्यिक मैथिली आ अनुष्ठानिक मौखिक मैथिलीक बीच रूपान्तरक प्रमाण देखल जाए तँ भक्ति साहित्यक सामाजिक चरित्र खुलत।

समग्र मूल्याङ्कनमे ‘महेशशतक’ विषयक आलेख एक सङ्केतपूर्ण परिचयात्मक आलोचना अछि। ई पाठककेँ ग्रन्थक धार्मिक-साहित्यिक महत्त्व दिस लऽ जाइत अछि, मुदा पाठसम्पादनक कठोर प्रमाणक समान मानल नहि जा सकैत। संग्रहक विविधतामे ई लघु अध्याय शैवभक्ति-साहित्यक आवश्यक स्थान सुनिश्चित करैत अछि।

९. राधाविरहमे शाक्त तत्त्व | मूल पृ. ९०–१०१

एहि दीर्घ आलेखमे लेखक शाक्त परम्परा आ राधा–कृष्णक विरहकाव्यक अन्तःसम्बन्धपर विचार करैत छथि। प्रस्तावनामे भारतीय शाक्त भावनाक देवी-मातृत्व, करुणा, शक्तिरूपा स्त्री, सृष्टि आ उपासनाक विविध स्वरूपक चर्चा अछि। एहि पृष्ठभूमिमे पण्डित काशीकान्त मिश्र

‘मधुप’क ‘राधाविरह’क पाठ करैत लेखक एकै काव्यक भीतर कृष्णक लीला, राधाक प्रेम आ देवीतत्त्वक सम्भावित समन्वय खोजैत छथि। (पृ. ९०–९२)

मूल आलेखमे मंगलाचरण, शक्तिस्वरूपा आ राधा-कृष्णक रूपावली सम्बन्धी उद्धरणसभ दऽ कऽ व्याख्या कएल गेल अछि। पृ. ९५ पर लेखक विशेष रूपसँ ई प्रतिपादित करैत छथि जे काव्यक नायकरूप कृष्णकेँ एक पक्षमे वैष्णव प्रेमलीलाक केन्द्र मानल जा सकैत अछि, मुदा अन्य स्तरपर शक्ति आ सृष्टिक ब्रह्माण्डीय रूपक सँग सम्बन्धित कएल गेल अछि। एहि तर्कक असल वस्तु धार्मिक सम्प्रदायक नामक योग नहि, काव्यक भीतर प्रतीक आ तत्त्वक पुनर्व्याख्या थिक। (पृ. ९३–९६)

एहि अध्यायक आलोचनात्मक शक्ति अन्तरपाठीय पढ़ाइमे अछि। शाक्त, वैष्णव, पौराणिक आ रस-सम्बन्धी प्रतीक अलग-अलग परम्परासँ आबैत अछि। कविक काव्यविधानमे ओ किन प्रसंगमे परस्पर प्रवेश करैत अछि, तकर परीक्षण पाठ-आधारित भेला पर फलदायक होइत अछि। मुदा देवीक सामान्य उल्लेख वा स्त्रीशक्तिक प्रशंसामात्रसँ शाक्त दर्शनक निश्चित सम्प्रदायगत निष्कर्ष निकालब उचित नहि। शाक्त तत्त्व सिद्ध करबाक लेल शक्तिस्वरूपक विशिष्ट दार्शनिक चिन्ह, काव्यक सन्दर्भ आ कथात्मक कार्यक प्रमाण जोड़ल आवश्यक अछि।

‘विरह’क सामान्य व्याख्या मिलन-अभावक रसभर अनुभूति रूपमे होइत अछि। मुदा एहि काव्यक आलोचनामे विरहकेँ आध्यात्मिक खोज, जीवनक अपूर्णता, पुनःसम्बन्धक आकांक्षा आ ब्रह्माण्डीय एकताक प्रतीक सेहो मानबाक सम्भावना अछि। एहि रूपमे राधा केवल विरहिणी नायिका नहि, अर्थनिर्माणक सक्रिय केन्द्र बनैत छथि। समीक्षाक दृष्टिएँ प्रश्न उठैत अछि जे शाक्त तत्त्वक व्याख्यामे राधाक स्वतंत्र कर्तृत्व कतेक सुरक्षित रहैत अछि आ कतहु ओ केवल शक्तिक दार्शनिक चिह्न बनि नहि जाइत छथि।

धर्मवैचारिक समन्वयक महत्त्व एहि अध्यायक केन्द्रीय उपलब्धि अछि। आगाँक ठोस अनुसन्धानक लेल ‘राधाविरह’क सम्पूर्ण पदक्रम, कथाक प्रसंग-विन्यास, सम्भावित संस्कृत/बंगला/मैथिली अन्तरपाठ, शाक्त शब्दावली आ वैष्णव पदपरम्पराक तुलनात्मक सूची

उपयोगी होयत। एहि साधनसँ लेखकीय अनुभूति आ ग्रन्थगत प्रमाणक परस्पर सन्तुलन अधिक स्पष्ट भऽ सकत।

१०. रामकथागायक: हरेकृष्णलालदास | मूल पृ. १०२–१०७

हरेकृष्णलालदास विषयक अध्याय मैथिली रामकाव्यक परम्परा आ साम्प्रदायिक भक्तिधाराक एक विशिष्ट कड़ी प्रस्तुत करैत अछि। आरम्भमे विद्यापतिक भाषिक-साहित्यिक प्रभाव, रामकथाक प्राचीनता आ मिथिलाक गेय रामकथा-परम्पराक चर्चा अछि। लेखक अनेक मध्यकालीन रामकथा-कविक उल्लेख करैत हरेकृष्णलालदासकेँ एकान्त कविक रूपमे नहि, निरन्तर विकसित परम्पराक भीतर राखबाक प्रयत्न करैत छथि। (पृ. १०२–१०३)

निबन्धक मूल प्रश्न ई अछि जे रामकाव्यक शास्त्रीय धारा आ मिथिलाक लोकव्यवहारक गीतमे कोन सम्बन्ध अछि। संस्कार-गीत, सोहर, बधैया, समदाउन आ अन्य अवसरविशेषक गानमे राम–सीताक कथा लोकपरिवारक भावनासँ जुड़ैत अछि। लेखकक प्रस्तुति एहिसँ परिचित करबैत अछि जे लिखित काव्यक धार्मिक चरित्र गामक गेय परम्परामे जीवित रूप पबैत अछि। काव्यक सामाजिक प्रयोग ओकर शब्दक समान महत्त्वपूर्ण अछि।

पृ. १०७क समीप प्रस्तुत पदावलीमे मैथिली गौरवक भाव स्पष्ट रूपसँ उभरैत अछि। लेखक हरेकृष्णलालदासक योगदानकेँ केवल रामभक्तिक पुनरावृत्ति नहि, सांस्कृतिक भाषा-सम्बन्धी जागरूकताक रूपमे देखबैत छथि। साहित्यिक मूल्याङ्कन लेल ई दूनू पक्ष अलग कऽ देखब आवश्यक अछि: काव्यक शिल्प, भाषा आ कथानककेँ एक कसौटी पर; ओकर लोकप्रचलन, सांस्कृतिक प्रभाव आ भक्तिक संवाहक भूमिकाकेँ दोसर कसौटी पर। दूनू जोड़ल जाए तँ योगदानक अधिक न्यायपूर्ण आकलन होएत।

एहि अध्यायमे परम्परागत कविक क्रमक उल्लेखक संग तुलना कएल गेल अछि। मुदा परम्पराक वंशावलीकेँ कठोर इतिहास रूपमे प्रस्तुत करबा लेल प्रत्येक कविक काल-निर्धारण, मूल पाठक संस्करण तथा रचनात्मक समानताक साक्ष्य चाही। रामकथाक समरूप कथा-तत्त्वक उपस्थिति अपनेआप प्रत्यक्ष साहित्यिक प्रभाव सिद्ध नहि करैत। भाषिक उधारी,

पदरचना, कथानक-भेद आ समकालीन सन्दर्भकेँ अलग-अलग परखल जाए तँ एहि शृङ्खलाक इतिहास विश्वसनीय बनत।

संक्षेपमे ई आलेख मैथिली रामकाव्यक गेय आ साम्प्रदायिक धारा दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि। लेखकक रचनाकार-विशेषक परिचय मैथिली साहित्येतिहासक उपेक्षित फाँक भरबाक दिशा दैत अछि, यद्यपि तकर पूर्ण प्रमाणिक चित्र गढ़बा लेल संग्रहित पद, मुद्रित संस्करण आ मौखिक प्रस्तुतिक तुलनात्मक सम्पादन आवश्यक अछि।

११. डॉ. शैलेन्द्रमोहनझाक बाल साहित्य | मूल पृ. १०८–११३

बालसाहित्य सम्बन्धी अध्याय आयु-विशिष्ट साहित्यबोधक प्रश्नसँ आरम्भ होइत अछि। लेखक बालकक ज्ञान-विकास, सहज ग्रहणक्षमता आ साहित्यक शिक्षणात्मक-सृजनात्मक भूमिकाक बीच सम्बन्ध जोड़ैत छथि। पृ. १०८ पर मैथिली बालसाहित्यक मौखिक परम्परा, संस्कृत कथासाहित्यक प्रेरणा आ साहित्यिक लेखनक विकासक सन्दर्भ रखल गेल अछि। एहि आधार पर शैलेन्द्रमोहन झाक योगदानकेँ पुस्तकक केवल एक लेखकक परिचयक रूपमे नहि, मैथिली बालपाठकक अलग सांस्कृतिक स्थान स्वीकृत करबाक प्रयास मानल जा सकैत अछि।

मूल आलेखमे शैलेन्द्रमोहन झाक लेखनक विविध विधा आ विशिष्ट कृतिनामक उल्लेख भेटैत अछि। पृ. १०८ पर ‘प्रतिभा’, ‘मधुश्रावणी’ आदि रचनाक नाम तथा उपन्यास, निबन्ध, कथा-कविताक क्षेत्रक संकेत देखाइत अछि। एहिसँ लेखकक आलोचनात्मक आग्रह स्पष्ट होइत अछि जे बालसाहित्य लिखनिहारक व्यापक साहित्यिक संस्कारकेँ ओहि रचनाक सौन्दर्य-निर्माणसँ अलग कऽ नहि देखल जा सकैत। बालोपयोगिता केवल विषयक सरलता नहि; कल्पनाक गाम्भीर्य, भाषाक प्रवाह आ आयुवर्गानुसार प्रस्तुति सेहो अछि।

बालपाठक विषयक अध्ययनमे ‘शिक्षाप्रद’ आ ‘साहित्यिक’ गुणकेँ समानार्थी मानब उचित नहि। कोनो कथा सदाचारक उपदेश दऽ सकैत अछि, मुदा पात्रक स्वायत्तता, हास्य, जिज्ञासा आ कलात्मक अनुभव न होए तँ ओ साहित्यिक अर्थमे सीमित रहि जाइत अछि। एहि कारण

कृतिविशेषक विश्लेषणमे कथानकक गति, संवादक बोलचाल, कल्पना-तत्त्व, असम्भवक उपयोग तथा बालपाठकक सक्रिय सहभागिताक परीक्षण विशेष उपयोगी होएत।

मैथिली बालसाहित्यक भाषिक प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। घरक बोली, विद्यालयक पाठ्यक्रम आ मुद्रित साहित्यिक भाषा बीच दूरी रहैत अछि। लेखकक कृतिसभ भाषा-अर्जनक सेतु कोना बनैत अछि, तकर जाँच पाठक-समूहक वास्तविक प्रतिक्रियासँ कएल जा सकैत अछि। ग्रामीण/शहरी, पहिल पीढ़ीक शिक्षार्थी/नियमित पाठक, आ भिन्न आयुवर्गक अनुभव अलग रहि सकैत अछि। एहि सम्भावित विविधताकेँ मान्यता देब बालसाहित्यक आधुनिक आलोचनाक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता अछि।

आलेखक योगदान मैथिली बालसाहित्यकेँ उच्च साहित्यिक चर्चा योग्य क्षेत्र मानब अछि। भावी अध्ययनमे अलग-अलग कृतिसँ पर्याप्त उदाहरण, प्रकाशन-वर्ष, लक्षित आयुवर्ग, चित्रांकन आ पाठकीय अभिग्रहणक प्रमाण जोड़ल जाए तँ शैलेन्द्रमोहन झाक बालसाहित्यक विशिष्टता अधिक ठोस ढङ्गे निर्धारित होएत।

१२. यात्री साहित्यमे युगबोध | मूल पृ. ११४–१२१

‘यात्री साहित्यमे युगबोध’ नामक निबन्ध वैद्यनाथ मिश्र ‘यात्री’क मैथिली रचना आ ओकर सामाजिक चिन्ताक मूल्याङ्कन करैत अछि। आरम्भमे ‘पारो’, ‘नवतुरिया’ आ ‘बलचनमा’ नामक उपन्यास तथा ‘चित्रा’, ‘पत्रहीन नग्न गाछ’ नामक कविता-संग्रहक उल्लेख अछि। लेखक यात्रीक रचनाकेँ विचार, भाषा आ शिल्पक निकष पर पढ़बैत हुनक जनपक्षधरता आ समाजपरक सरोकारक पक्ष उजागर करैत छथि। (पृ. ११४)

निबन्धक प्रमुख धारणा ‘युगबोध’ अछि। एहि पदक अर्थ केवल समसामयिक घटनाक नाम गनब नहि, बल्कि रचनाक भीतर विद्यमान वर्गगत सम्बन्ध, शोषणक अनुभव, भाषिक परिवर्तन, सामाजिक चेतना आ मानवीय संघर्षक प्रति संवेदनशीलता बुझब अछि। यात्रीक साहित्यक लोकसम्बद्ध शब्दकायाक महत्त्व एतय अछि जे कविता आ कथा पाठककेँ सामाजिक संरचनाक

ठोस वस्तुस्थिति दिस मोड़ैत अछि। लेखकक प्रस्तुति परम्परागत साहित्यिक गौरवसँ अलग सामाजिक प्रश्नक स्पष्ट आग्रह रखैत अछि।

यात्रीक हिन्दी आ मैथिली रचनाजगतक परस्पर सम्बन्ध अध्ययन लेल विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। एके लेखकक भाषानुसार रचनाधर्म, पाठकवर्ग आ विषय-विन्यास बदलि सकैत अछि। लेखमे यात्रीक प्रसिद्धि आ मैथिली लेखनक योगदानक सम्बन्धक उल्लेख पाओल जाइत अछि; एहि तथ्यकेँ व्यापक तुलनात्मक अध्ययनक आधार बनाओल जा सकैत अछि। मुदा दू भाषामे एकसमान विचार उपस्थित भेला सँ शैली, कथावाचक वा भाषिक सांकेतिकता एके होयत, ई पहिने सँ नहि मानल जा सकैत अछि।

प्रगतिशील दृष्टिक परिचर्चामे पाठक जीवनानुभवक सघनता आ कलात्मक संरचनाकेँ बराबर महत्त्व देब आवश्यक अछि। समाजक प्रति प्रतिबद्धता महत्वपूर्ण साहित्यिक गुण भऽ सकैत अछि, तथापि कथा-स्थितिक आन्तरिक विरोध, पात्रक बहुआयामीपन, भाषाक व्यञ्जना आ छन्द-ध्वनिक निर्मिति अलग आलोचनात्मक प्रश्न अछि। जँ राजनीतिक आशयकेँ समस्त साहित्यिक अर्थ मानि लेल जाए, तँ रचनाक जटिलता घटि जाइत अछि। एहि कारण ‘युगबोध’केँ विचार आ कलाक परस्पर अनिवार्य संवादक रूपमे पढ़ब फलदायक अछि।

एहि आलेखक उपलब्धि मैथिली आधुनिकताक जनोन्मुख स्वरक चिन्हांकन अछि। भावी अनुसन्धाता यात्रीक चुनल उपन्यास/कवितामे पात्र, भाषिक स्तर, कथन-दृष्टि आ पाठकीय प्रभावक पृथक उदाहरणसँ तर्क जाँचि सकैत छथि। एहि प्रकार पुस्तकक निबन्ध व्यापक साहित्येतिहासिक व्याख्याक विश्वसनीय प्रवेशबिन्दु बनैत अछि।

१३. किरणजीक ‘सत्य सन्देश’ | मूल पृ. १२२–१२८

एहि निबन्धमे काञ्चीनाथ झा ‘किरण’क साहित्यिक व्यक्तित्व आ ‘सत्य सन्देश’ पत्रक महत्त्व पर विचार प्रस्तुत भेल अछि। आरम्भमे लेखक किरणजीक कविता, कथा, बालकथा, महाकाव्य, एकांकी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, आलोचना आ पत्रकारितासम्बद्ध विस्तृत कर्मभूमिक उल्लेख करैत छथि। एहिसँ ‘सत्य सन्देश’केँ केवल पत्रक शीर्षक नहि, मैथिली

भाषा-साहित्यक सार्वजनिक विमर्शक एक मंचक रूपमे पढ़बाक दिशा भेटैत अछि। (पृ. १२२–१२३)

पत्रिका-विमर्शमे लेखक सामाजिक प्रश्न, भाषिक चेतना आ सम्पादकीय दृष्टिक महत्त्व पर विशेष बल दैत छथि। पृ. १२५ पर ‘सत्य सन्देश’क लेखनमे मैथिलीक उन्नति आ सामाजिक उत्तरदायित्वसँ सम्बन्धित कथनक चर्चा अछि; एतय सर गंगानाथ झा, स्वामी विवेकानन्द, होमी मोदी आ महावीर प्रसाद द्विवेदीक विचारसन्दर्भ देल गेल अछि। ई समावेश सांस्कृतिक-भाषिक अभियानकेँ व्यापक भारतीय वैचारिक परम्परासँ जोड़बाक चेष्टा देखबैत अछि।

एहि अध्यायक विशेष महत्त्व संपादकीय गद्यकेँ साहित्यिक इतिहासक प्रमाण रूपमे ग्रहण करब अछि। सम्पादकीय लेख तत्कालीन पाठक-समाजसँ संवाद करैत अछि, मत गढ़ैत अछि आ संस्थागत प्रश्नकेँ सार्वजनिक बनबैत अछि। मुदा सम्पादकीयक स्वर, पत्रक प्रकाशनकाल, सम्पादन-संरचना, पाठक-पहुँच आ वास्तविक सामाजिक प्रभाव स्वतंत्र शोधवस्तु अछि। ‘पत्रमे प्रस्तावित’ आ ‘समाजमे कार्यान्वित’ बीच उचित भेद कएल जाए तँ पत्रिकाक महत्त्वक आकलन अधिक प्रमाणसंगत होएत।

मूल निबन्धक तर्कमे मातृभाषा, भाषिक सम्मान आ मिथिलाक शैक्षिक-सांस्कृतिक जीवनक चिन्ता प्रमुख अछि। भाषा-आन्दोलनक इतिहास अध्ययन करैत काल घोषणापरक लेखन आ वास्तविक संस्थागत उपलब्धिक अलग-अलग समयरेखा तैयार करब उपयोगी अछि। पत्रक अंकवार सामग्री, प्रकाशनक अन्तराल, समाचार, विज्ञापन, पत्राचार, पाठकक प्रतिक्रिया आ सम्पादकीय परिवर्तनक अनुक्रम—एहि सभसँ ‘सत्य सन्देश’क सम्यक इतिहास बनि सकैत अछि।

समग्रतः लेखक काञ्चीनाथ झा ‘किरण’केँ साहित्यकार आ सार्वजनिक भाषा-चिन्तकक संयुक्त रूपमे देखबैत छथि। ई अध्याय मैथिली पत्रिका-इतिहास आ आधुनिक भाषिक अस्मिताक अनुसन्धानमे प्रवेशक अवसर दैत अछि। अगिला चरणमे विशिष्ट अंकक कागजी

अथवा डिजिटल प्रतिक संग तर्क मिलान करब आवश्यक होयत, जाहिसँ व्यक्तिक प्रतिष्ठा आ पत्रक ऐतिहासिक योगदानक बीच नाप-तौल सम्भव होयत।

१४. प्रतिज्ञापाण्डव: कवि ओ काव्य | मूल पृ. १२९–१४२

बबुआजी झा ‘अज्ञात’क ‘प्रतिज्ञापाण्डव’ पर केन्द्रित ई पुस्तकक साहित्य खण्डक सर्वाधिक विस्तृत विवेचनसभमे सँ एक अछि। लेखक आरम्भमे काव्यक रचनाकारक जीवनवृत्त, पूर्ववर्ती कृतिसभ तथा साहित्य अकादेमी सम्मानक सन्दर्भ दैत छथि। मूल पाठमे ‘प्रतिज्ञापाण्डव’क प्रकाशन-वर्ष १९९५ आ कविक जीवनकाल १९०४–१९९६ बताओल गेल अछि; ई सभ जानकारीकेँ एतय मूल आलेखक विवरण मानि उद्धृत कएल गेल अछि। साहित्य अकादेमीक आधिकारिक सूची मे २००१क मैथिली पुरस्कार एहि कृति आ बबुआजी झा ‘अज्ञात’क नाम दर्ज अछि। (पृ. १२९; अकादेमीक पुरस्कार-सूची)

एहि निबन्धक मूल विषय कवि आ काव्यक परस्पर सम्बन्ध अछि। महाभारत-संबद्ध कथानकक आधार पर आधुनिक मैथिली महाकाव्यक रचना कएल जाए तँ परम्परागत आख्यानक भाषा, आधुनिक नैतिक प्रश्न आ पात्रक भावनात्मक पुनर्संयोजन एकेसाथ सोझाँ अबैत अछि। ग्रन्थकारक विश्लेषणमे कविक जीवनानुभव, शास्त्रीय संस्कार, भाषा-सम्पदा आ प्रतिज्ञाक कथा-नैतिक महत्त्वकेँ जोड़बाक प्रयास देखाइत अछि। एहि सन्दर्भमे काव्यकेँ महज प्राचीन कथाक पुनर्कथन मानब अपर्याप्त होएत।

‘प्रतिज्ञा’ नायकक निजी वचनमात्र नहि, सार्वजनिक दायित्व, सम्बन्धक तनाव आ सामाजिक आचरणक नैतिक निकषक रूपमे सेहो व्याख्यायित भऽ सकैत अछि। एहि सम्भावित अर्थक्षेत्रक पाठमूलक परीक्षण करैत काल किन घटनामे प्रतिज्ञाक उल्लेख अछि, पात्रक निर्णयकेँ कथावाचक कोन अर्थ दैत अछि आ काव्यक अन्तिम निष्कर्ष की होइत अछि —एहि प्रश्नसभकेँ अलग रखब चाही। लेखकक प्रशंसापरक मूल्याङ्कनकेँ पाठक स्वयंसिद्ध अन्तिम निर्णय नहि, मूल महाकाव्यपाठ दिस पठेबाक आलोचनात्मक आमन्त्रण मानि पढ़ि सकैत छथि।

पृ. १२९–१४२क विस्तार ई संकेत दैत अछि जे लेखक अन्य लघु आलेखक अपेक्षा एतय जीवनी, रचनाक स्रोत, पदावली आ आलोचनात्मक मूल्याङ्कनक लेल बेसी स्थान देलनि अछि। प्रशंसाक भाषाक संग प्रमाणक प्रकारपर ध्यान देब आवश्यक अछि: कविक जन्म-वर्ष वा प्रकाशन-वर्ष ग्रन्थ-सूचनासँ पुष्ट होइत अछि, काव्यक सौन्दर्य पाठ-विश्लेषणसँ, आ समाजपर प्रभाव पाठक-इतिहाससँ। एहि भिन्न-भिन्न कसौटीक मिश्रण बिनु भेद केलासँ महाकाव्यक अकादमिक मूल्याङ्कन एकपक्षीय भऽ सकैत अछि।

महाकाव्यक आलोचना लेल कथा-विन्यास, सर्ग-संरचना, छन्द, संस्कृत/मैथिली शब्दप्रवाह, संवाद, स्त्रीपात्रक भूमिका तथा पौराणिक स्रोतसँ भिन्नताक व्यवस्थित तुलनात्मक सूची विशेष उपयोगी अछि। एहि प्रकारक विश्लेषण कृतिमे मौलिकता केतए अछि आ परम्परा केतए, से देखबैत अछि। निबन्धक उपयोगिता एहि शोधक दिशा चिन्हित करबामे अछि; पूर्ण पाठालोचनाक स्थान पर केवल गौरवगाथा मानि लेब ओकर महत्त्व घटा देत।

समग्रतः ‘प्रतिज्ञापाण्डव’ सम्बन्धी आलेख साहित्यकार-जीवनी आ ग्रन्थविवेचनकेँ एक सूत्रमे आनैत अछि। पुस्तकबाह्य पुष्ट कएल जा सकैत २००१क सम्मान एहि कृतिको मैथिली साहित्येतिहासमे सुस्पष्ट स्थान दैत अछि; मुदा सम्मान अपनेआप सौन्दर्य-निर्णयक अन्तिम प्रमाण नहि। एतय विवेचित काव्यक शिल्प आ प्रतिज्ञाक नैतिक प्रश्नक स्वतन्त्र आलोचना—यही आगाँक शोधक महत्त्वपूर्ण दिशा अछि।

तेसर खण्ड: शब्द-सम्पदा

१५. बँसकरम सम्बन्धी शब्दावली | मूल पृ. १४५–१६०

अन्तिम खण्ड पुस्तकक विषयगत स्वरूपकेँ निर्णायक रूपेँ विस्तार दैत अछि। ‘बँसकरम सम्बन्धी शब्दावली’क आरम्भ भारतीय शब्दब्रह्मक धारणा आ भाषिक सम्पदाक सांस्कृतिक महत्त्वक चर्चासँ होइत अछि। लेखक कहैत छथि जे शब्दक संकलन, व्याख्या आ अर्थनिर्णय भाषा-अध्ययनक आवश्यक प्रक्रिया अछि, कारण समाजक दैनिक श्रमक भीतर असंख्य अर्थविशेषक शब्द जन्मैत अछि आ उपयोग बदललासँ ओझल सेहो भऽ सकैत अछि। एहि

दृष्टिसँ व्यवसायगत शब्द केवल वस्तुक नाम नहि, कार्यक विधि, साधन, हस्तकौशल आ सामाजिक अनुभवक संचय अछि। (पृ. १४५)

शब्दावलीक संरचना केवल वर्णक्रमक सूची नहि अछि। पाठमे बाँसक प्रकार, शारीरिक भाग, काटब-छाँटबक विधि, औजार, आधनिर्मित सामग्री, टोकरी-भाण्ड-जैहन उत्पादन तथा कार्यावस्थाक सूक्ष्म भेदक नाम दऽ कऽ अर्थ स्पष्ट कएल गेल अछि। एहि कारण एके सामान्य वस्तु लेल अनेक प्रसंग-विशेषक पद भेटैत अछि। जँ शब्दक उच्चारणक एकाधिक रूप अछि तँ लेखक विकल्परूपसँ ओकर उल्लेख करैत छथि। एहि परम्पराक मूल्य ई अछि जे व्यावसायिक समुदायक भीतर स्पष्ट अर्थविभाजन लिखित भाषिक संग्रहमे दृश्य भऽ जाइत अछि। (पृ. १४६–१५९)

पृ. १५२ पर ‘बँसकरमक उत्पादन सम्बन्धी शब्दावली’ नामसँ अलग उपविभाग प्रारम्भ होइत अछि। ओहि भागमे बँसीसँ बनैत गृहस्थी उपयोगक सामान, बखारी-जैहन भण्डारण-रूप, कूच/कूचीसँ सम्बन्धित काम, लघु आकारभेद आ निर्माण-कौशलक विशिष्ट पदक विवेचन अछि। ई सामग्री दस्तकारीक कार्यशास्त्र समान महत्त्वपूर्ण अछि। शब्दक अर्थ कतेको बेर वस्तुक आकार मात्र नहि, ओकर उपयोग, बनाबयक चरण आ कुशल श्रमिकक दृष्टिसँ निर्धारित होइत अछि। एहि कारण शब्दकोशक सामान्य एक-पंक्तिक समानार्थी विवरणक तुलना मे व्याख्यात्मक विवेचन बेसी उपयोगी ठहरैत अछि।

पृ. १५९ धरि पहुँचैत स्थानीय उपकरण, बाँसक पट्टी, बन्धन, जोड़ आ फिनिशिंगक तकनीकी पदक विवेचन चलैत अछि। वस्तुक रूप-परिवर्तनक संग शब्दो बदलैत अछि; एतय प्रक्रिया-केन्द्रित अर्थवर्गीकरणक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि। उदाहरणतः कटाइक पहिल रूप, महीन पट्टी, बुनाइक अलग-अलग अवस्था आ तयार वस्तु लेल प्रयुक्त अलग पदक क्रमक तुलना कएल जाए तँ शब्दसम्पदा माने कारीगरक कार्यज्ञानक संरचना पाओल जाइत अछि। एकटा मानक शब्दकोश एहन रूपविभेदकेँ सहजहि समेटि नहि सकैत अछि; एहि कारण क्षेत्रविशेषक व्याख्यात्मक कोश महत्त्वपूर्ण अछि।

शब्दवैज्ञानिक दृष्टिसँ एहि खण्डक आलोचना करैत काल तीन भेद आवश्यक अछि: उच्चरित रूप, अर्थभेद आ वस्तुगत सन्दर्भ। समान वस्तुक अलग नाम वास्तवमे भौगोलिक बोलीभेद अछि, पीढ़ीगत रूपान्तर अछि, कि शिल्पक अलग अवस्थाक संकेत, से बिना क्षेत्रीय अन्तर्वार्ता केने निश्चित नहि कएल जा सकैत अछि। एही प्रकार एकर हिन्दी अथवा संस्कृत समानार्थी दऽ देबासँ स्थानीय पदक ध्वनि, लिंग, वचन, कारक-प्रयोग आ व्यावसायिक अर्थक पूर्ण जानकारी नहि भेटैत। लेखकक संग्रह एहि सबपर भविष्यक भाषावैज्ञानिक कार्यक आधार बनि सकैत अछि।

एहि शब्दावलीक महत्त्व समाजशास्त्रीय दृष्टिएँ सेहो गहिर अछि। बाँसक काम करनिहार समुदायकेँ ज्ञान-सृजनक सक्रिय धारक मानब, ओहि ज्ञानकेँ लिखित भाषाक मुख्य सम्पदाक अङ्ग बनायब, साहित्यक केन्द्र आ परिधिक सम्बन्ध पर पुनर्विचार करबैत अछि। उच्च साहित्यिक कोशमे नहि भेटनिहार पद एहि व्यवसायमे अत्यन्त आवश्यक होइत अछि। शब्दक सामाजिक प्रतिष्ठा ओकर उपयोगकर्ताक प्रतिष्ठासँ अलग नहि; एहि अर्थमे व्यवसायगत शब्दसंग्रह भाषिक सम्मानक प्रश्न सेहो उठबैत अछि।

आगाँक विस्तारित अनुसन्धानमे प्रत्येक शब्द लेल देवनागरीक सामान्यीकृत मूलरूप, स्थानीय उच्चारण, प्रयोजन-परिभाषा, प्रयुक्त गाम/जिला, वस्तुक चित्र, प्रक्रिया-क्रम, उदाहरण-वाक्य, व्याकरणिक लक्षण, वैकल्पिक नाम, रूपान्तर आ अन्तर्वार्ताकारक तिथि अंकित कएल जाए तँ ई खण्ड डिजिटल भाषिक दस्तावेजीकरणक आधार बनि सकैत अछि। एतय एकटा महत्त्वपूर्ण नैतिक प्रश्न सेहो अछि: कारीगरक ज्ञानकेँ संकलित करैत समय ओहि समुदायकेँ नाम, श्रेय आ सामग्री पर पहुँच देब आवश्यक होयत।

समग्र पोथीमे ‘बँसकरम’क शब्दसंग्रह मूलभूत अनुसंधान-संकेत दैत अछि: साहित्यिक भाषा केवल ग्रन्थक शब्दसँ नहि, श्रमक अनुभवसँ सेहो बनैत अछि। लोकखण्डमे जे समाजक गीत आ गाथाक रूपमे परिचय भेटल छल, अन्तिम खण्डमे ओएह समाजक हस्तकौशल आ अर्थभाषा बनि सोझाँ अबैत अछि। एहि दूनूक जोड़ पुस्तकक सर्वाधिक विशिष्ट वैचारिक उपलब्धिसभमे सँ एक अछि। (पृ. १४५–१६०)

समेकित आलोचनात्मक विवेचन

१. लोकसाहित्यसँ भाषाविज्ञान धरि: समग्र संकलनक तर्क

पोथीक तीन-खण्डीय बनावट आलोचनाक दृष्टिएँ आकस्मिक नहि। पहिल खण्ड जखन लोकजीवनक कथा, गीत, पर्व आ गाथाकेँ अर्थ दैत अछि, दोसर खण्ड लिखित रचनाकार, ग्रन्थ आ पत्रिकारूप सार्वजनिक साहित्यक विश्लेषण करैत अछि। तेसर खण्डमे लोकजीवनक श्रमविशेषक शब्दावलीकेँ भाषा-ज्ञानक संसाधन मानल जाइत अछि। एहि क्रमसँ संस्कृति, रचना आ भाषा बीच सुस्पष्ट एकटा सम्बन्ध उभरैत अछि: समाज प्रतीक रचैत अछि; साहित्य ओकर पुनर्गठन करैत अछि; शब्दसम्पदा ओकर सूक्ष्म अनुभवक नामकरण करैत अछि।

तथापि ग्रन्थक एकता केवळ लेखकक विस्तृत रुचि थिक, ई कहब पर्याप्त नहि। अलंकार-विश्लेषणक कसौटी, लोकगाथाक सामाजिक पठन आ पारिभाषिक शब्दावलीक अभिलेखनक कसौटी अलग अछि। एहि विभिन्न पद्धतिक सहअस्तित्व ग्रन्थक शक्ति अछि, मुदा पाठकसँ प्रत्येक अध्यायक प्रमाणक प्रकृति बदलि-बदलि पढ़बाक अपेक्षा सेहो करैत अछि। एक ठाम गीतक पद साक्ष्य अछि, दोसर ठाम प्रकाशित ग्रन्थक कथानक, तेसर ठाम औजार वा उत्पादक नाम। प्रमाणक एहि विविधताकेँ स्पष्ट कएलासँ समग्र पुस्तकक अध्ययन अधिक न्यायसंगत होइत अछि।

ग्रन्थक शीर्षकमे ‘लोक’, ‘साहित्य’ आ ‘शब्द-सम्पदा’क त्रयी संक्षेपमे एकटा सामाजिक भाषादर्शन बनबैत अछि। लोक बिना भाषा-समाज अधूरा, साहित्य बिना अर्थक कलात्मक विस्तार सीमित आ दस्तकारीक शब्द बिना जीवनक तकनीकी अनुभव अदृश्य रहि जाइत अछि। एहि अर्थमे संग्रहक विशिष्टता एक लेखनविधाक भीतर नहि, अलग-अलग विधाक बीच संवादक सम्भावनामे अछि।

२. प्रमाण, स्रोत आ व्याख्याक अन्तर

आलेखसभक अपन-अपन प्रकृति विचारक समुचित मूलाङ्कन लेल ‘स्रोत’ आ ‘व्याख्या’क भेद राखब आवश्यक अछि। विद्यापतिक उगना-आख्यान लोकस्मृतिक स्रोत अछि; ओ

ऐतिहासिक घटना प्रमाणित करबाक प्रत्यक्ष अभिलेख नहि। दीना–भद्रीक गीत मुसहर समुदायसँ सम्बद्ध सामाजिक अनुभवक साहित्यिक साक्ष्य अछि, मुदा प्रत्येक प्रसंगक ऐतिहासिक काल स्वतन्त्र जाँच माँगैत अछि। सामा–चकेबाक प्रदर्शन लोकनाट्यक पाठसँ अधिक व्यापक सामाजिक क्रिया थिक। ‘प्रतिज्ञापाण्डव’क मूल्य-निर्णयक लेल महाकाव्यक वास्तविक रचनाविधान देखब पड़ैत अछि।

लेखकक आलोचनामे भावानुभूति आ पाठक सम्मानक भाव स्पष्ट अछि। एहिसँ उपेक्षित कृति आ परम्पराकेँ दृश्यता भेटैत अछि। मुदा शोधमूलक आलोचनाक कसौटी पर प्रशंसाक दावाक आधार, चयनक मानदण्ड आ वैकल्पिक व्याख्याक सम्भावना प्रत्येक स्थले स्पष्ट होयबाक चाही। कोनो काव्यक सराहना वा कोनो लोकगाथाक सांस्कृतिक गरिमा एकर आलोचनात्मक परीक्षणक विकल्प नहि। उलटे सशक्त आलोचना ओहि कृतिक प्रति अधिक गम्भीर सम्मानक प्रमाण थिक।

पुस्तकक अनेक आलेख एक समयक लेखकीय रुचि, संकलन-परिस्थिति आ उपलब्ध सन्दर्भक द्योतक अछि। वर्तमान समयमे प्रकाशित ग्रन्थसूची, हस्तलिखित सामग्री, ध्वनि-अभिलेख आ डिजिटल स्रोतक सहज उपलब्धता प्रश्नक नव उत्तर देबाक अवसर दैत अछि। तथापि पिछला पाठकेँ आधुनिक साधन उपलब्ध न रहबाक आधार पर सरलीकृत रूपसँ खारिज करब उचित नहि; ओकर समकालीन उपलब्धि आ अद्यतन अनुसंधानक आवश्यकता अलग-अलग मापब अधिक न्यायपूर्ण अछि।

३. जाति, श्रम आ भाषा: उपेक्षित ज्ञानक मान्यता

दीना–भद्री आ बँसकरम शब्दावलीकेँ एक-संग पढ़ब पोथीक महत्वपूर्ण सम्भावना खोलैत अछि। पहिल अध्याय श्रमिक समुदायक वीरगाथा आ सामूहिक स्मृतिक प्रसंग उपस्थित करैत अछि; दोसर व्यावसायिक ज्ञानक सूक्ष्म भाषिक वर्गीकरण सोझाँ अनैत अछि। दुनू बतबैत अछि जे इतिहासक पाठ केवल राजदरबार अथवा महाकविक कथनमे सुरक्षित नहि, सामान्य श्रमक कथन, गीत आ औजारक भाषामे सेहो निहित रहैत अछि।

श्रमक शब्दकोश सामाजिक पदानुक्रमक दस्तावेज सेहो भऽ सकैत अछि। कोन वस्तु बनाबयवाला समुदाय अपना कामक बारीक विभागकेँ की कहैत अछि, कोन नाम बाहरी समाज देलक, आ कोन पद समयक संग हरा रहल अछि—एहि प्रश्नसभमे भाषिक आ सामाजिक इतिहास एकेसाथ उपस्थित अछि। श्रमिक समुदायकेँ ‘लोकसामग्री’क निष्क्रिय स्रोत नहि, स्वामित्वयुक्त ज्ञानधारक मानल जाए तँ भविष्यक अनुसन्धान अधिक नैतिक आ विश्वसनीय बनत।

४. स्त्रीस्वर, सांस्कृतिक अनुष्ठान आ सामाजिक आलोचना

सामा–चकेबा, गहबर गीत, नारी शिक्षा आ ‘राधाविरह’क अलग-अलग पाठ एकत्र करब स्त्रीस्थितिक बहुस्तरीय चित्र देखबैत अछि। लोकपर्वमे स्त्रीक सांस्कृतिक सहभागिता, गीतमे स्त्रीक सामूहिक स्वर, आधुनिक कथामे शिक्षाक आकांक्षा तथा भक्तिकाव्यमे राधाक प्रेम-शक्ति—एहि चारि सन्दर्भमे ‘स्त्री’ एकरूप पात्र नहि छथि। एकेक विधामे अनुभवक भाषा, सामाजिक प्रतिबन्ध आ अभिव्यक्तिक स्थिति बदलैत अछि।

एहि विषयकेँ केवल देवी-पूजा अथवा आदर्श स्त्रीक स्तुति धरि सीमित नहि रखल जाए। देवीक उच्च प्रतिष्ठा आ जीवित स्त्रीक शिक्षासम्बन्धी अवसरमे अन्तर होयब सम्भव अछि; लोकगीतक गेय स्वतन्त्रता आ परिवारक निर्णयसत्ता सेहो एक नहि। एहन विरोधाभासक अध्ययन एहि पुस्तकसँ प्रेरित महत्त्वपूर्ण अनुसन्धान बनि सकैत अछि। एहि रूपमे पुस्तकक अलग-अलग आलेखक अन्तर्सम्बन्ध पाठककेँ समाजक आदर्श आ व्यवहारक दूरी पढ़बाक सामर्थ्य दैत अछि।

५. मैथिली आलोचनाक भाषा आ शैली

लेखकक मैथिली गद्य शास्त्रीय परिभाषा, लोकप्रचलित पद आ साहित्यिक विवेचनक समावेश करैत अछि। लोकविषयक आलेखमे ‘गाथा’, ‘गीत’, ‘समन्वय’ आदिक वर्णनात्मक प्रयोग आ साहित्य-विषयक आलेखमे ‘अलंकार’, ‘रस’, ‘युगबोध’, ‘भक्ति’ आदिक विश्लेषणात्मक प्रयोग अलग पहचान रखैत अछि। अन्तिम शब्दावली एही भाषिक क्षितिजकेँ औजार, आकृति

आ उत्पादनक नाम धरि विस्तार दैत अछि। एहि प्रकार पुस्तकक भाषा विषयक अनुसार रूप बदलैत अछि; ई शैलीगत विविधता निबन्ध-संग्रहक वास्तविक विशेषता अछि।

अनेक स्थले संस्कृतनिष्ठ दार्शनिक शब्दप्रवाह आ मैथिलीक सहज कथात्मक वाक्य एकसाथ भेटैत अछि। एहि मिलनक लाभ तात्त्विक सूक्ष्मता अछि, मुदा पाठकपर अर्थभार बढ़यबाक सम्भावना सेहो अछि। प्रकाशित सम्पादनमे पादटिप्पणी, कठिन पदक संक्षिप्त शब्दार्थ आ सन्दर्भ-सूची जोड़लासँ पाठकक पहुँच बढ़ि सकैत अछि। अर्थनिष्ठ सुधारक नाम पर लोकपद अथवा उद्धृत गीतक मौलिक उच्चारण बदलि देब उचित नहि; शोधक सुलभता आ बोलीक प्रामाणिकता दुनू महत्त्वपूर्ण अछि।

पद्धतिगत उपलब्धि आ अनुसन्धानी प्रश्न

उपलब्धि १ — विषयक विस्तार। ग्रन्थ लोकविधा, विशिष्ट साहित्यिक पाठ, रचनाकार-समालोचना, भाषा-आन्दोलन आ पारिभाषिक शब्दकोशकेँ एके पुस्तकमे अध्ययनक योग्य बनबैत अछि। एहि कारण संकलनक सांस्कृतिक दायरा एकल लेखक-जीवनीसँ बहु व्यापक अछि।

उपलब्धि २ — पाठक निकटता। लोकगाथा आ गीतविषयक अध्यायमे गीत-पाठक सन्दर्भ लेखकक विवेचनकेँ केवल अमूर्त विचार नहि रखि विशिष्ट भाषिक सामग्रीसँ जोड़ैत अछि। अध्येता एहि आधार पर मूल पाठ दिस लौटि अपन व्याख्या जाँचि सकैत छथि।

उपलब्धि ३ — भाषिक संरक्षण। बँसकरम सम्बन्धी तकनीकी पदक विवेचन समाजक हस्तकौशल आ मैथिलीक समृद्ध अर्थभेदक दस्तावेजीकरणक दिशा खोलैत अछि। स्थानीय ज्ञानक सम्मान एकरा विशिष्ट बनबैत अछि।

प्रश्न १ — मौखिक स्रोतक विवरण। गीत आ गाथाक पाठसँ जखन व्यापक सामाजिक निष्कर्ष निकालल जाए, तँ गायन-स्थल, संकलन-तिथि, गायक/वाचक, अवसर आ पाठान्तरक विवरण अनुसन्धानकेँ सुदृढ़ करैत अछि।

प्रश्न २ — ऐतिहासिक दावाक पुष्टिकरण। जीवनी, कृति-प्रकाशनक वर्ष, ऐतिहासिक आख्यान आ पुरस्कारक प्रसंग साहित्यिक तर्कसँ अलग दस्तावेजी आधार माँगैत अछि। जतय सम्भव होए, प्रकाशकक पृष्ठ आ संस्थाक आधिकारिक सूचीसँ मिलान आवश्यक अछि।

प्रश्न ३ — सिद्धान्त आ पाठक सन्तुलन। अलंकार, शाक्त तत्त्व, युगबोध अथवा राष्ट्रीय समन्वय जकाँ श्रेणी पूर्वनिर्धारित होइत अछि; ओकरा निष्कर्ष बनयबाक पहिने कृतिभित्रक समर्थक आ विरोधी दूनू उदाहरण देखब उचित अछि।

प्रश्न ४ — समाजक प्रतिनिधित्व। लोकजीवनक अध्ययनमे स्त्री, जाति, श्रम, समुदाय आ पीढ़ीगत अन्तरक स्वरकेँ एक सामूहिक मिथिला-स्वरमे विलीन नहि कएल जाए। साझा परम्पराक भीतर विविधताक मान्यता इतिहासक सूक्ष्मता बढ़बैत अछि।

अन्तिम मूल्याङ्कन

‘लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा’केँ एकर तीन विशिष्ट योगदानक कारण गम्भीरतासँ पढ़बाक आवश्यकता अछि। पहिल, ई मैथिली लोकविधाक अध्ययनकेँ साहित्यिक आलोचनाक उचित विषय मानैत अछि। दोसर, आधुनिक आ परम्परागत रचनाकारक कृतिसभकेँ मिथिलाक व्यापक सांस्कृतिक परिवेशसँ जोड़ैत अछि। तेसर, बँसकरम-जकाँ विशिष्ट श्रमज्ञानक शब्दावलीकेँ मैथिलीक आधारभूत सम्पदा मानबाक आग्रह करैत अछि। ई तीनू योगदान एके दिशामे संकेत करैत अछि: भाषा ओ साहित्यक इतिहास समाजक बहुस्तरीय अनुभव बिनु लिखल नहि जा सकैत।

समीक्षाक दृष्टिएँ पुस्तकक महत्त्व ओकर प्रत्येक प्रतिपादनकेँ विवादातीत सत्य मानबामे नहि, बल्कि अनुसन्धानक अनेक प्रश्नक ईमानदार शुरुआतक रूपमे अछि। मिथक आ इतिहासक अन्तर, लोकगीतक प्रतिनिधित्व, गाथाक सामाजिक स्मृति, स्त्री-प्रश्नक बहुस्तरीयता, शास्त्रीय सिद्धान्तक लागू होयबाक सीमा, रचनाकार-विशेषक सन्तुलित मूल्याङ्कन तथा तकनीकी शब्दक क्षेत्रीय प्रामाणिकता—एहि सभ विषयमे आगाँक जाँचक

पर्याप्त सम्भावना अछि। पुस्तकक उपलब्धि तखन सर्वाधिक स्पष्ट होइत अछि जखन ओकरा न प्रशंसामात्रक वस्तु बनाओल जाए, न कठोर प्रामाणिकताको एके सूत्रसँ नापल जाए।

एहि पोथीक पाठक हेतु सर्वाधिक उपयोगी दृष्टि ई अछि जे साहित्यक उत्कृष्टता, लोकजीवनक गरिमा आ भाषाक ज्ञानरूप एक-दोसराकेँ समृद्ध करैत अछि, मुदा एक-दोसराक विकल्प नहि अछि। मिथिला-सम्बन्धी सांस्कृतिक अनुसन्धान, मैथिली आलोचनाक इतिहास, लोकनाट्य-लोकगीतक अभिलेखन आ स्थानीय पारिभाषिक कोश-निर्माणक अध्येता लेल ई संग्रह बहु-विषयी प्रश्न उठेबाक उपयुक्त आधार प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय 08 / २००९

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

१. ग्रन्थ-परिचय आ रचनात्मक संरचना

‘मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली’ नाममे तीन परस्पर सम्बद्ध अध्ययन-विषय अछि—मैथिली भाषा, परम्परागत उत्पादन-जीवन आ कार्यसमुदायसँ जुड़ल विशिष्ट शब्दसम्पदा। ई केवल पर्यायवाची शब्दक संग्रह नहि, ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक सामग्री, श्रम-विभाजन, शिल्प-विधि आ स्थानीय अनुभवक भाषिक विन्यासक अध्ययन अछि। डॉ. योगानन्द झाक ई ग्रन्थ मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगासँ २००९ मे प्रथम संस्करणक रूपमे प्रकाशित भेल।

ग्रन्थमे “अथातो शब्द जिज्ञासा” (पृ. ५), “भूमिका” (पृ. ४१), “विषय-सूची” (पृ. ४७), “संकेत-सूची” (पृ. ५०), “विषय-प्रवेश” (पृ. ५१), प्रथम अध्याय (पृ. ५५), द्वितीय (पृ. ६५), तृतीय (पृ. १३३), चतुर्थ (पृ. १९५), पंचम (पृ. २४३), षष्ठ (पृ. ३०१), सप्तम (पृ. ३६३), “उपसंहार” (पृ. ३९४) आ “परिशिष्ट” (पृ. ३९८ सँ) अछि। “अधीत ग्रन्थक सूची” पृ. ४०४ सँ आरम्भ होइत अछि। ई क्रम सामाजिक पृष्ठभूमिसँ वस्तुगत शब्दसंग्रह आ भाषातात्त्विक विवेचन धरि विचारक विस्तार देखबैत अछि।

२. अथातो शब्द जिज्ञासा: कोश-निर्माणक उद्देश्य (पृ. ५ सँ)

आरम्भिक खण्डमे शब्द-प्राप्ति, क्षेत्रगत जानकारी आ भाषिक सामग्रीक संरक्षणक प्रश्न मुख्य अछि। शब्द जिज्ञासाक अर्थ एतय शब्दक केवल वर्तनी नहि, ओकर प्रयोजन, अर्थ, प्रयोग-परिस्थिति आ लोकक जीवन-ज्ञानक खोज थिक। ग्रन्थमे विस्तृत व्यावसायिक शब्दसंग्रहक

प्रति लेखकक आग्रह एही कारण महत्त्वपूर्ण अछि जे लिखित साहित्यक बाहर जीवित बहुतो तकनीकी शब्द समाजक व्यवहारमे संरक्षित रहैत अछि।

कुनो व्यवसायसँ जुड़ल शब्दक अर्थ प्रायः सामान्य शब्दकोशक परिभाषासँ पूरा नहि खुलैत। उदाहरणार्थ काठक पदार्थ, ओकर विभिन्न अंश, गढ़बाक प्रक्रिया, उपकरणक आकार, तैयार वस्तुक उपयोग आ कामक दोष—ई सभ अलग-अलग शब्द-समूह बनबैत अछि। एहि दृष्टिएँ लेखकक चयन क्षेत्रीय शब्द-संग्रहकेँ भाषावैज्ञानिक आ लोकजीवन-अनुसन्धानक साझा आधार बनबैत अछि। तथापि कोशमे शब्दक क्षेत्र, वक्ता, संकलन-काल आ भिन्न उच्चारण स्पष्ट रूपसँ अंकित होयब भविष्यक आलोचनात्मक संस्करण लेल अत्यन्त उपयोगी रहत।

३. भूमिका, संकेत-सूची आ विषय-प्रवेश (पृ. ४१–५४)

भूमिकामे सामाजिक व्यवहार आ भाषिक इकाईक बीच सम्बन्ध स्थापित होइत अछि। विषय-प्रवेशक मूल प्रश्न ई अछि जे व्यवसायक ऐतिहासिक परिचय बिना ओहि व्यवसायमे प्रचलित शब्दक अर्थक उचित व्याख्या कठिन अछि। मैथिलीक जनपदीय रूप, तकनीकी शब्द आ मौखिक ज्ञानक परम्परा एक-दोसरसँ अलग नहि कएल जा सकैत।

संकेत-सूची कोशक उपयोगक लेल अनिवार्य औजार अछि, किएक तँ संक्षेप, ध्वनि-रूप, अर्थ-परिवर्तन अथवा सन्दर्भ-निर्देश बिना पाठक कतेको प्रविष्टिक निर्णय नहि कऽ सकत। शोध-सम्पादनक दृष्टिसँ प्रत्येक संकेतक एकरूप व्याख्या, समान भाषिक रूपक पारस्परिक सन्दर्भ आ प्राथमिक प्रमाणक पहचान कोशक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

संकलनक विस्तार आ सीमाबोध

मूल पुस्तकक पृ. ५४ पर लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे मैथिलीक व्यवसायिक शब्दावलीक पूर्ण, व्यापक संग्रह एकहि अनुसन्धाने सम्भव नहि भेल अछि। ओ अनेक पेशागत क्रिया, औजार आ उत्पादन-सामग्रीक नाम छूटि गेल होयबाक सम्भावना स्पष्ट करैत छथि। एहि स्वीकृतिकेँ शोधग्रन्थक दुर्बलताक चिह्न मानि उपेक्षित करब उचित नहि; एकरा क्षेत्राधारित शब्द-संग्रहक स्वतःस्फूर्त सीमाज्ञानक रूपमे पढ़बाक चाही। मुदा शोधार्थी लेल एकर ठोस

परिणाम अछि—एहि पोथीक सामग्री 'उपलब्ध संग्रह' थिक, समस्त मिथिलाक व्यवसायिक शब्दसम्पदाक अन्तिम आ पूर्ण सूची नहि।

लेखकक उपक्रम बुझबाक लेल तीन प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि: कोन वस्तु अथवा प्रक्रिया समाजमे प्रचलित छल; कारीगर ओकरा की कहैत छलाह; आ ओहि पदक स्थानीय अथवा ऐतिहासिक अर्थ की छल? पहिल छओ अध्यायमे वस्तु आ कार्यक शब्दवैभव अछि, जखन कि सातम अध्याय व्युत्पत्ति, ध्वनि, अर्थ-विस्तार आ मानकीकरणक विवेचन द्वारा ओहि सामग्रीकेँ भाषावैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य दैत अछि।

पुस्तकक पृ. ५५ पर लेखक 'परम्परा' केँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत मान्यता आ व्यवहारसँ जोड़ि परिभाषित करैत छथि, तथा 'व्यवसाय' केँ काम, शिल्प, जीविकोपार्जन आ कौशलसँ सम्बद्ध करैत छथि। एहि परिभाषामे शब्दक अर्थ उत्पादनक सामाजिक अभ्याससँ बनैत अछि। एकरा केवल 'जातिक पेशा' कहि समेटि देलापर औजारक ज्ञान, पदार्थक चयन, वस्तुक उपयोग आ श्रमक दक्षता सभ गुम भऽ जाएत। शब्द-संग्रहक महत्त्व एतय 'नामकेँ जीवित प्रक्रिया संग देखब' मे निहित अछि।

शब्दसंग्रहक स्रोत आ प्रमाण

पुस्तकक पृ. ५४ पर सन्दर्भ-निर्देश आ पृ. ४०४ सँ “अधीत ग्रन्थक सूची” साहित्यिक, भाषावैज्ञानिक आ लोकसाहित्यिक स्रोतक महत्त्व स्पष्ट करैत अछि। साहित्यिक उद्धरण, लोकबोलीक शब्द, क्षेत्रीय उच्चारण आ लेखकक व्याख्या अलग-अलग प्रकृतिक प्रमाण छथि। प्रकाशित ग्रन्थमे कोनो शब्दक ऐतिहासिक उल्लेख भेटब आ वर्तमान व्यवहारमे ओकर प्रचलन सिद्ध होयब एक्के बात नहि। ई भेद कोशीय अर्थनिर्णयक विश्वसनीयताक लेल आवश्यक अछि।

४. प्रथम अध्याय: मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक पृष्ठभूमि (पृ. ५५–६४)

ई अध्याय कोशक सामाजिक-ऐतिहासिक आधार बनबैत अछि। “परम्परा”, “व्यवसाय”, “पारम्परिक जातीय व्यवसाय”, “मिथिलामे जातीय व्यवसायिक परम्परा”, शिष्ट साहित्य आ

पारम्परिक लोकसाहित्यक साक्ष्य, मिथिलाक व्यवसायिक वर्गीकरण तथा सामाजिक जीवन एवं व्यवसायिक जाति—ई उपविषय विषय-सूचीमे उल्लिखित अछि। एतय मूलभूत बिन्दु ई जे कामक नाम, ओकर संगठन आ ओकर शब्द-विधान सांस्कृतिक परिवेशमे विकसित होइत अछि।

शिष्ट साहित्य आ लोकसाहित्यकेँ संग पढ़ब उपयोगी अछि। साहित्यक उल्लेख समाजमे शिल्पक सांकेतिक छवि देखबैत अछि; लोकगीत, कहबी आ व्यवहारगत प्रयोग कार्य-विधिक अधिक समीप होइत अछि। मुदा साहित्यिक संकेतकेँ स्वतः वास्तविक उत्पादन-विधिक निर्विवाद इतिहास नहि मानबाक चाही। सामाजिक श्रेणी आ कौशलक परम्परा बीच सम्बन्धक विश्लेषणमे आर्थिक परिवर्तन, कामक पारिवारिक हस्तान्तरण, प्रशिक्षण आ सामाजिक गतिशीलता महत्त्वपूर्ण अछि।

परम्परागत व्यवसायकेँ पढ़बाक चार दृष्टि

पहिल दृष्टि ऐतिहासिक थिक। शब्दक प्राचीनताक संकेत लिखित साहित्यमे भेटि सकैत अछि, मुदा साहित्यमे उल्लेख आ प्रत्यक्ष ऐतिहासिक व्यवहार बराबर नहि। दोसर दृष्टि मानवशास्त्रीय थिक: कार्यसमूहक सामूहिक नियम, संप्रेषण, श्रम-विभाजन आ हुनरक प्रसारण। तेसर अर्थवैज्ञानिक थिक: कोन शब्द वस्तु, कोन प्रक्रिया, कोन स्थिति, कोन गुण-दोष आ कोन सामाजिक भूमिका सूचित करैत अछि। चारिम दृष्टि आलोचनात्मक थिक: जाति-आधारित वर्गीकरण वास्तविक जीवनक सभ साझा श्रम आ पेशा-परिवर्तनकेँ कतेक समेटैत अछि? एहि प्रश्न सभकेँ ग्रन्थक अन्तर्वस्तुक व्याख्या मे संग राखब आवश्यक अछि।

परम्परा आ स्थिरता एक वस्तु नहि

पारम्परिक काजक ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी जाइत अछि, मुदा उपकरण, बाजारी माँग आ पदार्थक उपलब्धताक कारण शब्द बदलैत रहैत अछि। लेखक बादक उपसंहारमे नवा वैज्ञानिक औजार, व्यवसाय-परिवर्तन आ शब्द-लोपक चर्चा करैत छथि (पृ. ३९४–३९५)। प्रथम अध्यायक पृष्ठभूमि ताहि कारण 'जड़ परम्परा' नहि, चलैत परम्पराक आधार बनैत अछि। पृष्ठभूमि आ उपसंहार

एक संग पढ़लापर स्पष्ट होइत अछि जे शब्दसंग्रह अतीतक संग्रह मात्र नहि; ई परिवर्तनक एहन अवस्थाक अभिलेख अछि जाहि समय पुरान आ नव शब्द दुनू उपस्थित रहि सकैत अछि।

जातीय वर्गीकरणक आलोचनात्मक सीमा

स्थानीय कारीगरक दक्षताक सम्मान आ जाति-आधारित भेदभावक समर्थन दू पृथक बात अछि। ग्रन्थक ऐतिहासिक शब्दावलीकेँ जँ हम वर्तमान सामाजिक व्यवहारमे जसक-तस नियम मानि लेल जाएत, तँ शोधक उद्देश्य विकृत होएत। उपयुक्त पद्धति ई अछि जे लेखकक वर्गीकरणकेँ मूल साक्ष्य रूपेँ सुरक्षित राखल जाय, मुदा तुलनात्मक सर्वेक्षणमे अजाति-विशिष्ट पेशा, परस्पर साझा औजार, महिला श्रमिक आ प्रशिक्षित नवा पीढ़ीक प्रमाण सेहो स्थान पाबय।

५. द्वितीय अध्याय: काठ-बाँस व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली (पृ. ६५–१३२)

५.१ काष्ठकर्म

विषय-सूची काष्ठकर्मक अनेक चरण अलग कऽ देखबैत अछि: आधार-सामग्री, काठ-गाछक अङ्ग, काठक दोष-काठक पिच्छ/प्रकार, धातुक वस्तु, मसाला, औजार, खरचर अथवा कटवला, रन्दा, खरडवला, छीलवला, खखोरवला, जाँच, कतरब, ठोकबाक आ निकलबाक काम, कृषि आ परिवहनक उपयोग, गृह-निर्माण, भोजनक आ आरामक उत्पादन, शृंगारिक पात्र, समानक सुरक्षा आ अन्य विविध निर्माण। मूल क्रमसँ स्पष्ट अछि जे शब्दावलीकेँ कारीगरीक व्यवहारिक क्रमानुसार देखबाक चेष्टा कएल गेल अछि।

५.२ बाँसकर्म

अध्यायक अन्तर्गत बाँसकर्मक “आधार सामग्री–औजार–उत्पादन–निष्कर्ष” वर्गीकरण अछि। बाँसक लचक, चिराइ, बुनाइ आ जोड़ाइ सँ जुड़ल शब्दक आधार पर कारीगरक ज्ञान पिढ़ी-दर-पिढ़ी चलैत अछि। टोकरी, पात्र, दैनिक घरेलू उपयोगक वस्तु अथवा कृषि-संबद्ध साधनक

निर्माणमे वस्तुक आकार-आधारित नाम आ प्रयोजन-आधारित नाम अलग होयबाक सम्भावना महत्त्वपूर्ण अनुसन्धेय विषय अछि।

काठकर्म: पदार्थ, औजार, क्रिया आ उत्पाद

पुस्तकक पृ. ६५ सँ आरम्भ भेल द्वितीय अध्यायमे लेखक मिथिलामे काठ-बाँसक स्थानीय उपयोग आ परम्परा सँ काठकर्मक वर्णन आरम्भ करैत छथि। पृ. ७८–७९ पर आराक आरी, तख़्ता/पटरा, रन्दा आ काटबाक भिन्न क्रियाक चर्चा अछि। एहि विवरणसँ पता चलैत अछि जे 'काठ काटब' एक साधारण क्रिया कहलापर ओकर भीतर अनेक तकनीकी अवस्था अछि: लकड़ी अलग करब, समतल करब, नापब, जोड़ब, फाँक निकालब, किनार बनायब आ चिकनाहट देब। लोक-कौशलक सूक्ष्म भाषा एहि चरण सभकेँ अलग-अलग पहचान दैत अछि।

लेखक पृ. ७९ पर रन्दाक प्रकार आ ओकर बनावट समझबैत समय एहन शब्द दैत छथि जे सामान्य कोशमे एक संक्षिप्त अर्थक भीतर खोइ जाइत। 'आरा/आरी' जेहन उपकरणक रूपपरक पर्यायक विश्लेषणमे मात्र 'समानार्थी' लिखब पर्याप्त नहि; कोन रूप कोन आकार अथवा काजमे प्रयुक्त होइत अछि, से अलग प्रश्न अछि। लेखकक मूल विवरण संकेत करैत अछि जे कतेको रूप तकनीकी भेदसँ सम्बन्धित अछि। एहि लेल शब्दक संग 'वस्तु-वर्ग' आ 'काज-वर्ग' दूटा अनुक्रमणिका बनबैत तखन अर्थक भ्रम घटि सकैत अछि।

क्रियाक क्रमवाचक शब्द: पृष्ठ ७८–७९क पाठ

आरा, रन्दा, पटरा, चिरब, खरचर, काटब, खाँच बनायब आ पल्ला जोड़बाक वर्णनकेँ कार्यप्रवाह मानि पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे लोकशब्दक अर्थ अधिकांशतः कार्यगत निर्भरता पर टिकैत अछि। जे पदार्थ एखन कच्चा काठ अछि, ओहि पर प्रथम क्रियाक बाद भिन्न संज्ञा लागू भऽ सकैत अछि; फेर दोसर उपकरणक प्रयोगक बाद ओकर नाम अथवा गुणबोधक पद बदलि जाएत। ई अर्थ-प्रक्रिया सामान्य भाषा-शिक्षणसँ अलग, व्यावसायिक प्रशिक्षणक व्याकरण अछि।

आलोचनात्मक शब्दकोशमे औजारक प्रविष्टिक संग ओकर आकार, निर्माण-सामग्री, पकड़बाक ढंग, चलाबाक दिशा, काजक वस्तु आ कार्यक परिणाम दर्ज भेला पर शब्दक तकनीकी अर्थ बेसी स्पष्ट होयत। काठकर्मक विवेचन एहन बहुस्तरीय विवरणक औचित्य उपस्थित करैत अछि।

गृह-निर्माणक शब्दक विशेष स्थान

पुस्तकक पृ. १०२–१०३ पर काठ-बाँस निर्मित गृहसामग्री पर गहन विवरण अछि। घरक सांगठनिक अङ्ग, खम्भा, बल्ली, बाँसक जोड़, छप्परक व्यवस्था, एक अंगकेँ दोसर अंगसँ बाँधबाक व्यवहार, आ धरिक/काठक काम—ई सभ वस्तुगत सामग्रीक शब्दासंपदा अछि। एहि पृष्ठ पर लेखक एकहि घर-निर्माणक वस्तुक अनेक स्थानीय रूप लिखैत छथि। घरक अंगक नाम पढ़ैत काल ओकर दिशा, भार वहन करबाक भूमिका आ निर्माणक क्रमकेँ एक संग देखब जरूरी अछि।

गृह-निर्माणक शब्द ऐतिहासिक भूगोलक प्रश्न सेहो उपस्थित करैत अछि। काठक उपलब्धता, बाँसक पर्याप्तता, बाढ़-पानिक स्थिति आ स्थानीय वास्तुशैली शब्द-रचनाक पृष्ठभूमि भऽ सकैत अछि; मुदा एहि सम्बन्धक प्रत्यक्ष प्रमाण प्रत्येक शब्दलेखमे नहि भेटला पर एकरा प्रस्तावित व्याख्याक रूपमे मात्र राखल गेल अछि। एहि बिन्दु पर मिथिलाक ग्रामीण घरक प्रत्यक्ष मापन आ फोटोसँ शब्दक सत्यापन मूल्यवान होयत।

काठकर्मक शब्दसम्पदाक सबल पक्ष वस्तुक गुण-दोष आ प्रयोगक अवस्थाक वर्णन अछि। कारीगरक दृष्टिएँ काठक दोष केवल वनस्पति-विज्ञानक श्रेणी नहि; काटलाक बाद भेटनिहार गाँठ, चिरान, फूट, वक्रता, मजगूती आ नमी ओकर उपयोगक निर्णयमे महत्त्व राखि सकैत अछि। एहन भेदक अर्थ-निर्णयमे स्थानीय कारीगरीक व्यवहारकेँ केन्द्रमे राखब आवश्यक अछि।

बाँसकर्म: बुनाइ आ संरचनाक भिन्न तर्क

बाँसकर्मक 'आधार सामग्री–औजार–उत्पादन–निष्कर्ष' ढाँचा (द्वितीय अध्यायक अन्तिम हिस्सा, पृ. १३२ पर निष्कर्ष) काठकर्मसँ संग-साथ राखल गेल अछि। दुनूक उत्पादनमे काटब

आ जोड़ब साझा अछि, मुदा बाँसकेँ चिरि पतरी बनायब, लचकक अनुसार मोड़ब, बुनेल वस्तुक धार देब—एहि सभमे अलग कार्यविद्या चाही। जँ एकहि 'काटब' शब्द दुनू शिल्पमे भेटैत अछि, तँ ओकर क्रिया-परिस्थिति समान नहि मानल जा सकैत।

पृ. १३२ पर लेखक काठ-बाँसक शब्दमे संस्कृत, फारसी, अरबी आ अंग्रेजी आदिक सम्पर्कसँ आएल रूपक उल्लेख करैत छथि आ क्षेत्रीय उच्चारण-भिन्नताक प्रभाव स्वीकार करैत छथि। एहि अवलोकनसँ मैथिलीक शिल्पभाषामे भाषासम्पर्कक प्रश्न उठैत अछि। मुदा कोनो विशिष्ट शब्दक व्युत्पत्ति निश्चित करबाक लेल पुरान शब्दकोश, क्रमिक ध्वनि-परिवर्तन आ ऐतिहासिक प्रयोगक मिलान आवश्यक अछि।

६. तृतीय अध्याय: माटि-पानि व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली (पृ. १३३–१९४)

६.१ कुम्हार जाति सम्बन्धी शब्दावली

मूल विषय-सूचीमे कुम्हार-सम्बद्ध शब्दक वर्गीकरण “आधार सामग्री–आनुषंगिक आधार सामग्री–औजार–माटि तैयार करबाक औजार आ प्रयोग-वस्तु–पकबाक औजार–प्रयोग–बासन सम्बन्धी–पूजन सम्बन्धी–आवास सम्बन्धी–व्यवसायोपयोगी–यज्ञ, संस्कार आ पावनि-तिहार सम्बन्धी–अन्य सामग्री–बासनक गुण-दोष व्यंजक शब्दावली” रूपमे भेटैत अछि। एहि वर्गीकरणमे पदार्थक निर्माण-सँ लोक-आचारमे ओकर अन्तिम उपयोग धरि भाषिक यात्रा देखल जा सकैत अछि।

माटिक भेद, सानब, गढ़ब, सुखायब, पकायब आ रंगल अथवा सजायबाक क्रियामे तकनीकी शब्दक क्रम विकसित होइत अछि। पात्रक नाम केवल आकार नहि बतबैत, ओकरे सामाजिक उपयोग, अन्न-जल-संग्रह, पूजा वा संस्कारक सन्दर्भमे अर्थ बदलैत अछि। एतय शब्दावली मिथिलाक पदार्थ-संस्कृतिक महत्त्वपूर्ण साक्ष्य अछि। विशेष अध्ययनमे एकहि वस्तुक कच्चा, अधपाकल आ तैयार अवस्था लेल शब्दभेद अलग दर्ज करब उपयोगी रहत।

६.२ मल्लाह जाति सम्बन्धी शब्दावली

मल्लाह-सम्बद्ध उपखण्डमे आधार सामग्री, मल्लाहक औजार, नौ-परिवहनसँ सम्बन्धित, पारिभाषिक शब्द, मल्लाहक व्यवसायसँ सम्बद्ध, नावो-जाल-बनसो-बाँसक औजार, अन्य औजार, मल्लाहक उत्पाद, माछक प्रकार, माछक विभिन्न भाग, विक्रय-सहचर, शत्रु-प्रभेद, मखान-सिंघाड़ा चुनन आ निष्कर्षक उपविभाग अछि। ई विस्तार नदी-पोखरि-आधारित जीविका आ जलसंसाधनक स्थानीय वर्गीकरणक संकेत करैत अछि।

नाव, जाल आ माछक शब्द सामुदायिक अनुभवक तकनीकी सूक्ष्मता उघाड़ैत अछि। जल-मार्ग, जलक गति, माछ पकड़बाक पद्धति, माछक देह-भाग आ उत्पाद-वितरण—ई सभक शब्द केवल ‘मल्लाह’ नामक सामाजिक पहचान नहि, अपितु पर्यावरणक व्यावहारिक ज्ञान सेहो उपस्थित करैत अछि। मखान-सिंघाड़ाक समावेश सँ जल-जीविकाक बहुआयामी प्रकृति स्पष्ट होइत अछि। एहि खण्डकेँ पर्यावरणीय शब्दकोश आ मौखिक जीवन-इतिहाससँ जोड़ि पढ़ल जा सकैत अछि।

माटिकर्ममे पदार्थक अवस्था: माटिसँ बासन धरि

तृतीय अध्याय (पृ. १३३–१९४) के आरम्भमे लेखक माटि आ पानि आधारित काजक भूमिका विस्तारसँ रखैत छथि। पुस्तकक पृ. १३३ पर माटि/माटी/मिट्टी जेहन रूपसँ भाषिक भिन्नता आ कुम्हारक कार्यक प्रासंगिकता साथे उद्घाटित होइत अछि। 'माटि' एतय केवल प्राकृतिक पदार्थ नहि रहैत, अपन रूप बदलैत निर्माण-सामग्री थिक। पेषण, सानब, घोलब, आकार देब, सुखायब आ आगिमे पकायबाक क्रमक बीच ओकर व्यवहारिक नाम आ गुण बदलैत अछि।

पुस्तकक पृ. १४४–१४५ पर लेखक आवाँ अथवा बासन पकाबाक व्यवस्थाक चर्चा करैत छथि; आगि, ईंधन, बासन सजाबाक पद्धति, पकबाक अवस्था आ माटिक बासनक उपयोगसँ शब्दक सम्बन्ध जोड़ैत छथि। 'आवाँ' जँ भट्टाक विशेष संदर्भमे प्रयुक्त अछि, तँ ओकरा साधारण 'अग्नि' वा 'भट्ठी' कऽ छोड़ि देब विशेषार्थक हानि होयत। तकनीकी परिभाषामे कारीगरक दृष्टिसँ ताप देबाक व्यवस्थित स्थानक अर्थ उल्लेखनीय अछि।

बासनक नाममे पदार्थ आ अवसरक संगति

पोथीक विषय-सूची बासनक प्रयोग, भोजन, पूजा, संस्कार, पावनि-तिहार, अन्य सामग्री तथा बासनक गुण-दोष द्योतक शब्दक अलग श्रेणी दैत अछि। एहि योजना सँ स्पष्ट अछि जे एकहि आकारक पात्र सामाजिक प्रसंग बदलला पर भिन्न कार्य करि सकैत अछि। 'भण्डारणक पात्र', 'पकाबाक पात्र', 'पूजन-पात्र', 'उत्सव-पात्र'—एहिमे भिन्नता केवल वस्तुक भौतिक आकार नहि। नाममे उपयोगिताक अर्थ, निषेध, रीति आ सामुदायिक स्मृति सम्मिलित भऽ सकैत अछि।

स्रोत सँ प्रेरित एकटा महत्त्वपूर्ण विभेद इहो अछि जे वस्तुक 'अर्थ' आ 'काज' बराबर नहि। उदाहरणार्थ जल रखबाक पात्र धार्मिक क्रियामे प्रयोग होय तकर उपयोग-परिस्थिति बदलैत अछि, मुदा वस्तुक स्थायी नाम एक्के रहि सकैत अछि। दोसर दिशा मे समान पदार्थसँ बनल समान प्रकारक पात्र ओकर आकार वा उपयोगक कारण अलग नाम पाबि सकैत अछि। अतः शब्द-विश्लेषणमे पदार्थ, रूप, प्रयोजन आ अवसर चारू चिन्ह अलग देखबाक चाही।

पानिकर्ममे स्थान-नाम आ जल-परिवहन

मल्लाह-सम्बद्ध भागक पृ. १६२–१६३ पर लेखक नदी, पोखरि, गहिर स्थान, नाहर वा जलाशयक अनेक स्थानीय नाम प्रस्तुत करैत छथि। जलसंसाधनक शब्द केवल स्थलरूपकेँ चिन्हबाक लेल नहि, बल्कि यातायात, माछ पकड़ब, जाल लगायब आ जल-गहराइ बुझबाक व्यावहारिक मानचित्र थिक। कतेको शब्द आकार, गहिराइ, जलक उपलब्धता वा भौगोलिक स्थितिक आधार पर अलग होइत अछि। एहि अर्थ-वैविध्यक संकलन स्थानीय पर्यावरण-ज्ञानक दस्तावेज बनि सकैत अछि।

जलाशयक प्रकार आ मल्लाहक उपकरण अलग अर्थक्षेत्र छथि, तखनहुँ दुनूक सम्बन्ध व्यावहारिक अछि। नाव वा जालक रूप जलक वेग, गहिराइ अथवा किनारक बनावटसँ प्रभावित भऽ सकैत अछि। मुदा कोन औजार कोन जलाशय लेल निश्चित छल, से निरूपित करबाक लेल व्यवसायगत व्यवहारक विशेष साक्ष्य आवश्यक अछि।

माछक नाम, आकार, अवस्था आ विक्रय

पुस्तकक पृ. १८०–१८१ पर लेखक माछक नाम, सुकटीक उल्लेख, जलक व्यवस्था, पकड़बाक परिस्थिति, जाल चलाबाक क्रिया, माछ ताजा वा सड़ल होयबाक अवस्था, आ विक्रय-संबद्ध शब्दक चर्चा करैत छथि। एतय पदार्थ 'जीवित माछ' सँ 'खाद्य पदार्थ' बनेबाक प्रक्रिया सेहो शब्दार्थ बदलबैत अछि। सुकटी नाम जेहन रूपकेँ अर्थविज्ञानमे वस्तुक प्रसंस्कृत अवस्थासँ जोड़ि देखबाक आवश्यकता अछि।

माछक लोकनामकेँ प्राणी-विज्ञानक प्रजातिनामक पूर्ण समकक्ष मानब उपयुक्त नहि। एकहि लोकनाम अन्तर्गत अनेक जैविक प्रजाति सेहो होय सकैत अछि, अथवा एक प्रजाति अलग स्थानमे भिन्न नामसँ परिचित होय सकैत अछि। वैज्ञानिक नामक मिलान स्वतंत्र जीववैज्ञानिक प्रमाण बिना नहि करबाक चाही। मूल पोथी भाषिक प्रमाण दैत अछि; ई जैव-टैक्सोनोमीक सत्यापित सूची नहि।

मखान-सिंघाड़ा: जल-आधारित जीवनक विस्तार

विषय-सूचीमे मखान आ सिंघाड़ाक कामकेँ मल्लाह-संबद्ध शब्दावलीक भीतर स्थान भेटल अछि। एहि वर्गीकरण सँ संकेत भेटैत अछि जे लेखकीय 'पानि-व्यवसाय' केवल नाव वा माछधरनी नहि। जल-पारिस्थितिकी मे भोजनक उत्पादन, सङ्ग्रह, संसाधनक परिशोधन आ विक्रय सेहो समाहित अछि। मुदा प्रत्येक जल-उत्पादक सम्बन्ध एकहि समुदायसँ ऐतिहासिक रूपेँ स्थिर रहल, एहन निष्कर्ष निकालब अनुचित होयत।

तृतीय अध्यायक अन्तिम निष्कर्ष (पृ. १९४) मे लेखक कुम्हारक तुलनामे मल्लाहक शब्द-समूहमे क्षेत्रीय अन्तर आ शब्द-परिवर्तनक विशेष चर्चा करैत छथि। आलोचनात्मक अध्ययन लेल ई टिप्पणी कीमती अछि: स्थलीय माटिक बासन आ गतिशील जलकर्मक शब्दक प्रसार-स्थिति भिन्न रहि सकैत अछि। एहि अवलोकनक सांख्यिकीय परीक्षण भविष्यक कार्य होयत—केवल निष्कर्ष-वाक्यसँ भिन्नताक परिमाण नापल नहि जा सकैत।

७. चतुर्थ अध्याय: तूर-सूत व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली (पृ. १९५–२४२)

चतुर्थ अध्यायमे तूर-सूतक आधार सामग्री आ औजार, बाड़, चरखी, टकुरी, चरखा, सूतक ऐंठ-गुण, वस्त्र-जालिका, औजार आ प्रक्रिया, तानी-भरनी, पटबाक करघा, जोलाहक करघा, उत्पाद तथा अन्य व्यवसाय-सम्बद्ध शब्दावली आ निष्कर्षक स्थान अछि। एहि क्रममे सूत तैयार करब, सूत सँ ताना-बाना बनायब आ वस्त्र निर्माण करब—तीन चरणक तकनीकी शब्द-परम्परा एकत्र होइत अछि।

एहि अध्यायक विशिष्टता गति आ विन्यासक शब्द अछि: घूमब, ऐंठब, तानब, भरब, बुनब, किनार बनायब आ गुण-दोष चिन्हब। वस्त्र-निर्माणक अनेक शब्द पदार्थक नामक अपेक्षा प्रक्रियाक नाम होइत अछि। एकहि उत्पादन-प्रक्रियामे औजारक नाम, औजारक अङ्ग, कर्मी द्वारा प्रयुक्त क्रिया आ तैयार कपड़ाक प्रकार एक-दोसरक संग अर्थ-जाल बनबैत अछि। एहि शब्दजालक मानचित्र बनबैत समय क्रिया, करण आ परिणामक व्याकरणिक सम्बन्ध देखबाक चाही।

तूर-सूतक आरम्भ: सम्पूर्ण वस्त्र-शृंखला

पुस्तकक पृ. १९५ पर लेखक तूर-सूत व्यवसायमे जोलहा, पटवा, दर्जी, धुनिया, रंगरेज आ धोबीक भूमिका अलग करैत छथि। एकर अर्थ ई जे 'वस्त्रक शब्दावली' केवल करघाक तकनीकी कोश नहि, बल्कि रूई वा रेशासँ शुरु भऽ सूत बनब, बुनब, रँगब, सिलब आ धोबब धरि कतेको पड़ावक नाम-संग्रह अछि। 'वस्त्र उत्पादन' कर्ता-विशेषक एक क्षण नहि, बहुचरणीय सामाजिक उत्पादनक परिणाम अछि।

लेखक एतय बाड़क सामग्री आ ओकर सँ सूत तैयार करबाक विधिसँ शुरुआत करैत छथि (पृ. १९५)। बाड़क विभिन्न अवस्था, ओकर भंगुरता अथवा आकार, आ सूतक ऐंठन—ई सभ बुनकरीक बादक परिणाम प्रभावित करैत अछि। ताहि लेल सामग्रीक नाम आ तैयार कपड़ाक नाम बीच सूत-तैयारीक शब्दक स्वतंत्र स्थान अछि। यदि कोश बनाओल जाय तँ 'रेशा → सूत → तानी-भरनी → वस्त्र → परिष्करण' कड़ीकेँ परस्पर सम्बन्धित प्रविष्टि रूपमे रखबाक चाही।

करघाक अंगक शब्द वैज्ञानिक रूपसँ की बतबैत अछि?

पुस्तकक पृ. २०४–२०५ पर लेखक तास, खसखस, राछ, लरदी, पाछन आ धागा सँ सम्बद्ध कार्मिक क्रमक विवेचन करैत छथि। बहुतो शब्द बाह्य पाठक लेल अपरिचित होइत अछि, कारण ओ कोनो साधारण वस्तुक नाम नहि, करघाक विशेष भाग अथवा कामक ठिकना बतबैत अछि। करघाक रूपरेखा बिना केवल समानार्थी देलापर अर्थ आधा रहि जाएत। एहि लेलनवा अनुसन्धान-संस्करणमे मूल शब्दक संग निर्देशात्मक रेखाचित्र, साधनक आकार आ प्रयोगक क्षण जोड़ब आवश्यक अछि।

भाषिक दृष्टिएँ ई शब्द एक 'कार्यात्मक तन्त्र' बनबैत अछि। बुनकरीमे कोन अङ्ग स्थिर अछि, कोन घूमैत अछि, कोन सूत खींचैत अछि, कोन निचला वा ऊपरक अवस्था बनबैत अछि, आ कोन तैयार कपड़ाकेँ समेटैत अछि—एहि सम्बन्धक वर्णन बिना तकनीकी नाम याद रहि सकैत अछि, मुदा अर्थ नहि खुलत। लेखकक दीर्घ व्याख्या एहि कठिनाईकेँ किछु हद धरि दूर करैत अछि।

कपड़ाक बनावट, दोष आ सुधारक भाषा

पृ. २२२–२२३ पर कपड़ाकेँ सुखाबाक लेल तनाब करब, रँगक काम, किनार सम्हारब, दोष दूर करब आ कपड़ाक अन्तिम रूप देबाक बात अछि। उत्पादनक एहन अन्तिम चरणकेँ शब्द-संग्रहमे महत्त्व देल जाय, कारण 'बुनल वस्त्र' आ 'प्रयोग लेल तैयार वस्त्र' एक अवस्थाक वस्तु नहि। रंगरेजी, माड़, प्रसारण आ साज-सँवार शब्दक रूपमे प्रवेश करैत अछि।

एहि खण्डमे क्रियासँ बननिहार पद-परिवारो विचारणीय अछि। मूल क्रियासँ कर्ताक नाम, उपकरणक नाम, परिणामस्वरूप वस्तुक नाम अथवा गुण-दोष व्यक्त करनिहार विशेषणक सम्बन्ध बनि सकैत अछि। एहि प्रकारक रूपगत विश्लेषणमे शब्दक वास्तविक स्थानीय प्रयोग निर्णायक होइत अछि।

ई अध्याय आधुनिक शब्द-प्रयोगक आलोचनाक अवसर सेहो दैत अछि। मशीनद्वारा कातल सूत अथवा तैयार वस्त्रक शब्द ओहि कालक करघा-केंद्रित स्थानीय शब्दकेँ प्रतिस्थापित करैत

हो, एहन संभावना लेखकक उपसंहारमे वर्णित सामान्य परिवर्तनसँ संगत अछि, मुदा कोन शब्द आइ लुप्त भेल तकर नामावली आधुनिक क्षेत्र-सर्वेक्षणसँ बनत।

८. पंचम अध्याय: धातु-व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली (पृ. २४३–३००)

८.१ लोहार

लोहार-उपखण्डक वर्गीकरण आधार सामग्री, औजार, गर्म करबाक, पकडबाक, पिटबाक, कटबाक आ छेद करबाक औजार, सहायक औजार, उत्पादन, सामान्योपयोगी, व्यवसायोपयोगी, शृंगार, अन्य विविध सामग्री धरि फैलल अछि। धातुक काममे ताप, बल, आकार आ धार सम्बन्धी तकनीकी क्रिया सघन होइत अछि। ताहि लेल औजार आ प्रक्रिया बीच भेद नहि बुझलापर बहुते अर्थ-संशय उत्पन्न भऽ सकैत अछि।

८.२ कसेरा

कसेरा सम्बन्धी उपखण्डमे आधार सामग्री, औजार, गर्म करबाक, पिटबाक, कटबाक, सहायक औजार, उत्पादन, धातु निर्मित पात्र-पात्रक सम्बन्धी, भोजन एवं पान सम्बन्धी, पूजाक बासन आ अन्य शब्दक विवेचनक योजना अछि। एहि वर्गीकरणक सांस्कृतिक पक्ष महत्त्वपूर्ण अछि—धातुक पात्र उत्पादन, भोजन-पद्धति आ अनुष्ठान तीनू क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। पात्रक धातु, आकार, निर्माण-विधि आ प्रयोजनक पृथक नामक संकलन मैथिलीक पदार्थ-सम्पदा बुझबाक आधार प्रदान करैत अछि।

८.३ सोनार

सोनार उपखण्डमे आधार सामग्री, औजार, गर्म करबाक, पिटबाक, पकड़बाक, कटबाक, जोड़बाक, अन्य उपकरण, उत्पादन, गहना, माथ, नाक, कान, गर्दन, बाँहि-पहुँची, हाथ-पएर आदि शरीर-भागक आभूषण, दाँत-सम्बद्ध, औजार आ निष्कर्ष शामिल अछि। एहि खण्डमे वस्तु-आधारित नामकरण सँ अतिरिक्त शरीरक अङ्ग आ सामाजिक अवसरक आधार पर नामकरणक व्यवस्थित अध्ययन सम्भव अछि।

लोहार, कसेरा आ सोनार तीनू उपविभागमे ऊष्मा, पिटाइ, काटाइ, आकार-निर्माणक साझा प्रक्रिया भेटैत अछि, मुदा पदार्थक मूल्य, तैयार वस्तुक उपयोग आ सामाजिक प्रतीकात्मकता भिन्न अछि। तुलनात्मक शब्दावली तैयार कएला पर समान क्रिया लेल अलग कार्यसमुदायमे प्रयुक्त ध्वनि-रूपक अन्तर आ एकहि औजारक नामक अर्थ-विस्तार शोधक विषय बनैत अछि।

लोहारक मूल औजार-नाम: पृ. २४६–२४७

पृ. २४६–२४७ पर लेखक लोहारक पकड़बाक औजार, पिटबाक औजार, आधारक रूपमे प्रयोग होइत धातुक ठोस पाट, आगि जारि राखबाक उपाय, हावा देबाक व्यवस्था आ सामग्रीक आकार बदलाबाक क्रिया सँ जुड़ल शब्दक विस्तार करैत छथि। एहि वर्णनमे साधनक नाम शरीरगत क्रियाक निर्देश सेहो दैत अछि: पकड़निहार उपकरण हाथकेँ जरा सँ बचबैत अछि, पिटनिहार उपकरण बल पहुँचबैत अछि आ आधारक पाट प्रहारक प्रतिरोध करैत अछि। एकै 'औजार' वर्गक भीतर भिन्न कार्यव्यवस्था देखब महत्त्वपूर्ण अछि।

शिल्प-इतिहासमे तापसँ सम्बन्धित शब्दक तकनीकी अर्थ जनब आवश्यक अछि। लोहारक 'गरम करब' खण्डक सभ औजार अग्निक पर्याय नहि; कोनो ताप उत्पन्न करैत अछि, कोनो हावा पहुँचबैत अछि, कोनो गरम पदार्थकेँ पकड़ैत अछि, कोनो ओकर आकार बदलैत अछि। एहि कार्यगत भेद बिना शब्दक केवल हिन्दी/अंग्रेजी अनुवाद अधूरा भऽ जाएत।

लोहारक उत्पादक सामाजिक विस्तार

कृषिक उपकरण, घरक साधन, काठक काममे उपयोगी धातु-उपकरण, रसोईक सामग्री आ प्रतिरक्षात्मक अवयव—एहन अनेक उत्पादन-श्रेणी लोहारक कार्यकेँ अन्य व्यवसायसँ जोड़ैत अछि। मूल सूचीक आधार पर समस्त उपलब्ध उत्पादक नामक एकता सम्भव नहि, मुदा वर्गीकृत विश्लेषण स्पष्ट करैत अछि जे लोहारक शब्द-विधान व्यापक ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक आधारभूत औजार-व्यवस्था सँ सम्बन्धित अछि। कोनो वस्तुक निर्माण-पक्ष आ ओकर ग्राहकक प्रयोग-पक्ष अलग-अलग अर्थक्षेत्र अछि।

कसेरा: पात्रक आकार आ धातुक अवस्था

पुस्तकक पृ. २७४–२७५ पर कसेराक अन्तिम उपादान, पात्रक रूप, थारी वा गोलाकार बासन, धार बनाबाक तथा धातुक सतहक कामक शब्दक विवरण अछि। एहिमे वस्तुक नाम आकार, धातु, उपयोग, गहिराइ अथवा धरिक बनावटसँ जुड़ल देखाइत अछि। कारीगर द्वारा देल नाम आ घरेलू प्रयोगकर्ता द्वारा कहल नाम समान होयबाक अपेक्षा नहि; जँ रूप भिन्न अछि तँ दुनू प्रकारक नाम दर्ज करब आवश्यक अछि।

बासनकेँ रसोई, भोजन, पूजाक अवसर आ सजावटक आधार पर अलग करब सांस्कृतिक शब्दार्थक अध्ययनक अवसर दैत अछि। एकहि पात्र भोजन परोसबाक सामान्य वस्तु सेहो भऽ सकैत अछि आ विशिष्ट संस्कारमे निश्चित प्रयोजनक रूप ग्रहण कऽ सकैत अछि। एहि द्विस्तरीय अर्थक परीक्षण लेल मूल सन्दर्भित प्रयोग जरूरी अछि; केवल वस्तुक चित्र देखिकेँ सर्वसामान्य सामाजिक अर्थ नहि बताओल जाय।

सोनार: धातुक शुद्धता, गढ़न आ अलंकरण

पृ. २७५ पर लेखक सोना-सँ सम्बन्धित धातु, गहना, मिश्रित धातु आ आधार-सामग्रीक चर्चा प्रारम्भ करैत छथि। सोनारक शब्दावलीमे धातुक शुद्धता, पिघलाब, तार बनाब, जोड़ब, सिकड़ी, गहना बँधब आ शरीर पर पहिरब—एकै पदार्थक अनेक व्यवहारिक अवस्था शामिल अछि। एहि कारण सोनारक व्यावसायिक शब्दकेँ केवल 'गहनाक सूची' मानब स्रोतक परिधि सीमित करब होयत।

पुस्तकक पृ. २९४–२९५ पर सिकड़ीक बनावट, कड़ी, गोट, शरीरक अङ्ग पर धार्य गहना आ विशेष आकारक विस्तारपूर्वक चर्चा अछि। समान रूपक छल्ला आ कड़ी अलग तकनीकी काममे भिन्न नाम पाबि सकैत अछि। सोनारक पृष्ठ सभ पर वस्तुक बारीक आकारक शब्दक प्रचुरता देखबैत अछि जे हस्तशिल्पक स्थानीय सूक्ष्म विज्ञानक अभिलेख तैयार होइत अछि।

शरीरांश आ अलंकार-नामक अर्थ-नक्शा

विषय-सूचीमे सोनारक उत्पादनकेँ माथ, नाक, कान, गर्दन, बाँहि-पहुँची, हाथ, पएर, कपड़ा आदि स्थानक क्रममे राखल गेल अछि। ई वर्गीकरण अर्थवैज्ञानिक दृष्टिएँ 'अवस्थिति-आधारित नामकरण' थिक। गहनाक नाम तकर पदार्थक कारणसँ होय सकैत अछि, आ शरीरक कोन अङ्ग पर धारण होइत अछि तकर कारणसँ सेहो। दुनू अर्थ-सम्बन्धक पाठ अलग करबाक चाही।

आभूषणक सामाजिक अवसर, विवाह-विधान अथवा क्षेत्रविशेषक पहिरावासँ जुड़ल प्रतीकात्मक अर्थ पृथक अध्ययनक विषय अछि। ग्रन्थक शब्दसम्पदा ताहि दिशामे महत्त्वपूर्ण आधार दैत अछि; मुदा प्रत्येक गहनाक सांस्कृतिक अर्थकेँ ओकर प्रसंग आ प्रचलनसँ जोड़ि जाँचब आवश्यक अछि।

तीन धातु-शिल्पक तुलनात्मक तत्त्व

लोहार, कसेरा आ सोनारक साझा क्रिया-धातु के आधार बनायब विश्लेषणक एक उपयोगी विधि अछि, मुदा 'पिटब' क्रियाक वस्तु, तीव्रता, ताप आ परिणाम तीनू शिल्पमे बदलि सकैत अछि। अतः समान ध्वनि बराबर समान कार्य नहि। लेखकक तीन अलग उपखण्ड एही अन्तरक सम्मान करैत अछि। एकटा भावी तुलनात्मक कोशमे 'उपकरण' आ 'उत्पाद' सँ अलग 'समान क्रियाक अलग शिल्पगत अर्थ' शीर्षक राखलापर पठन प्रभावी होयत।

९. षष्ठ अध्याय: अन्य पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली (पृ. ३०१–३६२)

षष्ठ अध्याय (पृ. ३०१–३६२) मे कानू, हलुआइ, तेली, मोचिया, डोम/डोबर, कुरेढ़ी, बरई, पासी, सूड़ी, कलवार, लहेरी, चमार, माली आ अन्य कार्यसमुदायक शब्दावली समाहित अछि। “अन्य” कोटिक भीतर भिन्न आधार-सामग्री, औजार, क्रिया, उत्पाद आ सामाजिक उपयोगवला अनेक व्यवसाय छथि। हुनका सभकेँ एकरूप श्रेणी मानब उचित नहि; एहि खण्डक विविधतामे ग्रन्थक समाजभाषिक विस्तार प्रकट होइत अछि।

खाद्य-निर्माण, तेल निकालब, चमड़ा-सम्बद्ध कार्य, टोकरीकर्म, सेवा आ घरेलू उपयोगक अन्य वस्तु-विन्यासमे आधार-सामग्री, औजार, क्रिया, उत्पाद आ व्यवहारक नामक पृथक पृथक जाल अछि। ई अध्याय ग्रन्थक सामाजिक प्रसार देखबैत अछि। एहिमे प्रतिनिधित्वक प्रश्न सेहो उठैत अछि: कोन व्यवसाय अधिक विस्तार पओलक, कोन कम, आ एकर कारण स्रोत-सुलभता अछि कि ऐतिहासिक महत्त्व? उत्तरक लेल अध्यायवार प्रविष्टि-संख्या गनबाक स्वतंत्र काम आवश्यक अछि।

समुदाय-नामक आधार पर शब्दक सीमारेखा खींचबाक बदला एकहि शब्द विभिन्न समुदाय द्वारा कहल जाइत अछि कि नहि, ई परीक्षण अध्ययनक अगिला चरण होयबाक चाही। ‘जातीय’ पदकेँ अनिवार्यतः विशिष्ट पेशाक एकाधिकारक अर्थमे स्वीकार नहि कएल जा सकैत।

कानू, हलुआइ: खाद्यक तकनीकी भाषा

पुस्तकक पृ. ३०२–३०३ पर कानूक खाद्य-सामग्री, भुजला अन्नक रूप, चूल्हा, झाँझ, चलनी आ फरही वा लावाक विविध नामक विस्तार अछि। एतय 'खाद्य' शब्द कच्चा पदार्थ नहि, तापन, फुलाब, भुजाब, छानब, मिलाब आ परोसबाक परिणाम थिक। एकहि धान्यक रूप प्रक्रिया बदललासँ बदलैत अछि; एहि कारण अर्थक तकनीकी क्रम खाद्य-संस्कृति बुझबाक लेल अनिवार्य अछि।

पुस्तकक पृ. ३०३ पर 'भुजा', 'लावा', 'फरही', 'माड़' जेहन नामक चर्चासँ बुझल जा सकैत अछि जे भोजनक निर्माण-प्रक्रिया भिन्न रूपक नाम बनबैत अछि। मुदा प्रत्येक नामकेँ एकहि वनस्पति अथवा एकहि तापन-प्रक्रियाक सार्वत्रिक पर्याय नहि कहबाक चाही। क्षेत्रानुसार नाम-प्रयोग बदलि सकैत अछि। खाद्यविज्ञानक शब्दावली तैयार करैत समय अनाजक मूल रूप, तापन-विधि, तैयार खाद्यक बनावट आ खेबाक अवसर चारू तत्व दर्ज करब योग्य होयत।

हलुआइ-संबद्ध सामग्रीमे दुग्ध, दही, मिठाइक प्रसंस्करण, पाक-विधि, पात्र आ शुद्धता-संबद्ध पदक सन्दर्भ देखल जा सकैत अछि। पृ. ३२० पर लेखक दहीक अनेक स्थानीय नाम आ

जमाबाक विधिक उल्लेख करैत छथि। एतय 'जोड़न', 'जमाब' अथवा भिन्न अवस्था—ई क्रियात्मक अर्थ खाद्य-प्रौद्योगिकीमे महत्त्वपूर्ण अछि। सामान्य भाषामे 'दही' कहि देब पर्याप्त हो, मुदा कारीगरक प्रयोगमे ओकर अवस्था भिन्न काजक अनुकूल रहि सकैत अछि।

तेली: कोल्हू, तिलहन आ तेलक उत्पाद

पुस्तकक पृ. ३२०–३२१ मे तेलीक व्यवसायकेँ आधार सामग्री, तिलहन, कोल्हू, तेल पेरबाक औजार आ पदार्थक अवशेषसँ जोड़ल गेल अछि। कोल्हूक अंगक नाम, तिलहनक भेद, तेल निकलाबाक क्रिया आ तैयार तेलक उपयोग ई चार स्तर मिलि एकटा अर्थक्षेत्र बनबैत अछि। खेत सँ आयल बीया आ तेल निष्कासनक बाद बचल सामग्रीकेँ समान पदार्थ-वर्गक अन्तर्गत रखबाय उपयोगी अछि, मुदा ओकर उपयोग-परिस्थिति भिन्न होइत अछि।

तेल-पेरनी कृषि आ घरेलू उत्पादनक बीच सेतुक काज करैत अछि। उपकरणक यंत्रीकृत रूप विकसित भेला पर पेरनीसँ सम्बन्धित पुरान शब्दक प्रयोग आ अर्थ दुनू बदलि सकैत अछि।

पासी: ताड़-खजूरक कार्यक शब्द

पुस्तकक पृ. ३३४–३३५ पर लेखक ताड़ आ खजूरक गाछ, कटल स्थान, रस जमा करबाक पात्र, उतरबाक साधन, गाछक अलग अङ्ग आ रस निकालबाक कार्यक नाम प्रस्तुत करैत छथि। एतय एक वनस्पतिक शरीर ही कार्यक्षेत्र बनैत अछि; गाछक भिन्न अंश जानल बिना प्रयोगक शब्दक अर्थ नहि खुलैत। 'ताड़', 'खजूर', 'खोल', चीरबाक क्रिया आ पात्रक विन्यासक भिन्नता स्थानिक वनस्पति-ज्ञान आ जीविका-दक्षताक संयुक्त अभिलेख अछि।

चमार: चर्म-शिल्पक प्रक्रम

पुस्तकक पृ. ३४४–३४५ पर चर्मसँ सम्बन्धित सामग्री, कातल अथवा तैयार चाम, शुद्धि, रँग, काटब, जोड़ब, सिलब आ तैयार चामक वस्तुक विवेचन अछि। एहि खण्डमे कच्चा जैविक पदार्थक शोधन आ टिकाउ वस्तुमे रूपान्तरणक चरण संज्ञा आ क्रियाक संग अलग-अलग दर्ज अछि। कारीगरक ज्ञानक मूल बिन्दु पदार्थक गुण बदलनाय थिक। चर्मक काम केवल उत्पादनक अन्तिम वस्तुक नामसँ बुझल नहि जा सकैत।

पृष्ठ ३४५ पर अन्य औजार आ चामक प्रकारक चर्चा भाषिक प्रमाण दैत अछि जे एहि व्यवसायमे सामग्रीक परिवर्तनक सूक्ष्म नाम छल। एहि साक्ष्यकेँ ऐतिहासिक शिल्पज्ञानक प्रमाणक रूपमे पढ़ब चाही। व्यवसायसँ जुड़े जातिगत पूर्वग्रहक आलोचनात्मक परीक्षण कएल जा सकैत अछि, मुदा मूल कारीगरक कौशलकेँ उपेक्षित नहि करबाक चाही।

मोचिया, कुरेढ़ी, लहेरी, बरई, माली आ शेष समूह

मोचिया, कुरेढ़ी, लहेरी, बरई आ मालीक कार्यक्षेत्र अलग-अलग आधार-सामग्री आ उत्पादक संग सम्बद्ध अछि—पादत्राण वा चमड़ा, टोकरी अथवा बेंत, शृंगारक सामग्री, पान-पत्ता आ पुष्प-संस्कृति। एहि विविधताक कारण एकहि अध्यायमे सामाजिक सेवा, घरेलू उपयोग आ हस्तशिल्पक अनेक अर्थक्षेत्र उपस्थित होइत अछि।

मूल लेखकीय परिधिक अनुसार ई खण्ड छोट-छोट पेशाक लोकव्यावसायिक तकनीक एक संग उपस्थित करैत अछि। आलोचनात्मक प्रश्न अछि जे कोन पेशा विस्तृत सामग्री पाबैत अछि आ कोन अपेक्षाकृत संक्षिप्त। ई असमानता जरुरी नहि महत्त्वक स्तर देखाबय; क्षेत्रीय साक्षात्कार, पुस्तकक रचनाक समय उपलब्ध विशेषज्ञ अथवा विशिष्ट कार्यक अभिलेखनक सुविधा सेहो कारण भऽ सकैत अछि। एखन एहि कारण सभ पर अनुमान मात्र सम्भव अछि।

छठम अध्यायक शब्दसंग्रहक मूल सिद्धि

मुख्य पदार्थ-केन्द्रित अध्याय सँ बाहर जे व्यावसायिक नाम छूटबाक खतरा छल, लेखक 'अन्य पारम्परिक व्यवसाय' मे ओकरा व्यापक रूपेँ समेटैत छथि। एहि खण्डक महत्त्व कारण ई अछि जे भाषा शुद्ध शिल्पशालामे नहि, रसोई, कृषिखेत, हाट, पोखरि, गाछ, घर आ उत्सवमे सेहो निर्माण होइत अछि। ई बहुकेंद्री शब्द-सम्पदा मिथिलाक रोजमर्रा उत्पादनक परिधि बढ़ा दैत अछि।

१०. सप्तम अध्याय: भाषातात्त्विक विचार (पृ. ३६३–३९३)

सप्तम अध्याय पोथीक संग्रहपरक सामग्रीकेँ भाषावैज्ञानिक विवेचनमे परिवर्तित करबाक प्रयास थिक। मूल विषय-सूचीमे व्युत्पत्तिक दृष्टिएँ शब्द, उद्गमक दृष्टिएँ शब्द, अर्थक दृष्टिएँ शब्द, अनेकार्थक शब्द, स्वार्थक शब्द, पर्यायवाची शब्द, शब्द-निर्माणक प्रक्रिया, वैकल्पिक शब्द, मानकीकरणक समस्या, संक्षिप्त शब्द, उपसर्ग-प्रत्यय, ध्वनि-विचार, स्वरध्वनि, ह्रस्वतर स्वर, व्यंजनध्वनि, संयुक्त व्यंजन, शब्दमे वर्ण-संख्या, ध्वनि परिवर्तन, अर्थ-परिवर्तन आ निष्कर्षक उल्लेख अछि।

१०.१ शब्दोत्पत्ति आ अर्थ-सम्बन्ध

व्यवसायिक शब्दमे देशज ध्वनि, पड़ोसी भाषा-संपर्क, प्राचीन शब्दक परिवर्तित रूप आ शिल्पक नवा व्यवहारसँ उत्पन्न नाम—सभ प्रकारक इकाई सम्भव अछि। मुदा कोनो शब्दकेँ केवल ध्वनि-साम्य पर संस्कृत, हिन्दी, बंगला अथवा फारसी-मूलक कहब पर्याप्त नहि। ऐतिहासिक साक्ष्य, पुरान प्रयोग आ क्षेत्रीय वितरण चाही। बहुअर्थकता आ पर्यायवाची सम्बन्धमे सेहो अर्थक सन्दर्भ निर्णायक अछि: एक औजारक नाम अलग क्षेत्रमे अलग वस्तु लेल प्रयोग होय सकैत अछि।

रूढ़, यौगिक आ योगरूढ़

पुस्तकक पृ. ३६३ पर लेखक रूढ़, यौगिक आ योगरूढ़ नामक त्रिविध वर्गीकरण प्रस्तुत करैत छथि। रूढ़क अर्थ सामान्य रूपेँ एहन शब्द जेकरा अपन समाज-प्रयोगमे स्वीकृत अर्थ अछि, यौगिकमे अङ्गरूपक संयुक्त अर्थक भूमिका आ योगरूढ़मे संयुक्त रूपसँ उत्पन्न विशेष अर्थक प्रश्न केन्द्रमे अछि। व्यावसायिक शब्दमे ई वर्गीकरण विशेष महत्त्व रखैत अछि, कारण साधनक आकार वा कार्य सँ बनल नाम कालक्रमेँ विशेष औजारक स्थिर नाम भऽ जाइत अछि।

समीक्षात्मक दृष्टिएँ कोनो शब्दकेँ यौगिक बताबैसँ ओकर ऐतिहासिक उत्पत्ति सिद्ध नहि होइत अछि। वर्तमान मैथिलीभाषीक दृष्टिसँ ओकर अङ्ग-भाग स्पष्ट अछि कि नहि, ई पृथक

प्रश्न अछि। ई शब्दविज्ञानक जरूरी सावधानी अछि; लेखकक उदाहरणक सन्दर्भमे हर व्युत्पत्ति लेल कालिक प्रमाण अपेक्षित अछि।

पर्याय आ एकार्थता: पृ. ३७४–३७५

पुस्तकक पृ. ३७४–३७५ पर लेखक पर्याय-विचार करैत छथि आ अनेक शब्दसमूहक उदाहरण दैत छथि; तहिना शब्द-निर्माणक प्रक्रियाक वर्णन प्रारम्भ होइत अछि। 'एक वस्तुक अनेक नाम' देखिते 'पूर्ण समानार्थी' कहब उचित नहि, कारण अनेक पर्यायमे प्रसंग, क्षेत्र, कार्यगत विशेषता आ भावक अन्तर रहि सकैत अछि। लेखकक तकनीकी पर्यायक निबन्धन आरम्भिक सामग्री दैत अछि; नवा कोशमे क्षेत्र, वाचक समुदाय, औजारक रूप वा उपयोगक अंतर जोड़ि वर्गीकरण अधिक समर्थ बनत।

एहि प्रश्नक एक प्रायोगिक समाधान अछि जे मुख्य प्रविष्टि सँ सभ प्रचलित पर्यायक ओर संकेत देल जाय, मुदा प्रत्येक रूपकेँ बिनु विवेचन मुख्य रूपमे गुम नहि करल जाय। 'पर्याय' आ 'भिन्न रूप' सभ समय एक नहि: ध्वनिमात्राक फेर-बदल रूपान्तर हो सकैत अछि, जखन कि भिन्न पदार्थ वा उपयोगक अंतर पर्याय-सीमा कें चुनौती दैत अछि।

शब्द-निर्माण आ तकनीकी रूपक विस्तार

पृ. ३७५ पर लेखक अनेक शब्दक रचना औजारक आकृति, रङ्ग, दन्त, भाग, क्रिया वा पदार्थक विशेषतासँ जोड़ैत छथि। एकर शोधात्मक फल ई अछि जे व्यावसायिक नामकरण आकस्मिक नहि, मानवीय परिचयक वर्ग-निर्माण प्रक्रिया थिक। जे वस्तु दाँतसमान अछि, ओकर नाममे दाँतक समानता आबि सकैत अछि; जे औजारक क्रिया कटबाक अछि, ओहि क्रियासँ सम्बद्ध नाम बनि सकैत अछि। मुदा विशिष्ट शब्दक रचनाक सिद्धि केवल रूपक समानता सँ नहि, प्रचलित अर्थक स्वतंत्र जाँच सँ होएत।

प्रत्यय, लघुता आ बहुरूपता

पुस्तकक पृ. ३८२–३८३ पर लेखक शब्द-निर्माणक रूपांतर, संख्यावाची तथा अन्य बहुप्रयोज्य प्रत्ययक सूचीसँ उदाहरण दैत छथि। एहि अंशकेँ अध्ययनक समय एतबए ध्यान देबाक चाही

जे एक प्रत्यय भिन्न-भिन्न शब्दमे समान अर्थ नहि रखि सकैत अछि। कोनो रूप लघुता देत, कोनो समूह-सूचक भऽ सकत, कोनो क्षेत्रीय बोलीक अनुकूल रूपनिर्माण होयत। भाषा-तत्त्वक विस्तारमे संभावित नियम आ विवेचित अपवादक अलग लेखाजोखा आवश्यक अछि।

ध्वनि-विचार आ मानकीकरण

लेखक भिन्न व्यावसायिक नामक क्षेत्रगत उच्चारण, स्वर-व्यञ्जन, संयोग आ ध्वनि-परिवर्तन पर विचार करैत छथि। पुस्तकक पृ. ३९२ पर ध्वन्यात्मक परिवर्तनक उदाहरणक संग अर्थपरिवर्तनक चर्चा अलग खुलैत अछि। संकलित रूपमे भिन्न-भिन्न नाम अछि, मुदा मानक शब्द लिखबाक उद्यममे जीवित उच्चारणकेँ विलोपित करब लोकसाक्ष्यकेँ क्षति पहुँचाओत। उपयुक्त कोशमे मूल लिखित रूपक संग उच्चारण-रूप, सम्भव हो तँ ध्वनिलिपि, आ क्षेत्र-कोड सुरक्षित रहबाक चाही।

प्रत्येक क्षेत्रीय रूपकेँ लेखनत्रुटि कहब उचित नहि। कतेको स्वर-परिवर्तन जीवित भाषिक परम्पराक नियत व्यवस्था दर्शाबि सकैत अछि। एकर जाँच लेल एक शब्दक भिन्न रूप मात्र नहि, समान ध्वनिक परिवर्तन अनेक शब्दमे नियमित रूपेँ होइत अछि कि नहि, तकर तुलनात्मक परीक्षण जरूरी अछि। लेखकक दृष्टिसँ संग्रहित उदाहरण ई परीक्षणक सामग्री बनैत अछि।

अर्थ-विस्तार, अर्थ-संकोच आ अर्थादेश

पुस्तकक पृ. ३९२–३९३ पर लेखक अर्थ-विस्तार, अर्थ-संकोच आ अर्थादेशक विवरण दैत छथि। पेशागत शब्द अर्थपरिवर्तनक सशक्त उदाहरणक क्षेत्र अछि, कारण औजारक नव बनावट, पुरान वस्तुक कम प्रयोग अथवा एकहि नामक नव उद्योगमे प्रयोग अर्थ-सीमा बदैल सकैत अछि। जखन शब्द पहिने व्यापक पदार्थ लेल प्रयुक्त हो आ बादमे मात्र विशेष उपकरण लेल, तँ अर्थ-संकोचक सम्भावना उठैत अछि; उलटा स्थितिमे अर्थ-विस्तारक। मूल उदाहरणक आन्तरिक कालक्रम सँ सत्यापन बिना ई प्रक्रिया प्रत्येक रूप पर लागू नहि करबाक चाही।

सातम अध्यायक मूल उपलब्धि ई जे ओ व्यवसायिक शब्दसम्पदाक सूचिकेँ भाषिक घटना बनाक पढ़ैत अछि। तथापि कोनो शब्दक व्युत्पत्ति, बहुअर्थता अथवा मानकीकरणक अन्तिम निर्णय लेल दिनांकित ऐतिहासिक प्रयोग आ क्षेत्रीय साक्ष्यक मिलान अनेक ठाम आवश्यक रहैत अछि।

११. उपसंहार (पृ. ३९४–३९७)

लेखकक स्वकीय निष्कर्षक सूक्ष्म पाठ

पुस्तकक पृ. ३९४–३९५ पर लेखक स्पष्ट करैत छथि जे विषयक विस्तार अत्यन्त व्यापक अछि आ प्रस्तुत पोथीमे सबै सम्भव पेशा, सबै शब्दक पूरा विस्तार समाहृत नहि भऽ सकल अछि। तकर बावजूद ओ विभिन्न व्यवसायीक आधार-सामग्री, औजार, उत्पादन, कार्य-विभाजन आ गुण-दोष बताबैवला शब्दक संकलनकेँ महत्त्वपूर्ण मानैत छथि। ई आत्ममूल्यांकन पढला पर पोथीक उचित प्रतिपादन 'अन्तिम सर्वसमावेशी कोश' नहि, 'प्रारम्भिक व्यवस्थित शोध-आधार' रूपमे करब चाही।

पृ. ३९५ पर लेखक श्रमक बदलैत साधन, यंत्रीकरण, पुरान औजारक घटैत उपयोग आ परम्परागत शब्दक लोपक आशंका उपस्थित करैत छथि। कतेको पेशामे नव उत्पादनक संग नवा शब्द आबि रहल अछि, एहन सामाजिक परिवर्तनक संकेत भेटैत अछि। एतय भाषिक परिवर्तन 'शब्दक गलती' नहि; श्रमक पदार्थ आ उपयुक्त साधन बदलनाय तकर एक कारण अछि। ई निष्कर्ष भाषा-इतिहासक अत्यन्त प्रासंगिक प्रश्न उठबैत अछि: जे पुरान पद तकनीकी ज्ञानक संग लुप्त होइत अछि, ओकरा पाठ-आधारित साक्ष्यमे कोना सुरक्षित राखल जाय?

१२. परिशिष्ट: समुदाय-सूची, लोकोक्ति आ ग्रन्थक सूची (पृ. ३९८ सँ)

परिशिष्टक प्रथम भाग “मिथिलाक पारम्परिक व्यवसायी जाति सम्बन्धी शब्द-सूची” (पृ. ३९८) अछि। दोसर “व्यवसायी जाति सम्बन्धी कतिपय लोकोक्ति” (पृ. ४०२) तथा तेसर “अधीत ग्रन्थक सूची” (पृ. ४०४) रूपेँ विषय-सूचीमे अंकित अछि। समुदायनामक सूची मुख्य लेखमे

आएल सामाजिक श्रेणीक पारस्परिक सन्दर्भ लेल सहायक अछि, जखन कि लोकोक्ति व्यवहारक अर्थ-संकेत आ समाजक मूल्यांकनक अलग स्तर देखबैत अछि।

परिशिष्टक समाजभाषिक महत्त्व: नामसूची आ लोकवचन

पुस्तकक पृ. ३९८–४०१ पर व्यवसायी जातिसँ सम्बद्ध नामक सूचीमे स्त्रीलिंग, उपजाति अथवा स्थानीय उपाधि, मूल नाम, विशिष्ट देवता आदि क्षेत्रक संकेत देखल जा सकैत अछि। उदाहरणार्थ पृ. ३९८ पर कलवार, कसेरा, कानू, कुम्हार, कुरेढ़ी, गरेड़ी, चमार आ पृ. ४००–४०१ पर पटवा, पासी, बरई, बरही, मल्लाह, माली, लहेरी, लोहार, सूड़ी, सोनार, हलुआइ आदि नाम पाओल जाइत अछि। किछु प्रविष्टिमे एक नामक अनेक प्रचलित उपनाम दर्ज अछि। एहन तथ्य समुदाय-नामक सामाजिक विस्तार दर्शबैत अछि, मुदा प्रत्येक नाम वर्तमान सर्वमान्य सामाजिक आत्मपरिचय अछि, एहन निष्कर्ष नहि।

परिशिष्ट (ख) मे व्यावसायी जातिसँ सम्बद्ध लोकोक्तिक सामग्री (पृ. ४०२ सँ) समाजक व्यवहारिक दृष्टिक शब्दीय साक्ष्य अछि। लोकवचनमे प्रशंसा, व्यंग्य, आलोचना आ रूढ़ि एकहि संग समाहित भऽ सकैत अछि। लोकक कहबीकेँ बिना समीक्षा ऐतिहासिक तथ्य अथवा वर्तमान नीति बनायब उचित नहि; जे कथन लोकभाषामे भेटैत अछि ओ तत्कालीन मूल्यांकनक संकेत हो सकैत अछि, वास्तविक समुदायकेँ परिभाषित करबाक वैध आधार नहि।

“अधीत ग्रन्थक सूची” पृ. ४०४ सँ प्रारम्भ होइत अछि। पृ. ४०४–४०५ पर संस्कृत-प्राकृत, हिन्दी आ मैथिलीक सन्दर्भ भेटैत अछि; सूची तकर बादो जारी अछि। ई सन्दर्भ-विन्यास ग्रन्थक शब्दसंग्रहकेँ व्यापक भाषिक आ साहित्यिक परम्परासँ जोड़ैत अछि।

परिशिष्टक उपयुक्त नवा सम्पादकीय प्रस्तुति

भविष्यक संस्करणमे मुख्य कोशीय प्रविष्टि आ परिशिष्टक समुदाय-नाम बीच द्विदिशी संकेत देल जा सकैत अछि। उदाहरणार्थ एक कारीगर-नाम सँ सम्बन्धित औजार, पदार्थ, क्रिया आ उत्पाद धरि पहुँच हो; विपरीत दिशा मे कोनो औजार सँ हुनकर समस्त अलग-अलग प्रयोगकर्ता

पेशाक नाम धरि पहुँचल जा सकय। एहि व्यवस्था सँ जाति-केंद्रित सीमाक पुनरुत्पादन कम होयत आ वस्तु-केंद्रित अध्ययन सहज बनत।

सन्दर्भित लोकोक्तिक समालोचनात्मक अनुक्रमणिका अलग सँ बनाओल जाय, जाहिमे अर्थ, प्रसंग, सम्भावित पक्षपात, भाषिक अलंकार आ स्रोत अंकित होय। लोकवचनक पुनर्प्रकाशन सामाजिक सम्मानक कसौटी पर जिम्मेदारी सँ करबाक चाही; बिना प्रसंगक अपमानजनक वाक्य पाठककेँ भ्रमित कऽ सकैत अछि।

१३. अध्यायवार तुलनात्मक सारणी

अध्याय / पृष्ठ	प्रधान पदार्थ अथवा क्षेत्र	शब्दवैज्ञानिक केन्द्र
प्रथम, ५५	सामाजिक आ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	व्यवसाय, जाति, साहित्य, वर्गीकरण
द्वितीय, ६५	काठ–बाँस	पदार्थ, काटाइ, औजार, वस्तु-निर्माण
तृतीय, १३३	माटि–पानि	मृद्भाण्ड, जल-यातायात, माछ, मखान
चतुर्थ, १९५	तूर–सूत	चरखा, ताना-बाना, करघा, वस्त्र
पंचम, २४३		लोहार, कसेरा, सोनार; शिल्प-क्रिया
षष्ठ, ३०१	विविध व्यवसाय	खाद्य, तेल, चर्म, टोकरी, अन्य
सप्तम, ३६३	भाषाविज्ञान	व्युत्पत्ति, अर्थ, ध्वनि,

अध्याय / पृष्ठ	प्रधान पदार्थ अथवा क्षेत्र	शब्दवैज्ञानिक केन्द्र
		मानकीकरण

१४. ग्रन्थक समीक्षात्मक मूल्याङ्कन

ग्रन्थक तीन विशिष्ट उपलब्धि अछि: भिन्न उत्पादन-क्षेत्रक तकनीकी शब्दसम्पदाक व्यवस्थित संकलन, कारीगरक भाषाकेँ सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमिसँ जोड़बाक प्रयास आ एहि शब्दसंग्रहक भाषातात्त्विक विवेचन। एकर सीमासभ सेहो विचारणीय अछि: संग्रहक अपूर्णता लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि; स्थानीय रूपक प्रमाण आ प्रसार समान रूपसँ सुनिश्चित नहि; आ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यक पुष्टिक लेल क्षेत्रीय आ कालिक तुलनात्मक अध्ययन चाही। एहि उपलब्धि आ सीमा दुनूकेँ संग देखला पर ग्रन्थक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि।

आलोचनात्मक प्रश्न

कोन-कोन शब्दक संग भौगोलिक उपभाषा, वक्ता आ संकलन-वर्ष स्पष्ट रूपसँ उपलब्ध अछि?

शब्दक एकहि रूप विभिन्न व्यवसायमे समान अर्थमे प्रयुक्त अछि कि अर्थांतरित?

संकलित शब्दक सामाजिक वितरण कतबा व्यापक अछि, आ कतए केवल व्यक्तिगत/स्थानीय प्रचलन अछि?

मुख्य पदार्थ-आधारित अध्याय आ “अन्य व्यवसाय” अध्यायक असमान विस्तारकेँ कोना पढ़ल जाय?

वर्तमान कालमे व्यवसाय बदलबाक प्रक्रिया आ कारीगरक नवा उपकरणक शब्दक दस्तावेजीकरण कोना हो?

१५. अग्रिम अनुसन्धानक दिशा

एहि ग्रन्थपर आधारित समालोचनात्मक शब्दकोशमे प्रत्येक प्रविष्टिक संग मूल शब्द, उच्चारण, वैकल्पिक रूप, पद-भेद, अर्थ, व्यवसाय, वस्तु–औजार–क्रिया–उत्पादक वर्ग, क्षेत्र आ सूचनादाता, ग्रन्थक पृष्ठ-सन्दर्भ तथा वस्तु वा क्रियाक प्रमाणित दृश्य अथवा ध्वनि जोड़ल जाय तँ अर्थनिर्णयक अनेक कठिनाइ घटि सकैत अछि। ई व्यवस्थित प्रारूप संकलित शब्दक परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट करबाक सम्भावना रखैत अछि।

अगिला चरणमे सामग्री-आधारित तुलनात्मक अनुक्रमणिका, प्रत्येक अध्यायक प्रविष्टि-गणना, स्त्री-पुरुष कार्य-विभाजनक क्षेत्रसर्वेक्षण, समान शब्दक अन्तरव्यावसायिक अर्थ तथा भाषासंपर्कक स्वतंत्र प्रमाण-समीक्षा कएल जाय। जाति-आधारित पूर्वनिर्धारित निष्कर्षक बदला स्वयं कारीगरक कथन, साधनक प्रत्यक्ष निरीक्षण आ स्थानिक आर्थिक इतिहासकेँ प्राथमिक साक्ष्य बनाओल जाय।

पर्याय आ भिन्न उच्चारणक निष्पक्ष सम्पादन

मूल अध्यायसभमे लेखक अनेक ठाम 'फलाँ/फलाँ' भिन्न रूप लिखैत छथि। ई रूप कखनो-कखनो केवल उच्चारण-भेद, कखनो पर्याय, कखनो वस्तुक भेद आ कखनो भौगोलिक रूपक अन्तर हो सकैत अछि। एक लेख्यरूप चुनि बाकी सभ हटायब भाषिक अपव्यय अछि। हर रूपक संग 'कहाँ', 'कैँ', 'कोन अर्थमे' आ 'कोन औजार वा कामक संदर्भमे' चार प्रश्न अनिवार्य राखल जाए। अस्पष्ट प्रमाणक लेल 'असत्यापित' सूचक राखब अनुमानेँ अर्थ बना देबाक अपेक्षा वैज्ञानिक रूपेँ अधिक उचित अछि।

वस्तुक दृश्य अभिलेख आ मौखिक साक्ष्य

काठक रन्दा, कपड़ाक करघा, लोहारक पिटबाक औजार अथवा पासीक रस उतरबाक पात्रक बनावट देखनहि तकनीकी अर्थक सूक्ष्म भेद बुझब कठिन अछि। एकर विस्तारित अध्ययनमे वस्तुक माप, कारीगरक कथन, कामक क्रमक दृश्य अभिलेख आ स्थानीय उच्चारणक ध्वनि-संग्रह जोड़लापर शब्दक अर्थ आ कार्यक सम्बन्ध बेसी स्पष्ट भऽ सकैत अछि।

१६. निष्कर्ष

डॉ. योगानन्द झाक “मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली” मैथिलीभाषी क्षेत्रक श्रम, पदार्थ, उत्पादन आ सामाजिक व्यवहारक बीच विकसित विशेष शब्द-संसारकेँ व्यवस्थित करबाक उल्लेखनीय प्रयत्न अछि। एकर मूल शक्ति शब्दकेँ लोकजीवनसँ पृथक नहि करबाक प्रवृत्तिमे अछि। काठ-बाँससँ माटि-पानि, सूत, धातु आ विविध पेशा धरि फैलल वर्गीकरण शब्दार्थक संग तकनीकी क्रिया-संरचना सेहो दर्ज करैत अछि। सप्तम अध्यायक भाषातात्त्विक चर्चा एहि सामग्रीकेँ व्यापक भाषा-अध्ययनसँ जोड़ैत अछि।

समालोचनात्मक दृष्टिएँ ग्रन्थकेँ स्थानीय ज्ञानक मूल स्रोत मानि, मुदा प्रत्येक समाजभाषिक सामान्यीकरणकेँ स्वतंत्र प्रमाणक कसौटी पर राखि, अध्ययन करबाक चाही। ई पुस्तक मैथिलीक व्यावसायिक शब्द-इतिहास, पारम्परिक शिल्पज्ञान आ शब्दकोश-विकास लेल आधारभूत सामग्री उपस्थित करैत अछि।

अध्याय 09 / २०१०

कथा–लोककथा

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

‘कथा–लोककथा’ डॉ. योगानन्द झाक मैथिली गद्यक एहन संग्रह थिक जाहिमे एकहि जिल्दक भीतर समकालीन सामाजिक-राजनीतिक कथा, भारतीय भाषाक साहित्यसँ अनूदित संक्षिप्त आख्यान आ लोकविश्वासपर आधारित कथा एकत्र भेल अछि। मूल प्रकाशकीय पृष्ठपर २०१० ई. प्रकाशन-वर्ष, प्रकाशक ‘मिथिला रिसर्च सोसाइटी’, कबिलपुर–लहेरियासराय, दरभंगा; पाँच सय प्रति; मूल्य एक सय टाका आ मुद्रक शेखर प्रकाशन, पटनाक उल्लेख भेटैत अछि। ई विवरण बाहरी अनुमान नहि, ग्रन्थक अपन प्रकाशकीय प्रमाण थिक। मूल पृ. ३०क लेखक-हस्ताक्षरित समापनमे २२ मई २०१०क तिथि अछि। [मूल आरम्भिक प्रकाशकीय पृष्ठ; पृ. ३०]

पुस्तकक कथाक्रम अपन वर्गीकरण स्पष्ट करैत अछि। ‘मौलिक’ अन्तर्गत ‘शास्त्र-चिन्ता’ (३५), ‘फैंसला’ (४१), ‘सपनाक डाक’ (५०); ‘अनूदित’ अन्तर्गत ‘स्वाभिमानक मार्ग’ (५७), ‘अपन-अपन पानि’ (५९), ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ (६१), ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’ (६२), ‘दुर्लभ सत्यनारायण पूजा’ (६३); आ ‘लोकवृत्तात्मक’ अन्तर्गत ‘धानक हड़ुड़ी’ (६५), ‘सात बहिन’ (७०) आ ‘बेनीराम’ (७७) अछि। अन्तमे ‘कबिलपुरक संक्षिप्त कुलीननामा’ पृ. ८९ सँ आरम्भ होइत अछि। एहि तरहें मूल पुस्तकक एगारहू कथाक अध्ययन एतय स्वतंत्र रूपसँ कएल गेल अछि। [मूल पृ. ३१, विषय-सूची]

मूल प्रति छायाप्रतिकृति अछि; ओकर कोनो खोजयोग्य पाठ-स्तर उपलब्ध नहि अछि। ताहि कारणेँ अध्ययन कथाक छविमे दृष्टिगोचर पाठ, शीर्षक, पादटिप्पणी आ अनुच्छेदक क्रम पर आधारित अछि। जकर सत्यापन केवल बाह्य प्रमाणसँ सम्भव होइत, तेकरा बाह्य प्रमाणक रूपमे पृथक् राखल गेल अछि। कथाक पात्र, समय, घटना वा रचनाक प्रेरणाक सम्बन्धमे एहन

तथ्य नहि जोड़ल गेल अछि जकर साक्ष्य एहि स्रोतमे नहि भेटैत अछि। कथाक अर्थ-संकेत आ मूल्याङ्कन समीक्षकक व्याख्या छथि, मूल लेखकक प्रत्यक्ष कथन नहि।

‘कथा’ आ ‘लोककथा’क एकत्रीकरण पुस्तकक मूल आलोचनात्मक समस्या सेहो थिक। मौलिक कथा व्यक्तिगत अनुभव, संस्थागत दबाव आ समकालीन समाजक द्वन्द्वकेँ रूप दैत अछि; अनूदित लघुकथाक संरचना छोट, लक्ष्य स्पष्ट आ अन्त प्रायः सूक्ति-जकाँ अछि; लोकवृत्तात्मक कथा सामूहिक स्मृति, लोकनैतिकता आ आस्थाक प्रतीक पर निर्भर अछि। एकरे खातिर तीनू प्रकारक रचनाकेँ एकहि कलात्मक कसौटी पर नापब अनुचित होयत। एहि भिन्नताक सम्मान कएने बिना संग्रहक उपलब्धि आ सीमाक समुचित निर्णय सम्भव नहि।

२. प्रस्तावना, प्राक्कथन आ मैथिली कथा-आन्दोलनक अभिलेख

संग्रहक आरम्भमे ‘समर राति दीप जरय: मैथिली कथा लेखनक क्षेत्रमे शान्त क्रान्ति’ शीर्षक विस्तृत आलेख अछि। एकरा डॉ. योगानन्द झाक व्यक्तिगत रचनाकथा मानब गलत होयत; ई मैथिली कथाकारक सार्वजनिक भेटघाट, कथा-पाठ आ संवादक एक कार्यक्रमक क्रम-विकासक दस्तावेज सेहो थिक। लेखमे १९८९क अन्तक योजना, १९९०क प्रथम आयोजन, २००४क पचासम कार्यक्रम तथा बादक उपक्रम सभक चर्चा अछि। कार्यक्रमक साहित्यिक प्रयोजन—नव लेखककेँ कथा सुनयबाक अवसर, कथा पर तत्काल प्रतिक्रिया, साहित्यिक सम्पर्क आ भाषाक सार्वजनिक प्रयोग—स्पष्ट कएल गेल अछि। [मूल पृ. ५–१२]

एहि आयोजनक वैशिष्ट्य लेखक वा पाठकक नामक गिनती मात्र नहि; साहित्यक निर्माण-प्रक्रियामे श्रोताक भूमिका अछि। मञ्चपर लिखित कथाक वाचन, सामूहिक प्रतिक्रिया, विचार-विमर्श आ पुनःलेखनक सम्भावना, ई सभ गद्यक सामाजिक जीवनकेँ देखबैत अछि। मुदा मूल आलेखमे आयोजकक योगदानक प्रशंसात्मक स्वर प्रमुख अछि। ओकर आधारपर कार्यक्रमक समस्त ऐतिहासिक प्रभाव पूर्णरूपेँ प्रमाणित मानब उचित नहि; उपस्थिति-पञ्जी, मूल कार्यक्रम-पत्र, समकालीन समाचारपत्र आ प्रतिभागीक स्वतंत्र साक्ष्य जोड़ल गेलापर ई

साहित्येतिहासक आरो ठोस सामग्री बनि सकैत अछि। संग्रहक भीतर उपलब्ध वृत्तान्तकेँ आयोजकीय साक्ष्यक रूपमे पढ़बाक चाही।

डॉ. रमानन्द झा ‘रमण’क नामसँ प्रकाशित ‘प्राक्कथन’ मे लेखकक रचनाधर्मिताक परिचय लहेरियासराय आ कबिलपुरक साहित्यिक-भौगोलिक परिवेशसँ जुड़ैत अछि। ई प्राक्कथन कबिलपुरक प्राचीन स्थल, स्थानीय मन्दिर, सामुदायिक आयोजन, सार्वजनिक स्मृति आ कतेक लेखक-अध्येता पर रोशनी दैत अछि। कतहु ग्रन्थसूची-जकाँ नाम आ कृतिक क्रम भेटैत अछि, तँ कतहु लेखकक अनुभवसँ निर्मित सामाजिक चित्र। एहि भागक साहित्यिक महत्त्व ई अछि जे कथा-संग्रहकेँ ओ अपन लेखकीय समाज आ संस्थागत पृष्ठभूमिसँ जोड़ि दैत अछि। [मूल पृ. १३–३०]

प्राक्कथनक विस्तार एक गुण आ एक रचनात्मक असंगति दुनू अछि। गुण ई जे मैथिली साहित्यक संस्थागत आधार, स्त्री-शिक्षा, लोकगायन, पत्र-पत्रिका, नाटक, अनुवाद आ ग्राम्य सांस्कृतिक आयोजनक अनेक संकेत एकहि ठाम सुरक्षित छथि। असंगति ई जे कथाक मूल रचना धरि पहुँचबाक पहिने पाठककेँ दीर्घ क्षेत्रीय साहित्य-वृत्तान्त पढ़य पड़ैत अछि; एतयसँ पुस्तकक आरम्भिक गति कथाक अपेक्षा संस्थागत इतिहासक दिशामे मुड़ि जाइत अछि। तथापि अध्ययनक दृष्टिएँ ई सामग्री उपेक्षणीय नहि, कारण एहि सँ लेखकक लोकसाहित्य-संकलनक वैचारिक धरातल स्पष्ट होइत अछि।

पृष्ठ २४–२७क विवरणमे स्थानीय लेखक, पत्रिका, अनुवाद, शिक्षण-संस्था आ मैथिली साहित्यिक आन्दोलनक अनेक प्रसंग उल्लेखित अछि। ई सभ दावाक ऐतिहासिक सत्यापन लेल स्वतंत्र अभिलेख चाही; किन्तु संग्रहक आत्मप्रस्तुतिमे ई संकेत महत्त्वपूर्ण अछि। पुस्तक अपन पाठकसँ मात्र कथानक पढ़बाक आग्रह नहि करैत; ओ मैथिली गद्यक सृजन, संकलन, प्रचार आ संरक्षणक एक सामुदायिक प्रयत्नक भीतर अपन स्थान निश्चित करैत अछि। एही दृष्टिसँ ‘कथा–लोककथा’ केँ सृजनात्मक पुस्तकक संग-संग सीमित अर्थमे सांस्कृतिक दस्तावेज सेहो कहल जा सकैत अछि।

३. मौलिक कथा: व्यक्तिगत चेतना सँ सार्वजनिक संकट धरि

३.१ ‘शास्त्र-चिन्ता’: स्वप्न, ग्रन्थ आ राष्ट्रीय असुरक्षाक द्वन्द्व (मूल पृ. ३५–४०)

कथाक प्रारम्भ भयावह स्वप्नसँ होइत अछि। नायकक मनमे राष्ट्र, इतिहास, समाज आ अपन अस्तित्व सम्बन्धी आशंका बारम्बार लौटैत अछि। कथाकार ओकरा कोनो एक आकस्मिक राजनीतिक घटनाक समाचार-सारमे सीमित नहि रखैत छथि; स्वप्नक पृष्ठभूमिमे भौगोलिक सीमा, आन्तरिक विघटन, सामाजिक विभाजन आ सामूहिक सुरक्षा सम्बन्धी आशंका एक-दोसरासँ गुँथल छथि। स्वप्नक बाद नायकक दिनचर्यामे पुस्तक, पत्रिका, धार्मिक पाठ, राष्ट्रीय चिन्ता आ आत्मपरीक्षणक आवागमन देखाइत अछि। एहि मानसिक संरचनाक कारण कथा घटनाबहुल यथार्थवादी आख्यानसँ बेशी विचारप्रेरित आख्यान बनि जाइत अछि। [मूल पृ. ३५–३७]

नायकक आसपास पोथी, गीता, रामायण, शास्त्रीय उद्धरण आ लेखन-सामग्रीक उपस्थिति एक विशेष बौद्धिक व्यक्तित्व गढ़ैत अछि। ओ हिंसा आ अराजकतासँ व्यथित अछि, मुदा मात्र धार्मिक पाठ ओकर बेचैनी शान्त नहि करैत। एतय शास्त्रक ज्ञान, नागरिक कर्तव्य आ रक्षात्मक प्रतिरोध बीच प्रश्न उठैत अछि। मूल शीर्षक ‘शास्त्र-चिन्ता’क भीतर शास्त्र पढ़बाक क्रिया आ जनजीवनमे ओकर प्रयोजनक आलोचनात्मक सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि। ई शीर्षक ‘शस्त्र’क प्रत्यक्ष समानार्थी नहि; तथापि कथा आगाँ चलि कए ज्ञानक चिन्ता सँ सुरक्षा-उपाय आ प्रतिरोधक चर्चा दिस मुड़ैत अछि।

अशोक नामक युवकक आगमन कथा लेल निर्णायक मोड़ अछि। प्रारम्भमे ओ गुरुक प्रति श्रद्धा व्यक्त करैत अछि, बादमे राष्ट्रक संकट, निर्बलता, शस्त्ररहित अवस्थाक जोखिम आ अन्याय-प्रतिरोधक प्रश्न उठबैत अछि। नायक अहिंसा, सत्य, संयम आ नैतिक मार्गक आश्रय लैत छथि, जखन कि अशोक केवल सद्भावना पर्याप्त होयबाक प्रश्न करैत अछि। संवादक भीतर गीता-सन्दर्भ, दण्ड, धर्मरक्षा आ कर्तव्य सम्बन्धी तर्क एना जुड़ैत अछि जे कथा दू दृष्टिकोणक प्रत्यक्ष टकराहट बनि जाइत अछि। [मूल पृ. ३८–३९]

अन्तिम पृष्ठपर नायक अशोकक तर्ककेँ एकरूप अस्वीकार नहि करैत छथि; ओ शास्त्रीय पुस्तक आ राज्य-सुरक्षासँ सम्बन्धित चिन्ताक बीच फेर लौटैत छथि। अन्तमे सामूहिक आक्रमणक आशंकासँ उद्वेलित स्वप्न-दृश्यक पुनरागमन देखाइत अछि। एहि कारण कथा समाधानक स्थिर घोषणा पर नहि, बल्कि भय आ सजगताक संगठित चित्र पर ठहरैत अछि। [मूल पृ. ४०] एतय ‘शान्ति’ आ ‘सुरक्षा’ परस्पर विरोधी नारा नहि, कथाक भीतर संकटग्रस्त मूल्य बनि उठैत अछि।

एहि कथाक शक्ति एक विचारशील व्यक्तिक मानसिक उलझनकेँ संवादक माध्यमसँ रूपायित करब अछि। सीमा ई जे राष्ट्र-समाजक व्यापक संकटक वर्णन अनेक स्थान पर विशिष्ट घटना आ चरित्रक बजाय वाद-विवादक वाक्यमे होइत अछि। अशोक प्रश्नकर्ताक प्रतिनिधि बनि उठैत अछि, ओकर स्वतंत्र जीवन-संसार बहुत कम उभरैत अछि। कथाक वैचारिक उग्रता पर सहमति देब अनिवार्य नहि; आलोचनात्मक दृष्टिसँ उल्लेखनीय बात ई थिक जे लेखक शास्त्रीय नैतिकताक सामु तत्काल सामाजिक संरक्षणक प्रश्न उपस्थित करैत छथि। पादटिप्पणीमे एहि कथाक २००२क एक पूर्व प्रकाशनक उल्लेख भेटैत अछि; अतः २०१०क संग्रह-प्रकाशनकेँ रचना-काल मानब गलत होयत। [मूल पृ. ४०, पादटिप्पणी]

३.२ ‘फैंसला’: दफ्तर, न्याय, परिवार आ सत्ता-दबाव (मूल पृ. ४१–४९)

‘फैंसला’क आरम्भ ‘गोपनीय’ लिखल लिफाफा आ कार्यालयीय प्रतिवेदनसँ होइत अछि। ई आरम्भ कथाक केन्द्रमे सूचना आ निर्णायक अधिकारक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। सरकारी पदाधिकारी राघवजीक निजी आवास, पत्नी जमुनी देवी, पढ़ल-लिखल सन्तान आ सामाजिक प्रतिष्ठाक विवरणसँ एक एहन परिवारक चित्र बनैत अछि जकर आर्थिक सुरक्षा आ सामाजिक सम्मान प्रशासनिक पदसँ जुड़ल अछि। बाहरसँ स्थिर देखाइत एहि घरक भीतर राघवजीक मन एक निर्णयक कारण विचलित अछि। कथाकार घरेलू संवादकेँ कार्यालयीय दायित्वक समानान्तर राखैत छथि। [मूल पृ. ४१–४४]

जमुनी देवीक भूमिका सजावटी पात्रक नहि। ओ पतिक अन्यमनस्कता देखि कारण पुछैत छथि, परिवारक आवश्यकता, बाल-बच्चाक भविष्य आ नौकरीक सुरक्षाक तर्क सोझाँ रखैत छथि। राघवजीक मानवीय कर्तव्यबोध आ जमुनी देवीक व्यवहारिक चिन्ता बीच टकराव बनेल अछि। एहि टकरावमे स्त्री-पात्रकेँ केवल नैतिक अज्ञानक प्रतीक बना देब उचित नहि होयत: ओकर भय सामाजिक आश्रितता आ परिवारक जीविकाक यथार्थसँ उपजैत अछि। तैयो कथा निर्णयक प्रमुख अधिकार पुरुष पदाधिकारी लग राखैत अछि, जकर कारण जमुनीक स्वतन्त्र सामाजिक दृष्टि आ विस्तार पा सकैत छल।

मलापुरक मन्दिर, महन्थ, स्थानीय लोग, जमीन आ प्रदर्शनक प्रसंगक प्रवेशसँ कथाक निजी दुविधा राजनीतिक-प्रशासनिक प्रश्न बनि जाइत अछि। जमीनक दावा, ग्रामीण विरोध, पुलिसक कार्रवाइ, जनसमूहक क्षति आ राजनीतिक दबावक परत सभ एक-दोसरासँ सम्बद्ध होइत अछि। पृष्ठ ४६–४९मे प्रशासनिक प्रतिवेदन तैयार करबाक परिस्थिति, स्थानीय प्रभुत्वक अन्तर्विरोध आ सत्ताक विभिन्न स्तरसँ होइत हस्तक्षेप देखल जा सकैत अछि। ई केवल ‘एकटा बुरा अधिकारी’क कथा नहि; व्यवस्था एना गठित अछि जे तथ्यक भाषा, राजनीतिक लाभ आ करियरक भय एकहि निर्णयकेँ अलग-अलग दिशामे खींचैत अछि।

कथाक शीर्षक ‘फैंसला’ एक स्पष्ट नैतिक निष्कर्षक अपेक्षा जगबैत अछि, मुदा वास्तविक कथावस्तु निर्णयक प्रक्रियामे उपस्थित दबावकेँ बेसी महत्त्व दैत अछि। अधिकारीक लिखित प्रतिवेदन, ओकरा उचित ठहरयबाक प्रयास आ राजनीतिक सम्पर्कक आगाँ विवशता कथा-अन्त धरि बनेल रहैत अछि। एहि कारण अंतिम घटनाकेँ बिना अतिरिक्त प्रमाण ‘व्यवस्थाक सुधार’ वा ‘पूर्ण न्याय’ घोषित नहि कएल जा सकैत अछि। पात्रक भीतर उठैत सवाल आ ओकर कृतीक बीच रहि गेल दूरी स्वयं कथाक आलोचनात्मक अर्थ अछि। [मूल पृ. ४५–४९]

कथाशिल्पक दृष्टिएँ गोपनीय कागज, पत्नी-संवाद, प्रशासनिक स्मृति, प्रतिवेदन आ भीड़-प्रदर्शनक दृश्य कथा-गतिक मुख्य आधार छथि। संवाद पृष्ठभूमिक सूचना देबाक काम करैत अछि, यद्यपि कतहु पात्र अपन स्वाभाविक जीवनक अपेक्षा लेखकक नैतिक तर्क प्रस्तुत करैत प्रतीत होइत छथि। पुस्तकक पहिल मौलिक कथा जे राष्ट्रीय संकटक अमूर्त भावभूमिमे चलैत

छल, तकर तुलना मे ‘फैंसला’क सामाजिक संकट अपेक्षाकृत ठोस अछि: पद, कागज, जमीन, मन्दिर, भीड़ आ सत्ता-सूत्रक मार्फत। मूल पादटिप्पणीमे २००३क पूर्व प्रकाशन दर्ज अछि; ई रचनाक संग्रहमे पुनर्स्थापनक प्रामाणिक संकेत थिक। [मूल पृ. ४९, पादटिप्पणी]

३.३ ‘सपनाक डाक’: भूमिसम्बन्धी अभिलेख आ ग्रामीण असुरक्षा (मूल पृ. ५०–५४)

‘सपनाक डाक’क केन्द्रीय पात्र सुखलाल छथि। आर्थिक अस्थिरता, गामसँ जुड़ाव आ पैतृक जमीनक प्रति अपनत्वक भाव ओकर जीवनमे आधारक काम करैत अछि। कथा साक्ष्य दैत अछि जे जमीनक सामाजिक स्मृति आ कानूनी कागज दुई अलग चीज भऽ सकैत अछि। सुखलालक परिवारक दीर्घकालीन भोग-दखल वा पूर्वजक नामक स्मरण ओकरा मानसिक निश्चितता दैत अछि, मुदा सरकारी अभिलेखक अभाव ओकर अधिकारकेँ अस्थिर बनबैत अछि। कथाक आरम्भिक प्रसंगमे ग्रामीण सम्बन्ध, पुरान परिचय आ सामाजिक प्रतिष्ठाक बीच जमीन-प्रश्न धीरे-धीरे विकट होइत अछि। [मूल पृ. ५०–५२]

मोहनक आगमनसँ जमीनक नाप, खरीद-बिक्री आ दाखिल अभिलेखक उलझन स्पष्ट होइत अछि। दफ्तरमे दर्ज नाम, फर्जी कागजक आशंका, मौखिक अधिकारक दावेदारी आ भूमि-लेनदेनसँ जुड़ल व्यक्ति सभ कथाक तनाव बढ़बैत अछि। सुखलालक भय केवल धन गमाबयक नहि, पीढ़ीक स्मृति आ घरक आधार छिनायबाक भय अछि। एहि मानसिक तनावमे ‘सपना’ साधारण नीन्दक घटना नहि; ग्राम्य समाजक असुरक्षाक साहित्यिक रूप बनैत अछि। [मूल पृ. ५२–५३]

कथाक अन्तिम खण्डमे बेचैन सुखलाल जमीनकेँ बचेबाक लेल कार्यालय आ कागजक संसारमे फँसल देखाइत अछि। जागरण आ स्वप्नक सीमा धुँधल होइत अछि; अन्तमे गामसँ जुड़ल विनाशकारी स्वप्न-दृश्य ओकरा विचलित करैत अछि। एहि प्रकार कथाकार जमीनक विवादक सम्पूर्ण न्यायिक समाधान देबाक अपेक्षा ओकर मनोवैज्ञानिक परिणामक चित्र गढ़ैत छथि। शीर्षकक ‘डाक’केँ एतय संकट-सूचनाक रूपकक तौरपर पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा एकरा वास्तविक डाक-प्रणालीक कथानक मानब उचित नहि। [मूल पृ. ५३–५४]

‘फैंसला’ आ ‘सपनाक डाक’कैं एकसाथ पढ़लासँ प्रशासनिक कागजक दू रूप देखाइत अछि: एकठाम पदाधिकारी कागजक निर्णयकर्ता अछि, दोसरठाम साधारण ग्रामीण कागजक अभावक भुक्तभोगी। एहि दोहरी रचनासँ संग्रहमे राज्य, कानून आ नागरिकक सम्बन्धक एक अनौपचारिक आलोचना निकलैत अछि। ‘सपनाक डाक’क शिल्प संक्षिप्त अछि आ कथानक स्पष्ट प्रकारेँ सुखलालक बेचैनीक ओर मुड़ैत अछि। सीमा ई जे भूमि-अधिकारक विधिक जटिलताक सूक्ष्म प्रक्रिया प्रदर्शित नहि; लेखकक अभिप्राय साहित्यिक अनुभूति रचब अछि, कचहरीक प्रक्रियाक विवरण देब नहि। एहि कथाक २००३क पूर्व प्रकाशनक उल्लेख मूल पादटिप्पणीमे अछि। [मूल पृ. ५४]

४. अनूदित कथा: लघु आख्यानक भीतर नैतिक तर्क

अनूदित खण्डमे पाँच रचना अछि। एहि पाँचूकेँ डॉ. योगानन्द झाक स्वतन्त्र मौलिक कथा मानि साहित्येतिहास लिखब तथ्यगत भूल होयत। मूल पादटिप्पणी अनुसार ‘स्वाभिमानक मार्ग’ आ ‘अपन-अपन पानि’ डॉ. श्रीमती मिथिलेश कुमारी मिश्रक हिन्दी लघुकथा-संग्रह ‘छँटता कोहरा’ सँ भाषान्तरित अछि। शेष तीन लघुकथाक पादटिप्पणीमे हुनके संस्कृत लघुकथा-संग्रहसँ भाषान्तरणक संकेत भेटैत अछि। कतेको कथा पुस्तकमे आवयसँ पूर्व मैथिली पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल, जकर सूचना सेहो पादटिप्पणीमे अछि। एहि समीक्षा लेल मूल हिन्दी आ संस्कृत पुस्तकक समानान्तर पंक्ति-पंक्ति पाठ उपलब्ध नहि अछि; एही हेतु अनुवादक स्रोत-निष्ठा वा मूलसँ विचलनक निर्णायक दावा नहि, बल्कि उपलब्ध मैथिली अनूदित पाठक साहित्यिक क्रियाक विश्लेषण कएल गेल अछि। [मूल पृ. ५८, ६०–६३, पादटिप्पणी]

४.१ ‘स्वाभिमानक मार्ग’: सुविधा बनाम आत्मसम्मान (मूल पृ. ५७–५८)

कथामे परीक्षा वा चयन-प्रक्रियाक सन्दर्भमे किछु युवकक परस्पर संवादक माध्यमसँ अवसर, आरक्षण, पात्रता आ स्वाभिमानक प्रश्न उठैत अछि। एक वक्ता सुविधा लएबाक सम्भावना देखबैत अछि, जखन कि दोसर पात्र अपन प्रतिभा आ श्रमक भरोसापर चयन प्राप्त करबाक बात करैत अछि। कथाक अन्तिम कथन स्वाभिमान आ आत्मप्रयासकेँ प्रमुख नैतिक मूल्य

बनबैत अछि। एतय पात्रक विस्तृत पारिवारिक वृत्तान्त नहि देल गेल अछि; कथाक ऊर्जा छोट-छोट संवाद आ एक निर्णायक स्वरतक सीमित अछि। [मूल पृ. ५७–५८]

रचनाक साहित्यिक प्रभाव कथाकार द्वारा बनाओल विरोधमे अछि: बाहरी अवसरक लाभ आ अपन श्रमपर नैतिक भरोसा। तथापि ई विरोध सामाजिक नीति सम्बन्धी सम्पूर्ण तर्क नहि बनैत। आरक्षणक ऐतिहासिक कारण, अवसरक संरचनात्मक असमानता आ विभिन्न समुदायक अनुभवक विवेचन एहि लघुकथामे नहि अछि। ताहि कारण रचनाक पात्रक दृष्टिकोणकेँ एक साहित्यिक स्वाभिमान-बोधक रूपमे पढ़ब अधिक युक्तिसंगत अछि; ओकरा भारतीय समाजक समस्त अवसर-वितरण पर अन्तिम नीति-निर्णय बना देब पाठसँ अधिक निष्कर्ष काढ़ब होयत।

मैथिली भाषान्तरक प्रभाव संवादक तत्परता, प्रश्नोत्तरक गति आ छोट अन्तिम कथनसँ पैदा होइत अछि। हिन्दी मूलक उपलब्धता बिना शब्दानुवाद आ भावानुवादक विस्तृत तुलना सम्भव नहि; मुदा उपलब्ध मैथिली पाठमे कथ्यक केन्द्र भाषिक अस्पष्टता बिना सोझाँ अबैत अछि। एहि प्रकार ई खण्डक अन्य सूक्तिमूलक कथाक भाँति नैतिक विकल्पक एक लघु दृश्य प्रस्तुत करैत अछि।

४.२ ‘अपन-अपन पानि’: प्राकृतिक संसाधन पर अधिकारक प्रश्न (मूल पृ. ५९–६०)

एक ऋषिक आगमन, राजाक कृती आ जलक उपयोगसँ जुड़ल प्रश्न एहि लघुकथाक मुख्य साधन छथि। राजसत्ता जल-वितरणकेँ अपन निर्णायक विषय मानैत अछि, मुदा ऋषि आनल जल आ प्राकृतिक जल बीच भेद स्पष्ट करबैत छथि। कथा तकरा मार्फत प्रश्न उठबैत अछि जे मनुष्यक जीवनाधार बनयवला प्राकृतिक संसाधन पर विशिष्ट व्यक्ति वा शासकक नैतिक अधिकार कतेक धरि मानल जा सकैत अछि। अन्तमे राजाक बुद्धि पलटैत अछि आ ओकरा प्राकृतिक जलक सामूहिक उपयोगक विचार ग्राह्य होइत अछि। [मूल पृ. ५९–६०]

एहि कथाक उपयुक्त आलोचनात्मक पाठ ‘राजा खराब, ऋषि नीक’ एतबे नहि। राजा राज्यक संस्थागत शक्ति थिक; ऋषि व्यक्तिगत विवेक आ लोकहितक प्रतिनिधि। राजाक

परिवर्तन सत्ता द्वारा लोकनैतिकताकेँ स्वीकार करबाक दृश्य अछि। जलक आवश्यकताक सर्वव्यापकता कथा-कथनकेँ विशेष क्षेत्र वा जातिसँ ऊपर उठबैत अछि। कथाक विस्तार छोट होइतहुँ एतय प्रकृति, साझा जीवन आ स्वामित्वक सम्बन्ध पर सटीक प्रश्न अछि।

शिल्पमे संवादप्रधानता, पुनरावृत्त तर्क आ निर्णयक सरल उलटाव प्रधान अछि। समस्या एकदम जटिल नीति-प्रश्न बनि नहि उठैत; कथाकार पाठककेँ तत्काल नैतिक बोध देबाक लेल राजाक मन-परिवर्तन शीघ्र करबैत छथि। ई संक्षेप लघुकथाक शक्ति अछि, मुदा जलक वास्तविक असमान वितरणक सामाजिक-आर्थिक चित्र विस्तारित करबाक गुंजाइश छोड़ैत अछि।

४.३ ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’: विश्वपरिवारक उच्चारण आ व्यवहारक कसौटी (मूल पृ. ६१)

एहि अत्यन्त संक्षिप्त कथा मे उच्च शिक्षाक लेल इंग्लैंड गेल बंगाली युवक, ओकर एक अंग्रेज मित्र आ परिवार-सन्दर्भ प्रस्तुत अछि। संवादमे निजी सुविधा, भोजन, व्यय, जीवनक साधन आ अन्य मनुष्यक प्रति दायित्वक प्रश्न पर चर्चा होइत अछि। संस्कृत सूक्ति ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ कथाक शीर्षक भऽ कए पाठककेँ एक आदर्श दैत अछि, जखन कि कथाक पात्र अपन व्यवहारमे ओकर अर्थकेँ परखैत छथि। [मूल पृ. ६१]

एहि रचनाक आलोचनात्मक केन्द्र सूक्तिक केवल प्रशंसा नहि, ओकर व्यवहारिक परीक्षा अछि। सम्पूर्ण संसार एक परिवार अछि—एहि कथनक अर्थ तबे सार्थक होयत जखन अपन जीवनक सुविधा आ अपरिचितक कल्याणक बीच नैतिक सम्बन्ध स्वीकारल जाय। भाषा, देश आ परिवारक भिन्नतासँ बनल छोट संवाद कथाकेँ विश्वनागरिक संवेदनासँ जोड़ैत अछि; तथापि कथा विस्तारक बजाय प्रश्नकेँ खुला रखैत अछि।

अनुवादक दृष्टिसँ ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ जेकाँ संस्कृत पदकेँ यथावत् राखि ओकर चारूकात मैथिली संवाद विन्यस्त करब बहुभाषिक सांस्कृतिक सन्दर्भक उदाहरण अछि। एहि सँ ई निष्कर्ष अवश्य निकलैत अछि जे अनूदित मैथिली पाठ हिन्दी/संस्कृतक मौलिक विचार-

संसारकेँ स्थानीय पाठक लग पहुँचबैत अछि; मुदा मूल पाठक ठोस शब्द-विन्यासक संग तुलना बिना विशिष्ट भाषान्तर-रणनीतिक दावा कएल नहि जा सकैत अछि।

४.४ ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’: पद-सम्मान आ वास्तविक लेखनक अन्तर (मूल पृ. ६२)

विद्यालयमे एक मन्त्री महोदयक आगमन अछि। पूर्व परिचयक कारण शिक्षक आ शिक्षार्थी हुनकर अभिनन्दनक आयोजन करैत छथि। प्रधानाचार्य द्वारा ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’ समर्पित कएल जाइत अछि, मुदा सम्मानित व्यक्ति जखन लिखल सामग्रीक सम्बन्धमे प्रश्न करैत छथि तँ ग्रन्थक खोखलापन उजागर होइत अछि। कथाक व्यंग्य ई संकेत दैत अछि जे समारोहक भव्यता अपने आपमे बौद्धिक उपलब्धिक प्रमाण नहि होइत अछि। [मूल पृ. ६२]

ई लघुकथा साहित्यिक समाजक लेल विशेष उपयोगी प्रश्न उठबैत अछि। जँ ग्रन्थमे वास्तवमे रचना वा अध्ययन नहि, केवल आवरण, स्वागत-वचन आ नाममात्रक सामग्री हो, तँ ‘ग्रन्थ’ शब्दक प्रतिष्ठा आ ओकर वास्तविक स्वरूप बीच दूरी बनैत अछि। कथा एहि दूरी पर तीक्ष्ण व्यंग्य करैत अछि। व्यक्तिक पद-प्राप्ति आ तदनुरूप छपल अभिनन्दन-सामग्रीक मूल्यांकन करबाक लेल पुस्तकक वास्तविक सामग्री आवश्यक अछि; समारोहक सामाजिक दबाव आलोचनात्मक विवेकक स्थान नहि लए सकैत अछि।

रचनाक संरचना एक हास्य-व्यंग्यात्मक उलटाव पर टिकल अछि। पहिले सत्कारक आडम्बर, तकर बाद ग्रन्थक निरीक्षण, फेर पाठकक अपेक्षाक उलटा परिणाम। एहि संक्षिप्त आवृत्तिमे अतिरिक्त चरित्र-विकासक गुंजाइश कम अछि; तथापि शिक्षा, राजनीति आ पुस्तक-संस्कृतिक सम्बन्ध पर जे प्रश्न उठैत अछि, से संग्रहक विस्तृत प्राक्कथनमे उल्लिखित वास्तविक साहित्यिक सम्मान-परम्पराकेँ सेहो आलोचनात्मक दूरीसँ देखबाक अवसर दैत अछि। एहि अन्तरपाठीय विडम्बनामे पुस्तकक एक रोचक स्व-समालोचनात्मक सम्भावना निहित अछि।

४.५ ‘दुर्लभ सत्यनारायण पूजा’: कर्मकाण्डसँ सत्याचरण दिस (मूल पृ. ६३)

कथामे सत्यनारायण-व्रत कराबय चाहनिहार भक्त आ पण्डितजीक बीच संवाद अछि। भक्तक निजी संकट आ धार्मिक अनुष्ठानक इच्छा सुनि पण्डितजी सत्य, सदाचार आ लोकहितक महत्व पर बल दैत छथि। पूजा-व्यवस्थाक बाहरी औपचारिकताकेँ अस्वीकार करबाक अपेक्षा कथा पूछैत अछि जे सत्यक आराधना जीवनक प्रत्यक्ष आचरणसँ अलग किएक मानल जाय। [मूल पृ. ६३]

एहि रचनामे धार्मिक परम्पराक भीतरसँ उठल नैतिक पुनर्व्याख्याक स्वर अछि। पुरोहित अपना व्यवसायकेँ मात्र सामग्री-संग्रह आ क्रियाक्रमक आदेशमे सीमित नहि रखैत छथि; ओ जीवनमे सत्य ग्रहण करबाकेँ मूल मानदण्ड बनबैत छथि। एकर फलस्वरूप कथा पाठक लग भक्तिक तात्पर्यक नव प्रश्न आनैत अछि। ई आलोचना धार्मिक आस्थाक पूर्ण निषेध नहि, कर्मकाण्ड आ आचरण बीच प्राथमिकताक विमर्श थिक।

शीर्षकक ‘दुर्लभ’ शब्द प्रश्न पैदा करैत अछि: अनुष्ठानक अवसर दुर्लभ अछि, वा सत्यपर टिकबाक साहस दुर्लभ? पाठ एहि दोसर अर्थक दिशामे पाठककेँ प्रेरित करैत अछि। रचना एक-पृष्ठीय होइतहुँ अपनी अवधारणा स्पष्ट करैत अछि। मुदा भक्तक पारिवारिक संकटक जटिलता कथक समयमे विस्तार नहि पबैत; नैतिक सिद्धान्त दृश्यपर प्रमुख भऽ जाइत अछि। एहि रूपमे ई कथा मैथिली अनूदित लघुकथाक शिक्षापरकता आ ओकर शिल्पगत संक्षेप दुनू देखबैत अछि।

४.६ अनूदित खण्डक साझा उपलब्धि आ शोधगत सीमा

पाँचू लघुकथामे एक साधारण रचनात्मक पद्धति देखाइत अछि: पहिने जीवनक एक छोट परिस्थिति, तकर बाद दू पक्षक तर्क आ अन्तमे स्पष्ट मूल्य अथवा विडम्बनापूर्ण मोड़। स्वाभिमान, पानी, विश्वपरिवार, औपचारिक सम्मान आ सत्य-आचरण पाँच अलग विषय थिक, मुदा सभमे वाणी आ व्यवहारक दूरी पर प्रहार अछि। मैथिली अनुवाद एहि विचार सभकेँ मैथिली पाठकीय संसारमे प्रवेश देबैत अछि। छोट आकारक कारण पाठक तर्कक केन्द्र धरि

पहुँचैत छथि; मुदा मनोवैज्ञानिक जटिलता आ प्रसंग-विकासक संभाव्यता सीमित रहि जाइत अछि।

मूल ग्रन्थक पादटिप्पणी भाषान्तरित कृतिक संकेत दैत अछि, ई सम्पादकीय गुण अछि। मुदा अनुसन्धानेक दृष्टिसँ मूल पाठक संस्करण, मूल भाषाक प्रकाशकीय विवरण, मूल शीर्षक आ पाठभेदक पूर्ण तुलनात्मक सूची एकसंग होयत तँ अनुवादक ऐतिहासिक समीक्षा आरो विश्वसनीय बनत। प्रस्तुत अध्ययन एहि अभावकेँ कल्पित उद्धरण वा अनिर्दिष्ट मूलपाठसँ भरबाक प्रयास नहि करैत अछि।

५. लोकवृत्तात्मक खण्ड: अन्न, सामूहिकता आ देवताक लोकस्मृति

‘लोकवृत्तात्मक’ शीर्षक संयोग नहि। एहि खण्डक रचनामे लोककथा सुनयबाक मौखिक शैली अछि, मुदा ओ सभ मात्र लोकवार्ताक अक्षरशः प्रतिलिपि नहि लगैत। कतहु कथाकार कथा आरम्भ करबाक पूर्व व्याख्यात्मक पृष्ठभूमि दैत छथि; कतहु सामाजिक आशयक स्पष्ट निष्कर्ष जोड़ैत छथि; आ कतहु देवता-परम्परा आ वंशवृत्तान्तक ऐतिहासिक सम्भावना पर अपना स्तरसँ विचार करैत छथि। अतः एतय ‘लोककथा’ कहैत समय मौखिक परम्पराक सामग्री आ लिखित पुनर्रचनाक बीच अन्तरकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक अछि।

५.१ ‘धानक हड़ुड़ी’: अन्न, भूख आ सह-अस्तित्वक लोकनीति (मूल पृ. ६५–६९)

कथाक आरम्भमे लेखक अन्न आ चाउरक स्थान पर चिन्तन करैत छथि। एक ब्राह्मणक भोजन-अपेक्षा, धानक उत्पत्ति-संकेत आ अन्नक महत्त्वक विस्तार कथा लेल लोक-वैचारिक भूमिका रचैत अछि। ई भूमिका मनुष्यक भोजनक सांस्कृतिक महत्त्वकेँ प्रकट करैत अछि, मुदा कथाक मुख्य भाग पक्षी-जीवनक माध्यमसँ मानवीय स्वार्थक परीक्षण करैत अछि। कथामे राजा, रानी आ बहिकरी समुदाय द्वारा ‘धानक हड़ुड़ी’क प्रसंग विकसित होइत अछि। [मूल पृ. ६५–६६]

रानी लगातार परिवार आ समुदाय लेल अन्न प्राप्त करैत अछि, जखन कि राजा अपन भोगक अधिकार सहज मानैत अछि। भोजन पर निर्भरता, सेवाक असमान बँटवारा आ अपरक

श्रमक अवमूल्यन किछु सरल दृश्यक माध्यमसँ सोझाँ अबैत अछि। रानीक असन्तोष केवल व्यक्तिगत रूठब नहि; ई प्रेमक नाम पर श्रमक एकतरफा उपयोगक विरुद्ध प्रतिक्रिया अछि। कथामे राजा अपन भोजन-व्यवस्था स्वयं नहि बना पबैत, ओकर अधिकार-बोध परिस्थितिसँ टकरा जाइत अछि। [मूल पृ. ६६–६७]

एक महत्त्वपूर्ण मोड़पर रानीक प्रति राजाक विश्वास, रानीक स्वतंत्र निर्णय आ राजाक संकट कथा कैं त्रासद दिशामे लऽ जाइत अछि। अन्न छोड़बाक, उपवास वा संगत्यागक संकल्प, परस्पर दया आ पश्चात्तापक प्रसंगसँ कथा केवल धान सम्बन्धी उत्पत्तिकथा नहि रहैत; ई दाम्पत्य आ सामूहिक जीवनमे परस्पर कर्तव्यक आख्यान बनि उठैत अछि। अन्तिम पृष्ठमे रानीक वियोग आ राजाक शोकक संग लोककथाक व्यापक मानवीय आशय पर लेखक स्वयं टिप्पणी करैत छथि। अन्तिम अनुच्छेदमे चीन देशसँ जुड़ल लोकविश्वासक उल्लेख सेहो अछि; ताहि कारण एहि कथाक कथानककेँ बिना स्वतंत्र क्षेत्रीय साक्ष्य केवल मिथिलामे उपजल लोककथा मानब उचित नहि। [मूल पृ. ६७–६९]

कथाक शिल्पमे लोकव्याख्या आ आख्यानक मिश्रण अछि। आरम्भिक अन्न-चर्चा कथाक प्रतीक-क्षेत्र निर्धारित करैत अछि, मुदा ई भूमिका नाटकीय कथा आरम्भ होयबामे विलम्ब सेहो करैत अछि। पक्षी-पात्रक सामाजिक व्यवहार मानवसमाजक संरचनाकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि—राजा, रानी, श्रम, अधिकार, पालन-पोषण आ वियोग। कथाक मूल शक्तिक रूपमे अन्नक वस्तुगत मूल्य आ अन्न अर्जित करबाक अदृश्य परिश्रम सोझाँ अबैत अछि।

अन्तिम टिप्पणीमे लेखक लोककथाक करुणा, परोपकार आ प्रेमक महत्व स्पष्ट करैत छथि। एतय आलोचनात्मक सावधानी ई जे लोककथाक नैतिक संकेतकेँ केवल स्त्रीक आत्मत्यागक आदर्शमे कैद नहि करबाक चाही। रानीक श्रम, ओकर असन्तोष आ ओकर अस्तित्वक आकांक्षा कथा कैं अधिक जटिल बनबैत अछि। एहि पाठक पुनःपठनमे स्त्री-पक्ष, श्रमक नैतिक अर्थ आ सामूहिक खाद्य-सुरक्षाक प्रश्न अलग-अलग उभरि सकैत अछि। मूल पादटिप्पणीमे २००८ ई.मे ‘मैथिली अकादमी पत्रिका’क एक अंकमे प्रकाशनक उल्लेख अछि। [मूल पृ. ६९]

५.२ ‘सात बहिन’: विपत्तिमे स्त्री-सामूहिकता आ युक्तिक विजय (मूल पृ. ७०–७६)

कथाक पहिल भाग लोककथाक रचनात्मक स्वभाव पर लेखकक संक्षिप्त विवेचनसँ शुरू होइत अछि। लोककथा सामान्य जनजीवनक सामूहिक अनुभव, आचार-विचार आ परम्पराक बोध दैत अछि—ई आधार प्रस्तुत कए लेखक सात बहिनक आख्यान सुनबैत छथि। कथा अनुसार एक गरीब परिवारमे सात बेटी अछि। भोजनक अभाव आ पारिवारिक संकटमे बहिन सभकेँ घर सँ दूर वन-दिशि जएबाक परिस्थिति बनैत अछि। सात बहिनक नामक क्रम, सामूहिक चलब आ एक-दोसराक संग रहबाक आग्रह मौखिक कथा-जगतक विशिष्ट ध्वनि अछि। [मूल पृ. ७०–७१]

वनमे भूख, भय, अपरिचित आश्रय आ भोजनक खोज द्वारा संघर्ष बढ़ैत अछि। बहिन सभ एक एहन स्थान पर पहुँचैत छथि जतय आरम्भमे खाद्य-सुरक्षा जकाँ प्रलोभन अछि, मुदा ओही परिवेशमे छल आ हिंसाक आशंका सेहो अछि। कथामे डाकिन-जकाँ भयकारी पात्र, अँधार घर, फाटक आ गुप्त युक्तिक प्रयोग भेटैत अछि। छोट बहिनक चातुर्य तथा बहिन सभक परस्पर बचाव कथा लेल निर्णायक अछि। [मूल पृ. ७२–७३]

उत्तरार्द्धमे बहिन सभ एक-एक कए संकटसँ निकलबाक प्रयास करैत छथि। कतहु कूदब, चढ़ब, लुकायब, फाटक खोलब वा बाधाक सामना करबाक प्रसंग अछि। पाठ बारम्बार देखबैत अछि जे व्यक्तिगत सुरक्षा आ सामूहिक सुरक्षा अलग नहि। जे बहिन आगाँ बढ़ल, से पछिला बहिनक स्थिति पर ध्यान दैत अछि; वियोग, आघात आ सम्भावित हिंसाक बीच सहयोग जारी रहैत अछि। अन्तमे कथाकार सात बहिनक एकताकेँ कथाक नैतिक तत्त्वक रूपमे रेखांकित करैत छथि। [मूल पृ. ७३–७६]

लोककथा-शिल्पक दृष्टिएँ संख्या ‘सात’ विशेष कथा-रचना करैत अछि: सात पात्रक क्रम, जोखिमक पुनरावृत्ति, बहिन सभक अलग-अलग प्रतिक्रिया आ एक सामूहिक अन्त। भिन्न-भिन्न बहिनक स्वतंत्र मनोवृत्ति बहुत विस्तृत नहि, मुदा सामूहिक पात्रत्व सशक्त अछि। वन बाहरी संकटक स्थान अछि, घर सुरक्षा आ असुरक्षा दुनूक सम्भावना लए अबैत अछि, आ डाकिन भयक साकार प्रतीक बनैत अछि। एहि सबकेँ आधुनिक सामाजिक घटनाक शाब्दिक इतिहास मानब गलत होयत; लोकगाथामे ई सामान्यतः प्रतीकात्मक अर्थक उपकरण छथि।

एहि कथाक सामाजिक पठने स्त्रीक असहायता मात्र नहि, स्त्रीक बुद्धि आ सामूहिक प्रतिरोधकेँ सेहो महत्त्व देब आवश्यक अछि। आरम्भिक आर्थिक अभाव पारिवारिक संरक्षणक विफलता देखबैत अछि; मुदा अन्तिम संघर्षमे बहिन सभ अपन रक्षाक उपाय स्वयं खोजैत छथि। एहि परिवर्तनक कारण कथा केवल करुणा-प्रधान नहि, साहसप्रधान लोकआख्यान बनैत अछि। मूल पादटिप्पणीमे ‘मिथिला दर्पण’मे २००८क प्रकाशनक सूचना भेटैत अछि, जे रचनाक मुद्रित प्रचारक एक साक्ष्य अछि। [मूल पृ. ७६]

५.३ ‘बेनीराम’: ग्रामदेवता, जातीय स्मृति आ लोकइतिहासक निर्माण (मूल पृ. ७७–८८)

‘बेनीराम’ एगारहू रचनामे आकार, विषय-विस्तार आ सांस्कृतिक जटिलताक दृष्टिएँ विशिष्ट अछि। कथा आरम्भे बेनीरामक सम्बन्ध मिथिलाक दू जाति-समुदाय—नाऊ आ करोड़ीक—लोकआस्थासँ जोड़ैत अछि। बेनीरामक पूजा लोकदेवताक रूपमे कएल जायब, गोधन, गोपालन, जादू-टोना आ ग्रामीण सुरक्षाक विश्वास; एहि विषय सभक उल्लेख सँ लेखक लोकस्मृतिक एक ठोस क्षेत्र चिन्हित करैत छथि। आरम्भिक लोकगीत-सदृश अंश आ बादक घटनाकथा एही आस्थाक लोकस्वर निर्मित करैत अछि। [मूल पृ. ७७–७९]

मूल कथामे राज परौल, लेखा ठाकुर, इन्द्र-कविलास, गोधन सती आ बेनीरामक जन्म आ जीवनसँ जुड़ल अनेक प्रसंग एक क्रममे अबैत अछि। लेखा ठाकुरक धार्मिक आचरण, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, गोधन सतीक निष्ठा आ चमत्कारक घटना सभका इतिहास-सम्मत सूचना नहि, लोकवृत्तान्तक अङ्ग बुझबाक चाही। कथाक भीतर स्वयं एकाधिक विश्वास, सूक्ति, सामुदायिक स्मृति आ अद्भुत घटित होइत अछि; तकरा आधुनिक ऐतिहासिक तथ्यक समकक्ष राखल गेलापर रचनाक मूल प्रकृति विकृत होयत। [मूल पृ. ८०–८२]

गोधन सतीक जीवन, जसीया-बरसीयाक संग वैर, जादू-प्रतिजादू, विवाहसँ सम्बन्धित विघ्न, जन्म आ लालन-पालनक क्रमसँ कथा स्त्रीजीवन आ मातृत्वक एक लोक-आस्थामूलक संरचना गढ़ैत अछि। गोधन सतीक कर्तव्य, जोखिम उठयबाक सामर्थ्य आ पुत्रक रक्षाक आग्रह कथाक प्रमुख प्रेरक शक्ति छथि। एही संग कथामे स्त्रीक लोकधर्म ‘सतीत्व’क परम्परागत

आदर्शसँ जुड़ैत अछि। आधुनिक आलोचना लेल ई प्रश्न खुलल रहैत अछि जे एहि आदर्शमे स्त्रीक साहसकेँ मान्यता कतेक भेटैत अछि आ ओकर स्वतंत्र सामाजिक सत्ता कतेक सीमित होइत अछि। [मूल पृ. ८१–८५]

बेनीरामक जन्मक पश्चात् पिताक जानकारी, पारिवारिक विच्छेद, तरुणाई, जंगल, हिंस्र पशु आ दुष्ट शक्तिसँ मुठभेड़ आदि प्रसंग कथाकेँ वीरगाथात्मक स्वर दैत छथि। बेनीरामक साहस व्यक्तिगत सामर्थ्यक मात्र प्रदर्शन नहि; ओ परिवारक सुरक्षा, अन्यायक प्रतिकार आ ग्रामीण समुदायमे प्रतिष्ठा अर्जित करबाक कर्मक रूपमे उभरैत अछि। किछु प्रसंगमे तान्त्रिक शक्ति, अभिचार, देवी-देवताक आश्रय आ चमत्कार आबहु कथा-संसारक संचालन करैत अछि। [मूल पृ. ८४–८७]

रचनाक अन्तिम भागमे बेनीरामक लोकदेवता-स्वरूप, दीनानाथसँ सम्बद्ध आस्था, मवेशीक रक्षा आ ग्रामक सामूहिक हितक प्रसंग आयल अछि। आख्यानक समापनमे लेखक स्वयं संकेत करैत छथि जे बेनीरामक लोककथा अनेक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक पक्षक दर्शन करबैत अछि। हुनकर एहि दावाकेँ लोकमान्यता बुझबाक सामग्रीक रूपमे ग्रहण कएल जा सकैत अछि; इतिहासक रूपमे निर्णायक पुष्टि लेल स्थानीय पूजा-पद्धति, प्रचलित गीतक स्वतंत्र संस्करण, मौखिक कथावाचकक विवरण आ अभिलेखक तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक रहत। [मूल पृ. ८७–८८]

‘बेनीराम’क साहित्यिक शक्ति ओकर बहुपरतीय कथावस्तु थिक। छोट लघुकथाक उलट, एतय वंश-परम्परा, देवी-विश्वास, कथा-संगीत, धर्म, जाति, लिंग आ पशुधन-अर्थव्यवस्था परस्पर गुँथल छथि। लोकगीतक समावेश कथा केँ मौखिक परम्पराक ध्वनि दैत अछि। मुदा सम्पादकीय दृष्टिएँ कथाक कथक-स्रोत, संग्रह-स्थान, सूचनादाता आ एकाधिक पाठभेदक पूरा ब्योरा नहि भेटबाक कारण एकरा वैज्ञानिक लोककथा-संकलनक अन्तिम पाठ मानब कठिन अछि। सर्वोत्तम अध्ययन-पद्धति ई होयत जे पुस्तकमे उपलब्ध पाठकेँ एक दस्तावेजित संस्करण मानि अन्य संस्करणसँ तुलना कएल जाय।

५.४ तीन लोकवृत्तान्तक तुलनात्मक अर्थ

‘धानक हड्डड़ी’मे अन्न आ पारस्परिक श्रमक प्रश्न छैक; ‘सात बहिन’मे भूखसँ उत्पन्न विघटन आ बहिन सभक सामूहिक आत्मरक्षा; ‘बेनीराम’मे लोकदेवता आ समुदाय-रक्षाक सांस्कृतिक कल्पना। तीनूकेँ जोड़निहार सूत्र ‘जीवनक रक्षा’ अछि। पहिल कथामे रक्षा अन्नक उपलब्धता आ प्रेमक उचित बँटवारा पर निर्भर अछि; दोसरमे संगठन आ चातुर्य पर; तेसरमे नैतिक साहस, देवी-आस्था आ लोकस्मृतिपर। एहि भिन्न माध्यम सभक एकत्रीकरण लोकजीवनक अनेक धाराकेँ देखबैत अछि।

लोकवृत्तान्तकेँ एतय मात्र प्राचीन आ विस्मयकारी सामग्री मानल गेलापर ओकर वर्तमान बोध छुटि जाएत। अन्न-अभाव, असुरक्षित बालिका, पारिवारिक श्रम, जाति-व्यवस्था, पशुधन आ ग्रामदेवता सम्बन्धी मान्यता सभ समकालीन मानवीय प्रश्नक संग संवाद करैत अछि। मुदा लोकविश्वासक नैतिक उपयोग करैत काल आलोचककेँ वर्णित सामाजिक पदक्रम, स्त्री-आदर्श वा चमत्कार-विश्वासकेँ स्वतः सत्य वा स्वतः न्यायोचित नहि मानबाक चाही। यथास्थान प्रश्न करब सेहो लोकपरम्पराक सम्मानजनक अध्ययनक अङ्ग अछि।

६. परिशिष्ट: ‘कबिलपुरक संक्षिप्त कुलीननामा’क स्वरूप आ प्रमाणिकता

संग्रहक विषय-सूची अनुसार पृ. ८९ सँ ‘कबिलपुरक संक्षिप्त कुलीननामा’ आरम्भ होइत अछि। उपलब्धक अन्तिम पृष्ठसभमे हस्तलिखित अथवा रेखाचित्र-रूपमे वंश-वृक्ष, नामक परस्पर शाखा आ कुल-सम्बन्ध देखाइत अछि। कथा-पाठक ठीक बाद एहि वंशसूचक सामग्रीक सम्मिलन अनोखा अछि। लेखकक ग्राम-केन्द्रित रुचि, जातीय स्मृति आ स्थानीय इतिहास बचा कए रखबाक प्रयत्न एहि अध्यायमे प्रत्यक्ष होइत अछि। [मूल पृ. ८९ आ अनुवर्ती वंश-चित्र;-पृष्ठ ४६–५०]

वंश-चार्टक महत्त्व ओकरा द्वारा सुरक्षित नाम आ सम्बन्धक दावामे अछि; एतय प्रमाणिकताक स्तरक अन्तर स्पष्ट राखब आवश्यक अछि। चार्ट पर ककर नाम कोन शाखामे अछि, से पुस्तकक प्रत्यक्ष साक्ष्य अछि। मुदा नामावलीक प्रत्येक सम्बन्ध इतिहासमे सत्यापित

अछि—ई निष्कर्ष केवल चार्ट देखि नहि काढ़ल जा सकैत अछि। ताहि लेल परिवारक मौखिक परम्परा, उपलब्ध पुरान दस्तावेज, पञ्जी, दिनाङ्क आ स्वतंत्र वंश-प्रमाणक परीक्षण अपेक्षित अछि। क किछु रेखाचित्र आ नाम लम्बवत् अथवा घुमाओल रूपमे छपल अछि; एहि कारण बिना स्पष्ट मूल प्रतिक आधार पर प्रत्येक नामक अक्षरशः प्रतिलिपि देब जोखिमपूर्ण होयत।

साहित्यिक दृष्टिसँ ई परिशिष्ट तीन लोकवृत्तात्मक कथाक संग विशेष सम्बन्ध रखैत अछि। ‘बेनीराम’ जकाँ कथा लोकदेवता आ सामुदायिक वंश-स्मृतिक अर्थ बनबैत अछि; वंश-वृक्ष ओहि रुचिक अभिलेखीय पक्ष देखबैत अछि। मुदा पुस्तकमे कथा आ वंशावलीक सम्बन्धक पृथक् आलोचनात्मक व्याख्या पर्याप्त नहि अछि। भविष्यक सम्पादित संस्करणमे प्रत्येक चार्टक परिचय, स्रोत, अनुमानित काल, नामक मानक रूप आ अस्पष्ट स्थानक पाठ-टिप्पणी जोड़ल गेलापर ई परिशिष्ट अधिक शोधोपयोगी बनि सकैत अछि।

७. भाषा, वाक्य-विन्यास, संवाद आ कथन-प्रणालीक समग्र परीक्षा

पुस्तकक भाषामे मैथिलीक बोलचाल, साहित्यिक गद्य, सांस्कृतिक तत्सम शब्द आ लोकप्रयोगक सहअस्तित्व अछि। ‘शास्त्र-चिन्ता’मे धर्म, राष्ट्र, नीति आ दर्शन सम्बन्धी पदावली घनीभूत अछि; ‘फैंसला’मे कार्यालय, प्रतिवेदन, नौकरी, प्रशासन आ राजनैतिक सम्पर्कक शब्द अछि; ‘सपनाक डाक’मे खेत, कागज, दखल, पैतृक जमीन आ गामक व्यवहारक भाषा प्रमुख अछि। एतय शब्दसंपदा विषयक अनुरूप बदलैत अछि। ई केवल सजावटी शब्दबाहुल्य नहि, कथा-जगतक सामाजिक क्षेत्र चिन्हित करबाक साधन अछि। [मूल पृ. ३५–५४]

‘शास्त्र-चिन्ता’क कथा-स्वर प्रश्नात्मक आ अमूर्त अछि। नायक आत्मप्रश्न करैत छथि; अशोक नीतिशास्त्रीय प्रतिप्रश्न करैत अछि। वाक्यक पुनरावृत्ति मानसिक चक्रकेँ प्रकट करैत अछि, मुदा कथा कतहु दीर्घ उपदेशक निकट पहुँचि जाइत अछि। ‘फैंसला’मे अन्तर्मन आ दाम्पत्य संवादक सन्धान अधिक स्वाभाविक अछि; पत्नी जे प्रश्न करैत छथि, से घरेलू जीवनमे पदक संकट प्रवेश करयबाक प्रक्रिया देखबैत अछि। ‘सपनाक डाक’मे जमीन-सम्बन्धी भय,

संवाद आ स्वप्नक मिश्रणसँ कथ्यकेँ तीव्रता भेटैत अछि। एहि तीनू मौलिक कथामे एकहिसन वाक्य-लय नहि, विषयानुकूल अन्तर अछि।

अनूदित लघुकथामे बहुधा ‘प्रश्न–उत्तर–नैतिक परिणति’क रचना-ढाँचा अछि। ओतय कथावाचक विस्तृत स्थलवर्णन नहि करैत; दू पात्रक बीच संवादेँ मुख्य अर्थ स्पष्ट होइत अछि। ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’मे व्यंग्यक सामर्थ्य अन्तिम उलटावसँ उत्पन्न अछि, जखन कि ‘दुर्लभ सत्यनारायण पूजा’मे औपचारिक कर्म आ सत्याचरणक अन्तर अन्तिम वचनमे केन्द्रित अछि। एहि संक्षेपमे पाठककेँ शीघ्र बोध भेटैत अछि, मुदा आलोचनाक प्रश्न ई सेहो अछि जे सिद्धान्तक स्पष्टता पात्रक बहुआयामी मनोवैज्ञानिक चित्र पर कतहु भारी पड़ैत अछि।

लोकवृत्तान्तक भाषा दोसर दिशा लैत अछि। ‘सात बहिन’क घटनाक्रममे दोहराव, क्रमसूचक संख्या, सरल चेतावनी आ बचावक त्वरित गति लोकवार्ताक मौखिक प्रभाव रचैत अछि। ‘धानक हड्डड़ी’मे अन्न सम्बन्धी लोकदृष्टि कथाक आरम्भिक कथ्य निर्धारित करैत अछि। ‘बेनीराम’मे गीत, स्थानीय देवताक नाम, कुल-सम्बन्ध, तान्त्रिक शब्दावली आ चमत्कारक प्रसंग कथा केँ बहुध्वन्यात्मक बनबैत अछि। एहि भाषा-भेदकेँ एकटा एकरूप ‘आधुनिक कथा-शैली’मे समेटब पुस्तकक रचनात्मक विविधताकेँ मेटि देब होयत।

शुद्धताक नामपर एहि पाठक ‘छलाह/छलनि’, ‘अहाँ/हमर’, ‘कएल/भेल’ अथवा स्थानिक उच्चारण सम्बन्धी रूपकेँ एक झटकेमे बदलि देब साहित्यिक विश्लेषणक उद्देश्य नहि। मौलिक बोली, पात्रक अभिव्यक्ति आ लोकगीतक ध्वनि संरक्षित रहबाक चाही। हँ, छपाइमे किछु विरामचिह्न, शीर्षकक टंकण, नामक स्थिर रूप आ पाठ-संयोजनकेँ नब संस्करणमे सम्पादकीय टिप्पणीसहित परिशोधित कएल जा सकैत अछि। मूल संस्करणक किछु छायाप्रतिलिपिक दाग-धब्बा देखल जाइत अछि; ओकरा लेखकक भाषिक दोष ठहरायब अनुचित होयत।

८. एकहि संग्रहमे तीन विधा: कथा, अनुवाद आ लोकसाहित्यक सम्बन्ध

एहि संग्रहक तीन खण्डक क्रम स्वयं अर्थपूर्ण अछि। पहिने नूतन समयक सार्वजनिक संकटसँ उलझैत व्यक्ति, तकर बाद संक्षिप्त नैतिक निर्णयक अनूदित कथा, अन्तमे सामूहिक स्मृति आ

लोकविश्वासक आख्यान। ई क्रम युग-क्रमक निश्चित इतिहास नहि, मुदा पाठकीय अनुभूतिक क्रम अवश्य बनबैत अछि: अमूर्त चिन्तासँ सामाजिक व्यवहार, सामाजिक व्यवहारसँ उपदेशात्मक विवेक, आ ओतयसँ लोकसमुदायक दीर्घ स्मृति दिस। शीर्षक ‘कथा–लोककथा’क संयोग एहि संग्रहक वास्तविक रचनात्मक योजना सँ मेल खाइत अछि।

मौलिक कथाक पात्रक स्वतन्त्रता अपेक्षाकृत अधिक अछि; अशोक नायकसँ असहमति प्रकट करैत अछि, जमुनी देवी पतिक अन्तर्द्वन्द्व पर प्रश्न करैत छथि, सुखलाल अभिलेखक असुरक्षा सँ विचलित छथि। अनूदित लघुकथामे पात्र प्रायः मूल्यगत विकल्पक वाहक बनैत छथि। लोककथामे पात्र सामूहिक रूपक आ सांस्कृतिक भूमिकामे चलैत छथि। एहि अन्तरक कारण ‘बेनीराम’ सँ आधुनिक मनोवैज्ञानिक कथाक एकरूप चरित्रचित्रण, अथवा ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’ सँ बारह पृष्ठक उपन्यास-जकाँ प्रसंगविस्तार मांगब आलोचनात्मक असंतुलन होयत।

तथापि तीनू खण्डक बीच गहिर सम्बन्ध अछि। ‘शास्त्र-चिन्ता’मे कर्तव्यक प्रश्न, ‘स्वाभिमानक मार्ग’मे आत्मनिर्णय, ‘दुर्लभ सत्यनारायण पूजा’मे आचरणक प्राथमिकता आ ‘सात बहिन’मे सामूहिक कर्तव्य—सभ अलग-अलग साहित्यिक साधनसँ ‘कथन आ करणीक अन्तर’ पूछैत अछि। ‘सपनाक डाक’मे भूमि-अधिकारक अनिश्चितता, ‘अपन-अपन पानि’मे प्राकृतिक साधनक साझा अधिकार आ ‘धानक हड़ुड़ी’मे अन्नक बँटवारा—ई सभ संसाधन आ न्यायक प्रश्नक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि। ‘फैंसला’मे सार्वजनिक संस्थाक दबाव आ ‘बेनीराम’मे सामुदायिक रक्षाक आस्था—ई सभ शक्ति आ सुरक्षाक भिन्न कल्पना छथि।

ग्रन्थक एक सीमा सम्पादकीय अनुपातमे अछि। तीन मौलिक कथा पर्याप्त विस्तार लैत छथि, पाँच लघुकथा अत्यल्प विस्तारमे पूर्ण होइत अछि, तेसर खण्डक ‘बेनीराम’ फेर बहुपृष्ठीय आख्यान बनि जाइत अछि। अलग विधाक लेल ई स्वाभाविक होइतहुँ पाठकीय लयमे तीव्र परिवर्तन आनैत अछि। पुस्तकक भूमिका सेहो मुख्य कथा-भागक तुलनामे विस्तृत अछि। एक सम्पादित अनुसन्धान-संस्करणमे मूल सामग्री हटौने बिना विधागत परिचय, स्रोत-टिप्पणी आ अनुक्रमक संक्षिप्त स्पष्टीकरण जोड़ल गेलापर एहि असमानताकेँ पाठकीय शक्ति बनाओल जा सकैत अछि।

९. स्त्री, वर्ग, जाति आ सत्ता: पाठक भीतरक प्रश्न

‘फैंसला’क जमुनी देवीक मनमे घर-परिवारक सुरक्षा आ पतिक नैतिक निर्णयक बीच टकराव अछि। ई दृश्य साहित्यिक दृष्टिसँ स्त्रीकेँ पारिवारिक संरचनाक वास्तविक पक्षकार बनबैत अछि, मुदा अंतिम निर्णायक स्थितिमे ओकर भूमिका सीमित रहैत अछि। ‘धानक हड़ुड़ी’क रानी अन्न अर्जित करबाक श्रम आ स्नेहक असमान बँटवाराक बीच अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत अछि। ‘सात बहिन’मे स्त्रीपात्र सभक परस्पर एकता स्वयं सुरक्षाक साधन बनैत अछि। ‘बेनीराम’क गोधन सतीमें निष्ठा आ अद्भुत साहस अछि, तथापि ‘सती’क सांस्कृतिक प्रतिमान ओकर जीवनक अर्थ निर्धारित करैत अछि। चारूकथाक स्त्री-स्थितिमे अन्तर देखबाक चाही; एकहि ‘आदर्श नारी’क साँचा सभपर आरोपित नहि करबाक चाही।

वर्गक प्रश्न सेहो अलग-अलग स्तरपर उभरैत अछि। सुखलालक पीढ़ीगत भूमि-स्मृति कागजक अभावसँ जोखिममे अछि; राघवजी प्रशासनिक पदपर रहितहुँ राजनीतिक शक्तिक समक्ष दबाव अनुभव करैत छथि; मलापुरक गरीब लोक सामूहिक संघर्षक प्रभाव भोगैत छथि; ‘सात बहिन’मे भूख परिवारक विघटनक प्रारम्भिक कारण अछि। एहि दृश्य सभमे दरिद्रता केवल दया जगयबाक विशेषण नहि, मानव-सम्बन्ध आ सामाजिक अवसर निर्धारित करबाक शक्ति अछि।

‘बेनीराम’क आरम्भमे अलग जातीय समुदाय सभक लोकदेवता सम्बन्धी आस्थाक उल्लेख अछि; ई लोकधर्मक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा कथा कहैत अछि जे कोन समुदाय बेनीरामकेँ अपन देवता मानैत अछि, ई एक लोकमान्यता थिक; एकर आधारपर समुदाय सभक वर्तमान सामाजिक व्यवहार वा समस्त क्षेत्रक इतिहास सम्बन्धी सार्वत्रिक दावा उचित नहि होयत। यथार्थ अध्ययन लेल जातिगत सत्ता-सन्तुलन, पूजा-अधिकार, पुजारीक परम्परा, गाय-गोरुक रक्षा सम्बन्धी विश्वास आ स्थानीय जातीय स्मृतिक बहुविध संस्करण सुनब जरूरी अछि। कथा एहि प्रश्नसभक प्रवेशद्वार खोलैत अछि, अन्तिम समाधान नहि दैत।

सत्ताक दू प्रकार एहि पुस्तकमे विशेष देखाइत अछि। एक राज्यसत्ता, जकर रूप पदाधिकारी, राजा, मन्त्री आ प्रशासनिक निर्णयमे अछि; दोसर सांस्कृतिक सत्ता, जकर रूप गुरु, पुरोहित, ग्रामदेवता, लोकगीत आ वंशावलीमे अछि। ‘अपन-अपन पानि’मे ऋषि राजाकेँ विवेक सिखबैत छथि; ‘अभिनन्दन ग्रन्थ’मे राजनीतिक पदक खोखल प्रतिष्ठाक आलोचना अछि; ‘दुर्लभ सत्यनारायण पूजा’मे पुरोहित स्वयं कर्मकाण्डक बाहरी रूपक सीमा बतबैत छथि; ‘बेनीराम’मे लोकसमुदाय एक रक्षक देवताक निर्माण करैत अछि। ई अनेक रूप कथा-संग्रहकेँ मात्र मनोरंजनक पोथीसँ आगाँ लऽ जाइत अछि।

१०. अनुसन्धानक दृष्टिएँ जाँचल जा सकनिहार अतिरिक्त बिन्दु

पुस्तकक मूल पादटिप्पणी पूर्व-प्रकाशनक उपयोगी सूचना सुरक्षित रखैत अछि: ‘शास्त्र-चिन्ता’क सन्दर्भमे २००२, ‘फैंसला’ आ ‘सपनाक डाक’क सन्दर्भमे २००३, आ लोकवृत्तात्मक कथाक सन्दर्भमे २००८क पत्रिकाक उल्लेख भेटैत अछि। एहि आधारपर ई स्पष्ट अछि जे २०१०क संग्रह एकहि वर्षमे लिखल ग्यारह रचनाक नव-निर्माण मात्र नहि; पूर्व प्रकाशित रचना सभक संकलन सेहो अछि। पत्रिकाक मूल अंकसँ पृष्ठ-संख्या, पाठान्तर आ प्रथम प्रकाशनक निश्चितता फेर जाँचल जा सकैत अछि। वर्तमान समीक्षा एकर बिना अनिर्दिष्ट पाठभेदक कल्पना नहि करैत अछि। [मूल पृ. ४०, ४९, ५४, ६९, ७६]

पुस्तकक व्यापक बाह्य ग्रन्थसूची-सन्दर्भ लेल दू ठोस स्वतंत्र सूचना भेटैत अछि। विदेहक डिजिटल पोथी-सूचीमे ‘कथा-लोककथा २०१०’ डॉ. योगानन्द झाक नामसँ दर्ज अछि। साहित्य अकादेमीक मैथिली पुस्तक-सूचीमे ‘मिथिलाक लोककथा संचय’क संकलक एवं सम्पादक योगानन्द झा आ प्रथम प्रकाशन-वर्ष २०१७ उल्लेखित अछि। एहि पछिला पुस्तकक विवरण लेखकक लोककथा-सम्बन्धी कार्यक एक आगामी ग्रन्थसूचक साक्ष्य थिक; मूल २०१७क पुस्तकक पाठ नहि मिलाओल गेल अछि, तेँ दुनू ग्रन्थमे एकहि कथाक उपस्थिति वा पाठ-सम्बन्धक निश्चित दावा एतय नहि कएल गेल अछि।

एकटा तेसर बाह्य पुस्तक-सूचना जापानक CiNii ग्रन्थ-सूचीमे ‘मैथिली कथा-सरिता’क अछि, जकर सम्पादक मदनेश्वर मिश्र आ योगानन्द झा तथा प्रकाशन-वर्ष १९८३ दर्ज अछि। एतेक सत्यापनसँ योगानन्द झाक नाम कथासाहित्यक सम्पादन-संस्कृतिक एक पूर्व प्रकाशनसँ जुड़ैत अछि। मुदा एहि तथ्यसँ ‘कथा–लोककथा’क प्रत्येक साहित्यिक विशेषताक उत्पत्ति वा १९८३क संग्रहसँ ओकर सामग्रीगत समानता प्रमाणित नहि होइत अछि। बाह्य संदर्भक उपयोग ठीक एहि सीमाधरि कएल गेल अछि।

११. उपसंहार: उपलब्धि, सीमा आ मैथिली कथासाहित्यमे स्थान

‘कथा–लोककथा’क मूल उपलब्धि विषयक विविधता मात्र नहि, साहित्यक तीन जीवन-रूपकेँ एक पुस्तकमे संग आनब अछि—वर्तमान यथार्थपर लेखकक मौलिक चिन्ता, अन्य भाषाक लघुकथासँ मूल्यक आदान-प्रदान आ लोकसमुदायक स्मृतिमे सुरक्षित आख्यान। राष्ट्रीय भय आ शास्त्र-विवेकक प्रश्नसँ शुरू भेल यात्रा राघवजीक कार्यालयीय दुविधा आ सुखलालक जमीन-भयसँ होइत साझा जल, स्वाभिमान, सत्याचरण आ सार्वजनिक सम्मानक आलोचनासँ गुजरैत अछि; अन्तमे अन्न, सात बहिनक सहयोग आ बेनीरामक लोकदेवताक संसारमे पहुँचैत अछि। एहि क्रममे पुस्तक व्यक्ति, संस्था आ समुदाय तीनूकेँ साहित्यक विषय बनबैत अछि।

कलात्मक उपलब्धिक स्तर सभठाम समान नहि अछि। मौलिक कथामे किछु ठाम विचार पात्रपर भारी पड़ैत अछि; लघुकथामे नैतिक अन्त कथा केँ अत्यन्त सीधा करि दैत अछि; लोकवृत्तान्तमे लेखकक आरम्भिक-अन्तिम विवेचन मौखिक आख्यानक स्वतंत्र अर्थक्षेत्रकेँ निर्देशित करैत अछि। तैयो ई सभ भिन्नता पुस्तकक स्वरूप बुझबाक लेल उपयोगी अछि। लेखक प्राय: नैतिक पक्ष ग्रहण करैत छथि, मुदा पाठमे उपस्थित तनाव—सुरक्षा बनाम अहिंसा, न्याय बनाम परिवार, भूमि बनाम अभिलेख, श्रम बनाम भोग, आस्था बनाम ऐतिहासिक प्रमाण —आलोचनात्मक पुन:पठनक सम्भावना बनौने रखैत अछि।

मैथिली साहित्यक अध्ययन लेल एहि पुस्तककेँ केवल ‘एगारह कथा’क गिनती धरि सीमित नहि करबाक चाही। एकर दीर्घ प्रस्तावना-प्राक्कथन साहित्यिक आयोजन आ स्थानिक

रचनाकारक स्मृति दैत अछि; मूल कथाक पादटिप्पणी मुद्रित पत्रिका-जगतक कालक्रमक संकेत दैत अछि; अनूदित खण्ड भाषिक आदान-प्रदानक दस्तावेज अछि; लोकवृत्तात्मक खण्ड सामुदायिक नैतिकता आ विश्वासक अध्ययन सामग्री अछि; आ कुलीननामाक परिशिष्ट स्थानीय वंश-स्मृतिक आंशिक अभिलेख अछि। एहि बहुस्तरीय रूपमे ग्रन्थक साहित्यिक आ सांस्कृतिक मूल्य स्पष्ट होइत अछि।

संग्रहक सही आलोचनात्मक निर्णय न निर्विवाद महिमामण्डन अछि, न एकर नैतिक स्वरक आधारपर सामान्य अवमूल्यन। स्रोत-समर्थित निष्कर्ष ई अछि जे ई पोथी मैथिलीमे आधुनिक सामाजिक कथन, नैतिक लघुकथा-अनुवाद आ लोकआख्यान-संरक्षणक त्रिसन्धि प्रस्तुत करैत अछि। ओकर उत्कृष्ट उपयोग पाठक द्वारा कथा पढ़ब, सम्पादक द्वारा मूल पाठ सुरक्षित रखब, आ शोधकर्ता द्वारा लोकस्मृति आ इतिहासक दावाक पृथक् सत्यापन करब—एहि तीनू कार्यक संग होयत।

अध्याय 10 / २०११

सीतावतरण

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

२. पुस्तक-परिचय आ प्रकाशनक सत्यापित तथ्य

पोथीक नाम	सीतावतरण (प्रबन्धकाव्य)
मूल कवि	कपिलदेव ठाकुर ‘स्नेहलता’
संकलन–सम्पादन	डॉ. योगानन्द झा
प्रथम संस्करण	२०११ ई.
प्रकाशक	लोक कला संस्कृति संस्थान, विदेहनगर डरोड़ी, भाया–करुआ हजपरवा, जिला–समस्तीपुर, बिहार
मुद्रित मूल्य	५० टाका
मुद्रित मूल-साक्ष्य	शीर्षक-पृष्ठ, प्रकाशन-विवरण आ सम्पादकीय उपोद्घात: आरम्भिक पृष्ठ, विशेषतः मुद्रित पृ. ३–४

शीर्षक-पृष्ठ पर पोथीकेँ ‘प्रबन्धकाव्य’ कहल गेल अछि आ अंग्रेजी विवरणमे ‘Narrative Poetry’क उल्लेख अछि। शीर्षकक रचनाकार आ सम्पादकक अलग-अलग श्रेय मुद्रित अछि। एहि भेदकेँ अक्षुण्ण रखब आवश्यक अछि, कारण सम्पादक स्वयं कहलनि अछि जे मूल उपलब्ध रचना नामकरणविहीन छल आ ‘सीतावतरण’ नाम तिनकेँ देल। एहि लेल २०११ ई. के संस्करण ‘स्नेहलताक मूलरचनाक ज्यों-के-त्यों स्वहस्ताक्षरित प्रकाशन’ नहि, बल्कि सम्पादनक माध्यमसँ पाठक समक्ष आबि रहल एकटा साहित्यिक रूप अछि।

बाहरी पुष्टिमे ‘विदेह’क पोथी-सूची ‘कपिलदेव ठाकुर ‘स्नेहलता’ कृत सीतावतरण (सम्पादन) २०११’ कैं डॉ. योगानन्द झाक नामसँ सूचीकृत करैत अछि। ई पुस्तक-परिचयक सहायक साक्ष्य अछि; मुदा बाहरी सूचीसँ रचनाक छन्द, पाठ-शुद्धि वा कथानुक्रमक स्वतंत्र पुष्टि नहि होइत अछि।

३. उपोद्घातक ऐतिहासिक दृष्टि आ ओकर आलोचनात्मक परीक्षण (पृ. ३–४)

डॉ. योगानन्द झा उपोद्घातमे स्नेहलताकेँ मिथिलाक समस्तीपुर जिलाक डरोड़ी ग्रामसँ सम्बन्धित रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक भक्तकवि बतबैत छथि आ जीवनावधि १९०९–१९९३ लिखैत छथि। ओ मिथिलाक रामभक्ति, सीताराम-विवाह पदावली, सन्त-परम्परा आ गीतात्मक साहित्यक पृष्ठभूमिमे स्नेहलताक स्थान निर्धारित करबाक प्रयास कएने छथि। एहिमे आलोचनात्मक महत्त्व ई जे कविक साहित्यिक व्यक्तित्वकेँ केवल एकटा सीता-जन्म कथा धरि सीमित नहि करैत, पदावली आ लोकसंस्कारक विस्तृत परिप्रेक्ष्यमे रखल गेल अछि।

उपोद्घातक अनुसार, स्नेहलता अपन जीवनमे विवाह-पदावली, विनय-पदावली, झूलन, चौतावनी, शिववाणी, संस्कारगीत आदि अनेक रूपमे सृजन करैत रहलाह। ई सूचना पुस्तकक परिशिष्टसँ सेहो मिलैत अछि: ओतय मिथिला-महिमा, मैथिली-वन्दना, कृष्णलीला आ महेशवाणी राखल गेल अछि। ताहि लेल परिचय आ सामग्री परस्पर सन्दर्भ दैत अछि। मुदा अलग-अलग गीतक रचनाकाल आ पहिल प्रकाशनक पूर्ण अभिलेख एहि संस्करणमे नहि भेटैत; उपोद्घातक व्यापक साहित्येतिहासक दावाकेँ एतय सम्पादकक कथनक रूपमे मात्र ग्रहण कएल गेल अछि।

उपोद्घातमे कविक ‘अद्यावधि अनधीत ओ अनालोचित’ रहल एकटा प्रबन्धकाव्य भेटबाक चर्चा अछि। ई कथन २०१० दिसम्बरमे लिखल सम्पादकीय उपोद्घातक सन्दर्भमे अछि। एकरा आजुक समय धरि सम्पूर्ण अकादमिक साहित्यक अनुपस्थिति सिद्ध करबाक प्रमाण नहि बनाओल जा सकैत अछि। ओहि तरहें ‘अखिल भारतीय स्तर’क मूल्यांकन संपादकक

आलोचनात्मक प्रशंसाभाव अछि; एहि विशेष अध्ययनक निष्कर्ष तखन बनत जखन पाठ-साक्ष्य आ अन्य समकालीन रचनाक तुलनात्मक परीक्षण भेटत।

४. सम्पादनसँ निर्मित काव्यरूप: एही संस्करणक केन्द्रीय प्रश्न (पृ. ४)

ग्रन्थक सर्वाधिक निर्णायक स्वीकारोक्ति उपोद्घातक पृ. ४ पर अछि: उपलब्ध प्रबन्धकाव्य ‘नामकरणहीने छल’; सीताक जन्म-प्रसंगक आधार पर सम्पादक ‘सीतावतरण’ नाम रखलनि। पुन: ‘कथावस्तुक माँगक अनुकूल’ स्नेहलताक कतोक मुक्तक गीतकेँ स्थान-स्थान पर जोड़ि ‘प्रबन्धात्मकता’ स्पष्ट करबाक बात लिखल अछि। ई बयान ऐतिहासिक रूपसँ दूटा अलग क्रियाक साक्ष्य अछि—शीर्षक-निर्धारण आ गीत-समावेश। एहिसँ मूल कविक रचनात्मक योगदान घटैत नहि; मुदा लेखकक मूल विन्यास आ सम्पादकक अंतिम पाठ-विन्यासकेँ एके वस्तु मानब उचित नहि।

सम्पादकक प्रयोगक सकारात्मक पक्ष अछि: बिखरल भक्तिपद आ कथा-अंश एकत्र आबि पाठककेँ मिथिलाक विस्तृत भावलोकसँ परिचित करबैत अछि। सम्भवत: जे पाठ अप्रसारित रहि गेल छल, ओकरा एकटा व्यवस्थित पठन-रूप भेटल। दोसर दिस, कोन गीत मूल प्रबन्धमे छल, कोन गीत बादमे जोड़ल गेल, कोन प्रसंगक स्थान बदलल गेल आ कोन आधार-पाण्डुलिपि लेल गेल—एकर पृष्ठवार सूची उपलब्ध नहि। एहन सूची बिना मूल रचनाकारक आ सम्पादकक संगठक हस्तक्षेपक सीमा निश्चित करब सम्भव नहि। ई संस्करणक उल्लेखनीय पाठसम्पादकीय कमी अछि, किएक तँ ई स्वयं समावेशनक बात स्पष्ट रूपेँ स्वीकारैत अछि।

‘प्रबन्धकाव्य’क मूल्यांकन एहि कारणेँ दू स्तरपर करबाक चाही। कथा-क्रम, कारण-कार्य सम्बन्ध, जनकक यज्ञ, धरतीसँ सीताक प्राकट्य आ उत्सव जेहि ठाम स्पष्ट अछि, ओ मूल काव्यरूपक प्रबन्धात्मक सम्भावना देखबैत अछि। रामजन्म-सोहर वा शिव-गौरीक गीत जेहि ठाम अलग गेय इकाइ समान ठाढ़ अछि, ओतय महाकाव्यक ‘सर्ग’-जकाँ निर्बाध कथाप्रवाह नहि, बल्कि गीत-संयोजित भक्तिपरक आख्यान बनैत अछि। ई रूप कमजोरीयो बनि सकैत

अछि आ मिथिलाक लोकनाट्यात्मक परम्परासँ जुड़ल मौलिकतायो; निर्णायक मत देबाक पहिने सम्पादकीय सीमा चिन्हित करब जरूरी अछि।

५. समर्पण, रचनाक हेतु आ कविक आध्यात्मिक आत्मपरिचय (पृ. ५, ७, ९–१०)

उपलब्धमे हस्ताक्षरक पूरा पाठ निश्चित रूपसँ पढ़बा योग्य नहि; ताहि लेल ओकरा प्रमाणित शब्दशः उद्धरणक स्रोत नहि बनाओल गेल अछि। तथापि ओकर मुद्रित उपस्थिति सम्पादक आ भक्तिमण्डलीक परस्पर सम्बन्धक एकटा भौतिक संकेत अवश्य अछि।

‘समर्पण वाक्य’ (पृ. ७) पोथीकेँ सीताराम-उपासक समाज आ रामचरितमानसक भावभूमिसँ जोड़ैत अछि। समर्पणक भाषा श्रद्धापरक अछि; एहि ठाम प्रकाशकीय उद्देश्य आ कविताक अन्तःस्वरक मेल भेटैत अछि। ई पृष्ठ बतबैत अछि जे पोथीकेँ केवल आधुनिक पाठकक साहित्यिक मनोरञ्जन लेल नहि, बल्कि पाठ, गायन, पूजा-संकीर्तन आ सामुदायिक भक्तिचर्याक सन्दर्भमे सेहो देखल जाय।

‘रचनाक हेतु’ (पृ. ९–१०)मे डरोड़ी, मिथिला, सीताराम-विवाहक अनुराग, बालरूपक कल्पना, पवित्र भाव, भक्त-समाज आ ‘ललित लता’क नाम-स्मरण प्रमुख अछि। कविक आत्मस्थिति विनीत सेवकक अछि, इतिहासकारक निश्चयात्मक स्वरक नहि। प्रारम्भिक रचनाधर्मितामे काव्य-निर्माण लेल चारि वस्तु भेटैत अछि—स्थानीय पवित्र भूगोल, आराध्य-युगलक प्रणयमय भक्ति, समूहक संकीर्तन-परम्परा आ नाम-स्मरणक आग्रह। एहि आधारपर पोथीक सौन्दर्यकेँ केवल कथा-वस्तुक नापसँ मापब अपर्याप्त होयत।

६. सरस्वती-वन्दना आ मंगलाचरण: आत्मविनय सँ काव्यारम्भ (पृ. ११–१२)

पृ. ११ पर ‘श्रीगणेशाय नमः’ आ ‘सरस्वती वन्दना’सँ काव्य-पाठ आरम्भ होइत अछि। ‘माता सरस्वति हे, कहिया हरब अज्ञान’ जकाँ प्रत्यक्ष सम्बोधन कविक विद्यासम्बन्धी नम्रता प्रकट करैत अछि। ‘हम सन्तान अहाँ छी माता’क भावसँ देवता आ भक्तक सम्बन्ध ज्ञानदाता तथा

आश्रित शिशुक स्वरूप ग्रहण करैत अछि। ई शास्त्रीय मङ्गलाचरणक रचना-परम्परासँ जुड़ल रहितो अपन भाषा-व्यवहारमे घरेलू ओ लोकगीतात्मक अछि।

वन्दनामे ‘दिअ कने करुणा के कोर’ आ अज्ञान दूर करबाक पुकार स्नेह-केन्द्रित बिम्ब रचैत अछि। ज्ञानकेँ बाहरी पदवी वा अधिकारक रूपेँ नहि, कृपासँ प्राप्त मानवीय क्षमता मानल गेल अछि। वर्णनात्मक दृष्टिसँ ई प्रवेश-द्वार अछि: एहि पृष्ठक बाद धर्मसंकटक व्यापक दृश्य आबैत अछि। कवि पहिले अपना सीमित ठहराबैत छथि, फेर धर्म-व्यवस्था, अवतार आ राजपरिवारक कथा कहबाक नैतिक अधिकारक कल्पना करैत छथि।

७. आरम्भिक आख्यान: धर्म-संकट, अवतार आ मिथिलाक आवश्यकता (पृ. १२–१४)

पृ. १२–१४ मे अधर्म, हिंसा, भय, व्यथित लोक, विनष्ट शान्ति आ धर्म-स्थापनाक अपेक्षाक उल्लेख अछि। ‘धर्म’ एतय केवल व्यक्तिगत पूजा नहि, समाजक अशान्ति-निवारणक मूल्य बनि उपस्थित अछि। कथाक प्रारम्भमे भवितव्य अवतारक कारण निर्मित होइत अछि—समाज असन्तुलित अछि, धरती आ जनमानस संकटमे अछि, ताहि लेल दैवी शक्ति मानवीय लोकमे उतरि सकैत अछि। एहि रचना-विधानसँ सीताक प्राकट्य एकटा अलग चमत्कार नहि, समष्टिक आवश्यकता बनैत अछि।

कवि मिथिलाक विवाह-संस्कृति आ राम-जनमक कथा एक-दोसरासँ जोड़ैत छथि। पृ. १४ पर ‘मिथिला बीच विवाहक लाथे, संग हैव संग चलब जहाँ’ जकाँ भविष्यसूचक भावक उपस्थिति अछि। ओहि ठाम कथा-समय आ भक्तक वर्तमान अनुभव परस्पर सटल अछि; अवतारक पुरातन घटना बारंबार संकीर्तनक वर्तमानमे आबि रहल अछि। एहि काल-संयोजनकेँ ऐतिहासिक तिथिक एकरेखीय प्रस्तुति नहि, भक्तिपरक रस-व्यवस्था मानि पढ़ब अधिक उपयुक्त अछि।

प्रारम्भिक पद्य मे संस्कृतनिष्ठ धार्मिक पदक संग लोकप्रचलित क्रिया, सम्बोधन, विनती आ छन्द-भंगिमा अछि। एकहि श्लोकवत् वाक्यमे ‘अधर्म’, ‘अवतार’ आ ‘धर्म धूजा’ संग सामुदायिक गायनयोग्य ध्वनि बनैत अछि। कविक भाषा बौद्धिक अलङ्कारक प्रदर्शनसँ अधिक

भावक सामूहिक वहनकेँ प्रमुखता दैत अछि। एहि प्रक्रिया मे असहज वाक्यगठन आ छन्द-समताक परिवर्तन सेहो भेटैत अछि; ओकरा सम्पूर्ण रूपसँ दुर्बलता अथवा सम्पूर्ण रूपसँ सचेत कलाकौशल कहब साक्ष्यसँ आगाँ जायब होयत।

८. ‘रामजन्म सोहर’: संस्कारगीतक काव्यात्मक रूपान्तरण (पृ. १५–२१)

पृ. १५ सँ ‘रामजन्म सोहर’क शीर्षक आ क्रमांकित पद आरम्भ होइत अछि, जे पृ. २१ धरि चलैत अछि। अयोध्याक राजमहल, दशरथ-परिवार, रानी, शुभसूचना, बाजा-बजौनाइ, दान-दक्षिणा आ स्त्री-समुदायक आनन्द एहि गीत-संसारक मुख्य दृश्य अछि। सामान्य पुराणकथा जन्म-उत्सवक स्थानीय संस्कारगीतमे रूपान्तरित होइत अछि। ‘सोहर’ शब्द स्वयं काव्य-विधा आ सामाजिक अनुष्ठान—दूनूक संकेत दैत अछि; गीतकेँ घर-आँगन, बधाइ, स्त्रीक सामूहिक स्वर आ शुभ अवसरक श्रव्य परिवेशमे राखैत अछि।

एहि खण्डमे केवल देवावतारक प्रशस्ति नहि अछि; सोना, गृह-भेट, वस्त्र, बाजा आ दानक दृश्य जन्मोत्सवक भौतिक समृद्धि व्यक्त करैत अछि। राजघरानाक भव्यता आ लोकपरम्पराक व्यवहार एकठाम आबैत अछि। जन्मक समाचार जेना परिजनसँ नगर धरि पसारैत अछि, ओहिना कथनक स्वर व्यक्तिगतसँ सामूहिक बनैत अछि। एहि प्रसंगक प्रमुख साहित्यिक फल अछि जे रामजी देवता होइतहुँ शिशु, पुत्र आ परिवारक आनन्दक केन्द्र बनैत छथि।

पृ. १८–२१ क पद सभमे विशिष्ट दृष्टि ई अछि जे रामक दिव्य स्वरूप बुझनिहार आ हुनक लौकिक बालरूप देखनिहारक बीच भावान्तर अछि। लुटैत रत्न, हँसैत महारानी आ गाबैत समूहक विवरण नहि मात्र अतिशयोक्ति; ई भक्तिरसक प्रकट-पद्धति अछि। स्त्री-स्वरक समावेश गीतकेँ अनुष्ठानक सामाजिक साँचे मे स्थापित करैत अछि, मुदा राजा–रानीक केन्द्रित चित्रण साधारण परिवारक श्रम वा विषमताकेँ लगभग अप्रकट रखैत अछि। एहि सीमाक उल्लेख आधुनिक समालोचनामे जरूरी अछि।

शीर्षक ‘सीतावतरण’क मध्य रामजन्म-सोहरक स्थान एकटा विशेष आलोचनात्मक प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। सीताक अवतरणक कथा कहबाक पहिने रामक जन्मक विशद गीत

पाठककेँ आराध्य-युगलक संयुक्त दृष्टिसँ परिचित करबैत अछि। परन्तु उपोद्घातमे गीत-समावेशक स्वीकारोक्ति ध्यानमे रखैत एहि खण्डक मूल क्रम निश्चित मानल नहि जा सकैत अछि। काव्य-विन्यासक रूपमे एकर प्रभाव पर विचार कएल जा सकैत अछि; मूल पाण्डुलिपिक स्थिति पर नहि।

९. जनकक अभिलाषा, नारदक संवाद आ शिव-आराधनाक प्रवेश (पृ. २१–२२)

रामजन्मक प्रसंगक बाद कथा जनकक राजपरिवार दिस बढ़ैत अछि। जनकक बेटी-जन्मक अभिलाषा, राजद्वारक सभा आ ऋषि-मुनिक परामर्शक उल्लेख पृ. २१–२२ पर भेटैत अछि। जनक ‘विष्णु’ आ ‘महाशक्ति’क अवतार सम्बन्धी आश्वासनक सन्दर्भमे शरण आ साधनाक उपाय पूछि रहल छथि। नारद, शिव, तपस्या आ यज्ञ एतय कथानकक संक्रमण-यन्त्र बनि उपस्थित होइत अछि।

ई संक्रमण विशेष किएक तँ सीताक जन्म जैविक वंश-विस्तारक एकरेखीय प्रसंग नहि, दैवी इच्छा, धर्म-संकट आ लोककल्याणक संयुक्त रूपमे रूपायित अछि। मिथिला भूमि केवल कथाक पृष्ठभूमि नहि, अगिला अवतरणक हेतु-पृथ्वी बनैत अछि। जनकक आकांक्षामे ‘पुत्री’क महत्त्व केन्द्रीय अछि; एहि ठाम सामान्य पितृवंशीय पुत्रकामनाक अपेक्षा बेटी-जन्मक पावन आशा एकटा सांस्कृतिक उलटबाँसी रचैत अछि।

१०. ‘शैव पदावली’: शिव–गौरीक घरेलू बोली आ लीलामय विरोध (पृ. २२–२९)

पृ. २२ पर ‘शैव पदावली’ अलग शीर्षकसँ आरम्भ होइत अछि। पहिल पदमे गौरीक लोकवाणी छेक; ‘बमभोला हमरा चाकर रखता कहबनि हे गौरी’ आ भाँग-पीनाइ, झोड़ी, हाजिरी-जकाँ विषयसँ शिव एक आकाशस्थ दुर्गम देव नहि, मिथिलाक घरेलू हास-परिहासक पात्र बनैत छथि। शैवभक्तिमे महिमा आ विनोदक सहअस्तित्व एतय पाठ-सिद्ध अछि; अतएव एहि पदावलीकेँ केवल ‘शिवस्तुति’ कहि समाप्त करब अनुचित होयत।

पृ. २३–२५ क संवादात्मक गीत सभमे विवाह, कन्याक पक्ष, वरक विचित्र वेश, गौरीक आशंका, घरक व्यवहार, भाँग आ नोकझोंकक रूप देखाइत अछि। ‘हे दानी’ जकाँ पुनरावृत्त सम्बोधन श्रोता आ गायकक बीच प्रत्युत्तरक सम्भावना बढ़बैत अछि। काव्य-स्वर एकटा विश्वरक्षक महादेवकेँ लोक-समाजक विवाह-विनोदमे खिंचि आनैत अछि। ई ‘उच्च’ पुराण-प्रतिमा आ ‘निम्न’ घरेलू व्यवहारक विडम्बना नहि, लोकभक्तिक समावेशी काव्य-चाल अछि।

पृ. २६–२९ मे गौरीक रूठब, शिवक स्वीकार, परिवारक अन्तरङ्गता आ श्रृङ्गारमिश्रित मान-मनौवल विभिन्न पदमे बदलैत रहैत अछि। प्रत्यक्ष वाचिकता, छोटे पंक्ति-विराम आ भावक तुरन्त परिवर्तन ई संकेत करैत अछि जे गीत सभ पाठमे एकसाथ राखल गेलहुँ स्वतंत्र गेय रचनाक लक्षण सुरक्षित रखैत अछि। ‘प्रबन्ध’मे शिवपदक उपस्थितिक एकटा प्रयोजन जनकक व्रत, महादेवक प्रसन्नता आ सीता-अवतरणक मार्ग प्रशस्त करब अछि; दोसर प्रयोजन संभवतः संकलनमे स्नेहलताक शैवगीतक नमूना राखब। दूनू व्याख्या सम्भव अछि, मुदा निश्चित सम्पादकीय मूल-क्रम उपलब्ध नहि।

एहि पदावलीक साहित्यिक शक्ति ओकर बहुवाचिकतामे अछि। पौराणिक कथा एकल सर्वज्ञ वक्ता नहि कहैत; गौरी, दानी, वरपक्ष, स्त्री-समुदाय आ भक्तक आवाज बदलैत रहैत अछि। छन्दक विवेचनमे मात्राक कड़ाइ लागू करबाक पहिने लोकगायनक टेक, टुकड़ा आ पुनरुक्तिक भूमिका देखनाइ चाही। मूल स्वरांकन वा धुन उपलब्ध नहि, तेँ कोनो निश्चित राग–तालक दावा एहि समीक्षा मे नहि कएल गेल अछि।

११. जनकक यज्ञ, दुर्भिक्ष आ भूमिजा-जन्मक तैयारी (पृ. ३०–३२)

शैव पदावलीक बाद पृ. ३० पर कथात्मक स्वर स्पष्ट रूपेँ पुनः मुखर होइत अछि—जनकक यज्ञ, ऋषि-मुनिक परामर्श, यज्ञभूमिक तैयारी आ धरतीक असन्तुलनक विवेचन अछि। ‘अब जाय करू हे जनक यज्ञ’ जकाँ आदेशात्मक पद कथा के अगिला चरणमे धकेलैत अछि। यज्ञ एतय केवल कर्मकाण्डक वर्णन नहि, लोकक दुर्दशासँ पार पाबै लेल सामाजिक-धार्मिक आयोजनक प्रतीक अछि।

पृ. ३१ पर वर्षाक अभाव आ मर्माहत समाजक सन्दर्भ, यज्ञ-समापनक अपेक्षा आ पञ्चमी तिथिक उल्लेख भेटैत अछि। ओहि प्रसंगमे मिथिला भूमि, पवित्र नदी आ ऋतु-कालक संयुक्त उपस्थिति सीता-जन्मक भौगोलिक आ कालिक रूपरेखा बनबैत अछि। कवि जनककेँ पृथ्वीक कठिनाइमे चिन्तित राजा आ दैवी विधानक प्रतीक्षा करैत पिता दूनू रूपमे देखबैत छथि।

पृ. ३२ पर जनकक हलसँ धरती जोतनाइ, ‘मोर मन के बेटी’क आकांक्षा, धरतीक कोख आ कन्या-प्राकट्यक प्राकृतिमय सम्बन्ध एके दृश्यभित्ति पर भेटैत अछि। खेत, हल, फराक, कंचन-जकाँ प्रकाश आ किलकारीक समन्वयसँ सीताक जन्म राजमहल नहि, कृषिप्रधान लोकजीवनक केन्द्रमे घटैत अछि। एहि बिन्दु पर ‘सीतावतरण’क शीर्षक अपन सर्वाधिक ठोस अर्थ पबैत अछि: अवतार परमशक्तिक अछि, माध्यम मिथिलाक धरती अछि, आ प्रथम साक्षी राजा जनक छथि।

१२. सीताक प्राकट्य, पुत्री-भाव आ जनसमाजक उल्लास (पृ. ३२–३५)

पृ. ३२–३३ मे कंचन-हल, पृथ्वी, तेजोमय बालिका आ नगरमे पसारल समाचारक चित्रण अछि। जनकक मनमे जे कन्याक अभाव छल, से भूमिजा-प्राकट्यसँ सुखमे बदलैत अछि। पृ. ३४ क गीतात्मक उद्घोष ‘मिथिला के धरती सोहागिन जानकी जन्म लेल रे’ एहि परिवर्तनक सङ्क्षिप्त भाव-सार अछि। एक वाक्यमे भूमि, गृहस्थ-सौभाग्य, मिथिलाक सामुदायिक पहचान आ कन्याजन्मकेँ एक करैत अछि।

पृ. ३३ पर बालिकाक तेज, मुखक प्रकाश, चन्द्र-सूर्यादि उपमान आ सभक जयध्वनिक संग दैवी सौन्दर्य रचल गेल अछि। उपमान बहुल अछि, पर दैवी शरीरक ऊर्जाकेँ लोकदृष्टिसँ बुझबाक चेष्टा सेहो अछि। जनक ‘सुनयना’क संग बेटी-प्राप्ति पर प्रसन्न छथि; माँ आ पिताक संयुक्त आनन्द एहि दृश्यकेँ केवल राजकीय चमत्कारक पाठसँ अलग करैत अछि।

पृ. ३४–३५ मे गायन, मगन नगर, शुभदर्शन, दान आ उत्सव पुनः लौटैत अछि। रामजन्म सोहरमे जे सामूहिक आनन्द अयोध्यामे देखा पड़ल छल, सीता-जन्ममे ओकर मिथिलामूलक प्रतिबिम्ब बनैत अछि। ई दोहराव सरल कथात्मक पुनरुक्ति नहि, राम–सीता युगल जन्मकेँ

दोसर-दोसर नगरमे सममूल्य भाव देबाक काव्य-विधान अछि। तथापि दोन्हू खण्डक सम्पादकीय संगठन साफ़-साफ़ अलग बताओल नहि गेल अछि; समानता मूल कविक सुनियोजित सममिति छल वा सम्पादकक चयनक परिणाम, से निश्चित नहि।

कन्या-जन्मक मूल्यांकनमे एक महत्वपूर्ण सावधानी आवश्यक अछि। कवि आदर्श देवी-बालिकाक रूपमे सीताक प्रशंसा करैत छथि; ई सामान्य बालिका लेल समान सामाजिक अधिकारक घोषणापत्र नहि। तथापि राजपरिवारक बेटी-आकांक्षा आ मिथिलाक सार्वजनिक उत्सव एकटा एहन भावभूमि रचैत अछि जतय बेटी-जन्म शुभ, इच्छित आ सामुदायिक गौरवक घटना बनैत अछि। साहित्यिक पाठसँ एतबे सिद्ध अछि; ऐतिहासिक मिथिलाक समग्र लिङ्ग-संबन्धक सर्वेक्षण नहि।

१३. रचनाक संरचना: निरन्तर आख्यान आ स्वायत्त गीतक द्वन्द्व

उपलब्ध पाठक प्रमुख गतिनक क्रम अछि: मंगलाचरण; धर्म-संकट आ अवतार-विचार; रामजन्म-सोहर; जनकक बेटी-अभिलाषा; शिव-आराधना आ शैव-पदावली; जनकक यज्ञ; धरतीसँ सीताक प्राकट्य; नगरोत्सव। एहि क्रमक स्पष्टतासँ कथा-पाठ सम्भव होइत अछि। मुदा ‘रामजन्म सोहर’ आ ‘शैव पदावली’क पद सभ अपन नम्बर, टेक, वाचिकता आ नाच-गायनक सूचकताक कारण स्वतंत्र काव्य-एकाइयो लगैत अछि।

परम्परागत दीर्घ प्रबन्धकाव्यक अनिवार्य कसौटी रूपेँ सर्वत्र एकहि वृत्त, एकल कथावाचक, औपचारिक सर्ग-विभाजन वा लगातार चरित्र-विकास अपेक्षित कएल जाय तऽ एहि पाठक अलग प्रकृति सोझाँ अबैत अछि। ई लोकगीतक सहायतासँ बनल देवचरित्र-आख्यान अछि, जकर रचनात्मक ऊर्जा कथा-जोड़नाइसँ बेसी भाव-परिसर बनौनाइमे अछि। ‘प्रबन्धकाव्य’क प्रकाशकीय नामकरण मान्य तथ्य अछि; ओकर पूर्ण कलात्मक निर्वाह एकटा आलोचनात्मक प्रश्न बनल रहैत अछि।

गीतक सामूहिक गायनक कल्पना करिते पढ़निहार बहुते ठाम क्रमक टूटनकेँ लोकनाट्यक दृश्य-परिवर्तनक रूपमे अनुभव कऽ सकैत छथि। मुदा लिखित पाठक स्तरपर कथामे लौटबाक

संकेत कम अछि; दृश्यगति एकाएक बदलैत अछि। एहि दोहरापनकेँ स्वीकारनाइ—एक दिस लोकविधाक सजीवता आ दोसर दिस सम्पादित पाठक संक्रमण-दुर्बलता—काव्यक संग न्याय करबाक तरीका अछि।

१४. काव्य-भाषा: भक्तिक पद, मैथिली लोकबोली आ मिश्रित पदावली

भाषामे संस्कृत-उत्पन्न धार्मिक शब्द (‘अवतार’, ‘महाशक्ति’, ‘यज्ञ’, ‘सरस्वती’), मिथिलाक लोकव्यवहार (‘सोहर’, ‘बाबा’, ‘दानी’, ‘हाजिर’, ‘भाँग’, ‘गौरी’) आ रोजमर्राक क्रियापद एकसाथ चलैत अछि। ई संयोग भाषिक असावधानीक स्वतः प्रमाण नहि; भक्तिरचनाक श्रोता-समुदाय विद्वान् पाठक आ लोकगायक दुनूक बीच विचरण करैत अछि। ‘हे’, ‘रे’, ‘नहि’, ‘छथि’, ‘गाबथि’ जकाँ उच्चारण-चिह्नक माधुर्य गीतक श्रव्य रूप बनबैत अछि।

पुस्तकमध्य कवि-भनिताक रूप ‘स्नेहलता’ आ ‘लतिका सनेह’ जकाँ बदलैत देखाइत अछि। एहन भिन्नतालाई लेखकत्वक अनिवार्य विरोध नहि मानब; भक्तकाव्यमे भनिता, प्रेमनाम आ पदक अन्तिम हस्ताक्षरक अलग प्रचलन रहैत अछि। तथापि प्रत्येक रूपक उपलब्ध मुद्रित पृष्ठसँ मिलान कए बिना एककृत मानक बनौनाइ पाठविकृति उत्पन्न करि सकैत अछि। सुधारणीय मुद्रण-दोष आ मूल गीतक ध्वन्यात्मक, लोकभाषिक वैविध्य बीच भेद आवश्यक अछि।

किछु पद्य मे मानक गद्य-व्याकरणक अनुसार वाक्यक्रम उलट-पुलट अछि, कतहु संस्कृतनिष्ठ समास गीतक लयकेँ भारी करैत अछि, आ कतहु लोकरीतिक दोहराव अर्थकेँ सरल बनबैत अछि। आलोचनामे ई प्रश्न देखनाइ चाही जे कोन असमञ्जस मूल कविक शैली अछि, कोन सम्पादित पाठक छनौट आ कोन छपाई/क त्रुटि। आधार पाण्डुलिपिक अभावमे निश्चित पाठशुद्धि प्रस्तावित नहि कएल गेल अछि।

१५. रस-संयोजन: दास्य, वात्सल्य, हास्य आ लोकमङ्गल

रचनाक प्रधान भाव राम–सीता-उपासना अछि, मुदा अपन अभिव्यक्तिमे ई एकरस नहि। मङ्गलाचरणमे शरणागत विनय, रामजन्ममे वात्सल्यपूर्ण आनन्द, शिव–गौरीक दृश्यसभमे हास्यमिश्रित अपनत्व, जनकक यज्ञमे करुणा आ आशा, सीताक अवतरणमे अद्भुत तथा सामुदायिक हर्ष प्रकट अछि। ई भाव-परिवर्तन गीतात्मक विन्यासकेँ एक प्रकारक भाव-यात्रा बनबैत अछि।

विशेषत: शिवक भाँग-संबन्धी रूप आ गौरीक तिरछी घरुआ दृष्टि लोकभक्तिक परिहासात्मक स्वर राखैत अछि। ई खण्डक अस्तित्व देखबैत अछि जे स्नेहलताक भक्ति केवल संयत देवस्तुति नहि; ओ हँसैत-बोलैत, रूठैत-मानैत पारिवारिक देवजगत् रचि सकैत छथि। दोसर दिस सीताक जन्मक वर्णनमे तेज, प्रकाश आ जयघोष आश्चर्यक रस उत्पन्न करैत अछि। एहि विविधताकेँ ‘शृङ्गार’ वा ‘भक्ति’मे से मात्र समेटब पाठक बहुवचनता घटेबाक जोखिम होयत।

१६. मिथिलाक भूगोल, कृषि आ संस्कारक सांस्कृतिक पाठ

डरोड़ी, विदेहनगर, मिथिला, जनक, हल, यज्ञभूमि आ नदी-पृथ्वी के संकेत पाठक आत्मीय भूगोल निर्मित करैत अछि। ‘मिथिला के धरती सोहागिन’क उद्घोष केवल भौगोलिक नामोल्लेख नहि, भूमि-देहक भावात्मक रूपान्तरण अछि। धरतीसँ कन्या भेटबाक कथामे कृषि-कर्मक वस्तु—हल, खेत, जोतब—धार्मिक रूपमे प्रतिष्ठित होइत अछि।

सोहरक बाजा, बधाइ, वर-वधूक विनोद, विवाहक लोकसंवाद आ सामूहिक स्त्रीगायनक संकेत मैथिल संस्कार-लोकक लिखित अभिलेखक रूपमे महत्त्वपूर्ण छथि। मुदा ई साहित्यक बिम्ब छथि; एहि आधार पर कोनो विशेष गामक आजुक व्यवहार, जातिगत वितरण वा स्त्रीक वास्तविक अनुष्ठानिक भूमिकाक पूर्ण मानवशास्त्रीय निष्कर्ष नहि काढ़ल जा सकैत अछि। रस-प्रधान काव्य सांस्कृतिक साक्ष्य दैत अछि, सामाजिक जनगणना नहि।

१७. कथन-दृष्टि आ स्त्री-स्वर: सीता, सुनयना, गौरी आ गायिका-समुदाय

ग्रन्थमे सीता सर्वाधिक पूजित पात्र छथि; हुनक प्राकट्यक प्रसंग धरती आ परिवारक भावसँ भरल अछि। मुदा उपलब्ध पृष्ठमे सीताक अपन प्रत्यक्ष वाणी अत्यल्प अछि, किएक तँ कथाक अन्त सीता-जन्मक उत्सवपर केन्द्रित अछि। अतएव सीताक आत्मनिर्णय, प्रौढ़ स्त्रीत्व वा आगूक जीवन-धर्म एतय कल्पनासँ जोड़नाइ पाठ-संगत नहि होयत। एहि रचनाक केन्द्रीय स्त्री-विषय ‘प्राकट्यक आकांक्षा’ अछि, सीताक पूरा जीवन-चरित नहि।

हुनक विपरीत शिवपदमे गौरीक संवाद अपेक्षाकृत मुखर अछि: विवाह, वस्त्र, भोजन, वेशभूषा, रूठब-मनौनाइ आ घर-संसारक सवाल स्वयं स्त्री-वक्ता रखैत अछि। एही भिन्नतासँ आलोचनात्मक रोचकता उत्पन्न होइत अछि—महादेवी सीता दैवी प्रतिमाक रूपमे वर्णित छथि, गौरी लोकपरिचित बोलनिहार नारीक स्वरूपमे। दुनू प्रस्तुति अपन प्रसंगक साहित्यिक प्रयोजन पूरा करैत अछि; किन्तु आवाजक असमानता पाठमे स्पष्ट देखाइत अछि।

१८. परिशिष्टक स्थान आ रचनाकारक व्यापक काव्य-संसार (पृ. ३६–४८)

‘परिशिष्ट: स्नेहलताक किछु विशिष्ट गीत’ शीर्षक पृ. ३६ पर छपल अछि। एहि शीर्षकसँ एक बात निश्चित होइत अछि—सम्पादक एहि खण्डकेँ मुख्य प्रबन्धकाव्यसँ अलग पहचान देने छथि। परिशिष्टक गीत सबकेँ सीता-जन्मक मूल घटनाक स्वाभाविक अगिला सर्ग मानि समीक्षामे रखब अनुचित होयत। ओ गीत कविक बहुमुखी अभिरुचिक प्रमाणसामग्री छथि आ प्रकाशकीय दृष्टिसँ कवि-परिचयक विस्तार सेहो।

१८.१ मिथिला महिमा (पृ. ३६)

‘मिथिला महिमा’मे मिथिलाकेँ प्रकृति, संस्कृति, परम्परा आ रामललाक प्रिय भूमि बनाओल गेल अछि। ‘भूमण्डल के अमर गोद मे’सँ आरम्भ होइत स्तुति पृथ्वीपर मिथिलाक सांस्कृतिक स्थानक भावचित्र बनबैत अछि। पवित्र भूगोल एतय लोक-जन्मभूमिक गौरवमे परिणत होइत अछि। मुख्य काव्यमे जनकक धरती प्रतीक छल; परिशिष्टमे ओहि भूमि स्वयं प्रशस्तिक विषय बनैत अछि।

१८.२ मैथिली वन्दना आ पराती (पृ. ३७, ४७–४८)

‘मैथिली वन्दना’ मे महारानी सीताकेँ करुणा, धर्म आ आत्मसमर्पणक केन्द्र बनाओल गेल अछि; काव्य-नायकाक आराधना सीधे भक्तक प्रथमपुरुष वाणीमे आबैत अछि। एहि गीतसँ ‘मैथिली’ शब्दक देवी-सम्बन्धी अर्थ सोझाँ अबैत अछि, जकरा मैथिली भाषाक नामसँ स्वतः अभिन्न मानि नहि लेबाक चाही। पृ. ४८ क ‘पराती’मे जागरण आ भोरक पुकार अछि; समयक दैनिक चक्र आ भक्ति-अनुष्ठानक पुनरावृत्ति लोकगीतक प्रयोग-सन्दर्भ उजागर करैत अछि।

१८.३ विनय आ राम वन्दना (पृ. ३८)

‘विनय’क पंक्तिमे ईश्वरक शरणागति, आत्मग्लानि आ क्षमायाचनाक भाव प्रमुख अछि। पाठक कविक भक्ति-संवेदना आ नैतिक आत्मपरीक्षणक सम्बन्ध देखैत अछि। तत्पश्चात् ‘राम वन्दना’मे प्रभुक गुणगान आ दीनवत्सलताक स्वर अछि। ई दू गीत मुख्य आख्यानक सामूहिक उल्लासक तुलनामे अधिक निजी साधनाक चरित्र रखैत अछि। विनय-गीतक काव्यशक्ति आत्मकेँ असहाय माननाइमे नहि, आश्रयक सम्भावना जाग्रत करबामे अछि।

१८.४ श्रीकृष्णक पनिघट लीला (पृ. ३९–४३)

‘श्रीकृष्णक पनिघट लीला’मे गोपी, यमुना, पनिघट, जल, बाँट रोकेबाक लीला, हँसी-ठट्ठा आ उलाहना उपस्थित अछि। नायक कृष्ण छथि आ कथनक गति मिथिलाक रामोपासनासँ वृन्दावनक चपल लोकमाधुरी दिस सरकैत अछि। कविता केवल धार्मिक मतान्तरक नमूना नहि; आन्तरिक लोकवाणी, नेग-चेष्टा आ प्रतिरोधमय विनोदक सहायतासँ नायिका-संवादक एक अलग काव्य-रूप बनैत अछि। पृ. ४३ पर एहि रचनाक अवसान आ अगिला महेशवाणीक आरम्भ देखाइत अछि।

१८.५ महेशवाणी (पृ. ४३–४७)

‘महेशवाणी’मे शिवक असामान्य वेश, गौरीक घरेलू शिकायत, नारद-प्रसंग, भस्म, भूत-प्रेत आ देवत्वक अनेक असंगत-से लगैत मेल रोचक बनि उठैत अछि। मुख्य भागक ‘शैव पदावली’ आ परिशिष्टक ‘महेशवाणी’ बीच विषयगत निकटता अछि, मुदा एके रचनाक दू रूप अथवा मूल

क्रमक अलग अंश कहबाक ठोस पाण्डुलिपि-साक्ष्य उपलब्ध नहि। जतेक प्रमाण अछि, ओतबे कहि सकैत छी जे कविक शैव-लोकगीत-रचनामे हास्य आ पूजा एक-दोसराकेँ बाधित नहि करैत अछि।

१८.६ चेतावनी आ ‘स्नेहलताक अन्तिम अपूर्ण रचना’ (पृ. ४८)

अन्तिम उपलब्ध मुद्रित पृष्ठ पर ‘चेतावनी’ शीर्षकसँ जीवनक अनित्यता, मोह आ जागरणक सन्देश भेटैत अछि। ओहि पृष्ठ पर ‘स्नेहलताक अन्तिम अपूर्ण रचना’ शीर्षक सेहो अछि। ‘अपूर्ण’ शब्द सम्पादकीय प्रस्तुति मे स्वयं उपस्थित अछि; अतएव एहि अंशकेँ जबरदस्ती पूर्ण पदक रूप देब अथवा हरायल अन्त जोड़ब अनुचित होयत। ‘अन्तिम’क अर्थ ऐतिहासिक रूपसँ कविक अन्तिम लिखल रचना अछि, ई निष्कर्ष केवल शीर्षकक आधार पर निश्चित नहि; उपलब्ध संस्करणक अपन श्रेणीकरण एतबे सिद्ध करैत अछि।

१९. परिशिष्ट आ मूल प्रबन्धक भेद किएक महत्त्वपूर्ण अछि

परिशिष्ट पाठककेँ स्नेहलताक आराधना-परिसरक विस्तार बुझबैत अछि—राम, सीता, कृष्ण, शिव, मिथिला, विनय आ चेतावनी। एहि कारण काव्य-समीक्षामे परिशिष्ट उपयोगी तुलनात्मक सामग्री अछि। तथापि ई ‘सीतावतरण’क कथानक आ विस्तार-पृष्ठक अनुपातबारे निर्णयकेँ बदलि नहि सकैत; किएक तँ सम्पादक ओहि गीतकेँ स्पष्ट रूपसँ मुख्य रचनासँ अलग राखलनि। ‘४८ पृष्ठक सीता-जन्म प्रबन्ध’ कहि सभ पृष्ठकेँ एकै कथाक पृष्ठ मानब तथ्यात्मक रूपसँ गलत होयत।

दोसर महत्त्वपूर्ण बिन्दु कहल जाय: स्नेहलता रामाश्रयी रसिक परम्परासँ सम्बन्धित होइतहुँ शैव आ कृष्णोपासना विषय पर सहजे रचना करैत छथि। एही संगति सँ एकटा समावेशी भक्तिरूपक संभावना देखाइत अछि। मुदा ऐतिहासिक सम्प्रदाय-परिवर्तन, गुरु-परम्परा वा मतागमक नियत सूची एतय उपलब्ध नहि; कविक बहुविषयक काव्य-उपस्थिति धरि सीमित रहब अधिक प्रमाणसंगत अछि।

२०. मुद्रण आ पाठसम्पादनक समस्या: पाठक प्रति जवाबदेही

ग्रन्थक पृ. ४ मे सम्पादक संकलन–सम्पादन आ मुद्रणक क्रममे सम्भावित त्रुटि लेल क्षमा माँगैत छथि। त्रुटिक इजहार लेखकक पाठसँ छेड़छाड़क खुला अनुमति नहि; उल्टे शोधक लेल आवश्यकता बढ़बैत अछि जे उपलब्ध पाठ आ मूल पाण्डुलिपि एक बेर आमनेसामने राखल जाय। पदक मूल टेक, पंक्ति-विराम, भनिता, राग-तालक सूचना आ छन्दक रूप सुरक्षित राखल बिना नवीनीकरण करब खतरनाक होयत।

अध्ययनक क्रममे पृ. ५ क हस्तलेखन आ किछु स्थानक-गुणवत्ता एहन अछि जतय अक्षरक शत-प्रतिशत निश्चित प्रतिलेखन सम्भव नहि। ताहि कारण एतय अस्पष्ट शब्द पर आधारित पंक्तिवार व्युत्पत्ति, ग्रन्थकारत्वक विवाद वा अनुसंधानिक व्याकरण-सिद्धान्त नहि गढ़ल गेल अछि। प्रमाणित पाठसम्पादनक अगिला चरणमे मूल हस्तलिपिक उपलब्धता, पंक्तिवार पाठान्तर-पञ्जी आ लेखकक अन्य छपल पोथीक तुलनात्मक जाँच अनिवार्य होयत।

२१. मूल्यांकन: उपलब्धि आ सीमा—चारि परस्पर सम्बद्ध कसौटी

२१.१ विषयगत उपलब्धि

कविक सबसँ महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई जे सीताक धरतीसँ प्राकट्यकेँ मिथिलाक लोकजीवन, हलक कृषि-बिम्ब आ कन्या-जन्मक सामाजिक हर्षसँ जोड़ल गेल अछि। सीता दैवी शक्ति छथि, मुदा पिताक लालसा, माताक हर्ष आ नगरक गायन हुनका घर-आँगनक आत्मीय बालिका बनबैत अछि। ई घरेलूकरण आ महिमामण्डनक संयुक्त प्रक्रिया कविता केन्द्रीय विषयसँ मिलैत अछि।

२१.२ रूपगत उपलब्धि

स्नेहलताक गीतक भाषा सुनबामे उपयुक्त अछि: टेक, सम्बोधन, दोहराव, सोहरक लय, हास्यपूर्ण बोलचाल आ लोकअनुष्ठानक पद सभ मिलिक एकटा प्रस्तुतीकरण-योग्य काव्य-लोक रचैत अछि। ‘शैव पदावली’ आ ‘रामजन्म सोहर’क ऊर्जा पाठककेँ ग्रन्थक बाहिर गायनक

कल्पना दिस लऽ जाइत अछि। ई उपलब्धि लिपिबद्ध कवितामे ध्वनि-प्रधान अनुभूति सुरक्षित रखबाक अछि।

२१.३ कथात्मक सीमा

मूल कथानक आ स्वतंत्र पदक बीच संक्रमण अनेक ठाम अकस्मात् अछि। शीर्षक ‘सीतावतरण’ होइतहुँ रामजन्म आ शिव–गौरी प्रसंगक विस्तृत अवकाश एकाग्र कथा-अपेक्षा राखनिहार पाठक लेल असमान अनुपात उत्पन्न करैत अछि। तथापि एकर सभ जिम्मेदारी मूल कविक माथ पर राखब अनुचित, किएक तँ सम्पादक स्वयं मुक्तक गीतक समायोजनक बात कहने छथि। आलोचनाक सटीक रूप अछि—‘उपलब्ध सम्पादित संस्करणमे संक्रमणक स्पष्टता सीमित अछि’।

२१.४ शोधोपयोगिता आ सम्पादकीय सीमा

ग्रन्थ लुप्तप्राय काव्य-सामग्रीक मुद्रित संरक्षण करैत अछि आ स्नेहलताक बहुमुखी गीतधाराक परिचय दैत अछि। मुदा मूल हस्तलिपिक फोटोपटल, संपूर्ण पाठान्तर, किन गीतकेँ कोन स्थान पर जोडल गेल तकर तालिका, गीत-संग्रहक तिथि आ छन्द-ध्वनिक निरूपणक अभाव अछि। एहि कमी सँ सम्पादकीय योगदान कम महत्त्वपूर्ण नहि होइत; भविष्यक प्रामाणिक आलोचनात्मक संस्करणक आवश्यकता निश्चित होइत अछि।

२२. स्वतन्त्र बाहरी सन्दर्भसँ जाँच: की पुष्ट होइत अछि आ की नहि

‘विदेह’ पोथी-सूचीमे प्रकाशित २०११ सम्पादित पुस्तकक उल्लेख भेटैत अछि। ‘मैथिल मंच’क पुस्तकालय-सूचीमे कपिलदेव ठाकुर ‘स्नेहलता’ नामसँ ‘वैदेही विवाह संकीर्तन’क पुस्तक-विवरण भेटैत अछि। एहि दू साक्ष्यसँ राम–सीता केन्द्रित रचनात्मकता आ सम्पादित पोथीक सार्वजनिक उपस्थिति पुष्ट होइत अछि। मुदा ‘वैदेही विवाह संकीर्तन’क पाठक संग एहि संस्करणक पंक्ति-दर-पंक्ति मिलान एतय नहि कएल गेल; समान/भिन्न रचनाक संख्या बतौनाइ अनुमान होयत।

‘मैथिल मंच’क २०२१क समाचारमे स्नेहलतापर प्रस्तावित वृत्तचित्रक सूचना आ डरोड़ी ग्रामसँ सम्बन्धक उल्लेख अछि। समाचार-स्वरूपक स्रोत कविक स्मृतिसंरक्षणक समकालीन संकेत मानल जा सकैत अछि, मुदा एतय फिल्म पूर्ण बनल, जारी भेल अथवा ओकर अनुसन्धान प्रमाणित भऽ गेल, एहन कोनो दावा नहि कएल गेल अछि। पुस्तकक मूल उपोद्घात प्रमुख जीवनी-साक्ष्य अछि; बाहरी स्रोत सभ ओकर सहायक सन्दर्भ मात्र छथि।

आवरण–मुद्रित पृ. ४	आवरण, शीर्षक, प्रकाशकीय परिचय, सम्पादकीय उपोद्घात
मुद्रित पृ. ५–१०	हस्तलिखित सन्देशक प्रतिछवि, समर्पण वाक्य, ‘रचनाक हेतु’
मुद्रित पृ. ११–१४	गणेश-नमन, सरस्वती वन्दना, धर्मसंकट, अवतारक भूमिका
मुद्रित पृ. १५–२१	‘रामजन्म सोहर’—क्रमांकित गीत आ अयोध्याक उत्सव
मुद्रित पृ. २२–२९	जनकक अभिलाषाक संक्रमण आ ‘शैव पदावली’—शिव–गौरी-सम्बन्धी पद
मुद्रित पृ. ३०–३५	जनकक यज्ञ, भूमिजा-जन्म, सुनयना, मिथिलाक उत्सव
मुद्रित पृ. ३६–३८	परिशिष्ट: मिथिला महिमा, मैथिली वन्दना, पराती-प्रारम्भ, विनय, राम वन्दना
मुद्रित पृ. ३९–४३	परिशिष्ट: श्रीकृष्णक पनिघट लीला
मुद्रित पृ. ४३–४७	परिशिष्ट: महेशवाणी आ शिव–गौरी-विषयक गीत
मुद्रित पृ. ४८	पराती/चेतावनी आ ‘स्नेहलताक अन्तिम अपूर्ण रचना’

२४. समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

‘सीतावतरण’ एहन मुद्रित सम्पादकीय कृति अछि जाहिमे कपिलदेव ठाकुर ‘स्नेहलता’क भक्तिपरक प्रबन्ध-संभावना, राम–सीता केन्द्रित रसिक संवेदना आ मैथिल लोकगीतक सक्रिय स्वर मिलैत अछि। काव्यक केन्द्रीय दृश्य सीताक भूमिजा-प्राकट्य अछि: धर्मसंकटसँ आरम्भ भेल कथा जनकक कन्याभिलाषा, यज्ञ, धरतीक उदर आ नगरक उत्सव धरि पहुँचैत अछि। एहि दृश्यकेँ प्रभावशाली बनबैत अछि मिथिलाक कृषिसंस्कृति, बेटी-जन्मक स्नेह आ दैवी प्रतिमाक पारिवारिक आत्मीयता।

पाठक काव्य-विन्यास पर एकरा स्पष्ट दृष्टिसँ देखबाक चाही: ई निर्बाध एकसर्गीय कथाप्रवाह नहि, लोकगायन-संवलित सम्पादित प्रबन्धात्मक पाठ अछि। एहिमे रामजन्म-सोहर आ शैव-पदावलीक स्वायत्तता, कृष्ण–शिवपर अलग परिशिष्ट तथा नानाविध भनिता इतिहासक मूल्यवान सामग्री छथि। एहि रूपमे एकर बल ‘शुद्ध’ महाकाव्य-रूपक अनुकरण नहि, लोकध्वनि आ उपासना-अनुभवक लेखबद्ध संरक्षण अछि।

सम्पादन पर निष्कर्ष स्पष्ट अछि: डॉ. योगानन्द झाक २०११क प्रकाशनक संग्रहणात्मक मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा नामकरण आ गीत-समायोजनक स्वीकृत हस्तक्षेपक कारण आलोचककेँ रचनाकार आ सम्पादकक दायित्व अलग राखय पड़त। एहन भेद बिना छन्द, मूल रचनाक क्रम, कविक अभिप्राय वा प्रबन्धरूपक दोष–गुण पर अन्तिम निर्णय दऽ देब साक्ष्यक उल्लङ्घन होयत। संस्करणक मूल्य एहि बातोमे अछि जे ओ स्वयं अपने निर्माण-प्रक्रियाक संकेत दैत अछि।

अन्ततः ई पोथी आधुनिक मैथिली साहित्येतिहास लेल दू कारणसँ उपयोगी अछि: पहिल, मिथिला-केन्द्रित रामभक्तिक एकटा कम-परिचित रचनासमूहकेँ उपलब्ध करबैत अछि; दोसर, संकीर्तन–संस्कारगीत आ लिखित काव्यक बीच आदान-प्रदान देखबाक दुर्लभ अवसर दैत अछि। भविष्यक सर्वश्रेष्ठ अनुसन्धान मूल पाण्डुलिपि, स्नेहलताक अन्य गीत-संग्रह आ मौखिक

गायन-परम्पराक संग एहि संस्करणक प्रमाणाधारित तुलना होयत—एहि अनुपलब्ध साक्ष्यक ठाम ककरो अनुमान नहि भरबाक चाही।

अध्याय 11 / २०१३

मंगल-प्रभात

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

१. ग्रन्थ-परिचय आ शोध-पद्धति

‘मंगल-प्रभात’ महात्मा गाँधीक आश्रमवासी लेल लिखल जीवन-नियमक व्याख्याक मैथिली अनुवाद अछि। पुस्तकक आरम्भक पृष्ठमे अंग्रेजी प्रकाशकीय विवरण स्पष्ट करैत अछि जे डॉ. योगानन्द झा हिन्दी रूपान्तरक आधार पर एहि सामग्रीकेँ मैथिलीमे प्रस्तुत कएलनि। शीर्षक-पृष्ठ, प्रकाशकीय विवरण आ अधिकार-पत्र सँ स्पष्ट होइत अछि जे एकरा मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा द्वारा २०१३ मे प्रकाशित कएल गेल आ नवजीवन ट्रस्टक अनुमति लेल गेल छल। ताहि कारणेँ एकर अध्ययन केवल गाँधी-दर्शनक सारांश नहि, वरन् विचार, अनुवाद, मैथिली पाठकीयता आ प्रकाशन-इतिहासक संयुक्त परीक्षण अछि। (मुद्रित पृ. १–३, १३–१४, ६७–६८)

आश्रम-व्रतक व्याख्या साधारण उपदेशात्मक अनुच्छेद नहि अछि। ‘मंगल-प्रभात’ नाम पयबाक कारण, प्रत्येक मंगलक प्रातःकालक प्रार्थनाक बाद व्रत-विषयक विचार देबाक संकल्प आ तकर प्रकाशनक चर्चा पुस्तकक आरम्भिक निबन्धमे अछि। अलग-अलग लेख पर २२ जुलाई सँ १४ अक्टूबर १९३० धरि अंकित तिथि एहि सामग्रीक क्रमिक रचना-स्वरूपक प्रमाण अछि। एहि ऐतिहासिक क्रमसँ पाठ पढ़लासँ देखाइत अछि जे गाँधीजी एकेक व्रत स्वतंत्र इकाईक रूपमे चर्चित करैत छथि, तथापि निरन्तर ओ सभकेँ सत्य-अहिंसा आ सामूहिक जीवनक केन्द्र सँ जोड़ि दैत छथि। (पृ. १७–१८; निबन्धसभक शीर्ष-तिथि)

दोसर स्रोत सेवाग्राम आश्रम द्वारा उपलब्ध ‘From Yeravda Mandir’ क अंग्रेजी संस्करण आ आश्रम-व्रत सम्बन्धी मूल/संस्थागत सामग्री अछि। अंग्रेजी संस्करणक उपयोग

गाँधी-विचारक व्यापक पाठ-परम्परा आ अध्यायक्रमक तुलना लेल कएल गेल अछि, नकि मैथिली अनुवादक शब्दशः शुद्धता प्रमाणित करबाक लेल। बिनु हिन्दी मध्यवर्ती पाठक पंक्ति-दर-पंक्ति मिलान कएने अनुवादक ‘गलती’ घोषित करब उचित नहि।

२. प्रकाशन-परम्परा, भूमिका आ अनुवादकक प्रस्तावना

ग्रन्थक आरम्भमे समर्पण, आशीर्वचन, गाँधी-साहित्यक महत्त्व सम्बन्धी भूमिका, ‘अनुवादक दिससँ’ आ काका कालेलेकरक ‘निवेदन’ भेटैत अछि। ई सभ खण्ड पाठक लेल अलग-अलग प्रवेशद्वार रचैत अछि। एक दिस गाँधीक आदर्शक महत्ता आ मैथिलीमे वैचारिक साहित्यक आवश्यकता रेखांकित होइत अछि; दोसर दिस अनुवादक स्पष्ट करैत छथि जे मैथिलीमे गाँधीजीक मूल विचार उपलब्ध करेनाइ हुनक उद्देश्य छल। काका कालेलेकर पाठक भाषा-प्रसारक प्रश्न उठबैत छथि आ गाँधीजीक विचार बहुभाषी भारतीय पाठक धरि पहुँचबाक अभिप्राय व्यक्त करैत छथि। (पृ. ५–१५)

‘अनुवादक दिससँ’ (पृ. १३–१४) विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। एतय अनुवादक अपन साहित्यिक प्रेरणा आ अनुवाद-प्रक्रियाक व्यावहारिक कठिनाइ—प्रकाशकीय अनुमति, मैथिली प्रकाशनक व्यवस्था आ पाठक-विस्तार—क विवरण दैत छथि। एहि तथ्य सँ ई पुस्तक केवल वैचारिक आयात नहि रहि जाइत अछि; ई मैथिलीमे दार्शनिक-नैतिक गद्यक आधार बढ़ेबाक सचेत प्रयास बनैत अछि। ‘निवेदन’ (पृ. १५) मे काका कालेलेकरक दिनांक ६ जून १९५८ छपल अछि। एहि दिनांक कैँ २०१३ क मैथिली प्रकाशन-वर्ष मानब भूल होयत; ई पूर्वस्थित प्रस्तावनात्मक वक्तव्यक तिथि अछि।

प्रकाशकीय पृष्ठक अनुसार मैथिली अनुवादक पाछाँ हिन्दी अनुवादक अमृतलाल ठाकोरदास मणावतीक नाम देल अछि। एहि आधार पर ग्रन्थक सम्भावित संप्रेषण-शृंखला ‘गाँधीक मूल लेखन → हिन्दी रूपान्तर → मैथिली रूपान्तर’ बुझल जाइत अछि। एकरा अंग्रेजी अनुवादक सीधा मैथिली रूपान्तर कहब पुस्तकक स्वयं देल तथ्यक विपरीत होयत। मुदा मध्यवर्ती हिन्दी

संस्करणक पूरा पाठ एहि अध्ययनक आधार-पत्रमे उपस्थित नहि अछि, तेँ अनुवादक रूपान्तरक सूक्ष्म विचलनक दावे एतय जानि-बूझि रोकल गेल अछि।

३. पन्द्रह मुख्य निबन्ध: पाठ, तर्क आ आलोचनात्मक समीक्षा

३.१ सत्य

मूल पाठ: मुद्रित पृ. १९–२१; लेख-तिथि: २२.०७.१९३०।

आरम्भिक निबन्धमे सत्य केवल सच बाजबाक सदाचार नहि, अस्तित्व आ परमेश्वरक प्रश्न धरि विस्तृत अछि। पाठमे ‘सत्’ केँ स्थिति, विद्यमानता आ वस्तुक असली सत्ता सँ जोड़ल गेल अछि; ‘सत्य’ केँ परमेश्वरक नामक रूपमे विचारल गेल अछि। ई तर्क गाँधीजीक नैतिक जीवन आ अध्यात्मक बीच अटूट सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। लेखकक आग्रह अछि जे दैनिक व्यवहारमे सत्यक अभ्यास करैत-करैत मनुष्य व्यापक सत्यक साधना करय। फलत: ई निबन्ध व्रतसभक आधार-पाठ बनैत अछि।

विशेष ध्यान देबाक योग्य बात ई जे निबन्ध सत्यकेँ केवल वाणीधरि सीमित नहि रखैत अछि। विचार, व्यवहार आ मनक भीतरक ईमानदार प्रयास सेहो एतय सत्यक अंश अछि। सत्यक खोज मे स्वयंकेँ परखब, अपन निर्णयक समीक्षा करब आ लोभ-भय सँ मुक्त होयबाक प्रयत्न करब जरूरी ठहरैत अछि। एहि दृष्टिसँ सत्य अविचल घोषणासँ अधिक निरन्तर आत्मपरीक्षणक पद्धति अछि। पाठक अध्यात्म-प्रधान मुहावरा ओकर दार्शनिक आधार देत अछि, मुदा सामाजिक कर्मक संग जोड़लासँ विचार क्रियाशील बनैत अछि।

आलोचनात्मक रूपसँ प्रश्न उठैत अछि: सत्यक निजी अनुभूति आ सार्वजनिक प्रमाणक बीच भेद कोना राखल जाय? गाँधीजीक नैतिक सत्य-साधनाक महत्त्व स्वीकारैत ई स्पष्ट करब उचित अछि जे व्यक्तिगत अन्त:करणक विश्वास अपने-आप ऐतिहासिक अथवा वैज्ञानिक तथ्यक प्रमाण नहि होइत अछि। आधुनिक सार्वजनिक जीवनमे सत्यक प्रति निष्ठा संग दस्तावेज, जाँच आ तर्क-परीक्षण सेहो चाही। एहि सन्दर्भमे पुस्तकक सत्य-विचारक विशेष बल नैतिक ईमानदारी अछि, तथ्यक प्रत्येक विवादक अन्तिम फैसला नहि।

३.२ अहिंसा

मूल पाठ: मुद्रित पृ. २२–२४; लेख-तिथि: २९.०७.१९३०।

‘अहिंसा’ निबन्ध सत्य आ अहिंसाकेँ एकही साधनाक दू परस्पर जुड़ल पक्षक रूपमे राखैत अछि। पाठ कहैत अछि जे सत्यक सम्पूर्ण दर्शन सहज नहि, ताहि लेल प्रेमक अनुशासन आ अहिंसक साधन अपेक्षित अछि। अहिंसा मात्र हत्या नहि करब नहि, बल्कि द्वेष, क्रोध, ईर्ष्या आ प्रतिशोधक भीतरक रूपक प्रतिरोध अछि। अत्याचारक विरोध छोड़ि देब सेहो अहिंसाक उद्देश्य नहि; अन्यायक प्रतिकार करैत व्यक्तिक प्रति घृणा नहि पोसब ओकर कठिन शर्त अछि।

निबन्धमे ‘चोर’क उदाहरण महत्त्वपूर्ण अछि। ओकर माध्यम सँ लेखक अपराधीकेँ केवल शत्रु बना कऽ देखबाक बदला ओहि व्यक्तिक मानवीय सम्भावना बुझबाक आग्रह करैत छथि। दण्ड-संस्कृतिक विपरीत ई उदाहरण अन्यायक कारण, व्यवहार आ सम्भावित सुधारक प्रश्न खोलेज। अहिंसा एहि अर्थमे निष्क्रिय सहिष्णुता नहि, बल्कि शक्तिक उपयोगक नैतिक सीमा ठहरबैत अछि। एकर सम्बन्ध शरीरिक, वाचिक आ मानसिक व्यवहार सँ बनैत अछि।

एहि विचारक आलोचनात्मक प्रयोगमे एकटा सावधानी आवश्यक अछि: पीड़ित व्यक्तिसँ ‘प्रेम’ वा ‘क्षमा’क माँग कऽ ओकर सुरक्षा अथवा न्याय पाबबाक अधिकार नकारल नहि जा सकैत अछि। अत्याचार, घरेलू हिंसा वा भेदभावक परिस्थिति मे कानूनी संरक्षण आ ठोस संस्थागत प्रतिरोध जरूरी अछि। गाँधीक अहिंसा सँ प्रतिहिंसा-विरोधक नैतिक तत्त्व ग्रहण कएल जा सकैत अछि, मुदा ओकरा पीड़ितक मौन-स्वीकृति मे बदलि देब पाठक सामाजिक शक्ति घटायब होयत।

३.३ ब्रह्मचर्य

मूल पाठ: मुद्रित पृ. २५–२८; लेख-तिथि: ०५.०८.१९३०।

‘ब्रह्मचर्य’ निबन्ध संयमकेँ शेष सभ व्रतक सहायक अनुशासनक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। एतय ब्रह्मचर्यक अर्थ केवल बाहरी यौन-संयम नहि, मन, इन्द्रिय, आसक्ति आ व्यवहार पर नियंत्रण सँ अछि। पाठक आरम्भमे प्रश्न उपस्थित अछि जे जे व्यक्ति सत्य, अहिंसा आ

आत्मसमर्पण चाहैत अछि, से निजी भोग-विलास आ अनियन्त्रित इच्छा संग कोना न्याय करत। ई प्रश्न आश्रमक सामुदायिक जीवनक भीतर आत्मसंयमक उपयोगिता देखबैत अछि।

निबन्धक एकटा आधारभूत विशेषता व्यक्तिगत संयम आ व्यापक सेवा-भावक सम्बन्ध अछि। मनुक्खक स्नेह जँ बहुत संकीर्ण स्वामित्व-वृत्ति बनि जाय, तँ लोक-सेवाक क्षमता बाधित भऽ सकैत अछि—एहि आशंकासँ लेखक शरीर आ मन दुनूक नियन्त्रणक बात करैत छथि। भोजन, इन्द्रिय-वृत्ति आ वासनासँ सम्बन्धित विमर्श आगामी ‘अस्वाद’ निबन्धक संग तर्कसंगत कड़ी बनबैत अछि।

आधुनिक विवेचनमे ब्रह्मचर्यक एकमात्र जीवन-पद्धति कैं सभ व्यक्ति पर लागू करब उचित नहि। सहमति, देह-स्वायत्तता, दाम्पत्यक समानता आ लिंग-न्याय मानवीय गरिमाक आवश्यक आयाम अछि। ताहि कारणेँ एहि अध्यायक अध्ययन आश्रम-नियमक ऐतिहासिक सन्दर्भमे करब चाही। संयमक सकारात्मक अर्थ—अपरिग्रह, जिम्मेदारी, सम्बन्धमे सम्मान—आ व्यक्तिगत जीवन पर कठोर नैतिक नियन्त्रणक सम्भावित सीमा, दुनू कैं अलग-अलग देखब उचित अछि।

३.४ अस्वाद

मूल पाठ: मुद्रित पृ. २९–३२; लेख-तिथि: १२.०८.१९३०।

‘अस्वाद’ शीर्षकक तात्पर्य भोजनक स्वादक अस्तित्व नकारब नहि, बल्कि स्वादलिप्साकेँ जीवनक प्रधान लक्ष्य नहि बनायब अछि। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे भोजन देहकेँ टिकेबाक साधन अछि; केवल जिह्वाक सुख लेल खाएब आत्मनियन्त्रणक बाधा बनि सकैत अछि। निबन्ध अस्वादकेँ ब्रह्मचर्य सँ जोड़ैत अछि: जिह्वा पर नियन्त्रण इन्द्रियसंयमक अभ्यास बनैत अछि। अकारण अधिक भोजन, स्वादक लोभ आ आवश्यकता-बाहिर भोगक प्रवृत्ति विरुद्ध ई तर्क अछि।

पाठमे भोजनकेँ औषध-जकाँ आवश्यकता आ उपयोगिताक आधार पर ग्रहण करबाक तुलना देल गेल अछि। एहिसँ गाँधीजीक नैतिकता देहक सामान्य आ दैनिक क्रिया धरि उतरि

अबैत अछि। व्यक्ति सार्वजनिक सत्य-अहिंसाक बात करय, मुदा अपन भोग पर नियन्त्रण नहि राखय, तँ ओकर व्रतव्यवस्था अधूरा रहैत अछि—ई अध्यायक मूल अन्तःसूत्र अछि।

एहि विषयक सामयिक विश्लेषणमे पोषण, आयु, श्रम, स्वास्थ्यस्थिति आ भोजनक सांस्कृतिक महत्त्वक भेद ध्यानमे रखब जरूरी अछि। स्वादक प्रति सजगता आ अति-उपभोगक आलोचना उपयोगी अछि; मुदा कठोर निषेधकेँ चिकित्सा-विज्ञानक सार्वभौम नियम मानब गलत होयत। पोषण-अभाव झेलैत समाजमे ‘कम खाएब’क नैतिक उपदेश देब वस्तुस्थिति सँ कटल भऽ सकैत अछि। ग्रन्थक बल भोग-विवेक पर अछि, अनाहारक महिमामण्डन पर नहि।

३.५ अस्तेय (अचौर्य)

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ३३–३५; लेख-तिथि: १९.०८.१९३०।

‘अस्तेय’ निबन्ध चोरीक परिभाषाकेँ सीधा कानून-विरुद्ध वस्तु उठा लेबाक संकीर्ण अर्थ सँ बहुत आगाँ लऽ जाइत अछि। पाठक तर्क अछि जे अनावश्यक वस्तु लेब, दोसरा लेल निर्धारित वस्तुक अनुचित उपयोग, वा जरूरतसँ अधिक संग्रह सेहो नैतिक अर्थमे चोरीक समीप पहुँचि सकैत अछि। एहि ठाम गाँधीजीक नैतिकता सम्पत्तिक औपचारिक स्वामित्व सँ हटि आवश्यकता आ न्यायपूर्ण उपभोगक प्रश्न उठबैत अछि।

अध्यायक विशेषता ‘जरूरत’ आ ‘अधिकार’ बीचक तनाव अछि। जँ कोनो वस्तु वैध खरीदल गेल अछि, तथापि ओकर अनावश्यक उपभोग सामाजिक साधन पर दबाव डालि सकैत अछि—ई नैतिक तर्क आजुक संसाधन-संकट मे सेहो विचारणीय अछि। निबन्धमे सत्य-अहिंसाक संग अस्तेयक रेखाचित्र प्रस्तुत अछि; एकर अर्थ जे परस्पर विश्वास, गैर-हिंसक व्यवहार आ सीमित उपभोग एकमेक सँ जुड़ल अछि।

एकर आलोचनात्मक सीमा सेहो अछि। कतेक उपभोग ‘आवश्यक’ अछि, ई निर्धारण वर्ग, रोग, अपांगता, बाल्यावस्था, श्रमक प्रकृति आ सामाजिक परिप्रेक्ष्यक अनुसार बदलैत अछि। नैतिक अस्तेय कैँ समाजक निर्धन लोकक छोटी-छोटी इच्छापर कठोर निगरानीक औजार नहि

बनेबाक चाही। एकर व्यापक अर्थ प्रभुत्वशाली समूहक अपव्यय, शोषण आ संसाधनक असमान पहुँचक परीक्षणमे बेसी फलदायी अछि।

३.६ अपरिग्रह

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ३६–३८; लेख-तिथि: २६.०८.१९३०।

‘अपरिग्रह’ अस्तेयक अगिला तार्किक पायदान अछि। पुस्तकमे एहि शीर्षकक अन्तर्गत जरूरतसँ बेसी वस्तु जमा नहि करब, सञ्चयक लालसाकेँ घटायब आ दैनिक उपभोगकेँ सीमित करबाक आग्रह व्यक्त अछि। लेखकक विचारमे सम्पत्ति जमा कएला सँ सुरक्षा आ सन्तोष सुनिश्चित नहि होइत अछि; आवश्यक वस्तुक यथोचित उपयोग आ लोकसेवाक क्षमता नैतिक जीवनक अधिक सार्थक मापदण्ड अछि।

पाठक एक मार्मिक प्रश्न अछि: जखन असंख्य लोकक पास जीवनक अनिवार्य साधन नहि अछि, तखन सम्पन्न व्यक्तिक अत्यधिक वस्तुसंग्रहकेँ सहज किएक मानल जाय? एहि प्रश्नक मार्फत अपरिग्रह धार्मिक तपस्या सँ बढ़ि वितरणात्मक न्यायक बहस बनि जाइत अछि। संग्रह छोड़बाक अर्थ सर्वथा निष्क्रियता नहि; जरूरत पूरा करबाक सामर्थ्य राखि बचल साधन समाजक कार्यमे लगायब एतय आदर्श अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ अपरिग्रहक मूल्य तखन बेसी स्पष्ट होइत अछि जखन हम नैतिक स्वैच्छिक त्याग आ जनसामान्यक अनैच्छिक अभावक बीच भेद राखैत छी। जे लोक जीवनयापन लेल संघर्षरत अछि, ओकर न्यूनतम सुरक्षा-भंडारकेँ ‘लोभ’ कहब तर्कहीन होयत। अपरिग्रहक प्रासंगिकता संसाधनक असमान वितरण, उपभोक्तावाद आ जिम्मेदार सार्वजनिक व्ययक प्रश्नमे अछि; निर्धनताकेँ अपने-आप पवित्र मानि लेब एहि विचारक न्यायपूर्ण अनुप्रयोग नहि।

३.७ अभय

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ३९–४०; लेख-तिथि: ०२.०९.१९३०।

‘अभय’ निबन्ध आत्मिक निर्भीकताकेँ सत्य-अहिंसाक आवश्यक पूर्वशर्त कहैत अछि। लेखक बाहरी भयक अनेक स्रोतक उल्लेख करैत छथि—मृत्यु, जीविका, प्रतिष्ठा, परिजन, राज्यसत्ता, सामाजिक प्रताड़ना। सत्यपालन जँ परिणामक भय सँ टूटि जाय तँ नैतिक प्रतिज्ञा टिकि नहि सकैत अछि। ताहि दृष्टिसँ निर्भीकता मात्र वीररसक भाव नहि, न्यायपूर्ण निर्णय लेबाक कठिन क्षमता अछि।

पाठक एकटा महत्त्वपूर्ण गुण ई अछि जे अभयकेँ हिंस्र दुस्साहस सँ अलग राखल गेल अछि। निडरता, आत्मसमर्पण, सत्यक खोज आ आत्म-संशोधन एकटा अनुशासित मनोवृत्ति बनबैत अछि। अहिंसक प्रतिरोधक सफलताक लेल बाहरी हानि सहबाक तैयारी आ अपन विवेक प्रति निष्ठा आवश्यक ठहरैत अछि।

परन्तु निर्भीकता आ जोखिमक अन्ध स्वीकार एक नहि। असुरक्षित नागरिक, उत्पीड़ित समूह वा हिंसाक शिकार व्यक्ति सँ निर्भीकता माँगैत समय ओकर वास्तविक सुरक्षा, आश्रय आ संस्थागत सहयोग देब जरूरी अछि। अभयक उत्तम सामाजिक अर्थ भय पैदा करनिहार संरचना बदलब अछि। जँ हम केवल भयभीत व्यक्तिक स्वभावकेँ दोष देब, तँ राज्य आ समाजक उत्तरदायित्व ओझरायल रहि जायत।

३.८ अस्पृश्यता-निवारण

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ४१–४३; लेख-तिथि: ०९.०९.१९३०।

एहि निबन्धमे अस्पृश्यता केँ धार्मिक-सामाजिक विकृति मानि ओकर उन्मूलनक आग्रह अछि। पाठक आरम्भमे स्पष्ट रूपसँ कहल गेल अछि जे ‘अस्पृश्यता’ आ ‘अछूत’क धारणा मनुष्यक बराबरीक विरुद्ध अछि। लेखक भोजन, स्पर्श, श्रम आ सामाजिक सम्पर्कक व्यवहारमे बनल विभाजनक आलोचना करैत छथि। एहि निबन्धक बल ई अछि जे सामाजिक अन्यायकेँ सामान्य शिष्टाचारक कमी नहि, एकटा जड़ जमा लेने सामूहिक आचारक दोषक रूपमे देखैत अछि।

ग्रन्थक धार्मिक तर्कमे धर्मक नाम पर भेदभावक वैधताकेँ चुनौती देल गेल अछि। ई चुनौती ओहि पाठक समुदाय लेल विशेष महत्त्वपूर्ण छल जे जाति-आधारित बहिष्करणकेँ परम्परा मानि स्वीकारि लेने छल। एहि खण्डमे अस्पृश्यता-निवारण सत्य-अहिंसाक ठोस सामाजिक परीक्षा बनि जाइत अछि: व्यक्तिक प्रति प्रेमक दावा तखनहि सार्थक, जखन ओकर सामाजिक प्रतिष्ठा आ बराबरी व्यवहारमे मानल जाय।

आलोचनात्मक अध्ययनमे एतय एकटा तनाव देखाइत अछि। मुख्य पाठ भेदभाव-विरोधक प्रबल तर्क देत अछि, मुदा परिशिष्टक पृ. ६६ मे वर्णव्यवस्था आ आश्रमजीवन पर टिप्पणी सेहो अछि। एहि दुनूकेँ जोड़ि देखलासँ जाति-निवारणक घोषित उद्देश्य आ परम्परागत वर्ण-सम्बन्धी विवेचनक बीच सम्भावित वैचारिक असहजता उभरैत अछि। आधुनिक समानताक कसौटी पर अस्पृश्यता-विरोधक संग जातिगत पदानुक्रम, पैतृक व्यवसाय-बन्धन आ सामाजिक अवसरक असमानता केँ सेहो पूर्णतः अस्वीकार करब आवश्यक अछि।

३.९ श्रमव्ययी आजीविका

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ४४–४६; लेख-तिथि: १६.०९.१९३०।

एहि अध्यायमे श्रम आ जीविकाकेँ परस्पर निर्भर नैतिक दायित्व मानल गेल अछि। पाठ ‘ब्रेड लेबर’ सम्बन्धी विचारक परिचय दैत अछि: जे मनुष्य खाइत अछि, ओकरा अपन सामर्थ्यक अनुसार उत्पादक शारीरिक श्रम सेहो करबाक चाही। ई धारणा नियोक्ताक विशेषाधिकार आ मजदूरक हीनता, दुनूक विरुद्ध अछि। श्रमकेँ व्यक्ति-चरित्र निर्माण आ सामाजिक समानताक माध्यम बनाओल गेल अछि।

पाठक एक महत्वपूर्ण मोड़ ई अछि जे जे लोक शारीरिक श्रम नहि करैत छथि, हुनकर भोजन-अधिकार पर नैतिक प्रश्न उठैत अछि; तथापि वृद्ध, असमर्थ आ आश्रित व्यक्तिक सेवादायित्वक चर्चा सेहो एतय उपस्थिति अछि। श्रमविमर्शक मर्म ई अछि जे जीविकाक साधन तैयार करनिहार हाथक प्रति सम्मान बढ़य आ कामक आधार पर ऊँच-नीचक विचार कम होय। लेखक स्वयं शरीर सँ काज करबाक उदाहरणक बल पर श्रमक गरिमा स्थापित करैत छथि।

आजुक आर्थिक सन्दर्भमे एहि धारणा कैँ ज्यों-का-त्यों लागू करब कठिन अछि, कारण देखभाल, अध्यापन, मानसिक श्रम, तकनीकी सेवा आ अपांग-अनुकूल रोजगारक अनेक रूप अछि। तथापि श्रमक सम्मान, श्रमिकक अधिकार, उत्पादन-उपभोगक सम्बन्ध आ सेवाक सामूहिकता पर एहि निबन्धक आग्रह गम्भीर अछि। नैतिक दायित्वक नाम पर मजदूरक न्यून पारिश्रमिक वा श्रम-शोषणक समर्थन कदापि नहि होयबाक चाही; श्रमक गरिमा संग न्यायसंगत मजदूरी आ सुरक्षा अनिवार्य अछि।

३.१० सर्वधर्म-समभाव—१

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ४७–४९; लेख-तिथि: २३.०९.१९३०।

पहिल ‘सर्वधर्म-समभाव’ निबन्ध सहिष्णुताक शब्दार्थ आ नैतिक सीमा पर केन्द्रित अछि। लेखक ‘सहिष्णुता’ सँ आगाँ बढ़ि ‘समभाव’क विचार प्रस्तुत करैत छथि। मूल अभिप्राय ई जे अपन धर्मकैँ त्रुटिहीन आ दोसरा धर्मकैँ स्वभावत: अधम मानबाक दृष्टि त्यागल जाय। मनुष्यक ज्ञान सीमित अछि; ताहि कारणेँ धर्मक मानवीय व्याख्यासभमे अपूर्णता होयब सम्भव अछि।

एहि निबन्धक सामर्थ्य आत्मालोचना अछि। दूसराक सम्मान केवल सामाजिक शान्तिक रणनीति नहि, अपन ज्ञानक सीमाबोध सँ निकलैत अछि। धर्मक प्रति निष्ठा आ धर्मसम्बन्धी विनयकैँ परस्पर विरोधी नहि मानल गेल अछि। पाठमे ‘धर्म सब अपूर्ण’ कहबाक प्रसंग ई नहि जे आस्था निरर्थक अछि; बल्कि मनुक्खक व्याख्या अन्तिम सत्य पर एकाधिकार नहि रखैत अछि।

आलोचनात्मक रूपेँ ‘समभाव’ आ वास्तविक धार्मिक स्वतन्त्रता बीच भेद जरूरी अछि। समान सम्मानक आदर्श तखन सशक्त बनैत अछि जखन पूजा, अ-आस्था, धर्मत्याग, मतभिन्नता आ धर्मपरिवर्तनक कानूनी अधिकार सुरक्षित रहय। केवल भावात्मक सद्भाव पर्याप्त नहि, अल्पसंख्यक आ भिन्न विश्वास रखने लोकक समान नागरिकता सेहो जरूरी अछि। एहि निबन्धक नैतिक प्रयोजनकैँ आधुनिक अधिकार-विमर्श सँ जोड़ब फलदायी अछि।

३.११ सर्वधर्म-समभाव—२

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ५०–५२; लेख-तिथि: ३०.०९.१९३०।

दोसर ‘सर्वधर्म-समभाव’ निबन्ध सिद्धान्तकेँ आश्रमक बहुधार्मिक प्रार्थना-व्यवहार मे उतारैत अछि। एतय प्रार्थनामे विभिन्न धार्मिक परम्पराक स्तुति वा पाठक उल्लेख अछि। लेखक एहिमे आत्मीयता, शिक्षण आ परस्पर सम्मानक सम्भावना देखैत छथि। पहिल लेखक सैद्धान्तिक आग्रह एहि लेखमे प्रत्यक्ष सामाजिक प्रयोगक रूप धारण करैत अछि।

ग्रन्थक एक विशेष बिन्दु ई अछि जे अपन धर्मक सत्य-बोध सुरक्षित रखैत दोसरा परम्पराक वाणी सुनबाक क्षमता पर बल देल गेल अछि। संवादक लक्ष्य दोसराकेँ हराएब नहि, अपनेँ भीतरक संकीर्णता कम करब अछि। धार्मिक बहुलताक ई धारणा निर्विवाद एकरूपता नहि माँगैत अछि; एकटा आश्रम-समाजमे पारस्परिक अनुशासन आ आदरक वातावरण चाहैत अछि।

आलोचनात्मक सवाल अछि जे साझा प्रार्थना मे स्वेच्छा, असहमतिक अधिकार आ गैर-धार्मिक व्यक्तिक स्थान कतेक सुरक्षित अछि। धर्मसभक धार्मिक भाषाकेँ मिलि कऽ बजब सामूहिकता रचि सकैत अछि, मुदा सभ नागरिकक सम्मान लेल धार्मिक सहभागिताकेँ बाध्यकारी नहि बनेबाक चाही। एहि शर्त पर साम्प्रदायिक भेद घटेबाक गाँधीवादी प्रस्ताव लोकतान्त्रिक बहुलताक संग रचनात्मक संवाद करि सकैत अछि।

३.१२ नम्रता

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ५३–५४; लेख-तिथि: ०७.१०.१९३०।

‘नम्रता’ शीर्षकमे विनयकेँ अलग व्रतक रूपमे देखबाक कठिनाई पर विचार अछि। लेखकक कथनक भाव ई जे नम्रता कागज पर लीहल प्रतिज्ञासँ नहि, भीतरक अहंकार घटबाक क्रमिक अभ्यास सँ विकसित होइत अछि। ओही कारणेँ नम्रताकेँ सभ व्रतक साङ्गतिक गुण मानल गेल अछि। जे व्यक्ति अपन सत्यपालन पर गर्व करैत दोसरा केँ तुच्छ मानैत अछि, से अपन साधनाक मूल भाव खोइ सकैत अछि।

एहि निबन्धक अध्यात्मिक पक्ष सेवाक भाव सँ जुड़ैत अछि। मनुष्य अपन सीमितता बुझैत अछि तँ अपन उपलब्धिक दावा सँ हटि समाजक व्यापक जीवनक प्रति उत्तरदायी बनैत अछि। विनयक ई अर्थ दासभाव नहि, अहंकार-शून्य सहयोग अछि। निबन्धक रूपक-भाषा आत्मपरिष्कारक कठिनाइकेँ सहज करैत अछि।

वर्तमान सार्वजनिक विमर्शमे नम्रता विशेष उपयोगी अछि, कारण तर्क-विवाद बहुधा व्यक्तिपूजाक रूप लऽ लेत अछि। तथापि विनयक नैतिक आदर्शकेँ कमजोर वर्ग सँ चुप रहबाक आदेश बनायब हानिकारक होयत। प्रश्न पूछब, विरोध करब आ अपन अधिकार माँगब नम्रताक विरुद्ध नहि। उचित नम्रता शक्ति सँ जुड़ल अहंकार सीमित करैत अछि, आत्मसम्मान नहि मेटबैत अछि।

३.१३ स्वदेशी: प्रस्तावनात्मक टिप्पणी

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ५५; विषय-सूचीमे स्वतंत्र क्रमांक १३।

एहि संक्षिप्त लेखमे गाँधीजी स्पष्ट करैत छथि जे स्वदेशी पर विस्तृत लिखैत काल राजनीतिक अर्थक प्रसंग स्वाभाविक रूपसँ आबि सकैत अछि, तथापि ध्यान मूलत: ओकर नैतिक-धार्मिक पक्ष पर अछि। ई टिप्पणी आगामी ‘स्वदेशी व्रत’क व्याख्याक प्रवेशिका अछि। निबन्ध छोट अछि, मुदा ओकर आलोचनात्मक महत्त्व बड़ अछि: स्वदेशीकेँ केवल विदेशी वस्तुक बहिष्कारक कार्यक्रम मानलासँ विचारक आधा अर्थ बचैत अछि।

एहि अंश सँ लेखकक पाठकीय अभिप्राय सेहो स्पष्ट होइत अछि। ओ स्वदेशीक सम्बन्ध सम्बन्धित लोकक सेवा, स्वानुशासन आ जिम्मेदारी सँ स्थापित करबाक जमीन तैयार करैत छथि। एही से विषय-सूचीमे एहि छोट टिप्पणीकेँ अलग स्थान देल जायब अर्थवान् अछि; एकरा ‘स्वदेशी व्रत’मे मिला कऽ छोड़ी देब ग्रन्थक सम्पादकीय संरचनाकेँ अस्पष्ट करत।

एहि टिप्पणीकेँ पढ़बाक उपयुक्त पद्धति ई अछि जे राजनीतिक राष्ट्रवाद, आर्थिक स्थानीयता आ नैतिक निकटता—तीनू बीच भेद राखल जाय। लेखकक स्वदेशी-विवेचनक गुण-अवगुण देखबाक क्रम एहि भेद सँ स्पष्ट होइत अछि।

३.१४ स्वदेशी व्रत

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ५६–५९।

‘स्वदेशी व्रत’मे स्वदेशीक अर्थ पड़ोसी आ निकटवर्ती समुदाय प्रति प्रथम उत्तरदायित्वक रूपमे स्थापित अछि। लेखक कहैत छथि जे दूरेक लोकक सेवा करबाक ऊँच विचार राखैत अपन आसपासक लोकक उपेक्षा कएलासँ सेवाक वास्तविक दायित्व छूटि सकैत अछि। स्थानीय सम्बन्ध सँ शुरु भेल सेवा आगाँ व्यापक मानवता धरि पहुँचित अछि। ई विचार स्वदेशीकेँ भौगोलिक बन्दिश नहि, जिम्मेदारीक क्रमबद्ध विस्तारक रूपमे बुझबाक अवसर देत अछि।

निबन्धक एक महत्त्वपूर्ण विशेषता धार्मिक प्रसंग आ सामाजिक-आर्थिक प्रसंगक मिलन अछि। अपन पड़ोसीक श्रम, ओकर वस्तु आ ओकर कठिनाईक प्रति सजग होयब स्वदेशी अछि; मुदा ई भाव दोसरा देश वा धर्मक लोकक प्रति द्वेष नहि बनय। लेखमे स्वदेशीकेँ सेवा आ पारस्परिकता सँ जोड़बाक प्रयास दुराग्रही बहिष्कार सँ अलग ठहरैत अछि। स्थानीय उत्पादन, भाषा आ सांस्कृतिक आधारक सम्मान एहि व्यापक नैतिक भावक सम्भावित क्षेत्र अछि, मुदा ई सभ आधुनिक अनुप्रयोग अछि, मूल पाठक प्रत्यक्ष नीतिगत सूची नहि।

समकालीन मूल्याङ्कनमे स्वदेशी आ वैश्विक परस्परावलम्बन बीच सन्तुलन आवश्यक अछि। औषधि, विज्ञान, शिक्षा, व्यापार आ प्रवासी समुदायक सहयोग कखनो-कखनो अन्तरदेशीय सञ्जाल पर निर्भर करैत अछि। स्थानीय अर्थव्यवस्थाक समर्थन, पर्यावरणीय जिम्मेदारी आ शोषण-रहित व्यापार महत्त्वपूर्ण अछि, तथापि केवल उत्पत्तिस्थानक आधार पर वस्तु वा व्यक्तिक नैतिकता तय करब उचित नहि। गाँधीजीक निकटवर्ती सेवा-विचारक सभसँ उर्वर प्रयोग स्थानीय उत्तरदायित्व संग सार्वभौम मानवीय सम्मान जोड़ब अछि।

३.१५ व्रतक आवश्यकता

मूल पाठ: मुद्रित पृ. ६०–६२; लेख-तिथि: १४.१०.१९३०।

अन्तिम मुख्य निबन्ध सम्पूर्ण ग्रन्थक आत्मपरीक्षण अछि। लेखक व्रत लेबाक आवश्यकता पर सम्भावित आपत्तिसभ उठबैत छथि: नियम मानी लेल पर्याप्त किएक नहि? कठिन परिस्थिति

मे व्रत किएक कठोर हो? लेखकक उत्तर अछि जे सदिच्छा मात्र पर्याप्त नहि; नैतिक निर्णयमे दृढ़ निश्चय चाही। ताहि लेल व्रत क्षणिक भावनाक बदला दीर्घकालीन अनुशासनक सार्वजनिक घोषणा बनैत अछि।

एहि निबन्धमे ‘जहिना सम्भव हो’क अनिश्चित अभिव्यक्तिक आलोचना भेटैत अछि। लेखकक मतमे व्रत अपवाद खोजबाक चतुराई नहि, प्रलोभनक सोझाँ ठाढ़ रहबाक बल प्रदान करैत अछि। शराब-पान त्यागक उदाहरण, सूर्यक निश्चित गतिक उपमा आ मनुष्यक वचन पालनक प्रश्न—ई सभ तर्कक द्वारा नियम आ चरित्रक सम्बन्ध स्पष्ट कएल गेल अछि। ई निबन्ध आरम्भिक ‘सत्य’क संग विचारक पूर्ण वृत्त बनबैत अछि।

आलोचनात्मक रूपेँ दृढ़ता आ जड़ता बीच अन्तर रखब जरूरी अछि। कोनो निर्णय नब प्रमाण, दूषण वा दोसरा व्यक्ति पर हानि स्पष्ट भेला पर संशोधित होयबाक चाही। से बात १९३२ क उपलब्ध अंग्रेजी पाठमे सेहो स्वीकारल गेल अछि जे पछि गलत सिद्ध भेल व्रत छोड़बाक आवश्यकता आबि सकैत अछि; तथापि मैथिली निबन्धक जोर निश्चित संकल्प पर अछि। कठोर व्रतकेँ मानवीय विवेक, चिकित्सा-अपवाद आ न्यायपूर्ण परिणाम सँ निरन्तर जाँचैत रहब एहि विचारक समकालीन, विवेकपूर्ण पाठ होयत।

४. परिशिष्टक स्वतंत्र मूल्याङ्कन: एगारह आश्रम-व्रत

मुद्रित पृ. ६३–६६ पर ‘परिशिष्ट’ शीर्षक अन्तर्गत आश्रम-नियमावलीक एगारह व्रतक संक्षिप्त व्याख्या देल अछि। मुख्य भागक १५ निबन्ध आ परिशिष्टक ११ व्रतकेँ एकहि गिनती नहि मानबाक चाही। मुख्य निबन्धमे ‘स्वदेशी’क प्रवेशिका, ‘स्वदेशी व्रत’ आ सर्वधर्म-समभावक दू लेख अलग गिनल गेल अछि, तथा नम्रता आ व्रतक आवश्यकता पर स्वतंत्र विमर्श अछि। परिशिष्ट प्रस्तावित जीवन-विधानक संक्षिप्त, व्यवहारी प्रतिरूप अछि; मुख्य लेख व्रतसभक विस्तृत नैतिक औचित्य प्रस्तुत करैत अछि।

परिशिष्टक क्रम: (१) सत्य, (२) अहिंसा, (३) ब्रह्मचर्य, (४) अस्वाद, (५) अस्तेय/अचौर्य, (६) अपरिग्रह, (७) श्रमव्ययी आजीविका, (८) स्वदेशी, (९) अभय, (१०) अस्पृश्यता-निवारण, (११) सहिष्णुता/सहबाक सामर्थ्य। (मुद्रित पृ. ६३–६६)

परिशिष्टक महत्त्व एहि मे अछि जे दार्शनिक अवधारणा नैतिक व्यवहारक ठोस सूची बनि जाइत अछि। उदाहरणार्थ, अस्तेयक व्याख्या अनावश्यक ग्रहणक प्रतिरोध आ अपरिग्रहक व्याख्या अतिरिक्त वस्तुसंग्रह घटायब सँ जुड़ैत अछि; श्रमव्ययी आजीविका देह सँ काम करबाक जिम्मेदारी बतबैत अछि; स्वदेशी पड़ोसीक सेवा लेल प्राथमिकता दैत अछि; अहिंसा विरोधी व्यक्ति प्रति घृणाहीन प्रतिरोधक आग्रह करैत अछि। एहि नियमसभक व्यवहारगत स्वरूप आश्रमक सामूहिक अनुशासन बुझबाक लेल जरूरी अछि।

परिशिष्टक पृ. ६६ मे अस्पृश्यता-निवारणक संग वर्ण-व्यवस्था सम्बन्धी टिप्पणी सेहो अछि। एतय समकालीन पाठककेँ मूल ऐतिहासिक पाठकेँ ज्यों-का-त्यों समझबाक संग-संग आलोचनात्मक दूरी राखबाक चाही। अस्पृश्यता उन्मूलनक नैतिक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि; मुदा सामाजिक बराबरीक आधुनिक परिभाषा जाति-आधारित व्यवसायिक बन्धन, पदानुक्रम आ बहिष्करणक सभ रूपक अन्त चाहैत अछि। ई द्वन्द्व समीक्षा मे छिपाओल नहि गेल अछि।

५. अनुवादक भाषा-संवेदना आ मैथिली गद्यक बनावट

मैथिली रूपान्तरक सभसँ स्पष्ट पहचान ओकर पाठक-सम्बोधनक बोलचाल-निकट गद्य अछि। ‘हमरालोकनि’, ‘आओर’, ‘थिक’, ‘करैत छी’, ‘होइत अछि’, ‘कहबाक चाही’ सन रूपसँ तर्क व्यक्त कएल गेल अछि। एहि भाषा सँ पाठ पाठकक समीप अबैत अछि; साहित्यिक संस्कृतनिष्ठ दुरूहता आ पूर्णतः बोलचालीक असंगति—दुनू सँ बचबाक प्रयत्न देखाइत अछि। वाक्यरचना प्रायः प्रश्न, उदाहरण, शंका आ उत्तरक सहारे आगाँ बढ़ैत अछि। सत्य, अहिंसा आ व्रतक आवश्यकता सन प्रसंगमे ई संवादात्मकता पाठककेँ विचारक भीतर सहभागी बनबैत अछि।

अनुवादक दार्शनिक शब्दकेँ सहज मैथिली वाक्यमे प्रयोग करैत छथि: सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता-निवारण, सर्वधर्म-समभाव, नम्रता, स्वदेशी। एहिमे बहुतो शब्द संस्कृत मूलक अछि, मुदा ओकर तात्पर्य भोजन, वस्तु, पड़ोसी, चोर, श्रम, भय आ धर्मक ठोस उदाहरण सँ खोलल गेल अछि। विशेष रूपसँ ‘श्रमव्ययी आजीविका’क संग ‘ब्रेड लेबर’क व्याख्या पाठक लेल वैचारिक सेतु प्रदान करैत अछि। एहि अर्थमे अनुवाद मात्र शब्द-प्रतिस्थापन नहि, मैथिली पाठक लेल वैचारिक अनुक्रमक पुनर्प्रस्तुति अछि।

किछु शीर्षक-संकेत शोधक दृष्टिसँ जरूरी अछि। ‘सर्वधर्म-समभाव’क शब्दार्थ ‘tolerance’ अथवा धार्मिक समान सम्मानक संग एक-जकाँ नहि अछि; एक ठाम सहब, दोसर ठाम समभाव, तेसर ठाम धार्मिक अधिकारक प्रश्न आबैत अछि। ठीक ओहिना ‘ब्रह्मचर्य’ केँ मात्र यौन-संयम धरि सीमित कएलासँ मन-इन्द्रिय नियन्त्रणक व्यापक अर्थ छूटैत अछि। तुलना करैत समय केवल शब्दकोशीय समानता नहि, प्रसंगक नैतिक अर्थ देखब जरूरी अछि।

मुद्रित प्रति मे मूल मैथिली वर्तनीक रूपसभकेँ आधुनिक मानकीकरणक नाम पर स्वतः त्रुटि नहि मानल गेल अछि। समीक्षा भाषाक रूपगत विश्लेषण करैत अछि, मूल पाठक ‘सुधारल’ संस्करण नहि बनबैत अछि। मे किछु स्थल पर हलुक धब्बा आ अक्षरक धुँधलापन अछि; ताहि कारणेँ लम्बा, अक्षरशः उद्धरण देबासँ बचल गेल अछि। एहि पद्धति सँ अप्रमाणित पाठोद्धार अथवा गलत उद्धरणक जोखिम घटैत अछि।

६. मूल–अनुवाद सम्बन्ध: प्रमाण आ सीमा

अंग्रेजी संस्करणक प्रस्तावनामे १९३० मे येरवडा कारागार सँ आश्रमक सदस्यकेँ पत्र लिखबाक उल्लेख अछि। ई तथ्य मैथिली पुस्तकक ‘मंगल-प्रभात’ शीर्षकक ऐतिहासिक सन्दर्भ बुझबामे सहयोगी अछि। (सेवाग्राम आश्रम: ‘From Yeravda Mandir’, शीर्ष/प्रस्तावना पृष्ठ)

दुनू प्रकाशित सूचीमे विषयक व्यापक समानता अछि: Truth/सत्य, Ahimsa/अहिंसा, Brahmacharya/ब्रह्मचर्य, Control of the Palate/अस्वाद, Non-stealing/अस्तेय, Non-

possession/अपरिग्रह, Fearlessness/अभय, Removal of Untouchability/अस्पृश्यता-निवारण, Bread Labour/श्रमव्ययी आजीविका, Equality of Religions/सर्वधर्म-समभाव, Humility/नम्रता, Importance of Vows/व्रतक आवश्यकता, Swadeshi/स्वदेशी। किछु शीर्षकक स्थान आ पृथक प्रस्तुति दुनू मे एकरूप नहि अछि। अंग्रेजी सूचीमे ‘Yajna or Sacrifice’ आ ‘More About Yajna’ नामक अध्याय सेहो अछि, जकर समनाम शीर्षक मैथिली मुख्य विषय-सूचीमे नहि अछि। ई पाठ-रचना बीचक प्रमाणित अन्तर अछि, मुदा मध्यवर्ती हिन्दी संस्करण देखल बिनु ‘अनुवादकलेँ अध्याय हटौलनि’ कहब प्रमाणहीन होयत।

ई तुलनात्मक भेद आगेक अनुसन्धान लेल संकेत करैत अछि: गुजराती मूलक विशेष संस्करण, अमृतलाल ठाकोरदास मणावतीक हिन्दी रूपान्तर आ २०१३ क मैथिली अनुवादकेँ एक पंक्ति मे राखि रचना-संख्या, शीर्षक-क्रम, शब्दार्थ आ उदाहरणक आधार पर मिलान कएल जाय। एहि समीक्षामे ओहि अप्राप्त मध्यवर्ती पाठक स्थान पर अनुमान नहि भरल गेल अछि। एहि सँ उपलब्ध प्रमाणक सीमा स्पष्ट रहैत अछि।

७. दार्शनिक आ सामाजिक मूल्याङ्कन

एहि ग्रन्थक समग्र दार्शनिक गठन तीन स्तर पर विकसित होइत अछि। पहिल स्तर आत्म-साधना अछि: सत्य, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, नम्रता। दोसर स्तर सामाजिक संसाधनक नैतिकता अछि: अस्तेय, अपरिग्रह, श्रमव्ययी आजीविका, स्वदेशी। तेसर स्तर भय आ भेदभाव सँ मुक्त सहजीवन अछि: अहिंसा, अभय, अस्पृश्यता-निवारण, सर्वधर्म-समभाव। ई वर्गीकरण समीक्षकक विश्लेषणात्मक सुविधा अछि, गाँधीजी द्वारा ग्रन्थमे दत्त अध्याय-विभाजन नहि। विश्लेषणक लाभ ई जे व्रतसभ स्वतंत्र नैतिक उपदेश नहि, परस्पर-आश्रित साधनाक जाल बनि जाइत अछि।

पुस्तकक मूल शक्ति उपदेशकेँ जीवन-व्यवहारमे परखबाक आग्रह अछि। सत्य केवल भाषणक विषय नहि, अहिंसा केवल युद्ध-विरोध नहि, ब्रह्मचर्य केवल औपचारिक शपथ नहि, अपरिग्रह केवल धनक त्याग नहि, आ स्वदेशी केवल राजनैतिक नारा नहि। एक-एक अवधारणा

मनुष्यक रोजमर्राक विकल्प, भोजन, वस्तु-प्राप्ति, श्रम-वितरण, समुदाय आ धर्म-सम्बन्धक निर्णयमे उतरैत अछि। एहि ठाम गाँधी-दर्शन अमूर्त सिद्धान्त सँ प्रयोगपरक नैतिक अभ्यास बनि जाइत अछि।

पुस्तकक सीमा सामाजिक संरचनाक प्रत्यक्ष विश्लेषणक अपेक्षाकृत सीमितता अछि। व्यक्ति अपन लोभ, भय आ घृणा पर नियन्त्रण करय, ई जरूरी अछि; मुदा जाति, श्रम-बाजार, भूमिहीनता, लिंग-असमानता अथवा राज्यसत्ताक हिंसक संरचना केवल व्यक्तिगत सदाचार सँ समाप्त नहि होइत अछि। उदाहरणार्थ, अस्पृश्यता-विरोधक विचार सामाजिक चेतना जगबैत अछि, मुदा वास्तविक समानता लेल संसाधन, शिक्षा, प्रतिनिधित्व आ संस्थागत अधिकारक प्रश्न सेहो चाही। एहि अर्थमे ग्रन्थ नैतिक प्रेरणा देत अछि; आधुनिक नीतिशास्त्र आ सामाजिक न्यायशास्त्र ओकर आलोचनात्मक पूरक अछि।

दोसरा दिस, प्रत्येक व्रतक कठोर स्वरूपक विवेचनमे विवेकक स्थान बनल रहनाइ चाही। स्वास्थ्यक अवस्था अनुसार भोजन, पारिवारिक सम्बन्धमे परस्पर सहमति, अपांगता अनुसार श्रम, धार्मिक मतभेदक स्वतन्त्रता आ जान-मालक सुरक्षा—ई सभ मानवीय परिस्थिति गाँधीजीक व्रत-नैतिकताक समकालीन प्रयोगमे अनिवार्य मानदण्ड अछि। एतय ग्रन्थक असहमति छिपाएब आवश्यक नहि, कारण गहन समीक्षा आदर आ आलोचनाकेँ एक संग सम्भव बनबैत अछि।

८. मैथिली साहित्यक सन्दर्भमे पुस्तकक योगदान

मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक अध्ययन प्रायः कविता, कथा, नाटक वा लोकसंस्कृति धरि सीमित नहि रहबाक चाही। गाँधीजीक आचार-विचारक ई रूपान्तर दार्शनिक गद्य, समाज-सुधार, धर्म-चिन्तन आ सार्वजनिक नैतिकताक शब्दावलीक विस्तारमे योगदान देत अछि। एतय परिग्रह, अस्तेय, समभाव आ स्वदेशी सन अवधारणासभ मैथिली पाठकक अपन परिचित वाक्य-विन्यासमे विमर्शित अछि। एहि सँ भाषाक वैचारिक क्षमता केवल सिद्धान्ततः नहि, प्रत्यक्ष मुद्रित पाठ द्वारा प्रमाणित होइत अछि।

अनुवादकक ‘अनुवादक दिससँ’ आ पुस्तकक अनुमति-संबन्धी सामग्री एकटा सांस्कृतिक तथ्य सेहो देखबैत अछि: भारतीय विचारक रचना मैथिलीमे पहुँचेबाक लेल भाषायी श्रम, प्रकाशकीय सहयोग आ संस्थागत स्वीकृतिक आवश्यकता पड़ैत अछि। २०१३ क ई संस्करण ताहि श्रमक एकटा दस्तावेज अछि। भाषा-रूपान्तर वैचारिक लोकतन्त्रीकरणक साधन बनि सकैत अछि, कारण पाठककेँ विचार बुझबाक लेल सदिखन हिन्दी-अंग्रेजीक मध्यस्थता पर निर्भर नहि रहय पड़ैत अछि।

एहि योगदानक समीक्षा करैत सावधान रहबाक चाही जे पुस्तक मैथिलीमे गाँधीवादक समस्त विमर्शक प्रतिनिधि नहि, बल्कि आश्रम-व्रत सम्बन्धी एक विशेष पाठ अछि। मैथिलीमे गाँधी-साहित्यक इतिहासक पूर्ण दावा लेल अन्य पत्रिका, पुस्तक, अनुवाद, तिथि आ प्रकाशन-स्वरूपक स्वतंत्र अध्ययन आवश्यक होयत। एहि समीक्षाक प्रमाण केवल एहि ग्रन्थक योग्यता आ ज्ञात मूल-परम्परा धरि सीमित अछि।

९. समेकित निष्कर्ष

‘मंगल-प्रभात’ पढ़लापर मुख्य बोध ई होइत अछि जे नैतिकता किताबक अध्यायकेँ अलग-अलग याद कऽ लेलासँ पूर्ण नहि होइत अछि। सत्यक आग्रह बिना अहिंसाक दिशा अस्पष्ट भऽ सकैत अछि; अहिंसा बिना सत्यक साधन क्रूर भऽ सकैत अछि; अस्तेय बिना अपरिग्रह अपूर्ण रहैत अछि; श्रमक गरिमा बिना स्वदेशी केवल उपभोगक नारा बनि सकैत अछि; अस्पृश्यता-निवारण आ सर्वधर्म-समभाव बिना आत्मशुद्धि सामाजिक न्याय सँ कटल रहि सकैत अछि। ई परस्परता ग्रन्थक वैचारिक केन्द्र अछि।

डॉ. योगानन्द झाक मैथिली रूपान्तरक महत्व एहि तथ्य मे अछि जे आश्रमवासी लेल लिखल नैतिक विचार मैथिली गद्यक माध्यम सँ नव पाठकसमूह धरि पहुँचैत अछि। पुस्तकक १५ मुख्य लेख आ ११-व्रतवाला परिशिष्ट, ओकर प्रस्तावना आ अधिकारपत्र सभ मिलि एकटा पठनीय वैचारिक आ प्रकाशकीय दस्तावेज बनबैत अछि। एकर असली उपयोग

अनालोचनात्मक अनुकरण नहि, आत्मानुशासन, समता, श्रम-सम्मान आ अहिंसक सार्वजनिक व्यवहार पर विचारक मजबूत आरम्भक रूपमे अछि।

अन्तिम मूल्याङ्कनमे पुस्तक प्रेरक सेहो अछि आ प्रश्नोत्पादक सेहो। संयमक आदर्श केहन हो जे देह-स्वायत्तताकेँ न कुचलय? धार्मिक समभाव कोना अधिकार-समानता सँ जुड़य? श्रमक गरिमा कोना वास्तविक श्रमिक-न्याय बनय? अस्पृश्यता-विरोध जातिगत पदानुक्रमक पूर्ण अन्त धरि कोना पहुँचय? स्वदेशी कोना पड़ोसीक सेवा करैत विश्व-मानवक हित सँ नहि कटय? एहि प्रश्नसभक जन्म स्वयं पुस्तकक विचार सँ होइत अछि। ताहि कारणेँ ई अनुवाद मैथिलीमे गाँधी-दर्शनक केवल परिचय नहि, आलोचनात्मक संवादक जीवित आधार बनि सकैत अछि।

अध्याय 12 / २०१४

भोरे-भोर

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

समीक्षाक मूल प्रतिपादन

‘भोरे-भोर’ केवल भोरे उठबाक उपयोगिताक कविता नहि थिक; ई नेनाक दैनिक अनुभवकेँ प्रकृति-दर्शन, पारिवारिक सम्बन्ध, अनुशासन, ज्ञानार्जन, स्वास्थ्य, देशप्रेम आ परोपकारक विचारसँ जोड़बाक प्रयत्न थिक। पोथीमे पहिल रचना ‘भोरे-भोर’ (मुद्रित पृ. ४–११) आ दोसर रचना ‘प्रार्थना’ (पृ. १२–१६) अछि। पहिल रचनाक ८ खण्डमे भोरेसँ दिनचर्याक क्रम आगाँ बढ़ैत अछि; दोसर रचनाक ५ खण्डमे बालक अपन चरित्र आ सामाजिक आचरण लेल वरदान मँगैत अछि। प्रत्येक मुद्रित पृष्ठपर आठ पाँतिक विन्यास आ तकर संग चित्र, अर्थ ग्रहणक पृथक कड़ी बनबैत अछि।

साहित्यिक दृष्टिएँ एहि पुस्तकक विशेषता ओकर दृश्यात्मक बालोपयोगिता आ व्यावहारिक आचारबोधक एकसूत्रता थिक। मुदा एहि एकसूत्रताक सीमासभ सेहो देखाइत अछि: नेनाक अपन प्रश्न, असहमति, खेलक स्वच्छन्दता आ वैकल्पिक जीवन-अनुभव लेल स्थान कम अछि। एतय बालक प्रायः सीखयवला पात्र अछि; अपन स्वतन्त्र संसार रचयवला पात्र कम। ई आलोचना पाठक आधार पर अछि, लेखक वा अनुवादकक इरादाक अप्रमाणित अनुमान पर नहि।

अनुवादकेँ जाँचैत ई समीक्षा उपलब्ध मैथिली पाठक शब्दचयन, स्वर, पदक्रम, पुनरावृत्ति आ बाल-सम्बोधन पर केन्द्रित अछि। हिन्दी मूलक पूरा प्रमाणित पाठ एतय उपलब्ध नहि भेल, तेँ मूल–अनुवादक प्रत्येक पाँतिक शाब्दिक समानता वा अन्तरक दाबी नहि कएल गेल अछि।

हिन्दी मूल ‘सुबह सवेरे’ सम्बन्धी समकालीन प्रकाशित समीक्षाक मदति सँ केवल रचनात्मक संरचना आ विषयगत साम्यक सीमित पुष्टिकरण कएल गेल अछि।

१.१ पोथीक पहिचान

भीतरी शीर्षकपृष्ठपर ‘भोरे-भोर’ नामक नीचाँ ‘अनुवाद: योगानन्द झा’ आ ‘मूल हिन्दी: डॉ. ए. कीर्तिवर्द्धन’ छपल अछि। प्रकाशकक नाम विद्यालक्ष्मी प्रकाशन, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) अछि। विवरण-पृष्ठपर ‘संस्करण: प्रथम, २०१४ ई.’, मुद्रकक नाम इण्डियन प्रिण्टिंग प्रेस तथा मूल्य २०.०० अंकित अछि। आरम्भिक ‘दू शब्द’मे स्वयं अनुवादक हिन्दी बालकविता-संग्रह ‘सुबह सवेरे’क मैथिली रूपान्तरक चर्चा करैत छथि। एहि प्रमाणसभसँ कृतिक रूपान्तरित स्वरूप सुनिश्चित होइत अछि।

बाहरी साक्ष्यमे ‘विदेह’क पोथी-सूची एहि अनुवादकेँ २०१४ क कृति रूपमे दर्ज करैत अछि; ‘मैथिल मंच’क पुस्तकालय-सूची सेहो मूल लेखक, अनुवादक, प्रकाशक आ वर्ष बतबैत अछि। एहि दूटा सूचीक उपयोग मुख्यतः ग्रन्थक पहचान पुष्ट करबाक लेल कएल गेल अछि, पाठ-समीक्षाक स्थानापन्न बनयबाक लेल नहि। [सन्दर्भ २–३]

समीक्षाक प्रमुख आधार कविताक पाँति, पृष्ठानुसार विषय-क्रम, काव्यात्मक आवृत्ति, चित्रक प्रत्यक्ष दृश्य, भाषिक बनावट तथा दूनू भूमिका-पाठ छथि। प्रत्येक व्याख्याक संग सम्बन्धित मुद्रित पृष्ठक उल्लेख देल गेल अछि। ‘मूल लेखकक दृष्टिकोण’ आ ‘अनुवादकक दृष्टिकोण’केँ अलग राखल गेल अछि; आलोचकीय निष्कर्ष तेसर स्तरपर स्पष्ट कएल गेल अछि। मूल हिन्दी पाठक यथार्थ शब्दावली, कविताक अलग संस्करण, वा पाठक-प्रतिक्रियाक प्रत्यक्ष आँकड़ा उपलब्ध नहि रहबाक कारणेँ तिनकर बारेमे निर्विवाद दावा नहि अछि।

२. ‘दू शब्द’ आ ‘नेनालोकनि!’: दू प्रकारक पाठकीय सम्बोधन

२.१ अनुवादकक वैचारिक भूमिका

‘दू शब्द’ केवल औपचारिक प्रस्तावना नहि अछि। अनुवादक लोक-साहित्य, बाल-साहित्य, मातृभाषा, भाषिक प्रभुत्व आ अनुवादक सामाजिक आवश्यकताकेँ एक दोसरसँ जोड़ैत छथि। हुनक तर्कमे बाललोक-साहित्यकेँ भाषाक अभिव्यक्ति आ संस्कृतिक जीवन्त परम्पराक रूपमे बुझल गेल अछि। भाषिक दबावक कारणेँ मातृभाषामे अध्ययन-पाठन दुर्बल होयबाक चिन्ता कएल गेल अछि; विशेषतः मैथिली बाल-साहित्यक रचना-पाठनमे सक्रियताक आवश्यकता राखल गेल अछि।

एहि प्रस्तावनामे अनुवादक अनुवादकेँ केवल शब्द-बदलाब नहि, वरन् दुइ भाषाक बीच सम्बन्ध बनाबयवला रचनात्मक प्रक्रिया मानैत छथि। ‘Loss of translation’ नामक पदक उल्लेख कऽ मूल अर्थ अथवा अभिव्यक्तिक किछु हिस्सा स्थानान्तरणमे हेरायबाक सम्भावना स्वीकार कएल गेल अछि। ई सावधानी समीक्षाक लेल उपयोगी अछि: लक्ष्य भाषामे गीत सहज लगैत हो, तैयो मूल-पाठसँ तकर पूर्ण समरूपताक दावा स्वतः सिद्ध नहि होइत।

भूमिकामे वैदिक साहित्य, भाषा-इतिहास, सांस्कृतिक सम्पर्क आ अनुवाद-अध्ययनक प्रसंग सेहो अबैत अछि। मुदा एहि व्यापक सिद्धान्तसभक स्वतन्त्र ऐतिहासिक सत्यापन एहि पुस्तकक भीतर सम्भव नहि; एतय ओकरा अनुवादकक प्रस्तुत वैचारिक प्रस्ताव रूपेँ पढ़ल गेल अछि, अनुसन्धानद्वारा प्रमाणित इतिहासक निष्कर्ष रूपेँ नहि। भूमिका आ मूल कविताक बीच भाषाक कठिनाइक अन्तर सेहो उल्लेखनीय अछि: अवधारणात्मक, तत्समबहुल प्रस्तावनाक बाद कवितामे अपेक्षाकृत छोट आ श्रव्य पाँति भेटैत अछि।

२.२ मूल कविक बालसम्बोधन

‘नेनालोकनि!’ शीर्षक सम्बोधनमे दहिना भाग) कवि छोट-छोट कविताक माध्यमेँ बालककेँ प्रसन्न, हँसमुख आ गीत गबयवला बनल रहबाक सन्देश दैत छथि। पक्षीक गान आ मनुष्यक प्रसन्नताक बीच सम्बन्ध जोड़ल गेल अछि। एहि पृष्ठपर मूल रचनाकारक नाम ‘कीर्तिवर्द्धन’

संग सम्बोधन समाप्त होइत अछि; एहि कारणेँ ओकरा अनुवादकक ‘दू शब्द’क शेष अनुच्छेद मानब उचित नहि।

एहि दूटा प्रवेश-पाठक केन्द्र अलग अछि। प्रस्तावनामे अनुवादक भाषा-संस्कृति आ साहित्यिक स्थानान्तरणक प्रश्न उठबैत छथि; मूल रचनाकारक सम्बोधन बच्चाक हँसी, गीत आ स्वास्थ्यपर केन्द्रित अछि। वास्तविक काव्य-पाठमे ई दुनू धारा एकत्र होइत अछि: पढ़बाक–गबयबाक सरलता आ सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यक सघन उपस्थिति।

३. ‘भोरे-भोर’: आठ खण्डक क्रमिक पाठ-विश्लेषण (पृ. ४–११)

३.१ पृष्ठ ४: भोर कैँ दिनचर्याक आरम्भ बनायब

पहिल खण्डक ‘भोरे-सबेरे जागब सीखू’ पाँति सीधा क्रियात्मक सन्देश दैत अछि। एहि संग ‘मातु-पितासँ कऽ प्रणाम’ आ ‘नियत काजमे लागब सीखू’ जेहन पद समाजक व्यवहारिक अनुशासनकेँ बालकक निजी दिनचर्यासँ जोड़ैत अछि। कविता एकाएक अमूर्त आदर्श नहि सुनबैत; निन्नसँ उठब, प्रणाम करब आ काज शुरू करबाक अनुभवसँ बात आरम्भ करैत अछि। चित्रमे बिछाओनपर जागैत नेना, खिड़कीपर भोरक प्रकाश, आ घड़ी अछि। एहिसँ पाठककेँ ‘समय’क अनुभव शब्दक अतिरिक्त दृश्यसँ भेटैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा एतय प्रारम्भेँ प्रकट होइत अछि: ‘सीखू’क लगातार आज्ञार्थकता बालकसँ आज्ञा मानबाक अपेक्षा करैत अछि, मुदा ओकरा अपन नींद, जिज्ञासा वा काजक चुनावक आवाज नहि भेटैत। बालसाहित्यक उपदेशात्मक परम्परामे ई सहज शिल्प भऽ सकैत अछि, मुदा आधुनिक सहभागितापूर्ण पाठनमे शिक्षककेँ एहि पदक संग प्रश्न-विनिमय जोड़ब पड़त।

३.२ पृष्ठ ५: चिड़ै आ बालकक सहअस्तित्व

दोसर खण्डमे चिड़ै/पक्षीक हँसब–बजब, गीत गाएब, घर-आँगनमे घूमब, पानि आ दाना देब तथा ओकर नहाएब देखबाक प्रसन्नता अछि। चित्रमे फूलल डाढ़िपर दू चिड़ै आ रेलिङ पकड़ने नेना

देखाइत अछि। पहिल पृष्ठक ‘करबाक’ उपदेश एतय ‘देखबाक’ आनन्द बनैत अछि। भोजन-पानि देबाक संकेत बच्चाकेँ मानवेतर जीवक प्रति जिम्मेवार बनबैत अछि; ओ केवल प्रकृतिक उपभोक्ता नहि, देखरेख करयवला संगाती सेहो बनि सकैत अछि।

कविताक ई अंश सभसँ अधिक बालकेन्द्रित प्रतीत होइत अछि, कारणेँ चिड़ैक चाल, आवाज आ स्नान दृश्य–श्रव्य कौतूहल पैदा करैत अछि। चित्र आ पाँति दूनू एकहि अनुभवक पूरक छथि। तथापि चिड़ैकेँ सदा प्रसन्न आ गबैत रहयवला प्राणी बनायब कविताक भावात्मक मानवीकरण थिक, पक्षिविज्ञानक तथ्यात्मक विवरण नहि।

३.३ पृष्ठ ६: हबा, घंटी आ सूनबाक अभ्यास

तेसर खण्डमे आकाश दिस ध्यान देब, निर्मल हवाक आनन्द, मन्दिरक घंटी, गीत-भजन आ ज्ञानक बात सुनबाक प्रसंग अछि। चित्रमे मेजपर कानपर हाथ देने बालक, मनमे घंटी आ बाजबाक सुर-चिह्न देखबैत अछि। एहिसँ दृश्यात्मक वर्णन सुनबाक अभ्यास दिस मुड़ैत अछि: नेना केवल प्रकृतिक रूप नहि, ओहि परिवेशक आवाज सेहो ग्रहण करैत अछि।

साहित्यिक जटिलता ई अछि जे ‘शुद्ध हबा’क शारीरिक सन्तोषसँ मन्दिरक स्वर आ ‘ज्ञान’क नैतिक बोध धरि कविता तेज गतिएँ पहुँचैत अछि। एतय विषयक एकसूत्रता ‘भोरक वातावरण’ अछि, मुदा प्रकृति–धर्म–ज्ञानक तीन अलग अनुभव एक खण्डमे भरि गेल अछि। कक्षामे पढ़बैत काल एहि भिन्नताकेँ खोलि कऽ बुझेनाइ अधिक सार्थक होयत।

३.४ पृष्ठ ७: बगीचा एकटा अनुभवशाला

चारिम खण्डमे बाबूजीक संग गाछीमे टहल, गाछ-बिरिछक हरियरपन, कोकिलक कूजन, भमरक गुनगुन, फूल-पात आ तितलीक प्रसंग अछि। काव्यक भोरे उठबाक आदेश एतय बगीचाक दृश्य–ध्वनि–गन्धक संसार दिस पसरैत अछि। चित्रमे पैघ लोक आ बालकक साझा उपस्थिति अछि; बच्चाक नजर फूल आ उडैत कीड़ामकोड़ा दिस अछि। ई खण्ड प्राथमिक बाल-अनुभवक दृष्टिएँ अत्यन्त प्रभावी अछि, कारणेँ कौतूहल खालि सदाचार-सन्देशसँ नहि, प्रत्यक्ष प्राकृतिक दृश्यसँ उठैत अछि।

बाबूजी संग टहलब एकल पारिवारिक नमूना प्रस्तुत करैत अछि। एहि रूपक अन्तर्गत दादी, माय, बहिन, शिक्षक वा संगियाक संग प्रकृति देखबाक सम्भावना पाठमे नहि उभरैत; ई मौलिक पाठक परिधि थिक, अनुवादक बनाओल अन्तर अछि से साबित नहि।

३.५ पृष्ठ ८: चन्द्रमाक अस्त आ सूर्योदयक प्रतीक्षा

पाँचम खण्डमे चन्दा मामा, नील गगन, पश्चिममे चमकैत चान आ पूब दिस प्रतीक्षित सूरजक स्थिति चित्रित अछि। भोरक ई क्षण बच्चाकेँ एकहि आकाशमे समयक परिवर्तन देखबैत अछि। चित्रमे पर्वत आ बादरक बीच चन्द्रमा आ उगैत सूरजक संकेत अछि। कविता आ चित्र दूनू ‘राति समाप्त भेल, दिन आरम्भ भेल’ एहि संक्रमणकेँ खेलक रूप दैत अछि।

‘चन्दा मामा’ शब्दक आत्मीयता मिथिलाक बालबोलीमे सहज ग्रहणीय छवि बनबैत अछि। रातिसँ दिनक बदलावमे चानक दृश्यता घटैत देखायब वैज्ञानिक शिक्षाक प्रवेश-बिन्दु भऽ सकैत अछि, मुदा कविता खगोलशास्त्रीय सूत्र नहि देइत; ओकर महत्त्व अनुभवात्मक अवलोकनमे अछि।

३.६ पृष्ठ ९: लालिमा आ सूर्यक मानवीकरण

छठम खण्डमे पूर्व दिशाक लालिमा, दिनकरक उदय आ आकाशक सुन्दरता वर्णित अछि। चित्रमे हँसैत सूर्यकेँ मानवीय मुख देल गेल अछि; एहि सँ अपरिचित वा विराट सूर्य नेनाक परिचित साथी जेकाँ भासैत अछि। ‘सूरज’क क्रमशः ऊपर उठब पहिल खण्डक बिछाओन छोड़बाक गतिसँ भिन्न, समूच दिनक प्राकृतिक घड़ी प्रस्तुत करैत अछि।

कविता पाठक दृष्टिकेँ ‘जागब’सँ ‘सूर्योदय देखब’ धरि लऽ अबैत अछि। उपदेशक बीच एहि दृश्यात्मक अवकाशक कारणेँ पुस्तक केवल नियमित दिनचर्याक सूची नहि रहि जाइत अछि। एहि दृश्यात्मक खण्डकेँ चित्र बिनु पढ़लासँ तकर बालक-सुलभ प्रभावक एक भाग छूटि सकैत अछि।

३.७ पृष्ठ १०: सूर्यनमस्कार आ देहक अनुशासन

सातम खण्डमे बच्चा सूर्यकेँ प्रणाम करैत अछि। पाठमे ‘कऽ प्रणाम, दऽ ध्यान मगन मन’ आ ‘रश्मि देह पर’ जकाँ प्रयोगसँ शारीरिक, मानसिक आ आध्यात्मिक अभ्यास एकठाम मेल करैत अछि। चित्रमे हाथ जोड़ने बालक आ पर्वतक बीच उगैत सूर्य अछि। एहिमे भोरक प्रकृति अब सामाजिक–अनुष्ठानिक व्यवहारमे रूपान्तरित होइत अछि।

कविता सूर्यक प्रकाशकेँ बल–बुद्धिक विकाससँ जोड़ैत अछि। ई कथनकेँ स्वास्थ्यक मापल-तोलल परिणाम वा चिकित्सकीय दाबीक रूपमे नहि, कविताक आशावादी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति रूपेँ देखबाक चाही। कवि प्रकाशक अनुभवकेँ उत्साह, सचेतना आ अनुशासनसँ सम्बद्ध करैत छथि; चिकित्सा अथवा विज्ञानक प्रमाण अलग विषय थिक।

३.८ पृष्ठ ११: प्रथम पाठक पुनरागमन

आठम खण्डमे नियमित भोरे उठब, विशुद्ध हवा, चिड़ैक गीत, रोगसँ रक्षा, माता-पिताकेँ प्रणाम, तन–मोनक निर्मलता आ दैनिक काजक सफलता पुनः अबैत अछि। चित्रमे बच्चा माता-पिताकेँ प्रणाम करैत अछि। ई अन्तिम खण्ड पहिल पृष्ठक सन्देशकेँ वृत्ताकार ढंगसँ फेर सोझाँ अनैत अछि: आरम्भेँ प्रणाम आ काज, अन्तमे सेहो प्रणाम आ काज। एहि पुनरागमनसँ कविता स्मरणीय बनैत अछि, मुदा नव दृश्य प्रस्तुत करबाक अपेक्षा पुरान सन्देशक पुष्टि बढ़ि जाइत अछि।

‘रोग कोनो नहि सकत दबा’ जकाँ कथनकेँ पाठ्य-आलोचनामे अलंकारिक आश्वासन मानल उचित, अक्षरशः सार्वभौम स्वास्थ्य-गारंटी नहि। एहि अन्तरकेँ स्पष्ट करब बालसाहित्यक जिम्मेवार अध्यापनक भाग थिक।

४. ‘प्रार्थना’: पाँच खण्डक विस्तृत अध्ययन (पृ. १२–१६)

४.१ पृष्ठ १२: विनती, विद्या आ दया

दोसर कविताक शीर्षक ‘प्रार्थना’ मुद्रित पृ. १२ पर अछि। आरम्भ ‘विनती हमर सुनू भगवान’सँ होइत अछि; बालक विद्या, समझ, मानवीय प्रेम, दया आ उपकारक प्रवृत्ति चाहैत अछि। चित्रमे हाथ जोड़ने बालकक सम्मुख वीणा धारण कएने देवीक प्रतिमा अछि। ई दृश्य कविता अपन नैतिक मूल्यसभकेँ केवल आदेशक सूची नहि, कृपाक कामना रूपेँ प्रस्तुत करय लागैत अछि।

एतय पहिल कविताक ‘सीखू’ शब्दक बाहरी आग्रह बदलि कऽ ‘दीअ’ प्रकारक विनती बनैत अछि। दूनू रूपमे लक्ष्य आदर्श आचरण अछि, मुदा वाचक-दृष्टि बदलि गेल अछि: पहिल काव्यांशमे एकटा वयस्क स्वर बच्चाकेँ निर्देश दैत अछि, प्रार्थनामे बच्चा स्वयं सामर्थ्य आ ज्ञानक प्रार्थी बनैत अछि।

४.२ पृष्ठ १३: गुरु, शिक्षा आ पारिवारिक सेवा

दोसर खण्डमे मातु-पिताक भक्ति, एकलव्यक गुरु-अनुराग, शिक्षा-दीप, कृपा, चतराइ, प्रेम आ दयाक प्रसंग अछि। चित्रमे दीप वा आरती-जेकाँ दृश्य सहित नेनाक श्रद्धा प्रदर्शित अछि। एहि खण्डमे ‘श्रद्धा’ आ ‘शिक्षा’ एकहि नैतिक पदक्रममे ठाढ़ अछि; ‘एकलव्य’क सांस्कृतिक उल्लेख बालपाठकसँ पूर्वपरिचयक अपेक्षा करैत अछि।

एकलव्य प्रसंग जटिल साहित्यिक–सामाजिक पृष्ठभूमि रखने अछि। मात्र ‘गुरु-अनुराग’क आदर्श रूपेँ पढ़लासँ ओकर प्रश्नाकुल पक्ष—अधिकार, अवसर आ गुरु-शिष्यक शक्ति-सम्बन्ध—अनछुए रहि सकैत अछि। बालकक उमेरअनुसार कथा सुनेनाइ, प्रश्न पूछेनाइ आ एकाधिक दृष्टि सोझाँ आनब एहि पदक अधिक विवेकी शिक्षण होयत।

४.३ पृष्ठ १४: राष्ट्र, दुर्गा आ ज्ञानरूपक

तेसर खण्डमे मातु-पिताक आदर, राष्ट्रभक्ति, शान्तिक बल, मातृभूमिक सुपुत्र बनब, दुर्गाक शक्ति, सहाराक टकरा आ कृष्णक ज्ञानरूपकक उल्लेख अछि। चित्रमे हाथमे भारतक ध्वजा

आ पोथी लेने हँसमुख बालक अछि। एहि दृश्यसँ ‘देश’ आ ‘पढ़ाइ’ अलग-अलग विषय नहि रहि, एकहि नेनाक दुन्नू जिम्मेवारी बनैत अछि।

ई खण्ड मूल्यक बहुलता देखबैत अछि: श्रद्धा, शान्ति, शक्ति आ ज्ञान। तथापि शिशु वा आरम्भिक कक्षाक पाठक लेल अल्प पाँतिमे एतेक साङ्केतिक नामक आगमन अर्थकेँ घना बना दैत अछि। शान्ति आ शक्तिक आपसी सम्बन्ध समझेनाइ पाठकीय व्याख्याक आवश्यक काज बनैत अछि।

४.४ पृष्ठ १५: जीवदया आ ऐतिहासिक आदर्श

चारिम खण्डमे ‘महावीर सन बनी अहिंसक’ आ ‘जड़-चेतनसँ प्रेम करी’ जकाँ पाँति स्पष्ट अहिंसा आ सहानुभूतिपर जोर दैत अछि। अगिला पाँतिमे बुद्धक शान्तिपथ, राणा आ शिवाजीक आदर्श तथा शत्रुभयसँ मुक्ति सम्बन्धी कामना अछि। चित्रमे बालकक हाथ अथवा छाती निकट एकटा चिड़ै-जेकाँ जीव देखाइत अछि; ई जीवनक प्रति कोमल भावकेँ दृश्यरूप दैत अछि।

एहि खण्डक भीतर असाधारण वैचारिक समीपता अछि: एक दिस अहिंसा, जीव-प्रेम; दोसर दिस पराक्रम आ निर्भीकता। एकरा परस्पर विरोध मानि तुरन्त खारिज नहि कएल जा सकैत, कारणेँ अहिंसा आ साहस सह-अस्तित्वमे रहि सकैत अछि; मुदा बिना प्रसङ्गक सूचीकरण बच्चाकेँ ई अन्तर स्वयं नहि बुझा पबैत। एहि कारणेँ ई काव्यांश मूल्यविमर्श लेल अच्छा, आ स्वतः स्पष्ट नीतिवचन रूपेँ अपेक्षाकृत कम सहज अछि।

४.५ पृष्ठ १६: कर्मयोग, सेवा आ निष्काम जीवन

अन्तिम खण्डमे धरती, गगन, पातालपर विजयक ध्वज; मातु-पिता आ गुरुजन-परिजनक स्वप्न पूरा करब; ‘कर्मयोगमे लागल सदिखन’; फलक आकांक्षा छोड़ि काज करब; बुद्धि, बल आ सेवाभावसँ जीवन निर्वाह करबाक इच्छा अछि। चित्रमे पर्वतीय धरातलपर ध्वजा पकड़ने बालक देखाइत अछि। पोथीक अन्तिम दृश्य आरम्भक नींदसँ जागैत नेनाकेँ कर्मशील, राष्ट्राभिमुख आ लक्ष्यनिष्ठ पात्रमे बदलैत अछि।

अन्तिम पाँतिक आचार-सन्देश सामान्य ‘सफलता’सँ आगाँ बढ़ि सेवाभावक महत्व स्थापित करैत अछि। मुदा ‘विजयक ध्वजा’ आ ‘फल नहि चाहब’क संयुक्त अर्थ विचारणीय अछि: पहिल छविमे उपलब्धिक प्रतीक, दोसरमे फलसँ अनासक्ति। एहि द्वन्द्वकेँ रचनाक दुर्बलता कहबाक बदला भिन्न परम्पराक नैतिक शब्दावली एकहि बाल-पाठमे समेटबाक प्रयत्न रूपेँ पहिचानब उचित अछि।

५. विषयानुक्रम: भोरक प्रकाशसँ सामाजिक मनुष्य धरि

५.१ समय आ स्थानक विस्तार

पहिल कविता घरक बिछाओन आ घड़ीसँ शुरू होइत अछि, आँगन–गाछी–आकाश–सूर्योदय घुमि फेर घरक पारिवारिक सम्बन्धपर वापस अबैत अछि। दोसर कविता पूजास्थानसँ शुरू होइत गुरु, राष्ट्र, ऐतिहासिक पुरुष आ अखिल विश्वव्यापी सेवा धरि पसरैत अछि। एहि क्रमकेँ ‘निजी सँ सामाजिक’ विस्तार कहल जा सकैत अछि। ई अर्थ पाठक विषयक्रमसँ निकलैत अछि; लेखकक पूर्वनिर्धारित योजनाक प्रमाण नहि।

५.२ संवेदना आ अनुशासनक तान

दूनू कविता दोसर-दोसर तरहेँ अनुदेश दैत अछि। ‘भोरे-भोर’मे बोलनिहार बच्चाकेँ जगाबैत, देखबैत, सुनबैत आ प्रणाम कराबैत अछि; ‘प्रार्थना’मे बच्चा अपन मनक गुणक आकांक्षा करैत अछि। पूर्वक सक्रिय क्रियासूचक पद आधुनिक बालसाहित्यक व्यवहारिक उपलब्धि अछि, मुदा लगातार उपदेशसँ बालकक कल्पनाक स्वतंत्र क्षेत्र सीमित भऽ सकैत अछि। जतय फूल, तितली आ पक्षी अबैत अछि, ओतय कविता स्वतन्त्र आनन्दक नजदीक पहुँचैत अछि; जतय आदर्श नामक सूची घन होइत अछि, ओतय सूचना आ नीति गीतपर भारी पड़ैत अछि।

५.३ सांस्कृतिक बहुलता बनाम एकल धार्मिक दृश्य

अनुवादकक ‘दू शब्द’ भारतीय बहुभाषिकता आ लोक-साहित्यक विविध रूपक सम्मान करैत अछि। काव्य-पाठमे मन्दिर, सरस्वती-प्रतिमा, दुर्गा, कृष्ण, सूर्यक प्रणाम आदि प्रतीक बारम्बार

भेटैत अछि। एहि धार्मिक–सांस्कृतिक प्रतीकसभक उपस्थिति ग्रन्थक वस्तुस्थितिक वर्णन थिक; एकर आधार पर समस्त पाठकक धार्मिक पहिचानक अनुमान नहि। कक्षामे विभिन्न आस्थावाला बच्चा वा धर्मनिरपेक्ष पाठकक दृष्टिएँ प्रार्थनाक व्यापक मानवीय मूल्य—विद्या, करुणा, अहिंसा, सेवा—अलगसँ स्पष्ट करब उपयोगी होयत।

५.४ बालकक सामाजिक स्थिति

रेखाचित्रसभमे प्रधान पात्र प्रायः एकटा बालक अछि; परिवारमे पिता आ माता देखाइत छथि, आ गुरु तथा राष्ट्रक आदर्शसभक उल्लेख अछि। कन्याक अनुभव, दिव्याङ्ग बालक, भिन्न सामाजिक परिवेशक बच्चा वा सामूहिक खेलक दृश्य प्रमुखता नहि पबैत अछि। ई कमी इतिहासगत रचनाक निन्दा मात्र लेल नहि, समसामयिक बालपुस्तकक प्रतिनिधित्व-सम्बन्धी विमर्श उठेबाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

६. मैथिली भाषा, ध्वनि आ अनुवाद-प्रविधिक समीक्षा

६.१ ‘सुबह सवेरे’ सँ ‘भोरे-भोर’

हिन्दी कृतिक प्रकाशित नाम ‘सुबह सवेरे’ अछि, मैथिलीमे ‘भोरे-भोर’। शीर्षकक ई रूप केवल शब्दार्थक विनिमय नहि; ‘भोर’क दुहराव मैथिली श्रवण-परम्परामे सहज लय आ आत्मीय समय-बोध पैदा करैत अछि। रचनाक भीतर पुनःपुनः ‘भोरे-सबेरे’क आगमन शीर्षकसँ सम्बद्ध होइत अछि। एहि आधारपर लक्ष्यभाषाक ध्वनि आ पाठकीय स्मरण लेल अनुवादकक चयन सार्थक कहल जा सकैत अछि। मूल शीर्षकक सम्पूर्ण अर्थ-छायाक तुलना करबाक लेल मूल हिन्दी पाठक प्रकाशकीय विवरण अपेक्षित अछि।

६.२ क्रियात्मक मैथिली आ बाल-संवाद

‘जागब सीखू’, ‘लागब सीखू’, ‘देखब’, ‘सुनब’, ‘प्रणाम’, ‘करी’, ‘रहय’ जकाँ रूप पाठमे गति पैदा करैत अछि। क्रियाक ई सघनता नेनाकेँ ठाढ़ अनुभव देइत अछि; रचना केवल वस्तुक नाम गनबैत नहि, किछु करबाक अथवा किछु देखबाक आग्रह करैत अछि। बच्चाक लेल पाठक

सुनबाक उपयोगिता एहि क्रियात्मकतासँ बढ़ैत अछि। एकहि समयमे ‘सीखू’क दोहराव आग्रहमूलक स्वरकेँ प्रबल करैत अछि; एहिसँ काव्य आ अनुशासनक समीकरण स्पष्ट होइत अछि।

६.३ सहज बोली आ तत्सम शब्दक सह-अस्तित्व

‘बाबूजी’, ‘मातु-पिता’, ‘चन्दा मामा’, ‘गाछ-बिरिछ’, ‘चिड़ै’, ‘पानि’, ‘काज’, ‘भोरे-सबेरे’ जकाँ पद स्थानीय घर-आँगनक आत्मीयता देइत अछि। एकर संग ‘विशुद्ध’, ‘प्रणाम’, ‘कर्मयोग’, ‘अहिंसक’, ‘दयानिधान’, ‘पर-उपकारक’, ‘मातृभूमि’ जकाँ शब्द संस्कृतनिष्ठ नैतिक शब्दावली अनैत अछि। पहिल कविताक आरम्भिक पाँतिमे बोलीक सहजता अधिक अछि; प्रार्थनाक उत्तरार्द्धमे तत्सम आ आदर्श-पात्रक घनत्व बढ़ैत अछि। ई वितरण अर्थवान अछि: प्रकृति-आनन्दक भाषा दृश्यप्रधान, नैतिक वरदानक भाषा अवधारणाप्रधान बनि जाइत अछि।

६.४ मौखिकता, पुनरावृत्ति आ स्मरण

दूनू रचनाक प्रत्येक मुद्रित पृष्ठपर आठ-आठ पाँतिक समान दृश्य-विन्यास अछि। किन्तु एतेक आधारपर निश्चित शास्त्रीय छन्द अथवा सममात्रिक लयक दावा करब उचित नहि; आवाजमे पढ़बाक क्रम, उच्चारणक दीर्घता आ पाँतिक विरामक व्यवस्थित ध्वन्यात्मक परीक्षण अलग चाही। तथापि छोट पाँति, समानार्थक युग्म, ध्वनिसूचक शब्द आ ‘भोरे’क आवृत्ति स्मरणशक्तिक अनुकूलता देइत अछि। व्याख्यानक अपेक्षा सामूहिक पाठ वा गायनमे एकर उपयोगिता सम्भाव्य अछि, प्रत्यक्ष प्रयोगात्मक परीक्षणक परिणाम नहि।

६.५ स्थानिकीकरणक लाभ आ सीमा

मैथिली रूपमे घरक वस्तु, नेनालोकनिक सम्बोधन आ प्रकृतिक स्थानीय शब्दसँ रचना लक्ष्यभाषाक पाठकक कण्ठमे बसबाक संभावना बनबैत अछि। मुदा अनुवादक सफलता जाँचबाक दू अलग मानदण्ड अछि: (१) मैथिलीमे पाठक प्रवाह आ बालोपयोगिता, (२) हिन्दी मूलक अर्थ, लय आ छविक प्रत्यक्ष समानता। पहिल मानदण्डपर एहि पुस्तकक दृश्यसहित पाठक ठोस समीक्षा सम्भव अछि; दोसरपर पूरा हिन्दी मूल सँग द्विपाठ परीक्षण उपलब्ध नहि।

ताहि लेल एहि समीक्षामे ‘सहज मैथिली’क प्रशंसा कएल गेल अछि, ‘एक-एक पाँतिक निष्ठापूर्ण अनुवाद’क अप्रमाणित प्रमाणपत्र नहि।

६.६ भाषा-संपादनक ठोस प्रश्न

पाठमे पाँति तोड़बाक ढंग, विरामचिह्न, संयुक्त पद आ उच्चारण-सूचक चिह्नक विविधता देखाइत अछि। मुद्रित रूपमे भेटल भिन्नताकेँ स्वतः अशुद्ध कहल उचित नहि, विशेष कऽ जखन बालबोली, क्षेत्रीय प्रयोग वा गेयता जुड़ल हो। ‘भोरे-भोर’क शीर्षक आ गीतमे ‘भोरे-सबेरे’क उपयोग दूटा भिन्न कार्य करैत अछि; तकर यन्त्रवत एकरूपीकरण काव्यलय घटा सकैत अछि। किछु स्थलपर धुँधलका वा छपाइके कारण अक्षर-पहिचान अनिश्चित अछि; से ठाम सुधारक दावा करबाक बदला मूल प्रति सँ मिलान आवश्यक अछि।

७. रेखाचित्र: अर्थक सह-निर्माण

काव्य-पृष्ठ ४–१६ मे लगभग प्रत्येक पृष्ठपर प्रधान दृश्यचित्र अछि। रेखाचित्र केवल शब्दक सजावट नहि, बालपाठककेँ स्थिति पहिचानबाक ‘दृश्य-वाक्य’ प्रदान करैत अछि। पहिल पृष्ठक घड़ी समयक बोध देइत अछि; पक्षीक चित्र सूनबाक आ देखबाक क्रियाकेँ मूर्त करैत अछि; चन्दा आ सूर्यक मानवीय मुख अनजान खगोलीय वस्तुकेँ परिचित रूप दैत अछि; सूर्यक समक्ष हाथ जोड़ने बालक अभ्यासकेँ दृश्य करैत अछि; प्रार्थनाक देवी-प्रतिमा श्रद्धाक सांस्कृतिक धरातल स्पष्ट करैत अछि; ध्वजा आ पोथी देश-सेवा आ अध्ययनक जोड़ी बनबैत अछि।

किछु चित्र कविता सँ अधिक स्पष्ट कथात्मक सूचना देइत अछि। उदाहरण लेल पृ. ७ क चित्रमे बाबूजी आ बच्चाक संग फूल–तितलीक सजग अवलोकन स्पष्ट अछि; पृ. १४ क चित्रमे बालकक हाथमे पुस्तक आ झंडा एक संग अछि, जखन कि पदमे मूल्यसभ विस्तृत अछि। एतय दृश्य नेनाक लेल विचारक प्रवेशद्वार बनैत अछि। मुदा सबै चित्रमे प्रायः एकहि प्रकारक बालक देखायब प्रतिनिधित्वक एक सीमा सेहो अछि।

चित्रकारक नाम एहिक देखल प्रकाशन-विवरणमे स्पष्ट रूपेँ निर्धारित नहि भऽ सकल; अतएव समीक्षामे कोनो चित्रक किसी विशिष्ट कलाकारक नामसँ श्रेय नहि देल गेल अछि। मूल

रेखाचित्रसभकेँ कालक्रम वा कलाशैलीक एकटा विशिष्ट विद्यालयक संग जोड़बाक अनुमान सेहो नहि कएल गेल अछि।

८. अनुवाद-समीक्षा लेल बाहरी साक्ष्यक सीमित उपयोग

२००९ मे प्रकाशित डॉ. कौशलेन्द्र पाण्डेयक हिन्दी समीक्षा ‘सुबह सवेरे’क लगभग सोलह पृष्ठक बालोपयोगी पुस्तिका होयबाक, एकटा लम्बा प्रभाती गीत आ दोसर प्रार्थनाक होयबाक, तथा चित्रक सहायक भूमिकाक उल्लेख करैत अछि। ओहि समीक्षामे पक्षीक चहचहाहट, भोर, आकाश, उद्यान, मातृ-पितृभक्ति, एकलव्य, महावीर, बुद्ध, शिवाजी आ परोपकार जकाँ प्रसंग सेहो अएल अछि। एहि विवरणक विषय-क्रम मैथिली रूपमे प्रत्यक्ष देखल सामग्रीसँ मेल खाइत अछि। एतबे सँ दूनू पाठक प्रमुख विषयक निरन्तरता पुष्ट होइत अछि; शब्दशः समानता, पाँतिसंख्या वा अनुवाद-संशोधनक इतिहास नहि। [सन्दर्भ ४]

साहित्य कुञ्जक लेखक-परिचयमे डॉ. ए. कीर्तिवर्धनक प्रकाशित पोथीसभक बीच ‘सुबह सवेरे’ आ तकर मैथिली अनुवादक उल्लेख अछि। २०१९ क एक प्रकाशित साहित्यिक विवरणमे सेहो ‘सुबह सवेरे’ लेखकक पूर्वकृति रूपमे चिन्हित अछि। ई साक्ष्य रचनाकारक कृति-सूची पुष्ट करबाक लेल उपयोगी अछि; एकर आधारपर कोनो अप्राप्य पाँतिक उद्धरण गढ़ल नहि गेल अछि। [सन्दर्भ ५–६]

बाहरी समीक्षासँ एकटा रुचिकर पाठकीय भिन्नता देखाइत अछि: हिन्दी समीक्षकक झुकाव संस्कार, सुग्राह्यता आ चित्रक प्रशंसापर केन्द्रित अछि। वर्तमान मैथिली अध्ययन उपर्युक्त गुणकेँ स्वीकार करैतहुँ बालकक स्वतन्त्र स्वर, लिंग-प्रतिनिधित्व, सांस्कृतिक विविधता, अत्यधिक आदर्श-सूची आ वैज्ञानिक कथनक सीमाकेँ जाँचैत अछि। एहि तुलना सँ समालोचना रूपेँ प्रश्न बढ़ैत अछि; एतय कोनो दोसर समीक्षकक आशयक विकृतिकरण नहि कएल गेल अछि।

९. आलोचनात्मक मूल्यांकन: उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ पाठकीय उपयोग

९.१ उपलब्धि

प्रथम उपलब्धि काव्यक स्पष्ट उद्देश्य अछि: नेनाकेँ भोरे उठबाक बहाने पर्यवेक्षण, स्वच्छता, पारिवारिक आदर आ सामाजिक दयाक विचार धरि लऽ जाएब। दोसर उपलब्धि दृश्य–श्रव्य संगठन: भोरक प्रकाश, चिड़ैक गीत, घंटीक आवाज, बगीचाक चहल-पहल आ चित्र अपन-अपन माध्यमसँ रचनाकेँ स्मरणीय बनबैत अछि। तेसर उपलब्धि मैथिली लक्ष्यभाषाक सहज उपलब्धता: लोकबोलीक पद आ आवृत्तिमूलक लय आम पाठक लेल प्रत्यक्ष प्रवेशद्वार खोलैत अछि। चारिम उपलब्धि दू पद्यक रचनात्मक सम्बन्ध अछि—दिनचर्याक अभ्याससँ सेवा-मूल्यक आकांक्षा धरि।

९.२ सीमासभ

पहिल सीमा आदेशप्रधान वाणी अछि। बहुत पाँति बच्चाकेँ की करयबाक चाही तकर कथन करैत अछि, ओकर अनुभवक अनपेक्षित खोज लेल कम ठाम छोड़ैत अछि। दोसर सीमा आदर्श नामक घनता अछि; एकलव्य, दुर्गा, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, राणा, शिवाजी आदि क नाम अल्प पाँतिमे अएलासँ छोट पाठक लेल अर्थ खंड-खंड भऽ सकैत अछि। तेसर सीमा चयनित आदर्शक सांस्कृतिक दायरा अछि: मूल्य मानवतावादी होइतहुँ चित्रात्मक आ धार्मिक सन्दर्भ अपेक्षाकृत एक परम्परामे केन्द्रित अछि। चारिम सीमा किछु कल्याणकारी आश्वासनक अतिशयोक्ति अछि, जाहिकेँ तथ्यात्मक स्वास्थ्य-सिद्धान्त नहि बुझबाक चाही।

९.३ बाल-कक्षामे आलोचनात्मक पाठनक ठोस सम्भावना

पृ. ४–११ क चित्रक संग क्रमसँ ‘हम भोरमे की देखैत छी?’ प्रश्न पूछल जा सकैत अछि; पृ. ५ क चिड़ै-विषयक अंशसँ जीवक प्रति दया आ देखरेख; पृ. ८–९ सँ चान-सूरजक दृश्यात्मक भिन्नता; पृ. १०–११ सँ देह, अनुशासन आ स्वास्थ्यक विषयमे तथ्य–कविता भिन्न करबाक अभ्यास होयत। ‘प्रार्थना’मे पृ. १२ क परोपकारक भाव आ पृ. १५ क अहिंसा-बहादुरीक संयुक्त

उल्लेख सँ बालककेँ ‘साहस भने हिंसा?’ जकाँ प्रश्न पर बातचीतक अवसर भेटि सकैत अछि। ई सभ पाठ-सूत्र समीक्षा द्वारा प्रस्तावित शैक्षिक प्रयोग छथि, पोथीमे छपल गतिविधि नहि।

विशेषतः स्तुति वा समर्पणात्मक पदक पाठनमे विद्यालयक विविध आस्था आ पारिवारिक पृष्ठभूमिक सम्मान आवश्यक अछि। धार्मिक प्रतीकसभकेँ सांस्कृतिक पाठक एक हिस्सा बना कऽ पढ़ल जा सकैत अछि, जखन कि विद्या, समान सम्मान, दया आ सेवा जेहन व्यापक गुणपर सहमति विकसित कएल जा सकैत अछि। एहिसँ मूल कविताक ऐतिहासिक स्वर दबल नहि, आधुनिक पाठकक अनुभव विस्तृत होइत अछि।

एहि अध्ययनक निष्कर्ष तीन स्तर पर विभक्त अछि। प्रत्यक्ष पाठसँ पुष्ट तथ्य: २०१४ क प्रकाशित मैथिली अनुवाद, दू कविता, मुद्रित पृ. ४–१६ क काव्य-विन्यास, १३ पृष्ठक आठ-आठ पाँति, आरम्भिक भाषिक भूमिका, चित्रसभ आ पाँति-विश्लेषण। बाहरी स्रोतसँ पुष्ट तथ्य: हिन्दी मूल ‘सुबह सवेरे’क पुस्तक-पहिचान आ २००९ क समीक्षामे दू पद्यक विषयक समानता। विश्लेषणात्मक निष्कर्ष: आदेश–आनन्दक तनाव, दृश्य–काव्यक सहकार्य, नैतिक नामावलीक घनत्व, बहुलताक प्रश्न आ स्थानीय मैथिली पदक प्रभाव।

काव्यानुवादक सम्पूर्ण भाषिक निष्ठाक अगिला परीक्षण लेल हिन्दी मूल ‘सुबह सवेरे’क प्रमाणित प्रथम संस्करणक मुद्रित पाँतिसँ मैथिली पाँतिक एक-एक जोड़ मिलाब आवश्यक होयत। ताहि तुलना मे शब्दार्थ, लय, पदानुक्रम, छवि, सांस्कृतिक बिम्ब, आदर्श-नाम, चित्रक समरूपता आ नामान्तरक परीक्षण समाविष्ट रहत। हिन्दी मूलक पाठ बिनु कोनो मैथिली पाँतिक ‘हिन्दीमेसँ हटि गेल’ अथवा ‘मूलसँ श्रेष्ठ’ होयबाक घोषणा विद्वत्-सावधानीक प्रतिकूल होयत।

११. समाहार: ‘भोरे-भोर’क साहित्यिक स्थान

‘भोरे-भोर’क केन्द्र भोरक अन्हार हटबाक मात्र दृश्य नहि, बालकक मन आ व्यवहारमे प्रकाशक रूपक बनायब अछि। पहिल कवितामे प्रकाश बच्चाकेँ घड़ीसँ आकाश धरि, आकाशसँ पक्षीक गीत धरि, गीतसँ पारिवारिक स्नेह धरि लऽ जाइत अछि। दोसर कवितामे ओही बालककेँ विद्या, दया, निर्भीकता आ सेवाक आकांक्षी व्यक्ति बनबाक रूपरेखा देल गेल अछि। काव्यात्मक

सुकुमारता बगीचाक दृश्य आ जीव-जगतक संगतिक ठाम सभसँ अधिक मुखर अछि; उपदेशात्मक आग्रह आदर्श-गणनाक ठाम सभसँ अधिक घना होइत अछि। दुनू ध्रुवकेँ एकहि संग देखनाइ एहि पुस्तकक वस्तुनिष्ठ समीक्षाक आवश्यक शर्त थिक।

डॉ. योगानन्द झाक मैथिली रूपान्तर एहिना एकटा हिन्दी बालकविता-पुस्तिकाकेँ मैथिली बालपाठकक लेल उपलब्ध करबैत अछि; ई भाषिक उपलब्धता अपनहि मे महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा अनुवादक प्रशंसा करैत काल मूल हिन्दी पाठक अनुपस्थितिक तथ्य नहि नुकायल जा सकैत। जतेक पाठ प्रत्यक्ष देखल गेल अछि, ओहि आधार पर कहब उचित जे ‘भोरे-भोर’ संस्कारप्रधान, चित्रसमर्थित आ गेयताक सम्भावनासँ युक्त दू-रचनाक बालकविता-पुस्तिका अछि, जाहिमे अपन समयक आचार-विचारक संग समकालीन बालकेन्द्रित आलोचनाक अनेक प्रश्न सेहो निहित छथि।

	दृश्य सामग्री	समीक्षामे उपयोग
	आवरणक आगाँ-पाछाँ भाग	शीर्षक, मूल लेखक आ अनुवादकक नाम
	भीतरी शीर्षकपृष्ठ	मूल हिन्दी लेखक, अनुवादक, प्रकाशक
	प्रकाशकीय विवरण; ‘दू शब्द’क आरम्भ	२०१४ संस्करण; भाषा–बालसाहित्यक तर्क
	अनुवादकक ‘दू शब्द’क मुख्य भाग	लोक-साहित्य, अनुवाद-सिद्धान्त, मातृभाषा
	‘दू शब्द’क अन्त; ‘नेनालोकनि!’	२०१३क भूमिका-दिनाङ्क; मूल

	दृश्य सामग्री	समीक्षामे उपयोग
		कविक सम्बोधन
	मुद्रित पृ. ४–५	जागब–दिनचर्या; चिड़ै आ आँगन
	मुद्रित पृ. ६–७	शुद्ध हबा, घंटी; बगीचा–भमर–तितली
	मुद्रित पृ. ८–९	चन्दा–भोर; उगैत सूर्य
	मुद्रित पृ. १०–११	सूर्यक प्रणाम; माता-पिताक आदर
	मुद्रित पृ. १२–१३	‘प्रार्थना’: विद्या, परोपकार, गुरु-सम्मान
	मुद्रित पृ. १४–१५	राष्ट्र, शान्ति, अहिंसा, ऐतिहासिक आदर्श
	मुद्रित पृ. १६; दहिना पृष्ठ खाली	कर्मयोग, सेवाभाव आ समापन

अध्याय 13 / २०२३

चतुर्दश सूत्र

डॉ. योगानन्द झाक कृतिक आलोचनात्मक विवेचन

संग्रहक विन्यास आ एकर आलोचनात्मक अर्थ

ग्रन्थ तीन विभागमे व्यवस्थित अछि—‘काव्य विवेचन’मे छह आलेख, ‘गद्य विश्लेषण’मे तीन आलेख, आ ‘अवदान-मूल्याङ्कन’मे पाँच आलेख। पहिल विभागमे गंगावन्दना, कथाकाव्य, भक्ति-काव्य, गीत, ऋतुचित्र आ रामकथाक आधुनिक पुनर्व्याख्या मुख्य अछि। दोसर विभागमे कथाकारक यात्रावृत्तान्त, निबन्ध-साहित्य आ समाजदर्शी उपन्यासक परीक्षण अछि। तेसर विभाग व्यक्तिगत कृति सँ आगू बढ़ि पत्रकारिता, भाषाक वैज्ञानिक संरचना, साहित्येतिहास, जीवनीपरक समालोचना आ लोकगाथा-अनुसन्धानक संस्थागत महत्त्वकेँ परखैत अछि।

एहि क्रमक महत्त्व अछि। पहिल खण्ड पाठककेँ काव्यक भाव, बिम्ब, छन्द आ समाजचेतनासँ परिचित करबैत अछि; दोसर खण्ड कथ्य, शिल्प, परिवेश आ सामाजिक परिवर्तनक प्रश्न उठबैत अछि; तेसर खण्ड मैथिली साहित्यक आधुनिक ज्ञान-व्यवस्थाक आधारभूत साधन—दैनिक पत्र, व्याकरण, इतिहास, पुरान पाठक सम्पादन आ मौखिक परम्पराक संरक्षण—दिस दृष्टि घुमबैत अछि। एना पोथीक ‘सूत्र’ केवल चौदह अलग-अलग लेखकक नाम नहि, अपितु मैथिली साहित्यक स्वरूप आ अस्तित्वक चौदह प्रवेशद्वार बनैत अछि।

प्रस्तावनाक आलोचनादर्शन

लेखक प्रस्तावनामे आलोचनाकेँ विवेचन, विश्लेषण आ मूल्याङ्कनक समन्वित कार्य मानैत छथि। हुनक दृष्टिमे समालोचक पाठक आ रचनाकारक बीच सेतु छथि; ओकरा कृतिक काल, रचनाप्रक्रिया, स्रष्टाक व्यक्तित्व, समाजशास्त्र, भाषाशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र, मनोविज्ञान आ

नृविज्ञान आदिक आवश्यकता अनुसार विचार करबाक चाही। अन्धप्रशंसा आ छिद्रान्वेषण दुनूकेँ ओ अनुपयोगी मानैत छथि। ई प्रस्तावनात्मक प्रतिज्ञा पाठककेँ न्यायोचित आलोचनाक कसौटी उपलब्ध करबैत अछि, मुदा वास्तविक कसौटी ई थिक जे बादक चौदहो आलेख एहि सन्तुलनकेँ कतए धरि निर्वाह करैत अछि।

ग्रन्थकार अनेक आलेखमे कृतिक मूल कथा, कविताक पाँती, लेखकक जीवन-प्रसंग आ पूर्ववर्ती शोधक उल्लेख एकठाम आनैत छथि। जे आलेख मूलपाठक निकट रहैत अछि, ओतए व्याख्या अधिक विश्वसनीय बनैत अछि। जतए पूर्वलेखकक विचार, इतिहासक सम्भावना आ समीक्षकक अनुमोदन एकसंग अबैत अछि, ओतए प्रमाणक स्तर साफ-साफ अलग करबाक आवश्यकता प्रबल होइत अछि। ई अध्ययन ओही पद्धतिगत प्रश्नकेँ प्रत्येक विषयक अनुसार परखैत अछि।

०१ | गंगा वन्दनाक परम्परा आ मधुपजी

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १७–२६

नदीसँ सांस्कृतिक प्रतीक धरि

एहि आलेखक पहिल विशेषता एकर विस्तृत ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक भूमिका अछि। लेखक गंगाकेँ हिमालयसँ बंगालक खाड़ी धरि प्रवाहित नदीक रूपमे पहिचानैत छथि, मुदा तुरन्त देखबैत छथि जे भारतीय आ मिथिलाक मानसक लेल ई केवल भौगोलिक इकाइ नहि। गंगा शुचिता, श्रद्धा, तीर्थ, मृत्युसंस्कार आ सामूहिक स्मृतिक आधार बनि गेल छथि। ‘गंगा हिमवतोर्मध्ये’ सन प्रयोग, गंगाक दक्षिणी सीमासँ मिथिलाक सम्बन्ध, गंगा-घाटपर कार्तिकक सेवा आ मैथिली लोकगीतिक उल्लेखसँ ओ सांस्कृतिक भूगोलक रूपरेखा बनबैत छथि (मूल ग्रन्थ, पृ. १७–१९)।

एकर बाद लेखक प्रकृतिपूजाक परम्परा, नदीक मातृत्व-परिकल्पना आ भारतीय वाङ्मयमे गंगाक मानवीकरणक आधार खोजैत छथि। नदीक उपयोगितासँ भक्तिक भावनात्मक रूपमे संक्रमण देखयब एहि आलेखक आन्तरिक तर्क अछि। तथापि आदिम समाजसँ आधुनिक श्रद्धा

धरि अविच्छिन्न विकासक परिकल्पना अत्यन्त व्यापक अछि; एकरा सांस्कृतिक व्याख्या कहब अधिक उचित, सर्वकालिक ऐतिहासिक सिद्धान्त नहि। गंगाक धार्मिक प्रतिष्ठा अनेक समाजक लेल सत्य मान्यता अछि, मुदा ताहिसँ सम्बद्ध चमत्कार वा मोक्ष सम्बन्धी विश्वासकेँ इतिहाससिद्ध तथ्य मानि लेब शोधसंगत नहि होयत।

साहित्यिक परम्पराक क्रमिक परीक्षण

लेखक वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, शंकराचार्य, पण्डितराज जगन्नाथ आदि संस्कृत परम्पराक उल्लेख करैत गंगावन्दनाक विस्तृत वंशावली रचैत छथि। मैथिली साहित्यमे लालदास, सीताराम झा, सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ आ काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ पर केन्द्रित होइत ओ परम्परा आ नवोन्मेषक अन्तर देखबैत छथि। सीताराम झाक ‘अम्बचरित’ आ सुमनक ‘गंगातरंगिणी’क उल्लेखक बाद मधुपजीक ‘गंगातरंगावली’मे रूपक, व्यञ्जना, सांगरूपक आ प्रौढ़ कल्पनाक विश्लेषण प्रस्तुत कएल गेल अछि (पृ. २०–२६)।

मधुपक पदक प्रसंगमे लेखक गंगाकेँ तस्कर, कृषक, नेना, सागरक गृहिणी आदिसँ जोड़ल काव्यकल्पनाक चर्चा करैत छथि। एहिठाम आलोचनाक केन्द्र स्पष्ट भऽ जाइत अछि—गंगाक महिमा मात्र नहि, गंगाक महिमा कहलाक काव्य-प्रविधि। उपमा, रूपक, परम्परित बिम्ब आ शास्त्रीय शब्दभण्डारक सहायता सँ साधारण विषयकेँ असाधारण काव्यानुभव बनाओल जाइत अछि। उदाहरणक पृष्ठ-सन्दर्भ दऽ शब्दचित्रक मूल्याङ्कन करब लेखकक निकटपाठीय शक्ति थिक।

इतिहासक प्रसंग आ प्रमाणक सावधानी

आलेखमे गंगाक प्रवाह सम्बन्धी औपनिवेशिक कालक एक विवादक उल्लेख सेहो अछि, जाहिमे तत्कालीन दरभंगा महाराजक प्रतिरोधक कथा ‘मिथिला मिहिर’क ८ मई १९१५ अङ्क आ योगमाया झाक ‘मैथिली साहित्यमे गंगा’क सन्दर्भसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि (पृ. २०)। एहि सन्दर्भक उपयोगसँ गंगाक प्रति मिथिलाक भावनाकेँ राजनीतिक-सांस्कृतिक पक्ष भेटैत अछि। तथापि इतिहास-विवेचनक लेल मूल समाचार, शासकीय अभिलेख आ नदी-परियोजनाक

दस्तावेजक अलग परीक्षण जरूरी अछि। प्रस्तुत ग्रन्थमे वर्णित प्रतिरोधकेँ शोधक एक सूत्र मानल जा सकैत अछि, स्वतन्त्र रूपेँ प्रमाणित सम्पूर्ण इतिहास नहि।

पर्यावरणीय प्रश्नसँ आलेखक नव अर्थ

अन्तमे लेखक आधुनिक गंगा-प्रदूषण, बान्ह-पुलसँ प्रवाहमे परिवर्तन आ सामाजिक-राजनीतिक दूषणक समानान्तर चित्र प्रस्तुत करैत नव गंगावन्दनाक आवश्यकता पूछैत छथि। एहि आत्मप्रश्नक कारणेँ आलेख ऐतिहासिक सर्वेक्षण मात्र नहि रहि वर्तमानक रचनात्मक चुनौती बनि जाइत अछि। एहि ठाम गंगाक शुचिताक रूपक सामाजिक जीवनक नैतिक प्रश्नक संग जुड़ैत अछि। ई विचार प्रभावशाली अछि, यद्यपि जल-प्रदूषणक वैज्ञानिक स्थिति आ नैतिक ‘प्रदूषण’ अलग-अलग प्रकारक कथन छथि; दुनूकेँ काव्योपमा धरि सीमित राखब जरूरी अछि।

समग्रतामे पहिल आलेखक उपलब्धि ई अछि जे लेखक मधुपक काव्यकेँ एकटा जीवन्त, दीर्घकालिक गंगाभक्ति-परम्परामे स्थापित करैत छथि। सम्भावित सीमा ई जे गंगाक सांस्कृतिक गौरवकेँ अनेक ठाम मूलाधार मानि लेल गेल अछि; भिन्न धार्मिक, सामाजिक वा पर्यावरणीय दृष्टिक अनुभव अपेक्षाकृत कम खुलैत अछि। तथापि अन्तिम पर्यावरणीय प्रश्न सम्पूर्ण आलेखकेँ विचारोत्तेजक समकालीनता प्रदान करैत अछि।

०२ | हरिमोहनझाक कथाकाव्य

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: २७–३२

व्यंग्यक पद्यरूप आ कथात्मक अर्थ

हरिमोहन झाकेँ अधिकतर पाठक हास्य-व्यंग्यपूर्ण गद्यक लेखकक रूपमे चिन्हैत छथि। एहि आलेखमे योगानन्द झा हुनक कविताक कथात्मक पक्षकेँ केन्द्रमे आनैत छथि। ग्रन्थकार सात गोट कथाकाव्यक चर्चा कयने छथि। एहि सात रचनाक अपन-अपन सामाजिक लक्ष्य अछि, मुदा सभमे एक साझा प्रवृत्ति देखल जाइत अछि—रूढ़ि, पाखण्ड आ प्रतिष्ठाक नामपर चलैत असमानताकेँ हास्यक मार्फतेँ उजागर करब (पृ. २७–३२)।

लेखकक पहिल विस्तृत उदाहरण ‘ढाला झा’ अछि। बूढ़ पञ्जीबद्ध वरक जयवार-सासुर यात्रा, वस्त्र-वेष, भाषिक दर्प, भोजनपर रोष आ विदाइक टाकाक माँगक कथासँ समाजक अनमेल विवाह, कन्याक असहायता आ विवाहक आर्थिक दुरुपयोग सोझाँ अबैत अछि। एहि कवितामे हास्यक उत्पत्ति केवल ढाला झाक विचित्र व्यवहारसँ नहि, ओकरा सम्मान दऽ रहल सामाजिक व्यवस्थाक अन्तर्विरोधसँ होइत अछि। लेखकक समीक्षामे बूढ़ वरक व्यंग्यचित्रक पाछाँ कन्यापक्षक विवशता देखाबयब विशेष अर्थपूर्ण अछि।

रूपक-भिन्नतामे एक सामाजिक लक्ष्य

‘टी-पार्टी’मे शिक्षित समुदायक विदेशी फैशनक अन्धअनुकरणपर, ‘बुचकुन बाबा’मे नारीक बदलैत स्थानपर, ‘निरसन मामा’मे खाद्य-अखाद्य आ जातिभेदपर, ‘सलगमक खण्ड’मे अन्धविश्वासपर आ ‘घूटरकका’मे शिक्षित पुतहुक प्रति पुरुषक मानसिक प्रतिरोधपर लेखक विश्लेषण करैत छथि। ‘बुचकुन बाबाक स्वप्न’मे परिवार-नियोजनक प्रश्न सेहो उठैत अछि। एहि उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे हरिमोहन झाक हास्य सुधारवादी नीतिसँ कटल नहि अछि; कथानक सामाजिक शिक्षाक साधन बनैत अछि।

‘निरसन मामा’क कथामे धार्मिक शुचिताक कठोर भाषण देनिहार व्यक्ति स्वयं नागरिक शिष्टाचारक नियम भंग करैत छथि; ‘सलगमक खण्ड’मे काल्पनिक अपवित्रताक भय एकटा सामान्य भोजनकेँ सामूहिक संकट बना दैत अछि। एहन प्रसंग सभमे व्यंग्यक तत्त्व पात्रक कहनी आ करनीक बीच दूरीसँ उपजैत अछि। लेखक एहि तत्त्वकेँ विवृत करैत मैथिली हास्यकेँ सरस मनोरञ्जनक बजाय सामाजिक आलोचनाक बौद्धिक विधान मानबाक आधार दैत छथि।

नारी-प्रश्नक सूक्ष्मतर अर्थ

‘बुचकुन बाबा’ ओ ‘घूटरकका’क पाठसँ नारी-शिक्षा, पेशागत स्वाधीनता, दहेजविहीन विवाह आ परिवारमे बदलैत शक्ति-सन्तुलनक प्रश्न उभरैत अछि। लेखक परम्परावादी पुरुषपात्रक प्रतिक्रिया परिहासपूर्वक प्रस्तुत करैत छथि। विश्लेषणक अधिक गहन स्तरपर ई प्रश्न सेहो उठैत अछि जे हास्यक लक्ष्य शिक्षित स्त्री नहि, ओकर स्वायत्ततासँ डेराइत सत्ता-मानसिकता

अछि। एहि भेदकेँ स्पष्ट करब आधुनिक नारीवादी पाठक लेल आवश्यक होयत। ग्रन्थकारक आधार एहि अर्थकेँ सम्भव बनबैत अछि, मुदा ओहि दिशामे विस्तारक अवसर शेष रहि जाइत अछि।

आलोचनाक सामर्थ्य आ शिल्पगत सीमा

एहि आलेखक उत्कृष्ट पक्ष कथासारक साफ प्रस्तुति अछि। उदाहरणक बिना ‘व्यंग्यकवि’क उपाधि देनाइ सहज छल; लेखक एना नहि कऽ कथाप्रसंग, पात्रक भाषा आ सामाजिक परिवेशक सम्बन्ध स्थापित करैत छथि। मुदा सातो कथाकाव्यक मात्राभार, छन्द-विन्यास, संवादक नाटकीयता, वाचकक स्थिति आ हास्यसँ करुणा धरि भाव-परिवर्तनक अधिक तुलनात्मक विश्लेषण कएल जाइत तँ काव्यरूपक विशिष्टता आ स्पष्ट होइत।

समग्र निष्कर्ष ई नहि जे हरिमोहन झा सामाजिक त्रुटि सभक मात्र उपहास करैत छथि। हुनक कथाकाव्य रूढ़िसँ उत्पन्न मनुष्यता-विरोधी असमानताकेँ पहिचानयब सिखबैत अछि। एहि आलेखमे ग्रन्थकार हुनक प्रायः गद्यकेन्द्रित परिचयकेँ पद्यक सामाजिक इतिहाससँ जोड़बाक महत्त्वपूर्ण प्रयास करैत छथि।

०३ | साधक कवि: उपेन्द्रठाकुर ‘मोहन’

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ३३–४६

कविक जीवन आ उपलब्ध काव्यसामग्री

एहि दीर्घ आलेखमे उपेन्द्र ठाकुर ‘मोहन’क रचनाक समग्र धरातल देखाओल गेल अछि। लेखक हुनक चतरिया गाम, संस्कृत शिक्षाक पृष्ठभूमि, ‘आर्यावर्त’ आ ‘मिथिला मिहिर’सँ सम्बद्ध सम्पादकीय-कार्यक उल्लेखक संग तीन कविता-संग्रह—‘फुलडाली’ (१९४२), ‘बाजि उठल मुरली’ (१९७७) आ ‘इतिश्री’ (१९८२)—क विवरण दैत छथि। ‘बाजि उठल मुरली’ लेल १९७८ क साहित्य अकादेमी सम्मान प्राप्त होयबाक विवरण सेहो ग्रन्थमे अछि (पृ. ३३–३४)। एहि ऐतिहासिक सूचनाक उपयोग कृतिक कालक्रम बुझबाक लेल उपयुक्त अछि।

शृङ्गार, क्रान्ति आ गीतक दोसर अर्थ

‘फुलडाली’क ‘शृङ्गारकुसुम’ आ ‘क्रान्तिकुसुम’ नामक दू खण्डक उल्लेख कऽ लेखक सर्जनाक दू भावभूमि पहिचानैत छथि। शृङ्गारक आवेग आ क्रान्तिक उद्बोधन परस्पर विरोधी नहि; दुनूमे तीव्र भावनात्मक ऊर्जा अछि। मोहनक गीतमे देशोद्धार, नवजागरण, युवा-कर्तव्य आ लोककल्याणक स्वर भेटैत अछि। लेखक कविक ‘नवगछुली’ प्रतीकक चर्चा करैत नवनिर्माणकेँ प्रकृतिक जीवनशक्तिसँ जोड़ैत छथि। एहि पाठमे संगीतक लय आ सामाजिक उद्घोष एक-दोसराकेँ समर्थित करैत अछि।

मोहनजीक संस्कृताभ्यासक प्रभाव छन्द, रस, वाक्ययोजना आ परम्परित प्रतीकमे अछि; ताहि सँ ई निष्कर्ष नहि निकालल जा सकैत अछि जे हुनक कविता वर्तमानसँ विरत अछि। सामाजिक पतन, राष्ट्रक संकट, मनुष्यक नैतिक जिम्मेवारी, दीन-दुखियाक पीड़ा आ आधुनिकीकरणक विसंगति सभ पर कविक प्रतिक्रिया आलेखमे विवेचित अछि। एहि दृष्टिसँ कवि ‘साधक’ छथि—केवल आध्यात्मिक तपस्वी नहि, शब्दक अनुशासनसँ जीवनमूल्य खोजयवला रचनाकार।

छन्दनिष्ठता आ युगीन परिवर्तन

ग्रन्थकार ई तथ्य रेखाङ्कित करैत छथि जे कवि मुख्यतः गेयधर्मी रचना करैत रहलाह। मात्रावृत्त, वर्णवृत्त, यति, अन्त्यानुप्रास आ पाठ-स्वरक प्रति सजगता हुनक रचनाक स्थायी विशेषता अछि। युगक प्रभावेँ किछु छन्दमुक्त रचनाक उल्लेख सेहो अछि। एहिठाम एक मौलिक आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि—नवीनता की केवल छन्द-त्यागसँ अबैत अछि? आलेखक आधारपर उत्तर ‘नहि’ अछि। काव्यक भाषा, प्रतीक आ सामाजिक प्रश्नमे नवता रहि सकैत अछि, भले ओकर छन्द परम्परागत हो।

काव्यव्यक्तित्वक मूल्याङ्कन

लेखक मोहनक कविताक पाठसँ शास्त्रीय संस्कार आ सुधारवादी चेतनाक साहचर्य देखबैत छथि। सामाजिक रूढ़ि, पाखण्ड आ विसंगतिक आलोचना, युवाक आह्वान आ आशामूलक

वक्तव्य सभ एहि समीक्षाक महत्त्वपूर्ण पाठसाक्ष्य छथि। तखनहुँ काव्यक स्तरीयता मापबाक लेल गीतक संगीतात्मक प्रस्तुति, ध्वनि-संयोजना आ अलग-अलग कालक कवितामे शब्दविन्यासक परिवर्तनक तुलनात्मक छानबीन आर आवश्यक छल।

एहि आलेखक उपलब्धि ई अछि जे मोहनजीकेँ पुरस्कार-प्राप्त कविक सामान्य परिचय धरि सीमित नहि राखि तीन संग्रहक रचनात्मक विकासमे देखल गेल अछि। एकर अन्तर्निहित आलोचनात्मक शिक्षा ई अछि जे परम्परागत शिल्पकेँ स्वतः रूढ़िवादी आ नव छन्दकेँ स्वतः प्रगतिशील मानि लेलासँ कविता बुझल नहि जा सकैत अछि।

०४ | स्नेहलताक मिथिला–मैथिली प्रेम

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ४७–५३

भक्ति आ भू-सांस्कृतिक आत्मीयता

‘स्नेहलताक मिथिला–मैथिली प्रेम’ केवल भक्ति-पदक रसग्रहण नहि, मिथिलाक सांस्कृतिक भूगोलकेँ काव्यक केन्द्र बनाबयवला आलेख अछि। लेखक स्नेहलताकेँ रामभक्ति आ मधुरोपासनाक परम्परामे राखि हुनक ‘वैदेही विवाह संकीर्तन’, ‘विनय पदावली’, ‘स्नेह शतक’, ‘स्नेह वाटिका’, ‘झूला संकीर्तन’, ‘महेशवाणी संग्रह’, ‘चेतावनी संकीर्तन’ आ ‘सीतावतरण’ सन कृतिक चर्चा करैत छथि (पृ. ४७–४९)। एहिसँ लेखकक रचनात्मक विस्तार आ काव्यक धार्मिक-सामाजिक व्यवहार दुनूक परिचय भेटैत अछि।

मैथिली पदावलीमे मिथिलाक आदर्शीकरण

स्नेहलताक पदमे मिथिला जनक-जानकीक भूमि छथि। कविक दृष्टिमे एहि प्रदेशक माटि, लोकव्यवहार, ऋतु, भाषा, विवाहक स्मृति आ आत्मीय सम्बन्ध सभ पुण्यभूमिक छवि निर्मित करैत अछि। लेखक पदक उदाहरण दऽ देखबैत छथि जे मिथिलाक गौरवक गानमे केवल स्थलनाम नहि, सांस्कृतिक अनुभूति आ भाषिक निकटता उपस्थित अछि। मातृभूमिप्रेमक एहि रूपमे धार्मिक पदावली क्षेत्रीय अभिज्ञानक भाषा बनि जाइत अछि।

‘साग-पात खोंटि खोंटि दिवस गमेबइ’ सन भावयुक्त पाँतीक चर्चा विशेष अर्थवान अछि। एहिमे दैन्यक बोध रहितो जन्मभूमिक परित्याग नहि करबाक आग्रह अछि। ई सामाजिक यथार्थ आ भक्तिक आदर्शक द्वन्द्व अछि। कवि मिथिलाकेँ सर्वथा सम्पन्न बतबैत नहि छथि; ओ अभाव बीच सेहो अपन सांस्कृतिक सम्बन्ध नहि तोड़य चाहैत छथि। एहि बिन्दुपर आस्तिक आ भावनात्मक काव्य एकटा वास्तविक सामाजिक प्रश्नकेँ छुबैत अछि।

भाषा-बोध आ अन्य भाषिक प्रभाव

लेखक देखबैत छथि जे स्नेहलताक प्रेरणास्रोतमे रामभक्तिक हिन्दी परम्परा, तुलसीक काव्य आ मधुरोपासनाक विभिन्न पदावली रहितो रचनाक मूल अभिव्यक्ति मैथिलीमे अछि। स्रोतक स्वीकार आ स्वभाषाक सृजनशील रूपान्तरण बीचक ई सम्बन्ध अनुवर्तन मात्र नहि, सांस्कृतिक पुनर्रचना थिक। मैथिलीक मधुरता विषयक पदकेँ लेखक क्षेत्रीय स्वाभिमानक प्रमाण रूपमे ग्रहण करैत छथि। एहिठाम भाषा-चेतना धार्मिक श्रद्धासँ अलग नहि होइत, बल्कि ओकर अन्तरतम भाग बनि जाइत अछि।

आलोचनात्मक बहसक अवकाश

आलेखक मुख्य स्वर अनुमोदनात्मक अछि। स्नेहलताक भक्ति, मातृभाषाप्रेम आ मिथिलाक आदर्श-प्रतिमा पर लेखकक रुचि स्पष्ट अछि। मुदा मधुरोपासनाक शास्त्रीय आधार, तुलसीपरम्परासँ पदक अन्तर्पाठीय समानता, नारीपात्रक स्वर आ वास्तविक सामाजिक वर्गविन्यासक अन्तर पर विस्तारसँ बहस कएल जा सकैत छल। मिथिलाक सांस्कृतिक उत्कर्षक पद सभकेँ क्षेत्रीय आदर्शक काव्यात्मक रचना रूपमे पढ़ब उचित अछि; ओहि चित्रकेँ प्रत्येक कालक सामाजिक वस्तुस्थिति न मानब।

एहि सीमा रहितो आलेख ई स्थापित करैत अछि जे भक्ति-कविक ‘मिथिला प्रेम’क अध्ययनमे भाषा मात्र माध्यम नहि, विषय सेहो अछि। कविक मातृभाषाप्रति प्रेम आ सीताभक्ति एक-दोसराकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि।

०५ | गीतकार प्रदीपक ‘स्वयंप्रभा’

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ५४–६२

रामकथाक अल्पपरिचित प्रसंगक चयन

एहि आलेखमे प्रभुनारायण झा ‘प्रदीप’क ‘स्वयंप्रभा’केँ मैथिली रामकाव्य आ पद्यकथा-विधाक विकासक सन्दर्भमे राखल गेल अछि। लेखक पहिने मैथिली रामकथाक पूर्वपरम्परा—ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, चन्दा झा, लालदास आ विभिन्न लोकगीत—क चर्चा करैत छथि। एहि इतिहासक उद्देश्य ई देखायब अछि जे रामकथा एकहि स्थिर कृति नहि, काल-कालपर नव अर्थ प्राप्त करयवला सामूहिक सांस्कृतिक उपजीव्य छथि (पृ. ५४–५७)।

स्वयंप्रभा रामकथाक ओ पात्र छथि जिनकर प्रसंग ‘अध्यात्म रामायण’क किष्किन्धाकाण्डसँ सम्बद्ध बताओल गेल अछि। सीताक खोजमे निकसल वानरदल, अन्हार गुफा, पियास, योगिनी स्वयंप्रभासँ भेंट आ ओकरा सँ प्राप्त सहायता मूल कथाक आधार अछि। प्रदीप एहि कथाक ग्रहण करैत छथि, मुदा लेखकक विश्लेषण अनुसार ओकर अन्तिम रचनात्मक उद्देश्य केवल पौराणिक कथा दोहरायब नहि अछि।

पौराणिक स्रोतमाथि आधुनिक सामाजिक प्रश्न

कथाक अभिनव मोड़ ओतए अबैत अछि जतए स्वयंप्रभाकेँ आधुनिक मिथिलाक नारी-दुर्दशा, दहेजक दानव आ वैवाहिक प्रताड़नाक विरुद्ध उज्ज्वल शक्तिक रूपमे सक्रिय बनबाक आह्वान कएल जाइत अछि। एना पौराणिक योगिनी सामाजिक प्रतिरोधक प्रतीक बनि जाइत छथि। रामकथाक पारम्परिक मर्यादा आ समकालीन स्त्री-पीड़ाक प्रश्नक ई संगति एहि कृतिक प्रमुख रचनात्मक युक्ति अछि। लेखक ई परिवर्तन देखाबय लेल मूल आख्यान आ कविक कल्पनात्मक विस्तारक तुलनात्मक विवेचन करैत छथि (पृ. ५८–६२)।

मौलिकता पर विचार करैत ई भेद जरूरी अछि जे आधारकथा पुरान होइतहुँ ओकर आधुनिक प्रसंगक विनियोग कविक विशिष्ट रचना-विधि भऽ सकैत अछि। एहि दृष्टिसँ ‘स्वयंप्रभा’ अनुकरण नहि, पुनर्पाठक उदाहरण अछि। कृति सामाजिक सुधार लेल धार्मिक

प्रतिष्ठाक प्रतीक अपनबैत अछि; मुदा धार्मिक अधिकारक उपयोग मानवीय समानताक पक्षमे कतेक प्रभावी होइत अछि, तकर मूल्याङ्कन पात्रक वास्तविक सक्रियतासँ करबाक चाही।

भाषा, रस आ छन्दक काज

ग्रन्थकार एहि पद्यकथाक भाषा सरल, बोधगम्य आ प्रसादगुणयुक्त मानैत छथि। तत्समक संग तद्भव-देशज शब्दक प्रयोगकेँ ओ स्वाभाविक मैथिली लेखनक प्रमाण मानैत छथि। भक्तिभाव कथाक पृष्ठभूमिमे रहितो उपदेश मात्र नहि बनैत अछि; लोकशिक्षणक भावकेँ सम्बल दैत अछि। अनेक मात्रिक छन्द आ अन्त्यानुप्रासक प्रयोगक चर्चा करैत लेखक किछु स्थलपर लयक असन्तुलन सेहो चिह्नित करैत छथि। ई सावधानी समीक्षाकेँ केवल गुणगान होयबासँ रोकैत अछि।

विधागत उपलब्धि आ शेष प्रश्न

आलेख रामकाव्यक परम्परासँ पद्यकथाक आधुनिकता धरि एकटा तुलनात्मक मार्ग प्रस्तुत करैत अछि। तथापि आधारग्रन्थक पाठ, प्रदीपक पद आ सम्भव अन्य रामकथात्मक संस्करणक पद्य-पद्य तुलनासँ नवनिर्मित अंशक सीमा अधिक स्पष्ट होइत। कथाक नारी-प्रतिनिधित्व, मिथिलाक सामाजिक यथार्थ आ प्रतीकक प्रतिरोध-क्षमता पर स्त्रीवादी अध्ययन सेहो अतिरिक्त प्रकाश दऽ सकैत अछि।

एहि आलेखक स्थायी महत्त्व पौराणिक स्रोतकेँ आधुनिक समस्या सँ जोड़बाक रचनात्मक प्रक्रियाक पहिचानमे अछि। स्वयंप्रभाक दिव्य ‘प्रभा’ एहि अर्थमे दहेजक अन्हार मेटयवला सामाजिक रूपक बनैत अछि।

०६ | डॉ. जयमन्तमिश्रक ‘कविता कुसुमाञ्जलि’

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ६३–७८

संस्कृत पाण्डित्य आ मातृभाषाक सृजन

लेखक एहि आलेखक आरम्भमे संस्कृत आ मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक सहसम्बन्धक चर्चा करैत छथि। संस्कृत-पण्डित लोकनिक मैथिली लेखनपर अनेक बेर पुरातनपन्थिताक आरोप लगैत रहल अछि। लेखक एहि सामान्यीकरणकेँ चुनौती दैत जयमन्त मिश्रक सम्पादन-कार्य, शास्त्रीय अभ्यास आ मातृभाषाक प्रति अनुरागकेँ एकहि बौद्धिक जीवनक दू रूप मानैत छथि। मिश्रजीक सम्पादित संस्कृत ग्रन्थक नाम दैत लेखक हुनक अनुसन्धानशीलतासँ प्रमाणित करबाक प्रयत्न करैत छथि (पृ. ६३–६६)।

भक्ति-संस्कारसँ ऋतु-संवेदना धरि

‘कविता कुसुमाञ्जलि’मे सरस्वती-वन्दना, कृष्णस्तुति, शास्त्रीय बिम्ब आ रागाश्रित गीतक संग ऋतुचित्रक उल्लेख अछि। लेखक वल्लभाचार्यक मधुराष्टकक भावधाराक संग मिश्रजीक कृष्णमाधुर्यक तुलनात्मक संकेत दैत छथि। ई दृष्टि मौलिकतासँ केवल अभूतपूर्व विषय-चयन नहि, पूर्वस्वीकृत भक्तिरसक भाषिक पुनर्सृजनमे सेहो खोजैत अछि।

छह ऋतुसँ सम्बद्ध कविताक उल्लेख मेघ, ग्रीष्म, शरद, हेमन्त, शिशिर आ वसन्तक प्रकृति-चित्रक माध्यमसँ काव्यक संवेदनात्मक विस्तार देखबैत अछि। ऋतुचित्रक बीच नागपञ्चमी, मधुश्रावणी आ मिथिलाक पर्वजीवनक संकेतक कारणेँ ऋतु सामान्य प्राकृतिक अवस्था नहि, सामाजिक समय बनि जाइत अछि। लेखक जखन शिशिरसँ दुःखी लोकपर दयाक प्रश्न उठबैत पाँतीक चर्चा करैत छथि, तखन प्रकृतिक मानवीकरणक भीतर सामाजिक करुणाक प्रवेश उद्घाटित होइत अछि (पृ. ६९–७२)।

नवता-विवादक केन्द्र

‘हम कतय नित जा रहल छी’ सन आधुनिक असमञ्जसक भावपर लेखक विशेष विचार करैत छथि। ई काव्य-व्यक्तिकेँ युगक उन्नयन, आत्मविस्मृति आ स्वार्थबोधक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। शास्त्रीय छन्दमे रचित कविता सेहो आधुनिक संशय, समाजक विसंगति आ व्यक्ति-समष्टिक

द्वन्द्वक वाहक भऽ सकैत अछि—आलेखक मूल आग्रह एतय स्पष्ट होइत अछि। एहि प्रकारेँ लेखक शिल्पक इतिहास आ विचारक इतिहासक बीच आवश्यक भेद देखबैत छथि।

आलोचनात्मक विवेचन

लेखकक पक्ष मजबूत तखन बनैत अछि जखन ओ कविताक उदाहरण सँ ‘रूढ़िवादी’ कहबाक सहज आरोपक प्रतिपरीक्षा करैत छथि। भक्ति, प्रकृति आ सामाजिक चेतनाक वैविध्य पोथीकेँ एकरेखा व्याख्यासँ बचबैत अछि। मुदा कविताक प्रकाशन-कालक्रम, संस्कृत पदानुकरणक सीमा, छन्दविशेषक वास्तविक गणना आ ऋतुक बिम्बमे पाठान्तरक शोधक अतिरिक्त अवसर अछि। शास्त्रीय छन्दक दक्षता आ उत्कृष्ट कविता होयब एके नहि; दुनूक स्वतन्त्र कसौटी चाही।

एहि आलेखक सार्थक उपलब्धि मैथिलीक शास्त्रीय संस्कारकेँ नवता-विरोधक पर्याय नहि मानब अछि। जयमन्त मिश्रक काव्यक अध्ययन एहि कारणेँ भाषा, पाण्डित्य, लोकजीवन आ समयचेतनाक साझा परिसर बनैत अछि।

०७ | कथाकार नगेन्द्र कुमरक ‘श्यामली’

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ७९–८९

कथा-परम्परासँ यात्रावृत्तान्तक प्रवेश

एहि आलेखक शीर्षकमे ‘कथाकार’ शब्द अछि, मुदा विवेच्य पुस्तक ‘श्यामली’केँ लेखक आयरलैण्डक यात्रासँ सम्बद्ध साहित्यिक वृत्तान्त मानैत छथि। आरम्भमे मैथिली कथाक विकासयात्रा, समाजसुधारसँ यथार्थवाद धरि परिवर्तन आ हरिमोहन झाक प्रभावक चर्चा अछि। एहि व्यापक भूमिकाक उद्देश्य नगेन्द्र कुमरक साहित्यिक स्थिति निर्धारित करब अछि, यद्यपि पाठककेँ किछु काल धरि प्रतीक्षा करय पड़ैत अछि जे ‘श्यामली’क मूल विधागत स्वरूप की अछि (पृ. ७९–८२)।

नगेन्द्र कुमरक कथा-संग्रह ‘ससरफानी’, ‘दृष्टिकोण’, ‘शिकार’ आ ‘फलेना जामुन’क उल्लेख, आ पूर्व आलोचकक ‘मौलिक गल्पकार’ नहि मानबाक निर्णयपर योगानन्द झाक

असहमति, आलेखकेँ एकटा आलोचना-इतिहासक बहस बनबैत अछि। लेखक प्रभाव आ अनुकरणकेँ एके नहि मानैत छथि। एक साहित्यकार दोसरासँ प्रेरणा ग्रहण करितहुँ अपन अनुभव, प्रस्तुति आ विषयक कारणेँ मौलिक भऽ सकैत अछि। ई मत युक्तिसंगत अछि; मुदा एहि निष्कर्षक अन्तिम प्रमाण प्रत्यक्ष कथा-दर-कथा तुलनासँ मजबूत होइत।

‘श्यामली’क विशिष्ट विषयविस्तार

ग्रन्थकारक अनुसार ‘श्यामली’ लेखकक इंग्लैण्ड प्रवासकालीन आयरलैण्ड भ्रमणक साहित्यिक अभिलेख अछि, जकर प्रकाशन मैथिली अकादेमी, पटना सँ १९८१ मे भेल बताओल गेल अछि। हिन्दी यात्रावृत्तान्त ‘पथचारी’सँ एकर सम्भावित सम्बन्ध लेखक अनुमानक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि; एहि अनुमानकेँ सिद्ध पाठसम्बन्ध नहि मानब उचित अछि। यात्रा-साहित्यक विमर्शमे एकर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आ शैक्षणिक विवरण—महिलाक सार्वजनिक भूमिका, आयरिश स्वाधीनताचेतना, भारतीय स्वाधीनता-आन्दोलनक संगतियाँ आ मातृभाषाक भविष्यक चिन्ता—महत्त्वपूर्ण छथि (पृ. ८३–८९)।

आयरलैण्डक अनुभवक माध्यमसँ मैथिली भाषाक भविष्यपर लेखकक मनमे प्रश्न उठैत अछि। अपन भाषा छोड़ि प्रतिष्ठाक निमित्त दोसर भाषा अपनब, साहित्यक पाठकवर्गक सीमितता आ मातृभाषा रक्षाक अनिवार्यता—ई प्रश्न यात्रा-देशसँ कटल नहि, ओहि तुलना द्वारा प्रखर होइत अछि। एक देशक अनुभव दोसर देशक भाषिक आत्मनिरीक्षणक साधन बनैत अछि। एहि कारणेँ ‘श्यामली’क विवेचन यात्रावृत्तान्तक भीतर आत्मालोचनात्मक मैथिली चेतनाक विवेचन सेहो अछि।

कथा-शैली आ वृत्तान्तक संरचना

लेखक संवादक संक्षिप्तता, सूचनाक प्रचुरता आ दृश्य-निर्माणक सामर्थ्यकेँ ‘श्यामली’क गुण मानैत छथि। कतिपय ठाम लेखकक वर्णन अत्यधिक विस्तार ग्रहण करैत अछि, मुदा ज्ञानवर्धक सूचनाक कारणेँ पाठकक रुचि टिकि रहलाक बात सेहो कहल गेल अछि। एहि मूल्याङ्कनमे सूचनात्मकता आ सौन्दर्यानुभूतिक तनाव उपस्थित अछि—यात्राक प्रमाणित विवरण

साहित्यमे कतेक, आ साहित्यिक कल्पना ऐतिहासिक वृत्तान्तमे कतेक ठाम ग्रहण करय, ई प्रश्न खुलैत अछि।

सन्तुलित निर्णय

आलेखक शक्ति ई अछि जे एकटा कथाकारक परिचित छविसँ हटि ‘श्यामली’क विधागत स्वतन्त्रता रेखाङ्कित कएल गेल अछि। कमजोरी ई जे यात्रा-दैनन्दिनी, संवाद, संस्मरण आ रचनात्मक पुनर्निर्माणक परस्पर सम्बन्ध पर अधिक विशिष्ट विश्लेषण सम्भव छल। आयरलैण्डक ऐतिहासिक सूचना सभकेँ बाह्य स्रोतसँ जाँचब आ ‘पथचारी’सँ वास्तविक पाठ-समानता मिलायब भविष्यक शोधक उपयोगी दिशा होयत।

०८ | मायानन्दमिश्रक निबन्ध साहित्य

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: ९०–१०१

कथाकारक व्यापक निबन्ध-व्यक्तित्व

मायानन्द मिश्रक परिचय प्राय: कथा-उपन्यासक रचनाकारक रूपमे भेटैत अछि; एहि आलेखमे योगानन्द झा हुनक उपेक्षित निबन्धकार स्वरूप खोजैत छथि। मायाबाबूक मैथिली उद्घोषण, सम्पादन, सार्वजनिक सांस्कृतिक जीवन आ साहित्यिक आन्दोलनक गतिविधिक संग हुनक गद्यक सम्बन्ध स्थापित कएल गेल अछि। लेखक कहैत छथि जे उपलब्ध निबन्ध भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकामे विकीर्ण अछि; ओकर विषयानुसार सूची बनाय पाठककेँ एक संभावित संग्रहक संरचना देब एहि आलेखक ठोस अनुसन्धानात्मक उपलब्धि अछि (पृ. ९०–९५)।

आलोचनात्मक निबन्धक वैचारिक आग्रह

‘मैथिली गल्पक परिस्थिति ओ परिणाम’, ‘आधुनिक मैथिली काव्यक वाद-परम्परा’, ‘आधुनिक मैथिली काव्य: प्रेरक शक्ति आ प्रवृत्ति’, ‘आलोचना दायित्वक बोध’, ‘मैथिली कथाक भूमि-सन्धान’ आ विद्यापति विषयक निबन्ध पर लेखक विचार करैत छथि। मायाबाबूक आग्रह नव वस्तु, नव मानवमूल्य, नव प्रतीक आ नव अभिव्यक्ति-पद्धतिक दिशामे अछि। ‘अभिव्यंजना’

पत्रिकाक आरम्भिक सम्पादकीयसँ उद्धृत विचार लेखकक काव्यदर्शनक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बनैत अछि।

आधुनिक मैथिली काव्यक वाद-परम्परा सम्बन्धी निबन्धमे हिन्दी आलोचनाक नामावली यान्त्रिक ढंगसँ अपनायबापर प्रश्न उठाओल गेल अछि। मायाबाबू मैथिलीक अनुभवसँ मर्यादावाद, सांस्कृतिवाद, प्रकृतिवाद आ अभिव्यंजनावाद सन कोटिक प्रस्ताव करैत छथि (पृ. ९६)। एहि वर्गीकरणक बौद्धिक महत्त्व ई अछि जे साहित्यक इतिहास अपन अनुभव पर आधारित अवधारणा सँ लिखल जाय। किन्तु चारू कोटिक अन्तःसीमा, ऐतिहासिक उपयोगिता आ रचनाकारक समूहीकरणक प्रत्यक्ष परीक्षण बिना ओकरा पूर्ण सिद्ध वर्गीकरण मानल उचित नहि होयत।

संस्मरण आ आन्दोलनक गद्य

लेखक साहित्यिक आलोचनासँ आगू बढ़ि मायाबाबूक संस्मरणपरक, आन्दोलनपरक, भूमिका-लेखनपरक आ शुभाशंसात्मक गद्यक विवेचन करैत छथि। ‘हमर मंच यात्रा’मे साहित्यिक मंच, नौकरी, सार्वजनिक जीवन आ लेखकक आत्मकथा-भावक मेल अछि। ‘मैथिली संघर्ष अभियान’ सम्बन्धी आलेखमे भाषा-आन्दोलनक सहभागी दृष्टि भेटैत अछि। ‘पुस्तकालय आन्दोलन’मे समारोहक खर्चकेँ पुस्तकालय आ प्रकाशन-संरचना दिस लगयबाक व्यावहारिक प्रस्ताव अछि। एहि रचना सभमे निबन्ध सौन्दर्यक वस्तु मात्र नहि, भाषिक सार्वजनिक क्षेत्रक कार्यमूलक साधन अछि (पृ. ९८–१००)।

मिथिलाक राजनीतिक व्यक्तित्वक स्मरणपरक निबन्धमे लेखक भाषाक आलङ्कारिक बिम्ब, गतिशील वाक्य आ ऐतिहासिक व्यक्तिक स्तवनक चर्चा करैत छथि। एतय समालोचकक कर्तव्य स्तुति आ प्रामाणिक इतिहासक भेद रेखाङ्कित करब सेहो अछि। योगानन्द झा रसात्मक भाषाशैलीकेँ उचित स्थान दैत छथि, मुदा व्यक्तिक मूल्याङ्कनमे आलोचनात्मक दूरीक प्रश्न बाँचल रहैत अछि।

निबन्धक सन्दर्भ, पत्रिका, वर्ष आ पृष्ठक सहित तैयार सूची भविष्यमे पाठ-सम्पादनक आधार बनि सकैत अछि। एहि आलेखमे लेखक स्वयं मायाबाबूक बिखरल निबन्धक समग्र संकलनक माँग करैत छथि। ई माँग शोधपरक रूपेँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: मूल निबन्ध उपलब्ध नहि रहने कथाकारक विचार-विकासक इतिहास अपूर्ण रहत।

आलेखक शक्ति विवेच्य विधाकेँ ‘गौण’ मानि उपेक्षित नहि करब आ लेखकक बौद्धिक-सामाजिक गतिविधिक संग जोडब अछि। सीमा ई जे प्रायः अनुमोदनात्मक वाक्यक बीच निबन्धक तर्कक त्रुटि, आन्तरिक विरोध, पुनरावृत्ति आ भाषिक परिवर्तनक अधिक पाठालोचनात्मक चर्चा चाही। तथापि ई आलेख मैथिली निबन्धक सामग्री-संग्रह आ वर्गीकरणक ठोस आरम्भ मानल जा सकैत अछि।

०९ | विदितजीक ‘ग्राम–गणराज्य’मे समाज-दर्शन

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १०२–१३६

यथार्थवाद आ आदर्शवादक बीच उपन्यासक स्थान

‘ग्राम–गणराज्य’ सम्बन्धी आलेख संग्रहक गद्य-विभागमे सभसँ विस्तृत अछि। लेखक पहिने यथार्थवादक नग्न सामाजिक अवलोकन आ आदर्शवादक नैतिक आकांक्षाक भेद स्थापित करैत छथि। विद्यानाथ झा ‘विदित’क उपन्यासकेँ एहने एक कृतिमे राखल गेल अछि जाहिमे मिथिलाक त्रुटि सभ निस्सङ्कोच सोझाँ अनल गेल अछि, मुदा कथा अन्ततः लोककल्याणक सम्भावना खोजैत अछि। समीक्षकक अनुसार ‘ग्राम–गणराज्य’ विदितजीक पन्द्रहम उपन्यास अछि आ जनवरी २०१३ मे प्रकाशित भेल; हुनक उपन्यास-लेखनक पूर्ववृत्त सेहो प्रस्तुत अछि (पृ. १०२–१०४)।

सत्रह ‘उल्लास’क रचनात्मक संयोजना

उपन्यासक सत्रह खण्डकेँ ‘उल्लास’ कहल गेल अछि। प्रारम्भिक तीन उल्लास मूल कथानक आ यात्राक आधारभूमि तैयार करैत अछि; आगूक प्रसंग सभमे विभिन्न जीवात्मा मिथिलाक समाज देखैत-भोगैत छथि; अन्तिम सत्रहम उल्लास अनुभवक समन्वय दिस अबैत अछि (पृ.

१०४–१०७)। लेखक एहि वृहदाकार संरचनाक क्रमशः विश्लेषण करैत छथि। एतए प्रत्येक उल्लास स्वतन्त्र घटना, सामाजिक केस-स्टडी आ समग्र मिथिलाक चित्रक एक अंश बनैत अछि।

समाजक आत्मालोचनाक लेल बाहरी दृष्टिक उपयोग एहि उपन्यासक महत्त्वपूर्ण शिल्प होइत अछि। अरुणाचल, किन्नौर, केरल, पंजाब, कश्मीर, बंगाल आ अन्य प्रदेशक सम्बद्ध जीवात्माक अनुभवक माध्यमसँ मिथिलाक लोकजीवनकेँ आन प्रदेशक अनुभवसँ नपल जाइत अछि। एहि पद्धतिमे यात्रा आ संवाद सामाजिक रोगक सूची बनयबाक उपकरण बनैत अछि। मुदा बहुधा कथानक-गतिशीलतासँ बेसी विचारक प्रतिपादन प्रधान भऽ जायत तँ उपन्यास निबन्धात्मक होयबाक जोखिममे पड़ैत अछि; एहिठाम साहित्यिक शिल्प आ समाजोपदेशक बीच तनाव आलोचनाक प्रमुख प्रश्न थिक।

नारी, परिवार आ सामाजिक प्रतिरोध

चतुर्थ उल्लास सम्बन्धी विश्लेषणमे रूसल स्त्रीलोकनिक लेल शरण, संवाद आ पुनर्मिलनक व्यवस्था बनबैत महिलाक कथा अछि। एहि चित्रक माध्यमसँ उपन्यास पारिवारिक क्रोध, अपमान आ आत्मघाती आवेशकेँ सामूहिक समाधानक विषय बनबैत अछि। पञ्चम उल्लासमे विवाह-व्यवस्था आ दहेजसँ उत्पन्न विसंगति पर चर्चा अछि। स्त्रीक मान-सम्मानकेँ घरक मर्यादाक सीमामे नहि, सामाजिक न्याय आ स्वाधीन जीवनक मूल्यक रूपमे पढ़ब एहि प्रसंगक महत्वपूर्ण सम्भावना अछि।

कथाक किछु उदाहरणमे शिक्षित अथवा सक्रिय महिलाक प्रशंसा उपस्थित अछि। तथापि नारीक प्रश्नकेँ केवल परिवारमे सामंजस्य पुनर्स्थापना धरि सीमित करब पर्याप्त नहि। सामाजिक सुरक्षा, निर्णय-स्वाधीनता आ अर्थसत्ता परोक्ष रूपेँ उठैत अछि; एहि तीनूकेँ बड़ विस्तारसँ जाँचल जाय तँ उपन्यासक समाज-दर्शनक सीमा आ उपलब्धि अधिक स्पष्ट होयत।

‘बुड़बक होटल’: व्यवसाय, विज्ञापन आ विडम्बना

छठम उल्लासमे वैकुण्ठक ‘बुड़बक होटल’क कथा विशेष मार्मिक व्यंग्यरूपक बनैत अछि। चालकक रूपमे बितल समय, प्रसिद्ध नर्तकी मल्लिकासँ भेट, व्यवसाय आरम्भ, होटल नामकरण, बढ़ैत प्रतियोगिता, बेटासभक होटल-बँटवारा आ विज्ञापनसँ ग्राहक आकर्षित करबाक उपाय सभ आर्थिक जीवनक बदलैत रूप प्रस्तुत करैत अछि। लेखक पृष्ठ ११४–११८क आसपास एहि कथाकेँ मिथिलामे उद्यमिता, व्यापारक चतुरता, पूँजी-निवेश आ प्रचारक प्रभावक प्रसंगमे परखैत छथि।

‘बुड़बक’ शब्दक अपमानसूचक अर्थक व्यवसायिक ब्राण्ड बनि जायब ई सामाजिक भाषाविज्ञानक दृष्टिसँ सेहो रोचक अछि। हास्यप्रद नामकेँ बाजार मूल्य प्राप्त होइत अछि। एहि कथा पर अधिक विश्लेषणसँ श्रमक मूल्य, रोजगारक अनौपचारिकता आ विज्ञापन-समाजक बदलैत नीतिक प्रश्न उठि सकैत अछि।

पलायन, उपभोक्तावाद आ साम्प्रदायिकता

आगूक उल्लास सभमे प्रवासी मजदूरक शोषण, मिथिलासँ युवाक पलायन, धार्मिक आडम्बर, प्रशासनिक अनाचार, उपभोक्तावादी जीवन, पारिवारिक स्वार्थ, जातीय विभाजन आ राजनीतिक लोभ चित्रित अछि। लेखक प्रसंगानुसार मिथिलाक प्राचीन विद्या-परम्परा, उदयनाचार्य, कुमारिल भट्ट, वाचस्पति मिश्र आ जनक-सीताक स्मृतिक उपयोग द्वारा अतीतक समालोचनात्मक स्मरण करैत छथि। ई स्मरण वर्तमानक दोष देखयबाक नैतिक कसौटीक रूपमे अबैत अछि, मुदा ईहो ध्यान देबाक अछि जे अतीतक गौरवक सूची वर्तमानक समस्याक व्यावहारिक समाधानक स्थान नहि लऽ सकैत अछि।

उपन्यासमे श्रमक प्रतिष्ठा एक महत्त्वपूर्ण सूत्र अछि। सीताक प्राप्तिक जनक-प्रसंगकेँ लेखक कृषि-श्रमक नैतिक महत्त्वसँ जोड़ैत छथि। एकर माध्यमसँ ‘मिथिला केओक कृपापर नहि, अपन श्रमपर ठाढ़ हो’ सन आशय प्रकट होइत अछि। सामूहिक प्रगति लेल स्वार्थ, जड़ता,

झूठ प्रतिष्ठा आ निःक्रियता छोड़बाक आवश्यकता कथाक अलग-अलग प्रसंगमे रेखाङ्कित होइत अछि।

मातृभाषा आ ग्राम-गणराज्यक आदर्श

समापन दिशामे जाति, धर्म, वर्ण, ईर्ष्या, मिथ्याभिमान, ठकैती, अपव्यय आ संवेदनहीनतासँ मिथिलाक भविष्यक बन्धनक चित्र प्रस्तुत अछि। लेखकक निष्कर्ष अनुसार मैथिली भाषा-साहित्यक समुन्नयन आ सामाजिक समरसता ग्रन्थक समाधानमूलक क्षितिज पर अवस्थित अछि (पृ. १३२–१३६)। ई उपन्यासक बहु-प्रसंगीय संसारकेँ एक सांस्कृतिक-नैतिक प्रस्तावमे बाँधैत अछि।

एहिठाम एक आलोचनात्मक प्रश्न आवश्यक अछि—केवल मातृभाषाक उन्नयनसँ सामाजिक-आर्थिक अन्याय मेटत की? भाषा सामूहिक आत्मसम्मान आ संवादक आधार जरूर थिक, मुदा भूमि, रोजगार, शिक्षा, जातिगत सत्ता आ सरकारी जवाबदेहीक समस्याक अपन संस्थागत पक्ष अछि। उपन्यासमे भाषाप्रेमकेँ राजनीतिक-अर्थिक कार्यक्रमक संग कतेक सघनता सँ जोड़ू, ताहि बातपर विमर्शक आवश्यकता अछि।

दीर्घ आलेखक मूल्याङ्कन

लेखक प्रत्येक उल्लासक कथासार विस्तारसँ प्रस्तुत करैत छथि; एहि कारणेँ मूल उपन्यास नहि पढ़निहार पाठककेँ सामाजिक प्रसंगक व्यापक परिचय भेटैत अछि। ई आलेखक उपयोगी पक्ष अछि। मुदा कथा-विवरणक विस्तार कतिपय ठाम आलोचनात्मक तर्ककेँ पाछाँ धकेलैत अछि। औपन्यासिक समय, कथावाचक, चरित्रनिर्माण, संवादक स्वाभाविकता, भाषाक विविध स्तर, अन्तिम आदर्शक साहित्यिक विश्वसनीयता आ उपन्यासक लम्बाइ-सम्बन्धी शिल्पगत अनुशासनपर स्वतंत्र विमर्श कएल जाय तँ समीक्षा अधिक विश्लेषणात्मक भऽ सकैत छल।

तथापि एहि आलेखकेँ मिथिलाक आत्मालोचनाक महत्त्वपूर्ण पाठ मानल जा सकैत अछि। ग्रन्थकार ‘ग्राम–गणराज्य’केँ मिथिलाक लोकसमाजक नैतिक एक्स-रे जकाँ पढ़ैत छथि; अपन

क्षेत्रक प्रति अनुरागक अर्थ ओकर दोष सभ पर मौन रहब नहि—ई एहि अध्ययनक सभसँ महत्वपूर्ण शिक्षा अछि।

१० | आचार्य ‘सुमन’क दैनिक ‘स्वदेश’

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १३७–१४७

मैथिली दैनिकक इतिहासक एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग

एहि आलेखमे योगानन्द झा साहित्यकारक मूल्याङ्कनसँ पत्रकारिताक संस्थागत इतिहास दिस प्रवेश करैत छथि। मैथिलीमे दैनिक समाचारपत्रक दुर्लभ परम्पराक विवेचन करैत ओ आचार्य सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क ‘स्वदेश’केँ मातृभाषाक सार्वजनिक सम्भावनाक साहसिक प्रयोग मानैत छथि। समकालीन मैथिली दैनिकक स्थितिपर ग्रन्थकारक टिप्पणी मूल आलेखक लेखनकालसँ सम्बन्धित अछि; ओकरा २०२६ क वर्तमान समाचारपत्रक पूर्ण सूची मानल नहि जा सकैत अछि (पृ. १३७)।

पहिल प्रयोग: भाषा-चेतना आ लोकसमाचार

ग्रन्थमे १९५५ क ‘स्वदेश’क अङ्क, सम्पादकीय, कविता, स्थानीय सूचना आ व्यंग्य-स्तम्भक उदाहरण देल गेल अछि। पहिल प्रयोगक स्थगन २७ दिसम्बर १९५५ सँ भेल बताओल गेल अछि। पत्रमे दरभंगा बाजारभाव, रेलक समय, खेलक समाचार, चलचित्रसमाचार, साहित्यिक टिप्पणी आ जनोपयोगी सूचना छपबाक विवरण पढ़ि स्पष्ट होइत अछि जे ‘स्वदेश’ केवल साहित्य-पत्र नहि छल; ओ मैथिलीमे नागरिक जीवनक सम्पूर्ण सूचना-विनिमयक प्रयोग छल (पृ. १३८–१४१)।

एहि पत्रक व्यंग्यलेखन विशेष उल्लेखनीय अछि। ग्राम्य बोली, कहबी, लोकसुलभ वाक्यगति आ परिहासपूर्ण पात्रक माध्यमसँ पत्र मैथिलीक ‘अखबारी’ सम्भावना विकसित करैत छल। लेखक ठीक देखैत छथि जे भाषा-मानकीकरणक अर्थ केवल संस्कृतनिष्ठ सम्पादकीय नहि; लोकक बोलीकेँ सम्मानपूर्वक सार्वजनिक मुद्रित रूप देब सेहो अछि। एना लोकभाषा आ जनपत्रकारिता परस्पर एक-दोसराकेँ विकसित करैत छथि।

दोसर प्रयोग: आर्थिक आधारक प्रश्न

आलेखक परवर्ती भागमे ‘स्वदेश’क पुनर्प्रयासक विवेचन अछि। ‘स्वदेश गोष्ठी’क उद्यम, सम्पादकीय सहयोगक माँग, पत्रक आकार आ नियमिततापर आर्थिक बाधाक प्रभाव, मुद्रण-व्यवस्था, कामगार आ वितरण-संरचनाक कठिनता सभक उल्लेख अछि। किछु अंकमे सम्पादकीयक अभाव आ अनियमितता देखाबैत लेखक केवल भावनात्मक महत्त्व नहि, संस्थागत दुर्बलताक कारण सेहो देखबैत छथि (पृ. १४२–१४७)।

पत्रक लोकमत, स्थानीय, विश्वमंच, व्यंग्य, विचार-चर्चा आदिक स्तम्भ समाचारपत्रक बहुस्तरीय रूप बनबैत छल। चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क व्यंग्य-स्तम्भक विविध शीर्षक आ मैथिली लेखकसभक रचनाक चर्चा पत्रकेँ एक साझा बौद्धिक चौक बनबैत अछि। पत्रमे छपल विभिन्न लेखकक प्रथम अथवा पूर्वप्रकाशित सामग्रीक उल्लेख भविष्यक साहित्येतिहासक लेल महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ अछि, मुदा ओकर कालक्रमक अन्तिम स्थापना मूल अंकसभकेँ मिलाय कऽ करबाक चाही।

शोधपद्धतिक उपलब्धि

आलेखक विशिष्टता पृष्ठ-सामग्रीक विवरण सँ पत्रक भाषिक आ सार्वजनिक कार्यक्षेत्रक पुनर्निर्माणमे अछि। ‘दैनिक’ शब्दक अर्थ केवल रोज छपब नहि, रोजक सामाजिक चेतनाकेँ मातृभाषामे उपस्थित करब मानल गेल अछि। लेखकक दृष्टिमे ‘स्वदेश’ अपन विरासत छोड़ि गेल, मुदा आर्थिक संस्थाक अभाव ओकर स्थायित्व रोकलक। ई निष्कर्ष साहित्यिक श्रम आ पत्रकारीय संरचनाक बीचक अन्तर याद करबैत अछि।

अधिक अनुसन्धानक लेल सभ उपलब्ध अंकक अनुक्रमणिका, प्रकाशनक तारीख, वितरण-क्षेत्र, संपादकीय जिम्मेवारी, पाठकीय पत्र, विज्ञापन आ लेखकीय मानदेयक व्यवस्थित सूची आवश्यक होयत। एहि विवरण बिना पत्रक सामाजिक पहुँच सम्बन्धी अनुमान सावधानीपूर्वक करबाक चाही। ताहिओ ‘स्वदेश’ सम्बन्धी आलेख मैथिली सार्वजनिक पत्रकारिता-अनुसन्धानक एक महत्त्वपूर्ण परिचयात्मक-समीक्षात्मक स्रोत अछि।

११ | मैथिलीक भाषातात्त्विक अध्ययन आ सुभद्र झा

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १४८–१५४

स्वभाषाक संरचनागत स्वतन्त्रताक प्रश्न

एहि आलेखक केन्द्र डॉ. सुभद्र झाक भाषावैज्ञानिक कार्य अछि, विशेषत: ‘The Formation of the Maithili Language’। लेखक मैथिलीकेँ केवल भावनात्मक आत्मपरिचयक आधारपर नहि, ध्वनि, रूप, शब्द, व्याकरणिक कोटि आ भाषा-सम्बन्धक ठोस विश्लेषणपर स्वतन्त्र भाषा सिद्ध करबाक बौद्धिक प्रयत्नक रूपमे एहि ग्रन्थकेँ राखैत छथि। सुभद्र झाक समयक भाषावर्गीकरण सम्बन्धी तर्क आ अंग्रेजीमे प्रस्तुत हुनक मतक उल्लेख लेखकक पक्षक आधार अछि (पृ. १४८–१५०)।

भाषा-परिवार आ तुलना

ग्रन्थकारक अनुसार सुभद्र झा मैथिलीक भौगोलिक विस्तार, उपभाषा, प्रारम्भिक अभिलेख, लिपि, भाषिक विकास आ भोजपुरी, मगही, बंगला, असमी, उड़िया, नेपाली आदि संग तुलना करैत छथि। एहि तुलनाक मूल प्रश्न अछि—कुन गुण साझा ऐतिहासिक स्रोतक देन अछि आ कुन गुण मैथिलीक विशिष्ट व्याकरणिक संगठन देखबैत अछि? भाषाविज्ञानमे राजनीतिक नामकरण आ संरचनागत वर्गीकरण अलग तर्क-पद्धति अछि; लेखकक उद्धृत विचार एहिएँ महत्त्वपूर्ण अछि जे मैथिलीक स्वतन्त्रता भाषिक रूपरचना सँ प्रतिपादित कएल गेल अछि।

मुदा इतिहासक भाषावर्गीकरण समयक संग बदलैत रहल अछि; ताहि कारणेँ पुरान वर्गीकरणकेँ आधुनिक भाषाविज्ञानक अन्तिम सर्वसम्मति मानल नहि जा सकैत अछि। एहि आलेखक योगदान सुभद्र झाक तर्कक प्रतिपादन आ मूल्याङ्कनमे अछि, न कि प्रत्येक ऐतिहासिक वर्गीकरणक आजुक स्थिति घोषित करबामे।

शब्दरचना आ प्रत्ययक प्रश्न

लेखक सुभद्र झाक शब्दरचनात्मक उदाहरण विशेष रुचिसँ दैत छथि। ‘ठी’, ‘औटी’, ‘औरी’ सन शब्दान्तक ऐतिहासिक विकास, कथित मूल काष्ठ, पट्टिका, वटिका आदिक संग तुलना आ

‘बे-’, ‘बद-’, ‘हेड-’ सन उपसर्गक प्रवेश भाषिक सम्पर्कक उदाहरण रूपमे प्रस्तुत अछि (पृ. १५०–१५१)। एतय दू स्तर अलग राखब जरूरी अछि—मैथिलीमे रूप सभक वर्तमान प्रयोग प्रत्यक्ष भाषिक तथ्य थिक; ओकर प्राचीन व्युत्पत्ति अलग ऐतिहासिक परिकल्पना अछि, जकर समर्थन लेल ध्वनिपरिवर्तन आ प्राचीन पाठसाक्ष्य चाही।

सुभद्र झा द्वारा संज्ञाक लघु, गुरु आ गुरुतम रूपक चर्चा मैथिलीक रूपात्मक समृद्धि देखबैत अछि। एहि रूप सभक प्रयोग प्रसंग, सम्मान, आकार, सामीप्य आ बोलीभेदसँ प्रभावित होइत अछि; एकटा रूपक समस्त शब्दपर अनिवार्य विस्तार मानब ठीक नहि। लेखक सुभद्र झाक सावधानीकेँ उल्लेख करैत छथि। एहि अध्यायमे व्याकरणक उदाहरण केवल पदवर्गक सूची नहि, मैथिली समाजक भाषिक जीवनक प्रमाण बनैत अछि।

‘संस्कृतक साँच’क आलोचना

आलेखक उत्तरभागमे मैथिलीक व्याकरणकेँ संस्कृत वा हिन्दी व्याकरणक ढाँचामे जबरदस्ती ढारबाक आलोचना अछि। भाषा-विवेचनक मूल आधार भाषाक वास्तविक प्रयोग होयबाक चाही, पूर्वनिर्धारित शास्त्रीय कोटि नहि—ई एहि खण्डक प्रभावशाली निष्कर्ष अछि। एहि विचारक समकालीन प्रासङ्गिकता उच्च अछि, कारण भाषा-शिक्षण, कोश-निर्माण, वर्तनी-निर्देशन आ संगणकीय भाषासंसाधन सभमे स्रोत-भाषाक विशिष्ट व्यवहार सुरक्षित रखब आवश्यक अछि।

समीक्षा आ भविष्यक दिशा

एहि आलेखमे लेखक भाषाशास्त्रीय स्वाधीनता आ सांस्कृतिक आत्मसम्मानक सम्बन्ध प्रकट करैत छथि। समीक्षाक सीमा ई जे तुलनात्मक ध्वनितालिका, क्रियारूपक पूर्ण प्रतिमान, क्षेत्रीय उपभाषाक वास्तविक आँकड़ा आ व्युत्पत्तिक प्रतिस्पर्धी मतक विस्तारसँ परीक्षण एहि संक्षिप्त आलेखमे सम्भव नहि भेल अछि। ताहि कारणेँ ई लेख सुभद्र झाक योगदानक प्रमाणयुक्त परिचय मानल जायत, हुनक सम्पूर्ण भाषाविज्ञानक आधुनिक पुनर्मूल्याङ्कन नहि।

एहिमे उठाओल मूल पद्धतिगत आग्रह स्थायी अछि: मैथिलीकेँ ओकरे वास्तविक ध्वनि, रूप, वाक्य आ सामाजिक व्यवहारक आधारपर बुझल जाय।

१२ | मैथिली साहित्यक विकासमे जयकान्त मिश्रक योगदान

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १५५–१६६

साहित्येतिहाससँ सक्रिय भाषा-आन्दोलन धरि

डॉ. जयकान्त मिश्र सम्बन्धी आलेख साहित्येतिहास, अनुसन्धान आ सार्वजनिक आन्दोलनक सम्मिलित अध्ययन अछि। लेखक हुनक शिक्षाजीवन, विश्वविद्यालयीय अनुसन्धान, मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक प्रयत्न आ साहित्यिक संस्थासँ सम्बन्धक विवरण दैत छथि। अंग्रेजीमे रचित ‘A History of Maithili Literature’क महत्त्व एहि दृष्टिसँ विश्लेषित अछि जे मैथिली साहित्यक प्राचीनता, सातत्य आ व्यापकता बाहरी विद्वत् जगत धरि पहुँचबाक माध्यम भेटल (पृ. १५५–१६०)।

स्रोत-संग्रह आ इतिहास-लेखनक व्यावहारिक श्रम

एहि आलेखमे साहित्येतिहासकेँ कवि-नामक सूची नहि, अभिलेख खोजब, पाठ चिन्हब, कालक्रम निर्धारित करब, भाषाक बदलाव बुझब आ साहित्यक धारा वर्गीकृत करबाक सामूहिक बौद्धिक श्रम मानल गेल अछि। लेखक पूर्ववर्ती साहित्येतिहासक प्रयासक उल्लेख करैत जयकान्त मिश्रक ग्रन्थकेँ अधिक समेकित, तुलनात्मक आ सन्दर्भयुक्त मानैत छथि। एहि निर्णयकेँ सावधानीसँ पढ़ब चाही: ग्रन्थकारक मूल्याङ्कनमे ओकर स्थान अत्यन्त उन्नत अछि, मुदा सम्पूर्ण साहित्येतिहासक तुलनात्मक परीक्षण अलग विस्तृत कार्य थिक।

जयकान्त मिश्रक साहित्येतिहासमे अंग्रेजी माध्यमक उपयोग सम्बन्धी लेखकक चर्चा सांस्कृतिक राजनीति सँ जुड़ैत अछि। अन्तरराष्ट्रीय शैक्षणिक संवादमे अंग्रेजीक माध्यम मैथिलीक परिचय बढ़ा सकैत अछि, मुदा मातृभाषामे वैचारिक शब्दावलीक विकास सेहो अनिवार्य अछि। एहि द्वन्द्वमे भाषाबोधक द्विस्तरीय रणनीति उभरैत अछि—बाह्य पाठक धरि पहुँचब आ आन्तरिक पाठक-संस्कृति बनायब।

भारतीय भाषिक संस्थामे मैथिलीक स्थान

लेखक भारतीय साहित्यिक संस्थामे मैथिलीक प्रतिष्ठाक लेल जयकान्त मिश्रक पत्राचार, दलील आ सार्वजनिक उद्यमक विशेष महत्त्व बतबैत छथि। १९६५ मे साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिली मान्यता सम्बन्धी प्रसंगक उल्लेख आ जवाहरलाल नेहरूक मत सम्बन्धी उद्धरण ग्रन्थक भीतर उपस्थित अछि (पृ. १६३–१६५)। ई प्रसंग मैथिलीक संस्थागत इतिहासक महत्त्वपूर्ण सूत्र अछि; तथापि शासकीय निर्णयक पूर्ण इतिहास स्थापित करबाक लेल साहित्य अकादेमीक मूल अभिलेख, पत्राचार आ सम्बद्ध अन्य कार्यकर्ताक योगदानक स्वतन्त्र जाँच अपेक्षित अछि। लेखक स्वयं एक सामूहिक आन्दोलनक श्रेयकेँ व्यक्ति-विशेषमे सीमित करबाक प्रश्न उठबैत छथि; ई पद्धतिगत सावधानी स्वागतयोग्य अछि।

शिक्षण, सामाजिक पहल आ भाषिक सम्मान

आलेखमे प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीक उपयोग, मैथिली महिला विद्यापीठ, आकाशवाणी केन्द्र आ भाषिक आन्दोलनक विविध प्रसंगक उल्लेख अछि। एहिसँ जयकान्त मिश्रक व्यक्तित्व पुस्तकालयमे स्थित अनुसन्धानकर्तासँ बहिर्गत सामाजिक कार्यकर्ता रूपमे प्रकट होइत अछि। मातृभाषाक गौरवक वास्तविक अर्थ ओकर शिक्षण, प्रकाशन, संचार आ प्रशासनिक जीवनमे उपस्थिति अछि—ई सन्देश आलेखमे बारम्बार प्रकट होइत अछि।

आलोचनात्मक संतुलन

एहि आलेखक महत्त्व एकटा बौद्धिक जीवनीकेँ संस्थागत इतिहासक प्रश्नसँ जोड़ब अछि। मुदा व्यक्तिक साधना, आन्दोलनक सामूहिक सफलता आ राज्यक निर्णयक कारणक बीच प्रमाणक स्तर अलग-अलगरूपेँ राखब आवश्यक अछि। लेखकक प्रशंसात्मक उत्साह अनेक ठाम न्यायसंगत उपलब्धिपर आधारित छनि, मुदा विरोधी मत, समयक अन्य प्रमुख अभियानकर्ता आ संस्थागत दस्तावेजक पुनर्समीक्षा सँ लेख अधिक बहुकोणीय बनत।

ताहिओ जयकान्त मिश्रक मूल्याङ्कन एहि बातकेँ स्पष्ट करैत अछि जे मैथिली साहित्यक आधुनिक विकास केवल कृति रचबाक इतिहास नहि, अपन भाषा लेल ज्ञान-व्यवस्था आ सार्वजनिक मान्यता अर्जित करबाक इतिहास सेहो अछि।

१३ | सजीवनी समालोचना: रामदेव झा

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: १६७–२०८

समालोचनाक एक विशिष्ट रूपक अवधारणा

ग्रन्थक सभसँ विस्तृत आलेख ‘सजीवनी समालोचना: रामदेव झा’ अछि। डॉ. रामदेव झाक व्यक्तित्वक परिचय, साहित्यिक कृतित्व, पुरान मैथिली पाठक खोज आ सम्पादन, शास्त्रीय विवेचन तथा लेखक-केन्द्रित अनुसन्धानी समालोचनाक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत अछि। ग्रन्थकार समालोचनाक एहन पद्धति पहिचानैत छथि जाहिमे रचनाकारक जीवन, समकालीन परिवेश, अभिलेख, उपलब्ध पाण्डुलिपि, कृतिसूची आ कृतिक सौन्दर्य—सभ एक-दोसराकेँ आलोकित करैत अछि। ‘सजीवनी’क अर्थ केवल जीवनकथा नहि; पाठक व्याख्याकेँ जीवन-सन्दर्भ दऽ सजीव बनायब अछि (पृ. १६७–१६९)।

डॉ. रामदेव झाक निधन १८ मार्च २०२१ केँ भेल, आ पोथीक समर्पण हुनक स्मृतिमे अछि। ग्रन्थकारक व्यक्तिगत कृतज्ञता एहि आलेखक स्वरतन्तुमे विद्यमान अछि; एहि कारणेँ कृतित्वक मूल्याङ्कनमे आत्मीयताक स्पष्ट अंश अछि। ई आत्मीयता अनुसन्धानी जानकारीक स्रोत सेहो बनि सकैत अछि, मुदा आलोचनात्मक निर्णय लेल ओहिसँ दूरी सेहो आवश्यक अछि।

पुराना पाठक पुनराविष्कार आ सम्पादन

लेखक रामदेव झाक ‘नन्दीपति गीतिमाला’, ‘रामविजय नाट’, ‘हरगौरी विवाह’, ‘कुञ्जविहार’, ‘दशावतार नृत्यम्’, ‘षोडशगीतम्’, ‘मुदित कुवलयाश्व’ आदि पुरान गीत-नाट्य सामग्रीक सम्पादन-प्रकाशनक वर्णन करैत छथि। एहि कार्यक ऐतिहासिक उपयोगिता गहन अछि: उपलब्ध पाठक स्वच्छ प्रतिलिपि बनायब, रचनाकार निर्धारित करब, पाण्डुलिपिक सम्बन्ध

पहचानब आ नाट्य-परम्पराक वास्तविक रूप समझब साहित्येतिहासक आधारशिला छथि। केवल आलोचनाक सामान्य निष्कर्ष नहि, मूलसामग्रीक खोज स्वयं ज्ञानक विस्तार अछि।

शंकरदेव आ असम–मिथिला सम्बन्ध

असमक शंकरदेव सम्बन्धी विवेचनमे रामदेव झाक ‘रामविजय’क भूमिकामे कृत व्याख्याक समीक्षा अछि। वैष्णव धार्मिक आन्दोलन, अंकीय नाटक, मैथिलीमिश्रित भाषिक प्रयोग आ मिथिलाक नाट्यपरम्परासँ असमक सम्बन्ध पर विचार कएल गेल अछि (पृ. १७०–१७२)। एहि सम्बन्धक अध्ययन साहित्यक सीमापार संचरणक प्रश्न उठबैत अछि। भाषा-रूपक मिश्रणकेँ ‘अशुद्धता’ नहि, ऐतिहासिक रचनात्मक सम्पर्कक संकेतक रूपमे पढ़ब आवश्यक अछि।

तथापि असमिया, ब्रजबुलि आ मैथिलीमिश्रित नाट्यभाषाक परस्पर वर्गीकरण जटिल ऐतिहासिक समस्या अछि। एहिठाम पुरान पाठ, स्थानीय परम्परा आ आधुनिक भाषावैज्ञानिक मतकेँ अलग-अलग जाँचल जाय तँ दावा अधिक प्रमाणवान भऽ सकैत अछि। ग्रन्थकारक विवेचन एहि अध्ययनक उपयोगी प्रवेशद्वार अछि।

जगज्ज्योतिमल्लक कृतित्व आ लेखकीयता

जगज्ज्योतिमल्लक नाट्य-गीत सम्बन्धी रामदेव झाक अनुसन्धानक चर्चा आलेखक उल्लेखनीय अंश अछि। ‘मुदित कुवलयाश्व’केँ वंशमणिक कृति मानबाक पूर्व मतक परीक्षणमे नाटकक प्रस्तावनाक एक वाक्यांशकेँ पुनः अर्थ दैत ग्रन्थकारक अनुसार रामदेव झा कृतिकार निर्धारित करैत छथि (पृ. १७३–१७५)। ई पाठकेन्द्रित ऐतिहासिक तर्कक उदाहरण अछि। लेखकीयता केवल नाम देखलासँ स्थापित नहि होइत; प्रस्तावना, सूत्रधारक कथन, नाटकक अन्य अंश आ सम्बद्ध कृतिक साक्ष्य मिलायब आवश्यक अछि।

नाटकक अङ्क-विभाजन, जमनिका, प्रस्तावना, रस-योजना, प्रवेश, अभिनय-शैली आदिक शास्त्रीय आधारपर विवेचन रामदेव झाक आलोचनात्मक बहुश्रुति देखबैत अछि। योगानन्द झा शास्त्रीय सिद्धान्तक प्रयोगकेँ इतिहासलेखनक संग जोड़ैत छथि; एही मेलक कारणेँ आलोचना विवरणमात्र नहि रहि कृतिक कलात्मक व्यवहारक विश्लेषण बनैत अछि।

जगत्प्रकाशमल्ल आ नाट्य-गीतक वर्गीकरण

आलेखमे जगत्प्रकाशमल्लक गीत, नाटक, रचनास्रोत, रस-विन्यास आ गीतविधाक वर्गीकरणक चर्चा अछि (पृ. १७७–१८०)। ग्रन्थकार रामदेव झाक गीत-वर्गीकरण, विशेषतः नाट्यगीत आ मुक्तकगीतक भेद, आ शृङ्गार तथा भक्तिक भावभूमिक विवेचन पर ध्यान दैत छथि। एहिठाम कृतिक इतिहासकेँ संगीत, प्रस्तुति आ काव्यरूपक दृष्टिसँ देखबाक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि। गेयपदक केवल मुद्रित पाठक आधारपर पूर्ण मूल्याङ्कन कठिन अछि; अभिनय-परम्परा, राग-सन्दर्भ आ उपलब्ध संगीतपरम्पराक जानकारीसँ अध्ययन आर समृद्ध भऽ सकैत अछि।

नन्दीपति आ वंशावलीसँ कालनिर्धारण

नन्दीपति सम्बन्धी आलोचनामे नाट्य-प्रस्तावनाक वंश-सन्दर्भ आ पञ्जी-प्रबन्धक सहायता सँ पूर्व स्वीकृत वंशक्रमक परीक्षणक वर्णन अछि (पृ. १८१–१८३)। एहि उदाहरणमे समालोचकक काम सौन्दर्य-निर्णय धरि सीमित नहि; इतिहासक आधाररूप अभिलेखक अर्थनिर्धारण अछि। मुदा पञ्जी, वंशावली, साहित्यिक प्रस्तावना आ ऐतिहासिक कालक्रम सदा परस्पर निर्विरोध नहि होइत; साक्ष्यक प्रकृति, संभावित प्रतिलिपिक त्रुटि आ नामसाम्यक प्रश्न सदैव ध्यानमे रहबाक चाही।

जीवन झा: रंगमंचक संक्रमण

कविवर जीवन झाक नाटक पर चर्चा एहि दीर्घ आलेखक अन्य महत्वपूर्ण खण्ड अछि। कीर्तनिया रंगमंचक क्षय, पारसी थिएटरक प्रचलन, रामलीलाक मंचरूप आ मैथिली नाटकक नव संरचनाक सम्बन्धमे रामदेव झाक निष्कर्ष सोझाँ अबैत अछि (पृ. १८४–१९०)। ‘सीतापरिणय’क पृष्ठभूमिमे जनकपुर-लीलाक सांस्कृतिक स्थान आ रामलीलामे मैथिलीक संवाद-भाषाक चर्चा एहि तर्ककेँ सन्दर्भ दैत अछि। कथित आधारस्रोत आ मौलिक कृतिक भेद निर्धारित करबाक लेल नाटकक कथानक, पात्र, अङ्कसंरचना आ भाषा सभ पर विचार आवश्यक अछि।

जीवन झाक ‘सामवती पुनर्जन्म’क मौलिकता सम्बन्धी पुरान मतक प्रतिपरीक्षा, तथा मैथिली ‘सट्टक’क अनुपलब्ध भागक अन्वेषणक चर्चा पाठसंरक्षणक संस्थागत महत्त्व उजागर करैत अछि। ई प्रसंग देखबैत अछि जे रचनाकारक प्रतिष्ठा साहित्यिक इतिहासमे पुनः-पुनः बदलि सकैत अछि, कारण नूतन पाठसाक्ष्य पूर्व निर्णयकेँ संशोधित करैत रहैत अछि।

जनार्दन झा ‘जनसीदन’ आ आधुनिक कथाक प्रारम्भ

ग्रन्थकार रामदेव झाक जनार्दन झा सम्बन्धी जीवनाधारित समालोचनाक विस्तारसँ चर्चा करैत छथि। पारिवारिक साक्ष्य, आत्मपरिचय, पुत्र-पौत्रसँ प्राप्त सूचना आ साहित्यिक रचनाक आधारपर जीवनचर्याक पुनर्निर्माणक वर्णन अछि। ‘ताराक वैधव्य’केँ आरम्भिक आधुनिक कथा रूपमे स्थापित करबाक तर्क कथानक, पात्र, संवाद, वातावरण आ परिणतिक विश्लेषणसँ समर्थित बताओल गेल अछि (पृ. १९३–२००)।

‘प्रथम कथा’ सन पद अत्यन्त ऐतिहासिक भार वहैत अछि; ताहि लेल तारिख, पत्रिका-अङ्क, पूर्ववर्ती दुर्लभ रचना आ पाठक विधागत लक्षणक मिलान जरूरी अछि। लेखकक प्रस्तुति सँ रामदेव झाक तर्क बुझल जाइत अछि, मुदा अन्य सम्भावित प्रारम्भिक कथा सभक प्रत्यक्ष जाँच बिना ‘प्रथम’क दावाकेँ अन्तिम ऐतिहासिक फैसला मानब सँ बचबाक चाही।

सीताराम झा आ काव्यरचनाक वैज्ञानिक वर्गीकरण

सीताराम झा सम्बन्धी विवेचनमे रामदेव झाक कविता-विभाजन—मुक्तक, विवरणात्मक/इतिवृत्तात्मक आ प्रबन्धात्मक काव्य—क उपयोगिता पर चर्चा अछि (पृ. २०१–२०३)। कृतिक विषयक अनुकूल ओकर शिल्पगत समुदाय पहिचानब समालोचनाकेँ लेखकक सामान्य प्रशंसासँ अलग करैत अछि। ‘अम्बचरित’क विवेचन, मातृभक्ति आ भक्तिमय काव्यभावक सम्बन्ध ओहि वर्गीकरणक महत्त्व बढ़बैत अछि।

सुभद्र झा आ सम्पादनक कठोर कसौटी

दीर्घ आलेखक उत्तरार्धमे रामदेव झाक सुभद्र झा सम्बन्धी समालोचनाक चर्चा अछि। भाषातात्त्विक ग्रन्थ, व्याकरण-विवेचन, विद्यापति गीतसंग्रह, पाठ-संशोधन, सम्पादनक उद्देश्य

आ उपलब्धि पर समीक्षकक निर्णय मिश्रित अछि। किछु कृतिक विशेष महत्त्व मानल गेल अछि, तऽ किछुक सम्पादनप्रविधि अथवा प्रयोजनपर प्रश्न उठाओल गेल अछि। ‘Songs of Vidyapati’मे पाठ-संशोधनक योग्यता आ ‘विद्यापति गीत संग्रह’क उपयोगितापर भिन्न निर्णयक उल्लेख (पृ. २०४–२०८) एहि बातक उदाहरण अछि जे आत्मीय समालोचनामे सेहो आलोचनात्मक असहमति सम्भव अछि।

सम्पूर्ण आलेखक आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

एहि लम्बा अध्ययनक महत्त्व ओकर दृष्टि-व्यापकतामे अछि। एकहि रामदेव झाक अनुसन्धानक माध्यमसँ असम, नेपाल, मिथिला, मध्यकालीन नाट्य, काव्य, व्याकरण, लोकसाहित्य, सम्पादन आ साहित्येतिहासक अनेक सूत्र जुड़ैत अछि। लेखक अनेक ठाम मूल उद्धरण, वंश-साक्ष्य आ पूर्वनिर्णयक तुलना करैत छथि। पुस्तकक प्रस्तावनामे प्रतिपादित ‘आलोचक सेतु छथि’—एहि धारणा एहि आलेखमे अपेक्षाकृत स्पष्ट रूपेँ क्रियाशील देखाइत अछि।

एहि विशाल विवेचनक सीमा सेहो समान रूपेँ विचारणीय अछि। ग्रन्थकार बहुते विषयमे रामदेव झाक निष्कर्षकेँ सार्थक माने छथि, मुदा किछु विवादित निष्कर्षक प्रतिपक्ष, मूल पाण्डुलिपिक पाठभेद आ आधुनिक बाह्य शोधक स्वतन्त्र पुनर्तुलना एहि एक आलेखमे नहि भेटैत अछि। विस्तारक कारणेँ कतिपय स्थलमे उद्धृत जीवनीग्रन्थक अध्याय-दर-अध्याय परिचय अधिक आ तुलनात्मक सैद्धान्तिक विश्लेषण कम होइत अछि। तथापि मैथिलीमे ‘सजीवनी समालोचना’क स्वरूप पहिचानय लेल ई आलेख अत्यन्त उपयोगी अछि: इतिहास, पाठसमीक्षा आ सौन्दर्यनिर्णयक त्रिवेणी एकर मूल उपलब्धि अछि।

१४ | मैथिली लोकगाथा–अनुसन्धान आ मणिपद्म

मूल पोथीक मुद्रित पृष्ठ: २०९–२२४

लोकगाथाक विधागत स्वरूप

अन्तिम आलेखमे लेखक लोकगाथाकेँ लोकसाहित्यक महाकाव्य मानैत छथि। गेयधर्मिता, व्यापक कथावस्तु, लोकनायक, सामूहिक स्मृति, सामाजिक संघर्ष आ जातीय-लोकदेवताक

प्रतिष्ठा—ई तत्त्व लोकगाथाक विशिष्टता बनैत अछि। शास्त्रीय महाकाव्यक एकरूपी छन्दबन्ध नहि रहितो लोकगाथाक गेय लय ओकर जीवन्त स्वरूप बनबैत अछि। लोकगाथा लिखित रचनाक तरह स्थिर नहि; गायक, काल, क्षेत्र आ श्रोतासमुदायक अनुसार बदलैत रहैत अछि (पृ. २०९–२११)।

मिथिलामे सलहेस, लोरिक, दीना-भदरी, कारिख, दुलरा दयाल, रइया रनपाल, नैका बनिजारा, श्यामसिंह, गोपीचन्द, गनीनाथ-गोविन्द, बेनीराम आदि लोकनायकक गाथाक उल्लेखसँ स्पष्ट अछि जे ई विधा मिथिलाक अनेक जाति आ समुदायमे विस्तारित अछि। लेखक गाथाक भेदमे एक पात्रक खण्डचरित आ विशाल सामूहिक कथागठनकेँ अलग करैत छथि। एहि आधारपर ‘लोकगाथा’ आ ‘गाथागीत’क सम्भावित अन्तरक चर्चा कएल गेल अछि। वर्गीकरणक ई उपयुक्त आरम्भ अछि, मुदा जीवित गायकपरम्परामे एक कथा अनेक रूपमे प्राप्त होइत अछि, तेँ कोनो स्थायी सीमा कड़ाईसँ थोपब उचित नहि।

लिखित अभिलेख आ क्षेत्रीय अन्वेषणक इतिहास

लेखक ‘वर्णरत्नाकर’मे लोकनाच-गानक सन्दर्भ, ग्रियर्सन द्वारा सलहेसक संकलन, परवर्ती शोधकर्ता लोकनिक प्रयास आ विविध लोकगाथाक प्रकाशनक इतिहासक परिचय दैत छथि। एहि विवेचनमे मूल अभिलेख-संग्रहक कठिनता प्रखर रूपेँ उपस्थित अछि। मौखिक परम्पराक गीत जखन लिपिबद्ध होइत अछि, तखन गायकक उच्चारण, राग, कथामे फेरबदल, प्रदर्शनक सामाजिक क्षण आ श्रोताक प्रतिक्रिया बहुत किछु छूटि जाइत अछि। एहि कारणेँ केवल मुद्रित पाठक आधारपर लोकगाथाक सम्पूर्ण अर्थ निर्धारित करब कठिन अछि।

लेखक महेन्द्र नारायण राम, फूलो पासवान, रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’, ताराकान्त मिश्र, विश्वेश्वर मिश्र आ अन्य अन्वेषकक योगदानक उल्लेख करैत छथि। किछु शोधक मूलपाठ-संग्रहक बल, किछुक साहित्यिक विवेचन आ किछुक वर्गीकरणक उपयोगिता देखाओल गेल अछि (पृ. २१३–२१८)। एहि सूचीसँ लोकगाथा-अनुसन्धानक एक विकसित परम्पराक आभास

भेटैत अछि। ई आलेख भिन्न-भिन्न विद्वानक योगदानक परिचय-द्वार अछि; सम्पूर्ण ग्रन्थसूची वा अप्रमाणित पाण्डुलिपिक अन्तिम लेखा नहि।

मणिपद्मक कार्यक विशिष्टता

मणिपद्मक चर्चा एहि आलेखक निर्णायक चरण अछि। लेखकक अनुसार मणिपद्म लोकगाथाक कथ्य, लोकपात्रक संसार, सामाजिक व्यवहार आ विशिष्ट लोकभाषाकेँ गम्भीरतासँ ग्रहण करैत छथि। ओ मूल मौखिक सामग्रीक आधार लैत, ओकर रस ग्रहण करैत आ साहित्यिक कल्पनाक सहायता सँ शिष्ट साहित्यक कथा-उपन्यास, निबन्ध आदि विधामे नूतन रचना प्रस्तुत करैत छथि (पृ. २१९–२२३)। एतय मणिपद्मक सामर्थ्य लोक आ शिष्ट साहित्यक बीच संवाद बनयब अछि।

ई रूपान्तरणक सफलता आ ओकर समस्या दुनू अछि। लोकगाथाक गायकदत्त रूपक स्थानपर साहित्यकारक संस्करण पाठक धरि पहुँचैत अछि, ताहिसँ लोकनायकक लोकप्रियता बढ़ैत अछि। मुदा मूल गाथाक मौखिक पाठ, भिन्न क्षेत्रीय संस्करण आ गायनपरक सामाजिक परिप्रेक्ष्य पाछाँ छूटबाक संकट बढ़ि सकैत अछि। लेखक एहि द्वन्द्वकेँ महत्त्वपूर्ण ढंगसँ चिन्हैत छथि—मणिपद्मक साहित्यिक प्रस्तुति मूल्यवान अछि, मुदा ओकरा मूल लोकगाथाक निर्विवाद पाठक स्थान नहि देल जा सकैत अछि।

संकलन बनाम पुनर्सृजन

आलेखक कठोरतम आलोचनात्मक प्रश्न यही अछि जे लोकगाथाक अनुसन्धाता मूल गाथा रक्षित करैत छथि कि ओकरा अपन शिल्पमे बदलैत छथि। दुनू काम उपयोगी छथि, मुदा दुनूक उद्देश्य अलग अछि। संकलनमे प्रदर्शनक स्थान, दिनाङ्क, गायकक परिचय, बोली, ध्वनिमुद्रण, गायनक अवसर, कथावैविध्य आ पाठान्तरक दस्तावेजीकरण जरूरी होइत अछि। पुनर्सृजनमे रचनाकारक कल्पना आ सौन्दर्य-बोध प्रधान होइत अछि। एहि भेदकेँ भूललासँ लोकइतिहासक स्रोत आ ललित साहित्यक पाठ एक-दोसराकेँ प्रतिस्थापित कऽ देत।

ग्रन्थकार मणिपद्मक योगदानक ऊँच प्रशंसा करितहुँ मूल गाथा सभक दुर्लभता आ शोध-सामग्रीक प्रकाशनक संकट स्वीकार करैत छथि। एकर कारणेँ अन्तिम आलेख केवल श्रद्धाञ्जलि नहि रहि लोकसाहित्य-अनुसन्धानक ठोस कार्यक्रम सुझबैत अछि। लोकगाथा संग्रहक मूलस्वरूपक प्रकाशन, क्षेत्रीय पाठान्तरक तुलना आ भाषा-रूपक संरक्षण नहि होयत तँ अगिला पीढ़ी लोकजीवनक ऐतिहासिक साक्ष्यसँ वञ्चित रहि सकैत अछि।

जातीय लोकदेवता आ साझा मैथिली संसार

सलहेस, दीना-भदरी आदि लोकनायकक लोकप्रियता अलग-अलग जातीय समूहक स्मृति सँ जुड़ल अछि। लेखक एतय लोकगाथाक सामूहिक पहचान निर्माणक शक्तिकेँ रेखाङ्कित करैत छथि। ई एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक स्थिति थिक; मुदा ‘जातीय समन्वय’क निष्कर्षक संग विविध समुदायक असमान सामाजिक स्थिति, प्रतिरोध आ संघर्षक स्वतन्त्र अध्ययन सेहो अपेक्षित अछि। लोकगाथा केवल समरसताक स्वर नहि, दमनक विरुद्ध जनस्मृतिहुक वाणी भऽ सकैत अछि।

समग्र मूल्याङ्कन

ग्रन्थक समापन एहि आलेखसँ होयब अर्थपूर्ण अछि। पहिल आलेखमे नदीक सांस्कृतिक वन्दना छल; अन्तिम आलेखमे लोकक कण्ठमे बचल भाषिक-सांस्कृतिक स्मृतिक संरक्षणक आह्वान अछि। इतिहासक जड़ वस्तुसँ जीवन्त मौखिक परम्परा धरि ई संग्रह अपन अनुसन्धानक चक्र पूर्ण करैत अछि। मणिपद्मक मूल्याङ्कनक सभसँ मजबूत पक्ष ई अछि जे लेखक रचनात्मक प्रतिभा आ मूलस्रोतक प्रामाणिकता बीच भेद करैत छथि। लोकसाहित्यक शोधमे ई भेद भविष्यक सभ अध्ययन लेल उपयोगी कसौटी अछि।

समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

१. चौदहो आलेखक साझा अनुसन्धान-प्रवृत्ति

ग्रन्थक चौदह आलेख अलग-अलग विषयपर अछि, मुदा एकटा गहन एकसूत्रता स्पष्ट अछि—मैथिली साहित्यक ज्ञान आ सम्पदाकेँ सुरक्षित राखि ओकर उपयोग सामाजिक परिवर्तन, भाषिक आत्मसम्मान आ सौन्दर्यबोधक विकासमे करब। पहिल छह आलेखमे परम्परा-रक्षा आ आधुनिकता, भक्ति आ सामाजिक सुधार, शास्त्रीय छन्द आ युगीन संवेदना बारम्बार आमने-सोझाँ अबैत अछि। गद्य-विभागमे यात्रा, निबन्ध आ उपन्यासक कथावस्तु मैथिलीक समाजदर्शनक माध्यम बनैत अछि। अन्तिम पाँच आलेख आधुनिक साहित्यिक संस्थाक संरचना पर ध्यान दैत अछि।

एहि दृष्टिसँ ‘चतुर्दश सूत्र’केँ केवल अवसरानुकूल समीक्षासंग्रह कहब ओकरे विविध बौद्धिक उद्देश्यकेँ घटायब होयत। ई संग्रह एकटा विशिष्ट आलोचनात्मक विचारधारा प्रकट करैत अछि, जाहिमे साहित्यक सौन्दर्य समाजसँ कटि नहि सकैत अछि, आ भाषाक विकास केवल श्रेष्ठ कविक रचनासँ नहि, पत्रकारिता, भाषा-अनुसन्धान, पाठ-सम्पादन, विद्यालय, पुस्तकालय आ लोकज्ञानक संरक्षणसँ सेहो निर्धारित होइत अछि।

२. परम्परा आ नवीनताक वास्तविक द्वन्द्व

गंगावन्दना, स्नेहलता, स्वयंप्रभा, मोहन आ जयमन्त मिश्रक काव्यविवेचनमे परम्पराक गहन प्रभाव अछि। तथापि ग्रन्थकार केवल परम्पराक पुनरुक्तिक प्रशंसा नहि करैत छथि। स्वयंप्रभामे दहेज-विरोध, हरिमोहन झाक कथाकाव्यमे अनमेल विवाह आ खाद्य-अखाद्यक व्यंग्य, मोहनमे राष्ट्रीय कर्तव्य, जयमन्त मिश्रमे युगीन असमञ्जस आ गंगावन्दनाक अन्तमे पर्यावरण-प्रश्न—ई सभ देखबैत अछि जे पुरान रूपमे नव सामाजिक अर्थ सम्भव अछि। शिल्पक आधुनिकताकेँ विचारक आधुनिकतासँ अलग जाँचबाक आग्रह संग्रहक एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक उपलब्धि अछि।

३. साहित्यिक समाजदर्शनक शक्ति आ सीमा

हरिमोहन झा, प्रदीप, मायानन्द मिश्र आ विदितजी पर लिखल आलेख सामाजिक समस्या सभक विविध चित्र प्रस्तुत करैत अछि। विवाहक बाजार, नारीक असमान स्थिति, अन्धविश्वास, जातिवाद, पलायन, भाषिक हीनता आ आर्थिक निष्क्रियता साहित्यक पाठमे उपस्थित अछि। लेखक अनेक ठाम समाजोद्धारक आग्रही छथि। किन्तु नैतिक उपदेश आ वास्तविक संस्थागत परिवर्तनक बीच पर्याप्त दूरी अछि। काव्यमे निन्दा करब आ समाजमे समस्या निवारण करब अलग कार्य छथि; एहि भेदकेँ ध्यानमे राखि रचनाक प्रभावक मूल्याङ्कन करबाक चाही।

कखनहुँ लेखकक अनुराग आलोचनात्मक प्रतिवादकेँ सीमित करैत अछि। सन्तकविक पद अथवा भाषा-आन्दोलनक नायकक मूल्याङ्कनमे प्रशंसा अधिक अछि, जखन कि वर्ग, जाति, लिङ्ग, आर्थिक शक्ति आ संस्थागत असफलताक वैकल्पिक पाठ पर अपेक्षाकृत कम विचार भेटैत अछि। मुदा लेखकक स्वयं प्रस्तुत कएल अनेक साक्ष्य वैकल्पिक प्रश्न उठाबय लेल पर्याप्त सामग्री उपलब्ध करबैत अछि। एही कारणेँ पोथी पढ़ब एकटाक निश्चित मत मानि लेब नहि, चर्चा आगाँ बढ़ायब अछि।

४. ‘सजीवनी समालोचना’ आ स्रोतक सम्मान

रामदेव झा सम्बन्धी आलेख एहि पोथीक आलोचनादर्शनक केन्द्रीय रूपक बनैत अछि। ओतए कृति, रचनाकार, परिवेश, प्राचीन पाठक उपलब्धि आ ऐतिहासिक विवाद समेकित रूपमे सोझाँ अबैत अछि। सुभद्र झा सम्बन्धी भाषावैज्ञानिक आलेख आ मणिपद्म सम्बन्धी लोकगाथा आलेख एहि सिद्धान्तकेँ अलग-अलग दिशा सँ समर्थित करैत अछि—कोनो साहित्यक आलोचना ओकर भाषा, अभिलेख आ जीवन्त परम्परासँ कटि नहि सकैत अछि।

तथापि जीवनीक आत्मीयता आ शोधक निष्पक्षता हर समय एक नहि होइत। स्मृतिपरक सूचना, पारिवारिक साक्ष्य, शास्त्रीय उद्धरण, पुरान पाण्डुलिपि आ बादक इतिहासकारक निर्णय प्रमाणक अलग स्तर छथि। भविष्यक पाठालोचनामे ई स्तर स्पष्ट करबाक अनिवार्यता अछि।

पुस्तक जखन एहि प्रमाणक चर्चा करैत अछि, तखन ओकर महत्त्व बढ़ैत अछि; जखन ओहि प्रमाणक प्रतिपक्ष नहि देखैत अछि, तखन अनुसन्धानक किछु दरवाजा खुलले रहि जाइत अछि।

५. पत्रकारिता, शब्द, लोकसाहित्य: मैथिलीक सार्वजनिक क्षेत्र

‘स्वदेश’क पत्रकारिता, सुभद्र झाक रूपविज्ञान, जयकान्त मिश्रक साहित्येतिहास आ मणिपद्मक लोकसाहित्यक अध्ययन अलग-अलग उपविषय नहि, भाषा-सार्वजनिकताक चारु आधार मानल जा सकैत अछि। ‘स्वदेश’ मैथिलीकेँ रोजक समाचार देबाक भाषा बनबैत अछि; भाषाविज्ञान ओकर स्वतन्त्र संरचना प्रकट करैत अछि; साहित्येतिहास ओकर कालगत स्मृति बनबैत अछि; लोकगाथा ओकर जनसमुदायक अनौपचारिक ज्ञानक निधि अछि। एहि चतुष्कोणसँ संग्रहक गहनतम बौद्धिक विचार उभरैत अछि—भाषा तखने समृद्ध होइत अछि जखन ओकरा साहित्य लिखबाक संगहि अध्ययन, संचार, शिक्षण आ लोकस्मृति संरक्षित करबाक साधन भेटैत अछि।

६. भाषाशैली, सन्दर्भ आ सम्पादकीय परीक्षण

ग्रन्थकारक मैथिलीमे संस्कृतनिष्ठ आलोचनात्मक शब्दावली, दीर्घ वाक्य, परम्परित ‘विवेचन–विश्लेषण–मूल्याङ्कन’क संरचना आ मूल उद्धरणक नियमित उपयोग भेटैत अछि। शास्त्रीय काव्यविवेचनमे ई शैली सहज कार्य करैत अछि; गद्य आ लोकसाहित्यक विवेचनमे अनेक स्थानपर स्पष्ट कथासार आ बोलचालक उदाहरण एकरा सुगम बनबैत अछि। मुदा अतिविस्तृत नामावली वा कथासारक कारणेँ कखनो समालोचनाक मूल प्रश्न ओझरा जाइत अछि। एहन स्थानपर उपशीर्षक, प्रमाणक सारणी, मूलस्रोत-सूची आ तुलनात्मक निष्कर्ष अधिक उपयोगी होइत।

चतुर्दश सूत्रक प्रकाशकीय विवरणमे मूल्य ३०० टाका, जखन कि पछिला आवरणपर ४०० टाका अंकित अछि। ई मुद्रित मूल्य-सूचनाक अन्तर ग्रन्थसूची तैयार करैत काल ध्यान देबाक योग्य अछि; एकर कारण निश्चित करबाक पर्याप्त प्रकाशकीय सूचना नहि भेटैत अछि।

७. एकर बाद करबाक यथार्थपरक अनुसन्धान

‘चतुर्दश सूत्र’केँ भविष्यक शोध लेल उपयोगी बनाबय हेतु किछु ठोस कार्यक्षेत्र स्वतः प्रकट होइत अछि। कविताक सन्दर्भमे मूल पदक पाठ-सम्पादन, पाठभेद आ छन्दक तुलनात्मक गणना चाही। गद्यक सन्दर्भमे ‘श्यामली’ आ ‘पथचारी’क सम्भावित सम्बन्धक पुस्तक-दर-पुस्तक परीक्षण, ‘ग्राम–गणराज्य’क सत्रहो उल्लासक कथन-रचना आ समकालीन सामाजिक आँकड़ासँ तुलना उपयुक्त होयत। मायानन्द मिश्रक विकीर्ण निबन्ध, ‘स्वदेश’क मूल अङ्क आ रामदेव झाक सम्पादित दुर्लभ गीत-नाटकक डिजिटल अभिलेखन अत्यन्त उपयोगी कार्य अछि। लोकगाथा-अनुसन्धानमे गायनक ध्वनिमुद्रण, क्षेत्र, प्रदर्शनक काल, गायक-परिचय, पाठान्तर आ साहित्यिक पुनर्सृजनक अलग-अलग संस्करण सुरक्षित करब चाही।

ई प्रस्ताव सभ वर्तमान अध्ययनमे कएल गेल सत्यापित कार्यक दावास्वरूप नहि, मूल पोथी पढ़लापर निकलल अनुसन्धानक सम्भावना रूपमे प्रस्तुत अछि।

अन्तिम मूल्याङ्कन

‘चतुर्दश सूत्र’क सभसँ महत्वपूर्ण उपलब्धि ई अछि जे ई मैथिलीकेँ केवल भावनात्मक मातृभाषाक रूपमे नहि, समृद्ध साहित्यिक विधा, सामाजिक आलोचना, वैज्ञानिक भाषा-अध्ययन, संस्थागत साहित्येतिहास आ मौखिक लोकज्ञानक विराट परिसरमे पढ़ैत अछि। लेखक पुरान आ नवक बीच वैमनस्य नहि, संवाद चाहैत छथि। परम्परित काव्यक सामाजिक अर्थ निकालैत, आधुनिक कथा-गद्यक नैतिक संघर्ष देखैत आ भाषा-संरक्षणक व्यावहारिक प्रश्न उठबैत ई संग्रह आलोचनाक व्यापक सम्भावना प्रमाणित करैत अछि।

एहि कृतिक उपलब्धिक संगहि एकर आलोचनात्मक सीमा देखब सेहो आवश्यक अछि। इतिहासक व्यापक कथन, व्यक्तित्वक प्रशंसात्मक निर्णय आ स्रोतक परोक्ष उल्लेख सर्वत्र एके स्तरक प्रमाण नहि रखैत अछि। किछु आलेखमे कथासारक विस्तार विश्लेषणक स्थान घेरि लैत अछि। ताहि लेल पोथीकेँ अन्तिम, निर्विवाद इतिहास मानब उचित नहि; ओकरा

आधारसामग्रीसँ सम्पन्न, बहुविध प्रश्न उठबयवला आलोचनात्मक ग्रन्थ मानब अधिक न्यायसंगत अछि।

समग्र निष्कर्षमे कहल जा सकैत अछि जे डॉ. योगानन्द झाक ई संग्रह मैथिली साहित्यिक अनुसन्धानक एक व्यापक मानचित्र अछि। एकर चौदहो आलेखकेँ अलग-अलग सन्दर्भमे पढ़लासँ कृति-विशेषक महत्त्व भेटैत अछि; एकठाम पढ़लासँ मैथिली भाषा-साहित्यक पाठ, प्रमाण, समाज, इतिहास आ लोकपरम्पराक आन्तरिक एकता स्पष्ट भऽ उठैत अछि। ई एकता —आ ओकर भीतर लुकायल मतभेद—पोथीक स्थायी समीक्षात्मक मूल्य थिक।

पुस्तकक अध्ययनाधार

ग्रन्थसूची

प्रमुख समीक्षित ग्रन्थ

01. झा, योगानन्द। लोकजीवन ओ लोकसाहित्य। प्रथम संस्करण १९८६; द्वितीय संस्करण २०१८। शेखर प्रकाशन, पटना।

02. झा, रामदेव (सम्पादक); झा, योगानन्द (सहायक सम्पादक)। संकल्प, अङ्क ५ : विद्यापति-स्मृति-पर्व-समारोहक स्मारिका। समारोह १९८८; आयोजन ४–६ फरवरी १९८९। संकल्पलोक, लहेरियासराय, दरभंगा।

03. झा, योगानन्द। आलेख सञ्चयन। प्रथम संस्करण २००२। मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर–लहेरियासराय, दरभंगा।

04. झा, योगानन्द (सम्पादक)। मैथिली शाक्त साहित्य (शास्त्रीय भगवती गीत)। द्वितीय संस्करण २००२। उर्वशी प्रकाशन, पटना।

05. झा, योगानन्द। मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष। प्रथम संस्करण २००६।

06. झा, योगानन्द (संकलन–सम्पादन)। गहबर गीत। प्रथम संस्करण २००७। मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर–लहेरियासराय, दरभंगा।

07. झा, योगानन्द। लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा। प्रथम संस्करण २००७; द्वितीय संस्करण (पेपरबैक) २०२४। शशि प्रकाशन, सुपौल। ISBN 978-93-92691-35-5।

08. झा, योगानन्द। मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली। प्रथम संस्करण २००९। मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा।

09. झा, योगानन्द। कथा–लोककथा। प्रथम संस्करण २०१०। मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर–लहेरियासराय, दरभंगा।

10. ठाकुर, कपिलदेव ‘स्नेहलता’ (मूल कवि); झा, योगानन्द (संकलन–सम्पादन)। सीतावतरण (प्रबन्धकाव्य)। प्रथम संस्करण २०११। लोक कला संस्कृति संस्थान, विदेहनगर–डरोड़ी, समस्तीपुर।

11. गाँधी, मोहनदास करमचन्द (मूल लेखक); झा, योगानन्द (मैथिली अनुवाद)। मंगल-प्रभात। प्रथम संस्करण २०१३। मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा।

12. कीर्तिवर्द्धन, ए. (मूल हिन्दी लेखक); झा, योगानन्द (मैथिली अनुवाद)। भोरे-भोर। प्रथम संस्करण २०१४। विद्यालक्ष्मी प्रकाशन, मुजफ्फरनगर।

13. झा, योगानन्द। चतुर्दश सूत्र। प्रथम संस्करण २०२३। शशि प्रकाशन, सुपौल। ISBN 978-93-92691-34-8।

सम्बद्ध मुद्रित ग्रन्थ

01. मिश्र, चन्द्रनाथ ‘अमर’। मैथिली पत्रकारिताक इतिहास। १९८१। मैथिली अकादमी, पटना।

02. Gandhi, M. K. From Yeravda Mandir: Ashram Observances. Translated from Gujarati by Valji Govindji Desai. 1932. Navajivan Trust, Ahmedabad.

03. Jha, Pankaj. A Political History of Literature: Vidyapati and the Fifteenth Century. Oxford University Press, New Delhi, 2019. Print ISBN 9780199489558.

04. Hemachandra. The Deśīnāmamālā of Hemachandra. Second edition, edited by R. Pischel; introduction and glossary by P. V. Ramanujaswami. Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, 1938.

मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्षक २००६क संस्करणक प्रकाशक-नाम उपलब्ध प्रकाशन-विवरणसँ सुनिश्चित नहि भेल अछि; तेँ अप्रमाणित प्रकाशक-नाम नहि जोड़ल गेल अछि।

नित नवल योगानन्द झा

तेरह ग्रन्थक समीक्षात्मक विवेचन

पोथीक आरम्भमे लेखक लोकसाहित्यकेँ केवल पद्य, कथा अथवा मनोरञ्जनक भण्डार नहि मानि **लोकजीवनक जीवन्त अभिव्यक्ति** रूपेँ रखैत छथि।

एहि दृष्टिसँ ग्रन्थ केवल साहित्यिक स्वादक सामग्री नहि, **सामाजिक दस्तावेज** तैयार करबाक प्रयत्न सेहो अछि।

लोकगीत · लोककथा · लोकगाथा · लोकनाट्य · लोकनृत्य · बुझौअलि

SCAN · VISIT VIDEHA

VIDEHA.CO.IN
https://www.videha.co.in/

VIDEHA E-JOURNAL
https://videha-ejournal.github.io/videha/